BAOU
Education for All

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

BAOU CATEGORY 1 UNIVERSITY GRADED AUTONOMY UGC

बी. ए. द्वितीय वर्ष

मुख्य/गौण

(HNDM/S-204)

हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ

विष्णु प्रभाकर

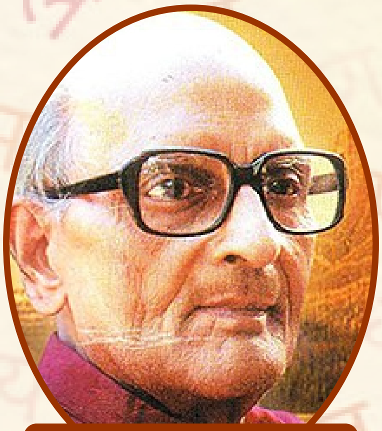

डॉ. रामविलास शर्मा

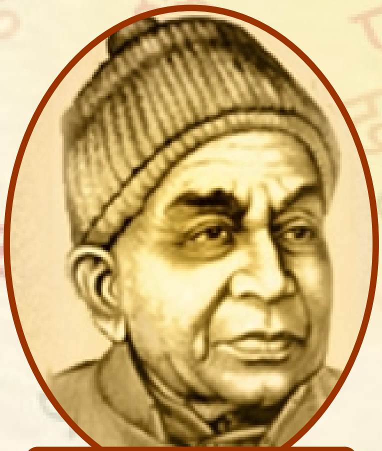

पांडेय बेचन शर्मा उग्र

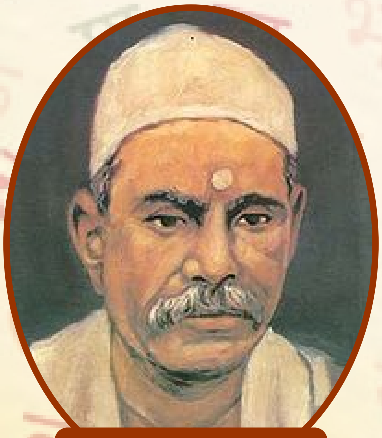

बालकृष्ण भट्ट

मधु कांकरिया

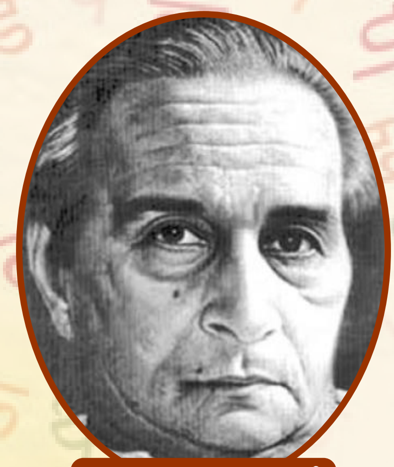

हरिशंकर परसाई

स्वाध्याय का उजास

भारत के संविधान के निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब अंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी' की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य के शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2023 में सर्टिफिकेट से लेकर पीएच.डी. तक विभिन्न स्तरों के लगभग 58 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब अंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को एक मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा पूरा योगदान दिया है और आशा है,आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मैं स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन के मूल का यहाँ उल्लेख करना चाहूँगी :

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके."

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेंद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के बृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यरत है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सकें.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **"स्वाध्यायः परमं तपः"** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इन्फॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजीज़) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध कराने की दिशा में हम तेजी से काम कर रहे हैं. शीघ्र ही ये पाठ्यक्रम वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय

कुलपति

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

अहमदाबाद.

बी.ए. द्वितीय वर्ष के लिए हिंदी मुख्य और गौण विषय के चौथे प्रश्नपत्र की स्वाध्याय सामग्री

हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय — निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सहसंपादक :

सुश्री पारुल परमार — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी — प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत), स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, भाषा भवन, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, आणंद.

डॉ. अरुणेंद्रसिंह राठौर — प्राचार्य, धर्मेंद्रसिंहजी आर्ट्स कॉलेज, राजकोट.

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इकाई लेखक :

डॉ. नयना डेलिवाला — सेवानिवृत एसोसिएट प्रोफेसर, एफ.डी.आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, अहमदाबाद.

डॉ. नरेश पी. जोशी — असिस्टेंट प्रोफेसर, गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, अमीरगढ़, बनासकांठा.

डॉ. जितेन्द्र कुमार जे. बंजारा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, नवजीवन आर्ट्स एवं कॉमर्स कॉलेज, दाहोद

डॉ. मीना बंजारा — असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, गाँधीनगर.

डॉ. अरविंद कुमार उपाध्याय — सहायक आचार्य हिंदी, दयावंती पुंज पी. जी. कॉलेज, सीतामढ़ी, संत रविदास नगर, उत्तर प्रदेश.

डॉ. गिरीश बंजारा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सुश्री पारुल परमार — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. वनमाला बाविस्कर — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी (भूतपूर्व), डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

परामर्शक :

डॉ. ओमप्रकाश शुक्ल — एसोसिएट प्रोफेसर, गुजरात आर्ट्स एवं कॉमर्स कॉलेज (सायं), अहमदाबाद.

आवरण सज्जा :

सुश्री मार्मी मकवाणा — ग्राफिक डिजाइनर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : सरकारी मुद्रणालय, गाँधीनगर

ISBN : 978- 93- 5598- 509- 5

© दिसंबर, 2023 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित. यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी. ए. द्वितीय वर्ष
मुख्य / गौण
हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ
(HNDM/S– 204)

हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ

इकाई -1 निबंध : स्वरूप और विकास	**7 - 22**
इकाई- 2 'जीवनी', 'आत्मकथा', 'संस्मरण', 'यात्रावृत्त' विधाओं का परिचय	**23 - 38**
इकाई- 3 'रेखाचित्र', 'पत्र साहित्य', 'डायरी', 'रिपोर्ताज' विधाओं का परिचय	**39 - 51**
इकाई- 4 सूचना तकनीकी युग की देन : गद्य के कुछ नवीन स्वरूप	**52 - 62**
इकाई -5 'नाक' – पंडित बालकृष्ण भट्ट	**63 - 72**
इकाई- 6 'भय' : रामचंद्र शुक्ल : पाठ और विश्लेषण	**73 - 82**
इकाई -7 'वसंत आ गया है' - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	**83 - 94**
इकाई -8 'अतिथि' - डॉ. रामविलास शर्मा	**95 - 107**
इकाई -9 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' - हरिशंकर परसाई	**108 - 119**
इकाई -10 जीवनी : 'आवारा मसीहा' - विष्णु प्रभाकर	**120 - 131**

इकाई -11	**132 - 142**
आत्मकथा – 'अपनी खबर' - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	
इकाई -12	**143 - 159**
संस्मरण – 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' : मृदुला गर्ग	
इकाई -13	**160 - 169**
यात्रावृत्त - चीड़ों पर चाँदनी - निर्मल वर्मा	
इकाई -14	**170 - 185**
रेखाचित्र – बिंदा : महादेवी वर्मा	
इकाई -15	**186 - 198**
'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' : मित्र-संवाद (भाग-1)	
इकाई -16	**199 - 208**
डायरी – 'बंजारा मन और बंदिशें ' - मधु कांकरिया	
इकाई -17	**209 - 222**
रिपोर्ताज - 'एकलव्य के नोट्स' : फणीश्वरनाथ रेणु	

पाठ्यक्रम परिचय

(पाठ्यक्रम आरंभ करने से पहले विद्यार्थी कृपया इसे अवश्य पूरा पढ़ें)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ में बी.ए. द्वितीय वर्ष में हिंदी मुख्य विषय के रूप में पढ़ने वाले आप सब विद्यार्थियों के लिए यह पाठ्यक्रम - 4 'हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ' आपके सामने है.

इसके पहले आपने द्वितीय वर्ष में तीसरे पाठ्यक्रम में आपने हिंदी नाट्य में भारतीय नाट्य परम्परा, आधुनिक हिंदी नाटकों में भारतेंदु युग, बींसवीं सदी का हिंदी रंगमंच, इक्कीसवीं सदी के नाट्य रूप, हिंदी नाटक, हिंदी एकांकी, मिडिया नाट्य,रेडियो नाट्य आदि नाट्य के विविध प्रकारों के बारे में पढ़ा. पाठ्यक्रम - 4 में हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं का परिचय आपके अध्ययन के लिए रखा है. यह पाठ्यक्रम कुल 17 इकाईयों में विभाजित हैं. ये पूरा पाठ्यक्रम हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं पर आधारित है. जिसमें विद्यार्थी हिन्दी निबंध, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, रेखाचित्र, पत्रसाहित्य, डायरी, रिपोर्ताज जैसी विधाओं का परीचय प्राप्त करेंगे. इसके साथ साथ इस सुचना और तकनीकी के युग में गद्य की कुछ नई विधाओं का भी अध्ययन करेंगे और साथ मे इन नई गद्य विधाओं के प्रमुख लेखकों की प्रतिनिधि रचनाओं का भी अभ्यास करेंगे.

पाठ्यक्रम की इकाइयों का लेखन कई एक अनुभवी प्राध्यापकों ने किया है. ये इकाइयाँ वैसी ही हैं, जैसे पारंपरिक विश्वविद्यालयों में होने वाले व्याख्यान. जैसे कुछ व्याख्यान बहुत अच्छे लगते हैं और तुरंत समझ में आ जाते हैं, वैसे ही कुछ इकाइयाँ एक बार पढ़ते ही समझ में आ जाएँगी; कुछ को एक से अधिक बार पढ़ना पड़ेगा और कुछ ऐसी भी हो सकती हैं जिन्हें पढ़ने से संतुष्टि न मिले अधूरापन लगे, कुछ प्रश्न खड़े हो जाएँ. जब आप उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न कीजियेगा, तब आपकी वास्तविक अध्ययन यात्रा शुरू होगी. जिन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं खोजेंगे, वे ही आपको हमेशा के लिए याद हो जाएँगे और आपके अध्ययन का वास्तविक फल होंगे. आपकी इस अध्ययन यात्रा में यूनिवर्सिटी सदा आपके साथ है. आप अध्ययन संबंधी अपने किसी भी प्रश्न को नीचे लिखी ईमेल आई डी पर भेज सकते हैं. आपको निश्चय ही आपके प्रश्नों के जवाब, समस्याओं का समाधान मिलेगा.

तो अपना अध्ययन आरंभ करें! खूब सारी शुभकामनाएँ!!

बी.ए. हिंदी अध्ययन के लिए संपर्क ईमेल आई डी : baou.ba.hindi@gmail.com

इकाई 1 निबंध : स्वरूप और विकास

रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 निबंध का अर्थ एवं परिभाषा

- **1.3.1** निबंध का अर्थ
- **1.3.2** निबंध की परिभाषा

1.4 निबंध के प्रकार

- **1.4.1** वर्णनात्मक निबंध
- **1.4.2** विवरणात्मक निबंध
- **1.4.3** भावात्मक निबंध
- **1.4.4** साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

1.5 हिंदी निबंध का विकास

- **1.5.1** भारतेन्दु युग – 1857 ई. से 1900 ई. तक
- **1.5.2** द्विवेदी युग – 1900 ई. से 1920 ई. तक
- **1.5.3** शुक्ल युग – 1920 ई. से 1940 ई. तक
- **1.5.4** शुक्लोत्तर युग – 1940 ई. से अब तक

1.6 सार-बिंदु

1.7 परीक्षापयोगी प्रश्नावली

1.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद निबंध गद्य विधा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे. हिंदी निबंध की विकासयात्रा को समझ सकेंगे.

- विद्यार्थी निबंध का अर्थ और उसकी परिभाषा समझ सकेंगे.
- विद्यार्थी हिंदी साहित्य में निबंध के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- विद्यार्थी हिंदी निबंध के विकास के चरणों को समझ सकेंगे और इन चरणों की विशेषताओं को जान सकेंगे.
- विद्यार्थी प्रमुख निबंधकार और उनके निबंधों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.

1.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी साहित्य की शुरुआत तो पद्य से हुई, लेकिन आधुनिक काल तक आते आते पद्य के साथ साथ गद्य विधा का प्रारम्भ हो गया. गद्य में भी कई नई विधाओं का आगमन हुआ. जिसमें उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र,

संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा साहित्य, रिपोर्ताज आदि. इन सारी विधाओं का प्रचार प्रसार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ. इनकी शुरुआत उन्नीसवीं सदी के उतरार्ध से मानी जाती हैं. विचारों की अभिव्यक्ति के लिए निबंध विधा बड़ी कारगर थी. अतः भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके समकालीन लेखकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए इस विधा का सहारा लिया. भारतेंदु युग के बाद महावीरप्रसाद द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से निबंधों का विकास हुआ किंतु शुक्ल युग में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंधों को प्रौढ़ रूप प्रदान किया. निबंधों में गहन वैचारिकता और विश्लेषण के तत्वों का समावेश हुआ. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक नयी शैली विकसित की जो ललित निबंध के नाम से जानी जाती है. इन सब की जानकारी हम इस इकाई में प्राप्त करेंगे.

1.3 *निबंध का अर्थ एवं परिभाषा*

1.3.1 *निबंध का अर्थ :*

'निबंध 'गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है. इसका उद्भव और विकास आधुनिक युग की देन हैं. 'निबंध' शब्द 'नि' उपसर्ग व 'बंध' धातु के योग से बना हैं. निबंध शब्द 'नि+बंध' से बना हैं. 'नि' का अर्थ है 'अच्छे प्रकार से' और 'बंध' का अर्थ है 'बंधा हुआ'. यानि 'निबंध ' का अर्थ हैं अच्छे प्रकार से बंधा हुआ. इसके अलावा भी निबंध के अनेक अर्थ ग्रहण किये जाते हैं. जैसे - लेख, अभिलेख, संदर्भ, रचना, प्रस्ताव इत्यादि.

रामचन्द्र वर्मा द्वारा संपादित 'संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर' में निबंध का अर्थ हैं - 'मुख्यतः गद्य में लिखित साहित्यिक प्रबंध और रोचक गुंफन लेख.'- अर्थात अपने विचारों को बाँधना या गुंफित करना ही 'निबंध ' हैं. निबंध अंग्रेजी शब्द 'श्वस्स्र्ड्ड' का पर्यायवाची हैं. लेटिन में 'एग्जीजियर', फ्रेंच में 'ऐसा' शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं. यूरोप में 'ऐसे' शब्द का प्रयोग सबसे पहले आधुनिक निबंध के जन्मदाता मोंटेन ने किया. उन्होंने निबंध की चर्चा करते हुए बतलाया कि — 'निबंध विचारों, चिन्तनों, भावनाओं, उद्धरणों तथा उपाख्यानों का सुंदर और आनन्ददायक सम्मिश्रण हैं.' वास्तव में, निबंध शब्द का अर्थ है - बंधन और यह बंधन विविध विचारों का होता है, जो एक दूसरे से गुँथे होते हैं और किसी विषय की व्याख्या करते हैं.

1.3.2 *निबंध की परिभाषा :*

निबंध गद्य लेखन की एक विधा है. लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखो के लिए भी किया जाता हैं. निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है. लेकिन साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द 'निबंध' ही हैं. निबंध को लेकर विद्वानों ने अलग अलग परिभाषाएँ दी हैं. जो निम्नलिखित हैं-

1. *'जॉनसन' - 'निबंध मन का आकस्मिक और उच्छृंखल असंबंध और चिंतनहीन बुद्धि विलास मात्र हैं.*
2. *मूर्धन्य समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार — 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी हैं.'*
3. *डॉ. भागीरथ मिश्र के अनुसार– 'निबंध वह गद्य रचना है, जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छन्दतापूर्वक परन्तु एक विशेष सौष्ठव, सजीवता और वैयक्तिकता के साथ अपने भावों, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है.'*
4. *डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार - 'जब किसी भी विषय या विचार का प्रतिपादन कल्पना एवं अनुभूति के सहयोग से आकर्षक शैली में किया जाता है तो उसे साहित्यिक निबंधों में स्थान दिया जाता है.'*
5. *मानक हिन्दी कोश के अनुसार - 'निबंध विचारपूर्ण, विवरणात्मक और विस्तृत लेख है जिसमें किसी विषय के सब अंगों का मौलिक और स्वतंत्र रूप से विवेचन किया गया हो.'*
6. *श्री. जयनाथ नलिन के अनुसार — 'निबंध स्वाधीन चिंतन और निश्चित अनुबनियों का सरस सजीव और मर्यादित गधात्मक प्रकाशन है.*
7. *आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार - 'भावों और विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ उसे ही निबंध साहित्य की संज्ञा दी जाती है.'*

उपरोक्त व्याख्याओं को देखने के बाद हम कह सकते हैं कि निबंध एक ऐसी विधा है जिसमें निबंधकार अपनी कल्पना और अनुभुतियों को स्वतंत्र रूप से योग्य शैली के साथ अपने विचार और भावों को विस्तृत रूप में व्यक्त करता हैं. निबंध गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है. इसे गद्य की कसौटी माना जाता है.

विशेष रूप से कहें तो हिन्दी के पहले निबंध के रूप में राजा शिवप्रसाद सितारें हिंद द्वारा लिखित 'राजा भोज का सपना' - 1853 ई' स्वीकार किया जाता है जिसमें स्वप्न की एक कथा के माध्यम से नैतिक सिद्धान्त एवं उपदेशात्मक विचार प्रतिपादन किया गया है. राजा शिवप्रसाद के द्वारा हिन्दी निबंध की कोई सुव्यवस्थित परम्परा स्थापित न की जा सकी. यह कार्य कुछ वर्षों बाद भारतेन्दु हरिशचन्द्र तथा उसके सहयोगी लेखक मण्डल द्वारा समपन्न हुआ. अर्थात् हिंदी निबंध का व्यवस्थित इतिहास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही प्रारंम्भ होता है.

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी निबंध का वास्तविक जनक माना जाता है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल को भाषा और शैली की दृष्टि से कलात्मक निबंध का जन्मदाता माना जाता है. इनको 'निबंध सम्राट' भी कहा जाता है. आचार्य शुक्ल के बाद निबंध के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले दूसरे विद्वान हजारी प्रसाद द्विवेदी माने जाते हैं. पं. बालकृष्ण भट्ट

भारतेन्दु युग के सर्वोत्कृष्ट निबंध क माने जाते हैं. इनको 'हिन्दी का मॉटेन' भी कहा जाता है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनको 'हिन्दी का स्टील' कहा है.

- ***बोध प्रश्न :***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. *'निबंध' शब्द '.......' उपसर्ग व '......' धातु के योग से बना हैं.*
2. *'निबंध' का अर्थ है .... हुआ.*
3. *निबंध अंग्रेजी शब्द .... का पर्यायवाची है.*
4. *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी निबंध का .... माना जाता है.*
5. *.................को 'हिन्दी का मॉटेन' भी कहा जाता है.*

1.4 *निबंध के प्रकार*

गद्य की विधाओं में निबंध का रचना-विधान और उसकी विकास प्रक्रिया दूसरी विधाओं से बहुत भिन्न होती है. निबंध का स्वरूप बहुत कुछ लेखक की दृष्टि, उसकी चिंतन प्रक्रिया और भाषा पर उसके अधिकार द्वारा निर्भर होता है. संसार के किसी भी विषय पर निबंध लिखा जा सकता है और लिखे भी गये हैं. हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर हजारी प्रसाद द्विवेदी तक निबंध लेखन की एक लंबी परंपरा है जिसके भीतर निबंध के अनेक रूप विकसित हुए हैं. मुख्य रूप से दो प्रकार के निबंध अधिक प्रसिद्ध हुए हैं. विचारात्मक निबंध और ललित या व्यक्ति-व्यंजक निबंध . रामचंद्र शुक्ल विचारात्मक निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं तो हजारी प्रसाद द्विवेदी ललित निबंधकार के रूप में. सामान्यतः निबंध चार प्रकार माने गये है –

1. *वर्णनात्मक निबंध*
2. *विवरणात्मक निबंध*
3. *भावात्मक निबंध*
4. *साहित्यिक या आलोनात्मक निबंध*

1.4.1 *वर्णनात्मक निबंध*

किसी वस्तु, घटना, द्रश्य, पर्व, आदि से सम्बन्धित निबंध वर्णनात्मक निबंध कहे जा सकते हैं. इन निबंधों में व्याख्या की प्रधानता रहती है. विभिन्न प्रकार के दृश्यों, घटनाओं तथा स्थलों का आकर्षक वर्णन करना ही इन निबंधों का विषयवस्तु होता है. इसमें वर्णन की प्रधानता होती हैं. इसमें बुध्धि ओर तर्क की तुलना में कल्पना तत्व की प्रधानता होती हैं. निबंधकार अपनी वैयक्तिकता के सहारे बड़ा ही आकर्षक वर्णन करता हैं. इसमें निबंधकार अपने निबंध में एक सजीव-चित्र उपस्थित करता है. इनमें लेखक प्रकृति और मानव-जगत् में से किसी से भी विषय चयन कर सर्वसाधारण के लिए निबंध -रचना करता है. वर्णनात्मक निबंध के रचनाकारों में भारतेंदु हरिश्चन्द्र,

श्यामसुन्दरदास, बाबू गुलाबराय, बालमुकुन्द गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र आदि का नाम विशेष महत्वपूर्ण है.

1.4.2 *विवरणात्मक निबंध*

विवरणात्मक निबधों में कल्पना एवं अनुभव की प्रधानता होती है. साथ ही इस वर्ग के निबधों में वर्णन के साथ-साथ विवरण की प्रवृत्ति भी विद्यमान रहती है. इन्हें कथात्मक अथवा आख्यानात्मक निबंध भी कहा जाता है. विवरणात्मक-निबंधों की विषयवस्तु मुख्यत: जीवनी, कथाएँ, घटनाएँ, पुरातत्त्व, इतिहास, अन्वेषण, आखेट, युद्ध आदि विषयों पर आधृत होती है. ऐसे निबंधों में क्रमबद्धता की और अधिक ध्यान दिया जाता हैं.और इसमें लेखक की आत्मीयता और व्यक्तित्व की छाप अनिवार्य रूप से रहती हैं. ये निबंध 'व्यास-शैली' में लिखे जाते हैं.

वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबंध में स्थूल भेद यह है कि वर्णनात्मक निबंध में स्थानगत वर्णन होता है, और विवरणात्मक निबंध में कालगत वर्णन होता हैं.

1.4.3 *भावात्मक निबंध*

भावात्मक - निबंधों में चिंतन की अपेक्षा भावना की, बुद्धि की अपेक्षा रागवृत्ति की प्रधानता रहती है. इनका सीधा सम्बन्ध 'हृदय' से होता है. निबंध लेखक पहले विषय के मार्मिक और हदयस्पर्शी स्थलों कों चुनता है. फिर उनका काल्पनिक या भावुक विवेचन करता हैं. अनुभूति, मनोवेग अथवा भावों की अतिशय अभिव्यंजना इन निबंधों में द्रष्टव्य है. इन निबंधों में निबंधकार सहृदयता, ममता, प्रेम, करुणा, दया आदि भावनाओं से युक्त व्यवहार को प्रकट करता है. इन निबंधों की भाषा कोमल शब्दों से युक्त, सरस तथा काव्यात्मक होती हैं. तभी तो पाठक निबंध को पढ़ते समय कविता पढ़ने जैसा आनन्द का अनुभव करते हैं.

1.4.4 *साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध*

किसी साहित्यकार, साहित्यिक विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबंध साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध कहलाता है, जैसे मुंशी प्रेमचंद, तुलसीदास, आधुनिक हिन्दी कविता, छायावाद हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग आदि. ऐसे निबंधों के लेखन के लिए विषय का गम्भीर और विस्तृत अध्ययन अपेक्षित होता हैं. प्रवृत्ति, विधा व साहित्यकार की रचनाओं के उद्धरण द्वारा विचारों व द्रष्टिकोण का स्पष्टीकरण होना चाहिए. ऐसे निबंध के लेखन में विषय के अनुरूप भाषा तथा शैली का होना आवश्यक हैं. इसमें ललित निबंध भी आते हैं. इनकी भाषा काव्यात्मक और रसात्मक होती है. ऐसे निबंध शोध पत्र के रूप में अधिक लिखे जाते हैं.

निष्कर्षत: कह सकते है कि हिंदी निबंध साहित्य गद्य की आधुनिक विधा होते हुए भी आज विशेष समृद्ध एवं परिपूर्ण हैं. निबंध साहित्य का नया उभरता रूप उसकी निरसता और बौद्धिकता का परिष्कार कर लेखक और पाठक में सामंजस्य स्थापित कर रहा हैं.

- ***बोध प्रश्न***

एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

1. *निबंध के कितने प्रकार हैं, कौन कौन से?*
2. *भावात्मक निबंधों में किसकी प्रधानता रहती है?*
3. *वर्णनात्मक निबंध किसे कहते हैं ?*
4. *ललित निबंध की भाषा कैसी होनी चाहिए ?*
5. *विवरणात्मक निबंध में किसकी प्रधानता होती है ?*

1.5 *हिंदी निबंध का विकास*

मुद्रणालयों की स्थापना के बाद आधुनिक काल की गद्य विधाओं में सबसे पहले 'निबंध' जनता के सामने आया. हिन्दी निबंधों को 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' कहा जा सकता है, क्योंकि उपन्यास और कहानी बंगला से प्रभावित थे, कविता-नाटक की परम्परा काफी लम्बे समय से चली आ रही होती हैं, पर निबंध तो इस माटी की नयी उपज हैं. इसमें हिन्दी भाषा-भाषी लोगों की माटी की गंध, स्वच्छंदता और यथार्थ के दर्शन होते हैं. फ्रांसीसी रचनाकार 'मॉटेन' को निबंध का जन्मदाता माना जाता है. निबंध के लिए एक विशेष शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इन्होंने ही किया था, जिसका अर्थ होता है- 'प्रयास'. डॉ.रमेश कुंतल मेघ ने 'निबंध' और 'लेख' दोनों की विशेषताओं से मिश्रित रचना को 'निलेख' नाम प्रदान किया था. मतवाला मंडल - शिवपूजन सहाय, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' एवं 'निराला' ये तीनों मतवाला मंडल के लेखक माने जाते हैं.

हिन्दी निबंध के सम्पूर्ण इतिहास को मुख्यत: चार भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. *भारतेन्दु युग -* 1857 *ई. से* 1900 *ई. तक*
2. *द्विवेदी युग -* 1900 *ई. से* 1920 *ई. तक*
3. *शुक्ल युग -* 1920 *ई. से* 1940 *ई. तक*
4. *शुक्लोत्तर युग -* 1940 *ई. से अब तक*

1.5.1 *भारतेन्दु युग (* 1857 *ई. से* 1900 *ई. तक)*

हिंदी निबंध लेखन की शुरुआत भारतेंदु युग से हुई है. भारतेंदुजी ने 1868 *ई. में 'कवि वचनसुधा' का प्रकाशन आरम्भ किया. इसके प्रकाशन ने हिंदी में साहित्यिक लेखन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया. बाद में स्वयं भारतेंदु ने 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' और 'बाला बोधिनी' पत्रिका की भी शुरुआत की. डॉ. नगेन्द्र के अनुसार ''भारतेन्दु युग*

के निबंध मुख्य रूप से मासिक और पाक्षिक पत्र' पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे. इनका उद्देश्य उपदेश, उद्बोधन, आह्वान, व्याख्या, व्यंग्य, हास्य आदि अनेक माध्यमों से जनता को शिक्षित और प्रबुद्ध करना था.'' इस युग में 'निबंध' प्रकाशन में निम्नलिखित पत्र – पत्रकाओं का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है–

1. हरिश्चन्द्र मैगजीन – भारतेन्दु हरिश्चंद
2. ब्राह्मण – प्रतापनारायण मिश्र
3. हिन्दी प्रदीप – बालकृष्ण भट्ट
4. आनंद– कादंबिनी – बदरी नारायण चैधरी
5. सदादर्श – लाला श्रीनिवास दास
6. भारतेन्दु – राधाचरण गोस्वामी

इस युग के निबंधों की मूल प्रेरणा तो समाज के नैतिक और राजनैतिक जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की भावना हैं. इसीलिए इस युग के निबंधकारों ने समाज सुधार, राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति अतीत–गौरव का प्रेम, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश आदि विषय को लेकर निबंध लिखे गए. इस समय हिंदी का कोई मानक रूप नही आया था फिरभी अपनी बात को प्रभावशाली विशेषकर हास्य और व्यंग्य के माध्यम से मुहावरों और लोकोक्तिओं का प्रयोग तथा तत्सम–तद्भव के साथ अरबी–फारसी–उर्दू शब्दों के साथ निबंधकारों ने निबंधों की रचना की.

इस युग के प्रमुख निबंधकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', लाला श्रीनिवासदास, अबिकादत्त व्यास, बालमुकुंद गुप्त जगमोहन सिंह, केशवराम भट्ट, राधाचरण गोस्वामी आदि हैं.

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार –

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 -1885)

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) साहित्य में युगप्रवर्तक माने जाते हैं. उन्होंने इतिहास, पुरातत्व, धर्म, समाज–सुधार, जीवनी, यात्रा वर्णन, भाषा आदि विषयों पर व्यंग्यात्मक शैली में निबंध लिखे विषयों की विविधता उनके विस्तृत अध्ययन और व्यापक 'जीवनानुभवों का परिणाम थी. उनके निबंधों में जहां इतिहास, धर्म, संस्कृति और साहित्य की गहरी जानकारी का परिचय मिलता है, वहीं देशप्रेम, समाज सुधार की चिंता और गौरवशाली अतीत के प्रति निष्ठा का भाव भी प्रकट होता है. इनके निबंधों में विषय के अनुरूप विविध प्रकार की भाषा – शैलियों का प्रयोग हुआ है. इनकी भाषा में अभिव्यंजना, सजीव बहुरूपता और मनमोहक स्वच्छता मिलती है. इनके निबंधों में अन्तर्विरोध और उपनिवेशवाद – विरोधी विचारधारा देखने को मिलती है. साहित्यिक निबंधों को छोड़कर इनके शेष निबंध विवरणात्मक श्रेणी में रखे जाते है. इनको हिंदी निबंध का जनक भी माना जाता है. भारतेंदुजी ने पुराततव, इतिहास, धर्म,

कला, समाज सुधार, जीवनी, यात्रावृतांत, भाषा, साहित्य आदि विषयों पर निबंध लिखे.

भारतेंदु के प्रमुख निबंधों में देखे तो– 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती हैं', 'लेवी प्राण लेवी' और 'जातीय संगीत' में राष्ट्र के प्रति उनकी गहरी निष्ठा व्यक्त हुई है तो 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन', 'पाँचवें पैग़म्बर', 'कानून ताजीरात शौहर, 'ज्ञात विवेकिनी सभा', 'अंग्रेज़ स्तोत्र', 'कंकड़ स्तोत्र' जैसे निबंधों में उनकी राजनीतिक चेतना के साथ ही व्यंग्य–विनोद की क्षमता का पता लगता है. 'काश्मीर कुसुम', 'उदयपुरोदय', 'कालचक्र', 'बादशाह दर्पण', 'सुलोचना', 'लीलावती' आदि उनके निबंधों के संग्रह हैं.

2. *बालकृष्ण भट्ट* (1844–1914)

बालकृष्ण भट्ट इस युग के प्रमुख एवं सर्वाधिक समर्थ निबंधकार हैं. इन्होंने लगभग एक हजार निबंध लिखे है. इनको 'हिन्दी का मॉटेन' कहा जाता है. आचार्य शुक्ल ने इनको 'हिन्दी का स्टील' कहा है. भट्ट जी ने 1872 *ई. में 'हिन्दी–प्रदीप' का संपादन प्रारम्भ किया था तथा वे ३३ वर्षों तक इसे प्रकाशित करते रहे थे. इनके निबंधों में विषयवस्तु और शैली दोनों का वैविध्य मिलता है. इन्होंने सामाजिक समस्याओं पर अपनी लेखनी जमकर चलायी है. उन्होंने समाज, साहित्य, धर्म, संस्कृति, रीति, प्रथा, भाव, कल्पना सभी को लेकर निबंधों की रचना की हैं. उनके निबंधों में हास्य–विनोद के साथ कल्पना, भावना और वैचारिकता भी दिखाई देती हैं. उनके प्रमुख निबंधों में देखे तो – 'बाल–विवाह', 'स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा', 'राजा और प्रजा', 'पुरुष अहेरी की स्त्रियाँ अहेर हैं', 'शंकराचार्य', 'नानक', 'आँख', 'अकिल अजीरन रोग', 'इंग्लिश पढ़े सो बाबु होय', 'महिला स्वातंत्र्य' आदि. उनके निबंध 'भट्ट निबंधावली' (दो भाग) में संकलित हैं.*

3. *प्रतापनारायण मिश्र* (1856-1894)

*प्रतापनारायण मिश्र (*1856-1894*)* **:** *इनका हिंदी निबंध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है. उनमें तीखे व्यंग्य और विनोद की वृत्ति थी, जिसका उल्लेख स्वयं रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में किया है. इनकी भाषा में 'व्यंगपूर्ण वक्रता' की मात्रा अधिक है. इसके लिये वे लोकोक्तिओं और मुहावरों का भी प्रयोग करते हैं. इनकी भाषा में स्खलन, घरूपन और ग्रामीण चंचलता देखने को मिल जाती है अर्थात् भाषा संबंधी अनेक दोष प्राप्त होते हैं. इन्होंने 'ब्राह्मण' नामक पत्र का संपादन कार्य किया था. भातेन्दुजी के प्रति इनके मन में अगाध श्रद्धा थी. आचार्य शुक्ल ने इनको 'हिन्दी का एडीसन' कहा है. मिश्र जी के प्रमुख निबंधों में देखे तो 'आँख','भौं', 'बुढ़ापा', 'होली', 'धोखा', 'शिवमूर्ति', 'काल', 'स्वार्थ', 'विश्वास', 'नास्तिक','इश्वर की मूर्ति', 'ह' 'द', 'आँसू', प्रेम बाण के सैलानी' आदि निबंधो को देखा जा सकता हैं.*

4. *बाल मुकुंद गुप्त (* 1865-1907)

बालमुकुन्द गुप्त भारतेंदु युग के प्रतिभावान निबंधकार हैं. गुप्त जी ने 'बंगवासी' और 'भारतमित्र' पत्रिकाओं का सम्पादन किया. इन पत्रिकाओं के माध्यम से ही उनके निबंध प्रकाशित हुए. इनके निबंधों में विदेशी शासकों की नीतियों पर मीठा व्यंग्य किया गया है. ये 'शिवशंभू' के उपनाम से लेखन कार्य करते थे. इनके चिट्ठे 1904-05 *ई. में 'भारत मित्र' में प्रकाशित हुए थे. तत्कालीन गवर्नर जरनल लार्ड को सम्बोधित करके लिखे गए है. उनके निबंधों में गहन चिंतन, तीखा व्यंग्य, और मीठी हँसी का समावेश मिलता है. 'शिवशंभु का चिट्ठा' के आठों चिट्ठे उनकी देशभक्ति की भावना के द्योतक तो हैं ही, व्यंग्य और गहरी विचारशीलता के भी परिचायक हैं. इनके निबंधों का संग्रह 'गुप्त निबंधावली' नाम से प्रकाशित हुआ है.*

इसके अलावा राधाचरण गोस्वामी, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', अम्बिकादत्त व्यास आदि को भी इस युग के प्रमुख निबंधकारो में गिने जा सकते हैं. जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य किया तो मुहावरे और काव्यात्मक शैली का सामंजस्य उनके निबंधों में दिखाई देता हैं.

1.5.2. *द्विवेदी युग (* 1900 *ई. से* 1920 *ई. तक)*

हिंदी निबंध के द्वितीय उत्थान की बात करें तो वह द्विवेदी युग माना जाता हैं. 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' और 'सरस्वती' के प्रकाशन से इस युग में राष्ट्रीय चेतना अधिक परिपक्व हो गयी. ये युग राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक नवजागरण के साथ भाषा के नये रूप के परिष्कार का युग हुआ. इससे निबंधों के विषयों में भी बदलाव आया. विषयों में हास्य-व्यंग्य-परिहास के स्थान पर विचारों की गम्भीरता, भाषा की शुद्धता और व्याकरण सम्मतता दिखाई देती हैं. इस युग के प्रमुख निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, चंद्रधरशर्मा गुलेरी, सरदार पूरनसिंह, बाबू श्याम सुंदरदास का नाम लिया जा सकता हैं.

- ***द्विवेदी युग के प्रमुख निबंधकार***

1. *महावीर प्रसाद द्विवेदी (* 1864 - 1938 *)*

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अधिकांश निबंध परिचयात्मक या आलोचनात्मक टिप्पणियों के रूप में लिखे हैं. ये 'बेकन' को अपना आदर्श मानते थे और उन्होंने उनके निबंधों का अनुवाद 'बेकन विचार रत्नावली' में किया हैं. द्विवेदीजी ने 1903 *से* 1920 *तक 'सरस्वती' का प्रकाशन किया. इसके माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को प्रौढ़ता और नवीनता प्रदान की. उन्होंने अनेक प्रकार के उपयोगी, ज्ञान विषयक, ऐतिहासिक, पुरातत्व तथा समीक्षा संबंधी निबंध लिखे. उनके प्रमुख निबंधों में देखे तो 'कवि और कविता', 'साहित्य की महत्ता', 'एक योगी की साप्ताहिक*

समाधि', 'अद्भुत इंद्रजाल', 'क्रोध', लोभ', लेखांजली', 'साँची के पुराने स्तूप', कालिदास का आत्मनिवेदन', 'अतीत स्मृति' आदि को देखा जा सकता हैं.

2. *माधव प्रसाद मिश्र (* 1856 – 1894 *)*

मिश्रजी द्विवेदी युग के एक प्रभावशाली लेखक है.इन्होने 'वैश्योपकारक' एवं 'सुदर्शन' पत्रिका का सम्पादन किया. भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य के प्रति उनकी गहरी आस्था थी. उनकी शैली ओज और प्रवाह से पूर्ण हैं. इन्होंने जीवन-चरित्र, पुरातत्व, पर्व-त्यौहार, साहित्य, राजनीती, भूगोल, संस्कृति आदि से सम्बन्धित विविध विषयों पर निबंध लिखे.उनके प्रमुख निबंधों में 'रामलीला', परीक्षा', 'धृति', 'क्षमा', 'सब मिटटी हो गया', 'श्रीपंचमी', 'बेवर का भ्रम' आदि को देख सकते हैं.

3. *चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (* 1883 -1922 *)*

गुलेरीजी द्विवेदी युग के महत्वपूर्ण निबंधकार है. उनके निबंधों में अध्ययन की गम्भीरता एवं विचारों की नवीनता के दर्शन होते हैं. इनमे मार्मिक व्यंग्य, पांडित्य की छाप और व्यक्तित्व का आकर्षण दिखाई देता हैं. उनकी भाषा अधिकतर चलते हुए शब्दों से बनी हुई है. वे छोटे-छोटे मगर भावपूर्ण वाक्यों की रचना करते थे. इतिहास, संस्कृति, साहित्य, और भाषा के प्रकांड पंडित होने के कारण उन्होंने इन्ही विषयों में खोजपूर्ण और गम्भीर निबंध लिखे हैं. उनके प्रमुख निबंधों में 'कछुआ धर्म', 'मारेसि मोहि कुठाव', 'विक्रमोवर्शीय की मूल कथा', 'गोबर गणेश संहिता', 'अमंगल के स्थान पर मंगल' निबंधों को देखा जा सकता हैं.

4. *सरदार पूरनसिंह (* 1881-1931 *)*

सरदार पूरनसिंह द्विवेदी युग के अकेले ऐसे निबंधकार हैं जिन्होंने केवल छह निबंधों के बल पर श्रेष्ठ निबंधकार माने गये. इनके निबंध नैतिक और सामाजिक विषयों से सम्बन्धित हैं. इनमे आवेगशील और व्यक्तित्व व्यंजक लाक्षणिक शैली का प्रयोग हुआ हैं. उनकी भाषा संकेत सम्पन्न और भाव- व्यंजक हैं. उनके निबंध निम्नलिखित हैं- 'आचरण की सभ्यता', 'सच्ची वीरता', 'मजदूरी और प्रेम', 'पवित्रता', 'कन्यादान' और 'अमेरिका का मस्ताना जोगी-वाल्ट व्हिटमैन'.

5. *बाबू श्यामसुंदर दास (* 1875-1944 *)*

बाबू श्यामसुंदरदास के अधिकांश निबंध आलोचनात्मक निबंध लिखे. उनके विषय प्रायः साहित्यिक और सांस्कृतिक रहे. इनमें विचारों और भावों का प्रवाह निरंतर जारी रहता है. श्यामसुंदरदास की भाषा संस्कृतनिष्ठ और प्रवाहपूर्ण थी. बोलचाल अथवा उर्दू के शब्दों का व्यवहार उन्होंने कम ही किया है. उनके विचारात्मक निबंधों में व्यास शैली के दर्शन होते हैं. उनके प्रमुख निबंधों में

'भारतीय साहित्य की विशेषताएँ', 'समाज और साहित्य', 'कर्तव्य और सभ्यता', 'हमारे साहित्योदय की प्राचीन कथा', 'गद्य कुसुमावली' आदि निबंधसंग्रह हैं.

इसके आलावा देखे तो अन्य निबंधकारों में पं.गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, गोविन्द नारायण मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', मिश्रबन्धु, पद्मसिंह शर्मा आदि द्विवेदी युग के महत्वपूर्ण निबंधकार हैं.

1.5.3. *शुक्ल युग (* 1920 *ई. से* 1940 *ई. तक)*

हिंदी निबंध के विकास में तीसरा चरण शुक्ल युग है. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विषय, भाषा और शैली सभी दृष्टियों से हिंदी निबंधों को एक नई दिशा प्रदान की. निःसन्देह आचार्य राम चन्द्र शुक्ल को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ निबंधकार कहा जा सकता है. द्विवेदी युग के बाद निबंधों का विकास इन्हीं के व्यक्तित्व से पहचाना जाता है. इसलिए इन्हीं के नाम पर इस युग का नामकरण किया गया है. इसने पाठकों के समक्ष नवीन विचार, नव अनुभूति एवं नई शैली उपस्थित की. इस युग के निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, गुलाब राय, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रा नन्दन पंत, पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, आचार्य नंन्द दुलारे वाजपेयी, शांति प्रिय द्विवेदी, प्रेमचन्द, राहुल सांकृत्यायन, रामनाथ सुमन, माखन लाल चतुर्वेदी, पदुम लाल पुन्नालाल बख्शी, वियोगी हरि, रामकृष्ण दास, वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ. रघुवीर सिंह आदि उल्लेखनीय है.

- ***शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकार***

1. *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (* 1884-1941 *)*

शुक्लजी को 'निबंधसम्राट' कहा गया हैं. उनके निबंध 'चिंतामणी' के तीन भागों में संकलित हैं. 'चिंतामणी' को पहले 'विचार-वीथि' के नाम से प्रकाशित करवाया था. शुक्लजी हिंदी के कलात्मक निबंधों के जन्मदाता माने जाते हैं. उन्होंने अपने निबंधों में मनोभाव और सामाजिक पक्ष के साथ साथ साहित्य के गम्भीर विषयों पर निबंध लिखे हैं. उन्होंने विषय, भाषा और शैली सभी दृष्टियों से हिंदी निबंधों को उत्कृष्ट बनाया हैं. उन्होंने प्रायः तीन तरह के निबंधों लिखे हैं - 1) *सैद्धांतिक आलोचनात्मक निबंध,* 2)*व्यावहारिक आलोचनात्मक निबंध,* 3) *मनोवैज्ञानिक निबंध. उनके प्रमुख निबंध है- 'उत्साह', 'भय', 'क्रोध', 'श्रद्धा और भक्ति', 'लोभ और प्रीति', 'ईर्ष्या', 'करुणा', 'लज्जा और ग्लानी', 'कविता क्या है', 'तुलसी का भक्ति मार्ग', 'मानस की धर्मभूमि', 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद', 'रसात्मक बोध के विविध रूप' आदि को देखे जा सकते हैं.*

2. *बाबु गुलाबराय* (1888-1953)

गुलाबराय का नाम निबंध साहित्य में इसलिए उल्लेखनीय हैं कि वह मुख्यतः आत्मपरक और व्यंग्यमूलक होने के साथ-साथ लेखक के पांडित्य और जीवन दर्शन की छवि प्रस्तुत करते हैं. इन्होने अपने निबंधों में सरल, स्वच्छ, स्पष्ट और भावव्यंजक भाषा का

प्रयोग किया हैं. संस्कृत, उर्दू, देशज, अंग्रेजी शब्द सहज रूप से ही निबंध में ग्रहण किये गये हैं. इनके निबंधों को चार श्रेणी में विभाजित किया जा सकता हैं. १.दार्शनिक व् विचारात्मक २.साहित्यिक व् समीक्षात्मक ३.आत्म संस्मरणात्मक ४.हास्य विनोदात्मक. उनके कई निबंध संग्रह हैं. जैसे- 'ठलुआ-क्लब', 'मेरी असफलताएँ', 'मन की बातें', 'मेरे निबंध', 'फिर निराश क्यों', 'कुछ उथले कुछ गहरे', 'अध्ययन और आस्वाद', मनोवैज्ञानिक निबंध'. उनके प्रमुख निबंधों की बात करें तो – 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ', 'प्रीतिभोज', 'मेरा मकान' आदि निबंधों को हम देख सकते हैं.

3. *राहुल सांकृत्यायन* (1893-1963)

राहुल सांस्कृत्यायन बहुभाषाविद्, पर्यटक, साहित्यकार, अन्वेषक और पुरातत्ववेत्ता थे. उनके पुरातत्वविषयक निबंध 'पुरातत्व निबंधावली' में प्रकाशित है. 'साहित्य निबंधावली' में भाषा और साहित्य विषयक निबंध संकलित हैं. उनके यात्रा विवरणों को उत्कृष्ट निबंधों की कोटि में रखा जा सकता है. राहुल जी विषय के जानकार और ज्ञानी थे. इस कारण वे अपने निबंधों में नये-नये तथ्यों का समावेश करते थे. राहुल जी ने अपने निबंधों में तत्कालीन विषयों को ग्रहण किया. 'मातृभाषाओं का प्रश्न', 'प्रगतिशील लेखक', 'हमारा साहित्य', 'भोजपुरी', आदि निबंध बहुचर्चित समस्याओं को छेड़ते हैं. उनमें निबंधकार की अपनी तर्क पद्धति और चिंतन प्रक्रिया दिखायी देती है.

4. *पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी* (1894-1971)

बख्शी जी ने अपने निबंधों में मौलिकता का प्रतिपादन करते हुए नवीन शैली का आदर्श प्रस्तुत किया है. उनके निबंधों के विषय अति सरल हैं. उनकी शैली की विशेषता अन्य निबंधकारों में नहीं मिलती है.उनके प्रमुख निबंद हैं- 'अतीत स्मृति', 'उत्सव', 'रामलाल पंडित', 'श्रद्धांजली के दो फूल', 'एक पुरानी कथा', 'बन्दर की शिक्षा'. उनके निबंध संग्रह हैं – 'पंचपात्र', 'विश्व साहित्य', 'प्रबंध पारिजात', 'मकरंद बिन्दु', 'त्रिवेणी', 'कुछ और कुछ', 'बख्शीजी के निबंध', 'यात्री' आदि उनके महत्वपूर्ण निबंधसंग्रह हैं. उनके निबंधों में आत्माभिव्यक्तिके दर्शन होते हैं.

5. *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'*

कवि के रूप में प्रख्यात निरालाजी का गद्य में भी बहुत बड़ा योगदान रहा हैं. उनके निबंध मुख्यतः काव्य, साहित्य और हिंदी भाषा की अपनी समस्याओं से सम्बद्ध हैं. उनकी गद्यशैली यथार्थवादी है. अपने अनुभवों को सामान्य किन्तु चुस्त तरीके से सरल भाषा में कह देते है. छोटे-छोटे वाक्य, शब्द, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आदि को ग्रामीण परिवेश से लेकर जनभाषा का प्रयोग किया हैं. उनके प्रमुख निबंधसंग्रहों में देखे तो – 'प्रबंध पदम्', 'प्रबंध प्रतिमा', 'चयन', 'चाबुक' आदि को देखा जा सकता हैं. जिनमे उनके निबंध संग्रहित हैं.

इसके अलावा भी कई निबंधकार हैं जैसे — प्रेमचन्द, सियारामशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद,शिवपूजन शय, पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र', राय कृष्णदास, बनारसीदास चतुर्वेदी, पं. श्रीराम शर्मा आदि शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकारो में गिने जा सकते हैं. निबंध विधा के विकास में इनका योगदान महत्वपूर्ण माना जा सकता हैं.

1.5.4. *शुक्लोत्तर युग* - 1940 *ई. से अब तक*

शुक्ल युग के बाद आता हैं शुक्लोत्तर युग. शुक्ल युग में निबंध अधिक गम्भीर,साहित्यिक और विवेचनापूर्ण होगये. जो वैयित्तिक्रता भरतेंदु युग के निबंधों में दिखाई देती थी वो शुक्ल युग में कहीं खो सी गई. लेकिन शुक्ल युग के बाद फिर से निबंधों में वैयत्तिक्रता दिखाई देने लगी. जिसके कारण निबंध की अनेक शैलियाँ सामने आई. जिससे निबंध विधा को एक नई पहचान मिली और निबंध लेखन को उत्कर्ष पर पहूँचाया. अब इन शैलीयों को हम क्रमशः जानेंगे.

1. *वैचारिक निबंध*

शुक्लजी के बाद भी वैचारिक निबंध लिखने की परम्परा चालू रही. जिसमे विचारों की तर्कपूर्णता के साथ-साथ स्पष्टता और चिन्तन दिखाई दे रहे थे. इनके प्रमुख निबंधकारों में जैनेन्द्र, डॉ.सम्पूर्णानन्द, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नगेन्द्र आदि को याद किया जा सकता है.

जैनेद्र ने अपनी विशिष्ट शैली में निबंधों को लिखा जिसमें उन्होंने समस्या के दार्शनिक पहलू को जोड़ते हुए जीवन के सत्य के साथ मिला दिया. इनके निबंध 'समय और हम' पुस्तक में सम्मिलित हैं.

डॉ. सम्पूर्णानन्द के निबंधों में दार्शनिक विवेचन है लेकिन जटिलता नही हैं. 'शिक्षा की समस्या' उनका प्रमुख विचार प्रधान निबंध है.

डॉ. रामविलास शर्मा इन्होने ज्यादा साहित्यिक विषयों पर आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं. इसके आलावा राजनीतिक, सामाजिक विषयों पर भी निबंध लिखे हैं. इनके निबंध 'विराम चिन्ह' निबंधसंग्रह में संकलित हैं.
डॉ. नगेन्द्र ने मुख्यतः तो काव्यशास्त्र और साहित्य के गम्भीर विषयों पर निबंध लिखे हैं. इसके साथ साथ लेखकों और कवियों पर भी निबंध लिखे. उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ मानक हिंदी हैं. उनके प्रमुख निबंधसंग्रह हैं - 'विचार और विवेचन', 'विचार और अनुभूति', 'आस्था के चरण' आदि.

2. *ललित निबंध*

व्यक्तिपरक निबंधों में ललित निबंध का समावेश हो जाता हैं. हिंदी साहित्य में ललित निबंधों की शुरूआत आधुनिक युग में हुई हैं. 'ललित' शब्द सन् 1940 *के बाद रचित हिंदी के व्यक्ति-व्यंजक निबंधों के लिए रूढ़ हो गया है. 'ललित निबंध' निबंध*

के साथ 'ललित' विशेषण से बना है. 'ललित निबंध' में 'ललित' का अर्थ है – सुंदर, मनोहर वस्तु के संदर्भ में ललित शब्द का प्रयोग किया जाता है. 'ललित' शब्द 'लल्' क्रिया से 'क्त' प्रत्यय लगकर बना है, जिसका अर्थ है – सुंदर. अर्थात् सुंदर तथा मनोहारी निबंध को हम ललित निबंध कह सकते हैं. श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ललित निबंध की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि 'ललित वह है जो मनुष्यता को ललित करने के लिए प्रयुक्त हो.' ललित निबंधों में रचनाकार के व्यक्तित्व की छाप रहती है. ललित निबंध के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ललित निबंधकारो में मुख्य रचनाकार हैं. उनके निबंधों में मानवतावादी जीवन दर्शन और भावुक हृदय के दर्शन होते हैं. उन्होंने ललित निबंध का स्वरूप गठित किया. उनके निबंधों में देशज शब्दों के साथ-साथ संस्कृत के प्रचलित शब्द पाए जाते हैं तथा उनके निबंधों की भाषा लचीली है. उनके निबंधसंग्रहों में 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता' 'आलोकपर्व', 'कुटज' को देख सकते हैं. 'अशोक के फूल' और 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' उनके प्रसिद्ध निबंध हैं.

विद्यानिवास मिश्र का नाम ललित निबंधकारों में गिना जाता है. वो संस्कृत और साहित्य के विद्वान है. उनके निबंधों में पांडित्य के साथ साथ लोक-संस्कृति को भी देख सकते हैं. उनके प्रमुख निबंधसंग्रह में देखे तो 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', 'छितवन की छाँह', 'तुम चंदन हम पानी', 'तमाल के जरोखे से', 'संचारिणी', 'ला रंग हरी', 'शिरीष के याद आयी' आदि को देख सकते हैं.

कुबेरनाथ राय के निबंधों में 'गन्धमादन', 'कामधेनु', 'मन पवन की नौका', 'अंधकार में अग्नि शिखा', 'आगम की नाव', 'हरी हरी दूब' और 'लाचार क्रोध' आदि को देख सकते हैं.

विवेकी राय के प्रमुख निबंधों में देखे तो 'फिर बैतवा दल पर', 'किसानों का देश', 'त्रिधारा', 'गंवई गंध गुलाब', 'आम रास्ता नही है', 'बबूल' को देख सकते हैं.

3. *व्यंग्य निबंध*

व्यंग्य निबंध लेखन की शुरुआत वैसे तो भारतेंदु युग में ही हो गी थी इस युग के रचनाकारों ने कई व्यंग्य निबंध लिखे. लेकिन व्यंग्य निबंध को स्वतंत्र रूप से स्थापित करने का श्रेय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हरिशंकर परसाई को जाता है. उन्होंने व्यंग्य को स्वतंत्र साहित्य-रूप में प्रतिष्ठित किया. व्यंग्य निबंध में सामाजिक, राजनितिक, जागरूकता को लेकर निबंध लिखे जाते हैं. निबंध में कोई समस्या को उठाकर उनकी गहराई में जाकर उनके अंतर्विरोधी पहलुओं को उद्घाटित किया जाता हैं.जो बात साफ तौर पर हम नही देख पते उसे इसमें व्यंजित किया जाता हैं. व्यंग्य से हमे एक नि द्रष्टि

मिलती हैं जिससे जागरूकता लाई जा सकती हैं.प्रमुख व्यंग्य निबंधकारो की बात करे तो हरिशंकर परसाई, गोपाल प्रसाद व्यास, प्रभाकर माचवे आदि को देख सकते हैं.

हरिशंकर परसाई के निबंधसंग्रहों में देखे तो 'भुत के पाँव पीछे', 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र', 'निठल्ले की डायरी', 'तुलसीदास चन्दन घिसे', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'प्रेमचन्द के फटे जूते' आदि व्यंग्य से भरे निबंधसंग्रह हैं. उनके निबंधों में भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता, नौकरशाही, शासन के ढीलेपन आदि पर तीव्र प्रहार किया हैं.

गोपाल प्रसाद व्यास के निबंधों में शुध्ध हास्य का रूप मिलता हैं. उन्होंने अपने निबंधों में पारिवारिक असंगतियों और युग जीवन की विकृत्तियों का उपहास उड़ाया गया हैं. उनके प्रमुख निबंधों में देखे तो 'मैने कहा', कुछ सच कुछ झूठ', 'तो क्या होता', 'हलो-हलो' आदि को देख सकते हैं.

प्रभाकर माचवे का नाम भी व्यंग्यकार के रूप में प्रसिध्ध हैं. उनके निबंधों में आदर्शों का ढोल पीटने वाले लोगों की स्वार्थपरता और अश्लीलता की पोल खोली गई हैं. उनकी भाषा में हास्य तथा चिन्तन दिखाई देते हैं. उनके प्रमुख निबंध संग्रहों की बात करे तो – 'खरगोश के सींग', 'संतुलन', 'बेरंग', 'तेल की पकौड़ियाँ' आदि को देख सकते हैं. 'खरगोश के सिंग' संग्रह में मुँह, गला, गाली, बिल्ली आदि निबंध संग्रहित हैं.

इसके अलावाएसे की निबंधकार हैं जिन्होंने हिंदी निबंध को एक नये आयाम पर पहोचाया हैं जिसमे रामधारीसिंह 'दिनकर', महादेवी वर्मा, धर्मवीर भारती, कुबेरनाथ राय, रामदरश मिश्र, अज्ञेय, मुक्तिबोध, निर्मल वर्मा, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि प्रमुख हैं.

- ***बोध प्रश्न***

जोड़ मिलाइए

2. *ब्राह्मण*	-	1. *भारतेन्दु हरिश्चंद*
3. *हरिश्चन्द्र मैगजीन*	-	2. *प्रतापनारायण मिश्र*
4. *हिन्दी प्रदीप*	-	3. *बालकृष्ण भट्ट*
5. *आनंद- कादंबिनी*	-	4. *बदरी नारायण चैधरी*
6. *सदादर्श*	-	5. *बाल श्री निवास दास*

1.6 *सार-बिंदु*

इस इकाई को पढने के बाद हम जान गये कि निबंध हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा हैं. जिनको

- *हिंदी निबंध की शुरूआत आधुनिक युग से हुई है.*
- *निबंध में लेखक अपने भावों और विचारों को प्रभावशाली भाषा और शैली में व्यक्त कर सकता है.*

- *निबंध के कई प्रकार हैं. जैसे – वर्णनात्मक निबंध, विवरणात्मक निबंध, भावात्मक निबंध, साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध.*
- *निबंध का विकास कई चरणों में हुआ. जैसे– भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोतर युग.*
- *भारतेंदु हिंदी निबंध के जनक माने जाते हैं. शुक्लजी ने निबंध को परिनिष्ठित किया और एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में स्थापित किया.*
- *इन चरणों के अंतर्गत कई सारे निबंधकारो ने अपने निबंधों की रचना की और हिंदी निबंध को समृद्ध बनाया.*
- 1940 *के बाद निबंधों की रचना में कई बदलाव हुए और नई शैली में निबंधों की रचना हुई. जिसमे ललित निबंध, वैचारिक निबंध, व्यंग्य निबंध आदि की रचना हुई. हमने इन सारी बातो की जानकारी इस इकाई में प्राप्त की.*

1.7 *परीक्षापयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए :***

1. *निबंध का अर्थ बताते हुए उनके प्रकारों की चर्चा कीजिए.*
2. *हिंदी में निबंध विधा के विकास के चरणों की विस्तृत चर्चा कीजिए.*
3. *शुक्लोत्तर युग में विकसित निबंध शैलीयों की विस्तृत जानकारी दीजिए.*

- ***टिप्पणी लिखिए :***

1. *निबंध परिभाषा*
2. *निबंध प्रकार*
3. *ललित निबंध*
4. *भारतन्दु हरिश्चन्द्र*
5. *द्विवेदी युग के निबंधकार*
6. *निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल*
7. *व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई*

1.8 *उपयोगी पाठ्य सामग्री*

1. *हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल*
2. *हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेन्द्र*
3. *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. ओमप्रकाश गुप्त – डॉ.वीरेंद्रनारायण सिंह, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद.*
4. https://www.nityastudypointbn.com/2021/10/Nibandh-kya-hai-nibandh-ke-prakar.html
5. https://www.vyakarangyan.com/2022/01/shukl-yudh-ke-nibandh-aur-nibandhkaar.html

इकाई 2 'जीवनी', 'आत्मकथा', 'संस्मरण', 'यात्रावृत्त' विधाओं का परिचय

रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 जीवनी

2.4 आत्मकथा

2.5 संस्मरण

2.6 यात्रावृतांत

2.7 सारबिंदु

2.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

2.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.1 उद्देश्य

इकाई - 1 में हमने निबन्ध विधा के बारे में जाना, जिसमें हमने निबन्ध का अर्थ, परिभाषा, प्रकार और विकास के साथ साथ उनके लेखकों के बारे में जाना , इकाई–2 में हम हिंदी की दूसरी विधाएँ जैसे जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण,यात्रावृतांत के बारे में जानेंगे.

- *जीवनी विधा का परिचय प्राप्त करके हिंदी की प्रमुख जीवनियों के बारे में जान सकेंगे.*
- *आत्मकथा विधा का परिचय प्राप्त करके हिंदी की प्रमुख आत्मकथा के बारे में जान पाएँगे.*
- *संस्मरण विधा का परिचय प्राप्त करके हिंदी के प्रमुख संस्मरण के बारे में जान पाएँगे.*
- *यात्रावृतांत विधा का परिचय प्राप्त करके हिंदी के प्रमुख यात्रावृतांत का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.*

2.2 प्रस्तावना

हमारे हिंदी साहित्य में शरू से देखे तो ज्यादातर रचनाएँ पद्य में ही लिखी जाती थी जो आधुनिक युग तक आते आते गद्य में रचनाएँ होने लगी. हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में पश्चिम के सम्पर्क में आने के कारण भारतेंदु युग से ही कई नई विधाएँ

अस्तित्व में आई. ये विधाएँ गद्य में लिखी जा रही थी, जिनमे उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृतांत आदि को हम देख सकते हैं.

पस्तुत इकाई में हम जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण,यात्रावृत आदि विधाओं का परिचय प्राप्त करेंगे. ये सभी साहित्य की नई विधाएँ हैं. इन विधाओं की शरुआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है. पत्र - पत्रिकाओं का प्रचार बढने से इन विधाओं का ज्यादा विकास हुआ. अब हम क्रमशः इन विधाओं के बारे में बात करेंगे.

2.3 *जीवनी*

बाकि सब गद्य विधाओं की भाँति जीवनी की शुरूआत भी भारतेंदु युग से ही हुई है. जीवनी का मतलब किसी विशिष्ट व्यक्ति का सांगोपांग चित्रण करना, अर्थात् जन्म-तिथि-क्रम से घटनाओं को माध्यम बनाकर उस विशिष्ट व्यक्ति के बारे में लिखना. जीवनी को लिखने के लिए जिस सामग्री का उपयोग किया जाता है वो सम्पूर्ण प्रामाणिक होनी चाहिए जिसे विभिन्न प्रकार के स्रोतों से प्राप्त की जाती है. जैसे -

i. *उस विषय या उससे संबंधित विषयों पर लिखित पुस्तकों या लेखों से,*
ii. *चरितनायक के पत्रों, डायरी और साक्षात्कार विवरणों से,*
iii. *चरितनायक के समकालीनों के संस्मरण से,*
iv. *चरितनायक से छूनेवाली जो जीवन को संबंधित स्थानों की यात्रा से प्राप्त तथ्यों से,*
v. *स्वयं चरितनायक के उसकी कृतियों और उत्सव आयोजनों में व्यक्त उद्गारों से*

जीवनी में ये जरूरी नही कि जीवन की सभी घटनाओं का वर्णन किया जाए परन्तु मुख्य घटनाएँ जो दिल को एक नया मोड़ देनेवाली जो घटनाएँ होती हैं उसका समावेश होना आवश्क हैं. कल्पना और मनगढ़त कहानिओं का उसमे कोई स्थान नही है. जीवनी में ली गयी सारी घटनाएँ क्रमबद्ध होनी चाहिए.

जीवनी लेखन की शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध यानि की भारतेंदु युग में पश्चिम के सम्पर्क से ही हो गई थी. स्वयं भारतेन्दु ने कालिदास, जयदेव, सूरदास, वल्लभाचार्य, मुगल बादशाहों एवम् अंग्रेज शासकों के जीवन-चरित्र से सम्बद्ध अनेक जीवनियाँ लिखी जो विविध ग्रंथों में संकलित हैं. विषय-निरूपण की दृष्टि से ये भारतेन्दु युग की सशक्त जीवनियाँ हैं. भारतेन्दु से प्रेरणा लेकर अनेक लेखकों ने इस दिशा में अच्छा कार्य किया. कार्तिकप्रसाद खत्री ने 'छत्रपति शिवाजी का जीवन-चरित्र', 'मीराबाई का जीवन-चरित्र' और 'अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र' नामक जीवनी लिखीं. रमाशंकर व्यास ने 'नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन-चरित्र' नामक जीवनी लिखी . प्रसिद्ध जीवनीकार देवीप्रसाद मुंसिफ ने 'राजा मालदेव का जीवन-चरित्र', 'अकबर नामा', 'राणा भीम' तथा जसवंतसिंह आदि जीवनी लिखकर इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया. राधाकृष्णदास ने 'कविवर बिहारीलाल', 'सूरदास' आदि साहित्यकारों से सम्बद्ध जीवनी

लिखी. प्रतापनारायण मिश्र और बालमुकुंद गुप्त ने भी जीवनी लिखकर जीवनी साहित्य को समृद्ध किया. इस तरह इस युग में तरह-तरह की जीवनियाँ लिखी गयीं फिरभी यह उल्लेखनीय है कि गद्य की अन्य विधाओं की भांति ही भाषा और शैली की अपेक्षित प्रौढ़ता जीवनी साहित्य में भी प्राय: कम मिलती है. अत: जीवनी साहित्य के विकास की दृष्टि से भारतेन्दु युग बाल्यकाल कहा जा सकता है.

भारतेंदुयुग से द्विवेदीयुग तक आते आते जीवनी लेखन को नई दिशा मिली और कई लेखक जीवनी लेखन करने के लिए प्रवृत्त हुए. स्वयं द्विवेदीजी ने जीवनीयाँ लिखी है, जो 'प्राचीन पंडित और कवि', 'सुकवि संकीर्तन', 'चरितचर्चा' आदि ग्रन्थों में संकलित है. द्विवेदीयुग में ऐतिहासिक महापुरुष, समाजसुधारक, राष्ट्रनेता, विदेशी महानुभावों की जीवनियाँ लिखी गयी. जैसे ऐतिहासिक में देखे तो कार्तिक प्रसाद की 'छत्रपति शिवाजी का जीवन चरित्र', बलदेव प्रसाद मिश्र का 'पृथ्वीराज चौहान', देवीप्रसाद का 'महराणा प्रतापसिंह', ज्वालादत्त शर्मा का 'सिक्खें के दस गुरू' आदि उल्लेखनीय जीवनियाँ है. समाज सुधारक में दयानन्द सरस्वती पर कई सारी जीवनियाँ लिखी गई जिसमे रामविलास शारदा की 'आर्य धर्मेन्दु', महर्षि दयाराम की 'दयानन्द चरितामृत', माधवप्रसाद मिश्र की 'विशुद्धानंद चरितावली' को देख सकते है. राष्ट्रनेता में स्वाधीनता आयोजन से जुड़े महापुरुषों की जीवनियाँ लिखी गई जिसमे महादेव भट्ट की 'लाजपत-महिमा', 'पारसनाथ त्रिपाठी की 'तपोनिष्ठ महात्मा', मुकुन्दीलाल वर्मा की 'अरविन्द घोष', सम्पूर्ण नन्द की 'कर्मवीर गाँधी' शीतलाचरण वाजपेयी की 'मदनमोहन मालवीय' आदि जीवनियाँ उल्लेखनीय है.

द्विवेदी युग से छायावाद तक आते आते जीवनी साहित्य का अपना अस्तित्व स्थापित हो चूका था. इस युग में जीवनी साहित्य में उल्लेखनीय कार्य हुआ. द्विवेदी युग में प्रचलित राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक चरित्रों के बारे में जीवनी लेखन का कार्य ज्यादा चला. राष्ट्रीय महापुरुषों की जीवनियाँ लिखनेवालों में नवजादिक लाल श्रीवास्तव की 'देशभक्त लाला लाजपतराय', ईश्वरी प्रसाद शर्मा की 'बाल गंगाधर तिलक', रामदयाल तिवारी की 'गांधी-मीमांसा', रामनरेश त्रिपाठी की 'गांधीजी कौन है ?', डो. राजेन्द्र प्रसाद की 'चंपारन में महात्मा गांधी', गणेशशंकर विद्यार्थी की 'श्री गांधी' तथा मंमथनाथ गुप्त की 'चन्द्रशेखर आझाद' प्रसिद्ध है. राष्ट्रीय महापुरुषों के अतिरिक्त प्रसिद्ध ऐतिहासिक वीर चरित्रों को लेकर भी जीनीवनियाँ लिखी गई. इनमें रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'पृथ्वीराज चौहान', संपूर्णानंद लिखित 'सम्राट हर्षवर्धन' चन्द्रशेखर पाठक द्वारा 'राणा प्रतापसिंह', गौरीशंकर हीराचन्द ओझा लिखित 'चन्द्रगुप्त' आदि. इनके अलावा विभिन्न क्षेत्रों की प्रभावशाली महिला जीवन चरित्र भी लिखे गये हैं. इनमें शिवव्रतलाल वर्मन लिखित 'सच्ची देवियाँ' मनोरमा बाई लखित 'विद्योत्तमा', जहुरबख्श लिखित 'आर्य महिलारत्न', जटाधर प्रसाद शर्मा लिखित 'अहिल्याबाई' आदि प्रसिद्ध जीवनियाँ है.

स्वतन्त्रता के बाद के जीवनी विकासक्रम को हम 'छायावादोत्तर कालीन जीवनी' शीर्षक के नाम से जान सकते है. इस काल में जीवनी साहित्य चरमोत्कर्ष पर था. हिंदी के कई प्रसिद्ध लेखक इसकी और आकृष्ट हुए.जिन्होंने ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, सामाजिक हस्तिओं के साथ-साथ साहित्यकारों की जीवनियाँ लिखी तो विदेशी महापुरुषों के जीवन चरित्र लिखे भी और श्रेष्ठ जिवानिओं के अनुवाद भी हुए. इस युग में महात्मा गाँधी से सम्बन्धित जीवनियाँ सर्वाधिक लिखी गई है. जिनमे घनश्याम बिडला, काका कालेलकर, डॉ.राजेन्द्रप्रसाद एवं जैनेन्द्रकुमार द्वारा लिखित जीवनियाँ महत्वपूर्ण हैं. विदेशी विद्वान रोमारोला द्वारा लिखित गांधीजी की जीवनी 'महात्मा गाँधी : विश्व के अद्वितीय पुरुष' को तिन्भागो में अनुदित किया गया है.जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. गांधीजी के अलावा जवाहरलाल नेहरु, भगतसिंह, सुभाषचंद्र बोझ आदि के उपर जीवनियाँ लिखी गई.रामनाथ सुमन, रामवृक्ष बेनीपुरी, मातासेवक पाठक, वियोगी हरी, लक्ष्मीनारायणलाल आदि ने राजनीति से जुड़े महापुरुषों की जीवनियाँ लिखी.

इस युग में इतिहास के अमरपात्रों को लेकर भी जीवनियाँ लिखी गई जिसमे लाला लाजपतराय की 'छत्रपति शिवाजी', भीमसेन विद्यालंकार की 'शिवाजी' के अतिरिक्त 'नाना फड़नविश', नाना साहेब पेशवा', 'तात्या टोपे', रानी लक्ष्मीबाई' आदि उल्लेखनीय जीवनियाँ है. विदेशी महापुरुषो की जीवनियों में राहुल संकृत्यायन की 'स्तालिन', 'कार्ल मार्क्स', 'लेनिन' तथा 'माओ-चे-तुंग' तथा रामवृक्ष बेनीपुरी की 'रोजा लुक्जेम्बुर्ग' तथा 'कार्ल मार्क्स' महत्वपूर्ण है. साहित्यकारों की जीवनीओं में प्रेमचन्द की जीवनी में उनकी पत्नी शिवरानीदेवी द्वारा लिखित 'प्रेमचन्द घरमे', उनके पुत्र अमृतराय द्वारा लिखित 'कलम का सिपाही', मदनगोपाल की 'कलम का मजदूर' महत्वपूर्ण है. इसके साथ साथ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रूसी लेखक गोर्की, सुमित्रानन्दन पन्त, आचार्य शुक्ल, अज्ञेय आदि लेखकों से सम्बन्धित जीवनियाँ लिखी गयी.

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन युग में कई प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने प्रतिष्ठित हस्तिओं की जीवनियाँ लिखी जिसमे विष्णु प्रभाकर की शरतचंद्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' सबसे महत्वपूर्ण है. इसके अलावा रामविलास शर्मा, अमृतराय, राहुल संकृत्यायन, डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त आदि लेखकों ने विभिन्न क्षेत्रों के महापुरुषों की जीवनियाँ लिखी.इसके साथ जीवनिओं के अनुवाद भी हुए जिसमे 'प्रिन्स क्रोपाटकिन', महात्मा काउट लियो टॉलस्टॉय', श्रीमती क्युरी', सरदार वल्लभभाई' आदि उल्लेखनीय जीवनियाँ हैं.इसके आलावा 'हिंदी सेवी संसार', 'हिंदी-साहित्यकार कोष' आदि ग्रंथो में प्रसिद्ध लेखकों की जीवनियाँ सम्मिलित है और आज भी इस दिशा में कई जीवनियाँ लिखी जा रही है.

- ***बोध प्रश्न :***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए :

1. *जीवनी की शुरूआत भी .... से ही हुई है.*

2. *'सिक्खों के दस गुरू' जीवनी के लेखक ....है.*
3. *गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा लिखित जीवनी ....है.*
4. *'आवारा मसीहा' जीवनी के लेखक .... है, जो .... के जीवन पर लिखी गई है.*
5. *स्वतन्त्रता के बाद के जीवनी विकासक्रम को हम .... शीर्षक के नाम से जान सकते है.*

2.4 *आत्मकथा*

जीवनी की तरह आत्मकथा का विकास भी अत्यंत सिमित हुआ. हा आत्मकथात्मक संकेत यत्र-तत्र साहित्य में मिल जाते है, किन्तु उन्हें हम आत्मकथा नही कह सकते मि. आत्मकथा के तत्वों को ध्यान में रखकर लिखी गयी प्रथम आत्मकथा अठारहवीं शती में कवि बनारशीदास लिखित 'अर्धकथा' ल्ती है. इस रचना में आत्मकथा का निर्वाह मिलता हैं. इसके उपरांत आधुनिककाल के प्रथम चरण में भारतेन्दु ने 'कुछ आपबीती कुछ जगबीती' नामक अपनी आत्मकथा लिखनी शुरू की थी किन्तु उसकी असामयिक मृत्यु के कारण यह रचना पूरी नहीं हो सकी. भारतेन्दु ने अपनी आत्मकथा में अपने विगत जीवन और मुफ्तखोरे मुसाहिबो का अत्यंत रोचक एवं सजीव चित्रण किया है.

इसके उपरांत भारतेन्दु के समकालीन लेखक अंबिकादत्त व्यास ने 'निजवृत्तान्त' शीर्षक से अपनी आत्मकथा लिखकर इस विधा को आगे बढ़ाया. आत्मकथा लेखन के प्रारंभिक दौर में कुछ अन्य लेखकों के नाम भी उल्लेखनीय है. इनमें स्वामी श्रद्धानंद रचित 'कल्याण पथ का पथिक', भवानी दयाल सन्दाल रचित 'प्रवासी की आत्मकथा' तथा स्वामी सत्यमेव परिव्राजक की 'स्वतंत्रता की खोज' प्रमुख है. 'प्रवासी की आत्मकथा' कई वर्षों तक चर्चा के केन्द्र में रही थी. आगे चलकर छायावाद युग से आत्मकथा का विकास परिलक्षित होता है.

- ***छायावाद युग में आत्मकथा :***

भारतेंदु और द्विवेदी युग में आत्मकथा लिखने में लेखको की बहुत रुची नही थी. छायावादी युग में हिन्दी गद्य साहित्य में अन्य विधाओं के साथ आत्मकथा साहित्य ने भी बहुत उन्नति की. इस समय के आत्मकथाकारों ने सामाजिकता के स्थान पर वैयक्तिक्र अनुभूतियों को स्थान दिया. छायावादी युग के आत्मकथाकारों ने सामाजिक बन्धनों को तोड़कर पश्चिम के स्वच्छन्दतावादी विचारों को ग्रहण किया. छायावाद तक आते आते कई लेखको का ध्यान इस विधा की और गया और कुछ उल्लेखनीय आत्मकथाएँ इस युग में लिखी गयी.जिसमे देखे तो स्वामी दयानन्द रचित 'जीवनचरित्र', उनके भाई परमानन्द की लिखी हुई 'आपवीती', महात्मा गाँधी लिखित 'आत्मकथा', सुभाषचंद्र बोझ लिखित 'तरुण के स्वप्न' उल्लेखनीय आत्मकथाएँ है. महात्मा गाँधी और

सुभाषचंद्र बोझ की लिखी आत्मकथाएँ वैसे तो हिंदी में अनुदित ही है पर फिर भी वो इतनी प्रभावशाली है कि वो हिंदी में लिखी गयी हो ऐसा ही लगता है. इन रचनाओं ने पाठकों का ध्यान अपनी और खिंचा है.

- ***छायावादोत्तर युग में आत्मकथा :***

छायावाद की आत्मकथाओं की लोकप्रियता ने छायावादोत्तर युग के लेखकों को आत्मकथा लेखन की ओर प्रवृत्त किया और ऐसा भी खा जा सकता हैं की आत्मकथा का पूर्ण विकास इसी युग में हुआ. इस युग में साहित्यकारों के उपरांत समाजसेवकों, राजनेताओं ने भी अपनी आत्मकथाएँ लिखकर इस विधा को विकसित किया. पूर्ववर्ती युग की अपेक्षा इस युग में साहित्यकारों द्वारा लिखित आत्मकथाओं का अधिक प्रकाशन हुआ ! इसके उपरांत कवियों, कथाकारों आलोचकों आदि विभिन्न विधाओं के लेखकों ने भी आत्मकथाएँ लिखकर इस विधा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया. इस युग के श्रेष्ठ आत्मकथा लेखकों में हरिभाऊ उपाध्याय, श्यामसुंदरदास, वियोगी हरी, राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, शांतिप्रिय द्विवेदी, देवेन्द्रसत्यार्थी, देवराज उपाध्याय, चतुरसेन शास्त्री, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', रामविलास शर्मा, वृंदावनलाल वर्मा, हंसराज राहबर, रामदरश मिश्र और हरिवंशराय बच्चन के नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है. जिसमे में श्यामसुंदरदास की 'मेरी आत्मकहानी', हरिभाऊ उपाध्याय की 'साधना के पथ पर', राहुल सांकृत्यायन की पाँच खण्डों में प्रकाशित 'मेरी जीवन 'यात्रा', वियोगी हरि की 'मेरा जीवन प्रवाह' आदि अत्यंत प्रसिद्ध है. इनके लेखकों ने पूर्ण ईमानदारी और सच्चाई के साथ अपने जीवन को पाठकों के सामने रख दिया है. इनमें इन लेखकों की विचारधारा, सिद्धांत, समाज के प्रति अपना कर्तव्य एवं जीवन संघर्षो के अनेक प्रसंगों का वर्णन मिलता हैं.

- ***स्वातन्त्र्योत्तर युग की आत्मकथा :***

छायावादोत्तर युग में विकास हुई यह धारा का विस्तार स्वातन्त्र्योत्तर काल में हुआ.1950 के बाद कई विभिन्न क्षेत्रों में सफल व्यक्तिओं ने आत्मकथाएँ लिखी और प्रकाशित करवाई. साम्यवादी विचारधारा के प्रसिद्ध लेखक यशपाल की आत्मकथा 'सिंहावलोकन' का तीन स्वर में इस युग के प्रारंभ में ही प्रकाशन हुआ. उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन और क्रान्तिकारी दल की क्रियाओं को भी चित्रित किया है. 'स्वतंत्रता की खोज में' स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की आत्मकथा है जिसमें एक गरीब और नेत्रहीन व्यक्तिने स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए देश-विदेश में यात्राएं की और स्वतंत्रता के महत्व को समझाया. शांतिप्रिय द्विवेदी की आत्मकथा 'परिव्राजक की प्रजा' बहुत मार्मिक ढंग से लेखक के जीवन के कई हिस्सों को चित्रित करती है. देवेन्द्र सत्यार्थी की आत्मकथा दो भागों में प्रकाशित हुई है : (1) 'चांद-सूरज के वीरन' ' और (2) 'नील यक्षिणी'. नील यक्षिणी में लेखक ने अपने जीवन के सन् 1927 से लेकर 1984 तक के

समय को उजागर किया है. शिल्प की दृष्टि से यह आत्कथा हिन्दी आत्मकथा लेखन में एक नवीनतम और मौलिक प्रयोग है.हिन्दी के समर्थ नाटककार सेठ गोविंददास ने 'आत्म-निरीक्षण' नामक आत्मकथ लिखी है : जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू तक के विचारों की खुलक आलोचना की है. इस आत्मकथा में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन भी मुखर हो उठा है. देवराज उपाध्याय की आत्मकथा के दो भाग 'बचपन के दो दिन' तथा 'यौवन के द्वार पर' नाम से इस युग में प्रकाशित हुए है. इस आत्मकथा की मुख्य विशेषता है उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण लेखक ने मनोविश्लेषण के आधार पर अपने जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों के चिह्न शैशव में खोजे है.

हिन्दी के महान हालावादी लेखक हरिवंशराय बच्चन ने अपनी आत्मकथा को चार भागों में लिखा है. उन्हें 'क्या भूलू क्या याद करू', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दशद्वार से सोपान तक' नाम दिया गया है. इन चार भागों में लेखक ने अपने पूरे जीवन को बहुत दिलचस्प ढंग से प्रस्तुत किया है. लेखक ने भौतिक और मानसिक संघर्ष के तथ्यों को कलात्मक रूप से बनाया है, जो पाठकों को बहुत आसानी से और आसानी से पता चलता है. 'दशद्वार से सोपान तक' उनकी आत्मकथा का अंतिम भाग है. जो बहुत लोकप्रिय हुआ है.

ऊपर दिए गए लेखकों के अलावा, आत्मकथा लेखन के माध्यम से पाठकों को आकर्षित करने वाले अन्य साहित्यकारों में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (मेरी अपनी कथा), पाण्डेय बेचन शर्मा (अपनी खबर), डो. भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र (जीवन के चार अध्याय), वृंदावनलाल वर्मा (अपनी कहानी), रामावतार अरुण (अरुणायन), कृष्णचंद्र (आधे सफर की पूरी कहानी), रामदरश मिश्र (इस युग में, साहित्यकारों के अलावा राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों ने भी आत्मकथाएँ लिखी हैं, जो आत्मकथा साहित्य को समृद्ध करती हैं. डो. राजेन्द्र प्रसाद, जानकी देवी बजाज, नरदेव शास्त्री, पृथ्वीराज आझाद, आबिदअली, मोरारजी देसाई तथा बलराज मधोक जैसे लेखकों ने अपनी आत्मकथाओं को बहुत लोकप्रिय बनाया है. इन सभी में डा. राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा' को आलोचकों ने इसे बेहतरीन आत्मकथा बताया है. इस आत्मकथा में लेखक का साहसिक जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन है. जानकीदेवी बजाज का नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि वे आत्मकथा लेखन में पहली महिला लेखिका हैं. लेखिका ने भी भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया था. उन्हें अपनी आत्मकथा में कई राजनेताओं से संपर्क करने का सौभाग्य मिला.

इस धारा के लगभग सभी आत्मकथा लेखकों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी दिलचस्प घटनाओं और भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीतिक परिस्थितियों को बताया है.वर्तमान युग में आत्मकथा लिखनेवालों में उपरोक्त लोगों के अलावा कुछ पत्रकारों, शिक्षकों, फिल्म कलाकारों, वकीलों और अन्य लोग भी शामिल हैं.पत्रकारों में

प्रसिद्ध इन्द्रवाचसवन और मूलचंद अग्रवाल ने अपनी आत्मकथाएं लिखी हैं. मूलचंद अग्रवाल की आत्मकथा 'एक पत्रकार की आत्मकथा' और इन्द्रवाचस्पति की आत्मकथा 'पत्रकारिता के अनुभव' में व्यक्तिगत जीवन के कई रोचक घटनाओं के साथ-साथ पत्रकारिता क्षेत्र में काम करने के दौरान हुए अनुभवों का वर्णन है.कालिदास कपूर की 'मुदर्रिस की आत्मकथा', 'प्रिंसिपल दीवानचंद की आत्मकथा' और 'मानसिक चित्रावली' शिक्षकों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं में से कुछ हैं. वकील गणेश वासुदेव, मावलंकर की आत्मकथा 'मेरा वकालती जीवन' सबसे महत्वपूर्ण है. इसमें लेखक ने उन मुकदमों का जीवंत, दिलचस्प वर्णन किया है जिनमें वे जीत हासिल की थीं.फिल्मी कलाकारों द्वारा लिखित आत्मकथाओं में प्रसिद्ध अभिनेता बलराज साहनी की 'मेरी फिल्मी आत्मकथा' खास है. इसमें लेखक ने फिल्म क्षेत्र में अपने आगमन से लेकर अभिनय के विभिन्न पहलुओं का सुंदर चित्रण किया है.

हिन्दी में इस युग में विदेशी और भारतीय भाषाओं में लिखी गई सर्वश्रेष्ठ आत्मकथाओं के अनुवादों ने भी आत्मकथा साहित्य को समृद्ध किया है. के. एम. मुंशी, काका कालेलकर, वीर सावरकर, डॉ. राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अबुलकलाम आजाद, अमृता प्रीतम इनमें से कुछ हैं. टोल्सटोय, हिटलर, हेलेन केलर, खान अब्दुल गफार खां आदि विदेशी लेखकों की आत्मकथाएँ प्रसिद्ध हैं.

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य और व्यक्ति का संबंध बहुत पुराना है और व्यक्ति सदैव अपनी भावनाओं और विविध जीवनानुभवों को शब्दों में व्यक्त करने के लिए उत्सुक रहा है. जब कोई युवा होता है और अपने अतीत की यादों को लिखना चाहता है, तो उनकी आत्मकथा बन जाती है. आधुनिक युग में आत्मकथा का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह आज एक स्वतंत्र विधा बन गया है. हिन्दी आत्मकथा की परम्परा, भले ही आधुनिक काल से पूर्व, क्षीण हो गई है, लेकिन आज सुदृढ़ और विकसित हो गई है. आज हिन्दी आत्मकथा परम्परा में मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार की आत्मकथाएँ लिखी जा रही हैं. इस युग में धार्मिक, राजनैतिक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारियों ने आत्मकथा विधा को पल्लवित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. महिला लेखिकाएँ भी इस परम्परा से बहुत सक्रिय रूप से जुड़ रही हैं.

- ***बोध प्रश्न***

सही जोड़ मिलाइए

1. *अर्धकथा*	*अ. बनारशी दास चतुर्वेदी*
2. *कल्याण पथ का पथिक*	*ब. पाण्डेय बेचन शर्मा*
3. *अपनी खबर*	*क. स्वामी श्रद्धानंद*
4. *दशद्वार से सोपान तक*	*ड. हरिवंश राय बच्चन*
5. *एक पत्रकार की आत्मकथा*	*इ. मूलचंद अग्रवाल*

2.5 *संस्मरण*

हिन्दी गद्य का आविर्भाव होने के उपरांत हिन्दी भाषा के साहित्य का बहुमुखी विकास हुआ. पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क ने भी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में गद्य के अनेक स्वरूपों का विकास हुआ. इस क्रम में जहाँ नाटक, निबन्ध उपन्यास और कहानी जैसी बड़ी विधाओं का भी विकास हुआ तो वहीं दूसरी ओर जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र और संस्मरण आदि अपेक्षाकृत छोटी मानी जानेवाली विधाओं का भी विकास दिखाई देता हैं. संस्मरण के विकास क्रम को हम निम्नलिखित शीर्षकों में प्रस्तुत कर रहे हैं. आधुनिक काल के प्रारंभ में ही, प्रायः सभी गद्य विधाओं का उद्भव होता हुआ दिखाई देता है, किन्तु भारतेन्दुयुग में अर्थात् आधुनिक काल के प्रथम चरण में संस्मरण लेखन की ओर इस युग के लेखों ने रुचि नहीं दिखाई है.

- ***द्विवेदी युगीन संस्मरण साहित्य :***

भारतेन्दु युग के बाद दूसरे चरण या द्विवेदीयुग, में संस्मरण का जन्म, शुरूआत या उद्भव होता है. वर्तमान युग में गद्य की लगभग सभी विधाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विकसित हुई हैं. इस युग की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' ने भी संस्मरण लेखन की शुरुआत की है. इस पत्रिका के लेखक अक्सर "सरस्वती" में रोचक संस्मरण लिखते थे. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस पत्रिका को संपादित किया था. साथ ही, उन्होंने खुद कई दिलचस्प संस्मरण लिखकर इस विधा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया. उनके लेखों में 'अनुमोदन का अंत', 'सभा की सभ्यता', 'विज्ञानाचार्य बसुका विज्ञान मन्दिर' आदि शामिल हैं. हिंदी का प्रथम संस्मरण बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखित 'हरिऔध जी का संस्मरण' है.

महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका में कई लेखकों के संस्मरण लिखे. इनमें रामकुमार खेम की पुस्तक 'इधर-उधर की बातें', जगद बिहारी सेठ की पुस्तक 'मेरी बड़ी छुट्टियों का प्रथम सप्ताह', पाण्डुरंग खानखोजे की पुस्तक 'वाशिंगटन महाविद्यालय का संस्थापन दिनोत्सव', प्यारेलाल मिश्र की पुस्तक 'लन्दन का पाग या कुहरा', काशीप्रसाद जायस्वाल की पुस्तक 'इंग्लैंड के देहात में महाराजा बनारस का कुआं', जगनाथ खन्ना अमेरिका आनेवाले विद्यार्थियों को सूचना" और भोलादत्त पाण्डेय की "मेरी नयी दुनिया सम्बन्धिनी रामकहानी" जैसे पुस्तकें लोकप्रिय हैं.

इस युग में लिखे गए संस्मरणों में से अधिकांश प्रवासी भारतीयों ने लिखे हैं. इन लेखकों ने हमें पश्चिमी देशों का चित्रण दिया है. वास्तव में, ये निबन्धों से अधिक संस्मरण लगते हैं. इस युग में संस्मरण साहित्य में महत्वपूर्ण लगने वाली बातों को लेकर प्रकाशित केवल एक पुस्तक है बालमुकुन्द गुप्त का "हरिऔधनी के संस्मरण".कुल मिलाकर, इस युग में संस्मरण साहित्य का मूल्यांकन किया गया है. इसका अगला विस्तार दिखाई देता है.

* ***छायावाद युगीन संस्मरण साहित्य :***

छायावाद युग, द्विवेदी युग से शुरू हुई गद्य की इस नवीनतम विधा का वास्तविक विकास है. द्विवेदी युग में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संस्मरणों की परंपरा इस युग में भी जारी रही. सरस्वती पत्रिका ने कई संस्मरण लेखकों को जन्म दिया है, जिनमें रामकुमार खेम का, कृपानाथ मिश्र, रामनारायण मिश्र, रामंधरी नहेरु और श्रीमारायण अग्रवाल शामिल हैं. यात्राएं उनके संस्मरणों का आधार हैं. इनमें उनकी विदेशी यात्राओं का बहुत रोचक वर्णन है. सरस्वती के अलावा कुछ उल्लेखनीय संस्मरण 'विशाल भारत', 'सुधा' और 'माधुरी' जैसी पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए थे. उस दौर के प्रमुख लेखकों में आचार्य रामदेव, अमृतलाल चक्रवर्ती, बनारसीदास चतुर्वेदी और मंगलदेव शर्मा शामिल हैं. 'सुधा' पत्रिका में प्रकाशित इलाचन्द्र जोशी का लेख 'मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतियाँ' और वृंदावनलाल वर्मा का लेख 'कुछ संस्मरण' महत्वपूर्ण हैं.

संस्मरणों के संकलन अनेक पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए. इनमें सबसे महत्वपूर्ण शिवराम पाण्डेय का पुस्तक 'मदन मोहन के सम्बन्ध में कुछ पुरानी स्मृतियाँ', श्रीराम शर्मा का पुस्तक 'शिकार', मन्मथनाथ गुप्त का पुस्तक 'कान्ति युग के संस्मरण' और शिवनारायण टंडन का पुस्तक 'झलक' हैं. इसके अलावा, बाबूराव विष्णुराव पराडकर द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका का संस्मरण भी प्रेमचंद स्मृति अंक में प्रकाशित हुआ है.वस्तुत: इस युग में संस्मरण साहित्य का अच्छा विकास हुआ दिखाई देता है. एक स्वतंत्र गद्य विधा के रूप में संस्मरण को स्वीकृति भी इस युग में मिली.

* ***छायावादोत्तर संस्मरण साहित्य :***

आधुनिक काल में सभी गद्य प्रकार क्रमश: विकसित हुए. छायावादोत्तर काल में संस्मरण का उत्कर्ष इस क्रम में दिखाई देता है.इस युग के संस्मरण लेखकों ने अधिकांश मामलों में उनके संपर्क में आनेवाले विशिष्ट लोगों के संस्मरण लिखे हैं. संस्मरणों को पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों और स्वतंत्र पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया है. इस युग में संस्मरण के विषय के साथ-साथ शिल्प पर भी ध्यान दिया गया, इसलिए इस युग में लिखे गए संस्मरण विषयवस्तु, भाषाशैली और शिल्प के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं.

उस काल के संस्मरण लेखकों में बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम सबसे प्रमुख है. उनके प्रमुख संस्मरण हैं 'हमारे आराध्य' और 'संस्मरण'. हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखनेवाले कुछ इतिहासकारों ने संस्मरण और रेखाचित्र को एक साथ जोड़कर "संस्मरणात्मक रेखाचित्र" नाम भी दिया. वस्तुत: छायावादोत्तर युग में संस्मरण और रेखाचित्र दो अलग-अलग विधाओं के रूप में विकसित होते हैं. हिन्दी में उत्कृष्ट संस्मरण लिखकर इस विधा के विकास में महादेवी वर्मा का नाम प्रमुख है. विद्वानों में मतभेद है कि महादेवी वर्मा की कृतियों को कहानी, संस्मरण या रेखाचित्र में से किस रूप में मानना चाहिए. 'अतीत चलचित्र', 'स्मृति को रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'स्मारिका'

महादेवी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से हैं. ज्यादातर अध्येता ने इन लेखों को संस्मरणात्मक लेखों की तरह देखा है. महादेवी वर्मा के अलावा प्रकाशचन्द्र गुप्त संस्मरण लेखकों में से एक है. हमारे पास उनके लिए संस्मरण हैं, जो "स्मृति" में प्रकाशित हुए हैं. इनके अलावा, राधिका रमण प्रसाद सिंह और कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने भी कुछ रोचक संस्मरण लिखकर इसके विकास में बड़ा योगदान दिया है.

- ***स्वातंत्र्योत्तरकालीन संस्मरण साहित्य :***

इस युग में, छायावादोत्तर काल के संस्मरण लेखकों के अलावा कुछ नए लेखक भी आए हैं. शिवपूजन सहाय के संस्मरण 'थे दिन ये लोग', सत्यवती मलिक के संस्मरण 'अमिट रेखाएं', देवेन्द्र सत्यार्थी के संस्मरण 'रेखाएं बोल उठी', शांतिप्रिय द्विवेदी के 'स्मृतियां और कृतियां' आदि में संकलित हैं. हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध नाट्यकार, निबन्धकार, कवि, उपन्यासकार और अन्य लेखकों ने भी उत्कृष्ट संस्मरण लिखकर इस विधा को विकसित करने में अपना योगदान दिया है. नाटककार और कथाकार उपेन्द्रनाथ अश्क के संस्मरण 'मंटो मेरा दुश्मन', राहुल सांकृत्यायन के संस्मरण 'बचपन की स्मृतियाँ' और 'मेरे असहयोग के साथी' आदि में सरल सहज भाषा का प्रयोग और यथास्थान व्यंग्य और भावुकतापूर्ण शैली का दर्शन मिलता है. डॉ. नगेन्द्र, एक आलोचक और निबन्धकार, ने भी युग में संस्मरण विधा को उच्चतम स्तर पर लाया है. उनके महान संस्मरणों का संकलन "चेतना के बिम्ब" है. इसके अलावा, जगदीशचन्द्र माथुर और सेठ गोविन्ददास ने भी इस विधा का विकास किया है. इस युग के कुछ लेखकों ने भी उत्कृष्ट संस्मरण लिखे हैं. इनमें हरिवंशराय बच्चन, माखनलाल चतुर्वेदी और दिनकर के नाम शामिल हैं. इन कवियों के क्रमशः 'समय के पांव', 'लोकदेव नहेरू' और 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' प्रसिद्ध हैं. बहुत से युवा लेखकों ने भी रोचक संस्मरण लिखे हैं. इनमें विनोद शंकर व्यास, रामकृष्णदास, महेन्द्र भटनागर, अमृतलाल नागर, कृष्णा सोबती, भारतभूषण अग्रवाल और फणीश्वरनाथ 'रेणु' शामिल हैं.

निष्कर्षतः *हम कह सकते हैं कि हिन्दी गद्य की इस विधा ने अपने जन्म के बाद से क्रमशः विकास किया है. पत्रिकाओं ने इसे बनाया है. हिन्दी में अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट संस्मरणों के अनुवादों ने भी पाठकों को इस विधा में आकर्षित किया है.*

- ***बोध प्रश्न***

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए

1. *संस्मरण लेखन की शुरुआत किस युग में हुई?*
2. *कौन सी पत्रिका से संस्मरण लेखन को बढ़ावा मिला?*
3. *'इंग्लैंड के देहात में महाराजा बनारस का कुआं' किसका संस्मरण है?*
4. *इलाचंद जोशी का कौनसा लेख कौन सी पत्रिका में प्रकाशित हुआ?*
5. *'संस्मरणात्मक रेखचित्र' किसे कहते है?*
6. *संस्मरण 'रेखाएं बोल उठी' किस लेखक की रचना है?*

2.6 *यात्रावृत्त*

आधुनिक युग में भारतेन्दु युग में प्राय: सभी गद्य विधाओं का प्रारंभ दिखाई देता है. यात्रा-वृत लेखन का प्रारंभ भी भारतेन्दु युग से ही प्राप्त होता है. हिन्दी में क्रमश: विकसित यात्रावृत्त विधा का परिचय और विकास निम्नलिखित शीर्षकों में जानेंगे.

- ***भारतेन्दुयुगीन यात्रा-वृत्त साहित्य***

यात्रा-वृत्त लिखने की परम्परा का प्रारंभ भारतेन्दु युग से होता है. उस वक्त कई लेखकों ने अपनी यात्राओं को पत्र-पत्रिकाओं में छापा था, जिनमें 'कविवचनसुधा' पत्रिका में 'सरयू की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' और 'हरिद्वार की यात्रा' शामिल हैं. बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र ने क्रमश: 'गया यात्रा' और 'विलायत यात्रा' के नाम से 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका में अपने यात्रावृत्त प्रकाशित किए. कुछ महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्त, हिंदी पत्रिकाओं के अलावा स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए; इनमें श्रीमती हरदेवी का 'लन्दन यात्रा', भगवानदास वर्मा का 'लन्दन का यात्री' और दामोदर शास्त्री का 'मेरी पूर्व दिग्यात्रा' शामिल हैं. इन लेखकों ने विदेशों में की गई यात्राओं का बहुत दिलचस्प और जीवंत वर्णन किया है.

इस प्रकार इस युग में लिखे गये विदेशी यात्रावृत्त में लंदन की यात्रा का एवं देश में की गई यात्रा में तीर्थस्थानों की यात्रा के वर्णन को प्रधानता दी गई है.

- ***द्विवेदीयुगीन यात्रा-वृत्त साहित्य***

इस युग में भारतेन्दुयुग से शुरू हुई यात्रा-वृत्त लेखन की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया. इस दशक में प्रकाशित होनेवाली कई पत्रिकाओं में दिलचस्प यात्रा-वृत्त लिखे गये. जिसमे स्वामी मंगलानंद की 'मारीशस यात्रा', श्रीधर पाठक की 'देहरादून-शिमला-यात्रा', उमा नहेरु की 'युद्धक्षेत्र की सैर' और लोचन प्रसाद पाण्डेय की 'हमारी यात्रा' इस दशक के प्रमुख यात्रा-वृत्त हैं. बहुत से यात्रा-वृत्त पत्र-पत्रिकाओं के अलावा स्वतंत्र पुस्तकों के रूप में भी प्रकाशित हुए. इनमें देवीप्रसाद खत्री, गोपालराम गहमरी, गदाधरसिंह और स्वामी सत्यदेव परिव्राजक जैसे लेखकों ने लिखित यात्रा-वृत्तों की पुस्तकें शामिल हैं. स्वामी सत्यदेव पारिव्राजक ने विदेश यात्रा का बहुत रोचक वर्णन किया है. जिसमे "अमरीका दर्शन" और "अमरीका दिग्दर्शन" महत्वपूर्ण हैं. जिसमे लेखक ने अमरीका की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति के साथ-साथ वहाँ के दर्शनीय स्थानों का बहुत दिलचस्प और जीवंत वर्णन किया है. इस प्रकार, इस युग में लिखी गई यात्रा-वृत्त की रचनाओं ने इस विधा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया.

- ***छायावाद युगीन यात्रा-वृत्त साहित्य***

इस युग में द्विवेदीयुग से प्रचलित यात्रा-वृत्त लेखन की प्रथा अधिक विकसित हुई. इस युग के कई श्रेष्ठ साहित्यकारों ने अन्य विधाओं के साथ-साथ इस विधा में भी लेखन

कार्य किया है. इन लेखकों ने अपने जीवनकाल में कई देशों की यात्राओं के रोमांचक और मनोरंजक संस्मरण लिखे. उस दौर के लेखकों में से एक, रामनारायण मिश्र, 'यूरोप यात्रा में छ माह' यात्रावृत्त में यूरोप के दर्शनीय स्थानों और वहाँ की शिक्षा व्यवस्था का वर्णन करते है. सत्यदेव परिव्राजक ने भी इस युग में उत्कृष्ट यात्रा-वृत्त लेख लिखे हैं. वे इस काल के सर्वश्रेष्ठ लेखक हैं. उसकी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ हैं 'मेरी जर्मन यात्रा', 'यात्री मित्र', 'यूरोप की सुखद स्मृतियाँ', 'ज्ञान के उद्यान में', 'नई दुनिया के मेरे अद्भुत संस्मरण' और 'अमरीका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी'. इसके साथ राहुल सांकृत्यायन का नाम भी महत्वपूर्ण है. राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी लदाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा' और 'तिब्बत में सौ वर्ष' उनके सबसे महत्वपूर्ण यात्रावृत्त है. उस दौर के अन्य साहित्यकारों में कन्हैयालाल मिश्र, शिवप्रसाद गुप्त, जवाहरलाल नेहरू, सेठ गोविन्ददास और केदाररूपराय शामिल हैं.

इस युग में लिखे गए यात्रा-वृत्त लेखों को देखकर पता चलता है कि सबसे अधिक विदेशी यात्रा-वृत्तों की रही है. प्रायः सभी लेखकों ने अपनी विदेश यात्रा की कहानी बहुत दिलचस्प ढंग से बताई है. इन वृत्तों में सरल प्रवाही भाषा और पत्र, डायरी, निबंध आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग होता है.

- **छायावादोत्तर यात्रा-वृत्त साहित्य**

यात्रा-वृत्त साहित्य लेखन की परंपरा, जो छायावाद में बहुत लोकप्रिय थी, इस युग में अपने चरम पर है. इस युग में लिखे गये यात्रावृत्तों में सबसे अधिक विविधता, रचना-शिल्प और परिमाण (संख्या) है. स्वाधीनता मिलने के बाद भी इस विधा का काफी विकास हुआ. राजनीतिक और सांस्कृतिक कारणों से स्वतंत्र भारत विश्व के अन्य देशों से जुड़ गया. राजनेताओं, लेखकों और संस्कृतिप्रेमियों की देश-विदेश की यात्राएँ भी बढ़ी. हमारे कई लेखकों ने प्रगतिवादी आंदोलन के कारण रूस और अन्य साम्यवादी देशों की यात्राएं कीं. इन सबके कारण इस युग में बहुत से यात्रा-वृत्त लिखे गए.

छायावादी साहित्यकारों ने कई यात्रा-वृत्त लिखे हैं. इनके अलावा कई दिलचस्प यात्रा-वृत्त महेशप्रसाद श्रीवास्तव, यशपाल, बनारसीदास चतुर्वेदी, अक्षयकुमार जैन, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. यशपाल जैन, लक्ष्मीदेवी नूड़ावत, दूर्गावती सिंह आदि ने लिखे हैं.

इस क्षेत्र में हिंदी साहित्य के महान लेखक राहुल सांकृत्यायन का नाम खास है. उन्हें निरंतर यात्रा करने के कारण उन्हें "यायावर" भी कहा जाता था. वे जीवन भर जगह-जगह घूमते रहे हैं. वे रूस कई बार गए थे. "रूस में पच्चीस मास" उनकी तीसरी रूसी यात्रा की कहानी है. इसमें लेनिनग्राद सहित कई जगहों की यात्राओं का बहुत रोचक और प्रेरक वर्णन है. इनके अलावा, यशपाल और जवाहरलाल नेहरू की रूस यात्रा से संबंधित यात्रा-वृत्त भी लिखे गये हैं. रूस, चीन और जापान की यात्राओं पर स्वतंत्र पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं. ऐसी यात्रावृत्तियों में भगवतीशरण उपाध्याय की पुस्तक 'कलकत्ता से

पेकिंग', राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'चीन में कम्यून' और ओमप्रकाश मंत्री की पुस्तक 'माओ के देश में पांच साल' विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं.

इस शताब्दी में लेखकों ने एक से अधिक देशों की यात्राओं को एक साथ बताया है. विदेशी यात्रावृत्तों के अलावा स्वदेशी यात्रावृत्तों का भी बहुत लेखन हुआ है. हमारे देश में कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक पर्यटन के कई सुंदर स्थान हैं. इन स्थानों की यात्राओं पर लेख लिखनेवालों में राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, मोहन राकेश, महावीर प्रसाद पोद्दार, यशपाल जैन, विष्णु प्रभाकर और प्रभाकर द्विवेदी शामिल हैं. इन्होंने भारत के कई सुंदर स्थानों की यात्रा का बहुत रोचक और जीवंत चित्रण किया है.

उपर्युक्त बातों से पता चलता है कि हिन्दी में यात्रा-वृत्त लेखन का एक पुराना इतिहास है. भारतेन्दुयुग से शुरू हुई हिन्दी गद्य की इस नवीनतम शैली में बहुत कुछ लिखा गया है. यात्रा-वृत आज भी कई पत्र-पत्रिकाओं में और स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं. यही इस कला के विकास, सफलता और लोकप्रियता का संकेत है.

- ***बोध प्रश्न***

पश्नो के उत्तर दीजिए

1. *'सरयू की यात्रा' रचना किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी?*
2. *छायावाद युगीन यात्रावृत्त साहित्य की चर्चा कीजिए.*
3. *राहुल संकृत्यायन के यात्रा साहित्य के योगदान की जानकारी दिजिए.*
4. *छायावादोत्तर यात्रा-वृत्त साहित्य रचनाओं की जानकारी दीजिए.*
5. *भारतेंदु युगीन यात्रा-वृत्त साहित्य के रचनाकारों के बारेमे चर्चा कीजिए.*

2.7 *सार बिंदु*

इन पूरी इकाई को पढ़ने के बाद सार रूप कुछ बिंदु को हम देखे तो-

- *जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण,यात्रावृत आदि विधाओं का उद्भव आधुनिक काल में भारतेंदु युग से ही हुआ है.*
- *जीवनी लेखन की शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारतेंदु युग से पश्चिम के सम्पर्क से ही हो गई थी.*
- *जीवनी में मुख्य घटनाएँ जो दिल को छूनेवाली हो, जो जीवन को एक नया मोड़ देनेवाली घटनाएँ होती हैं उसका समावेश होना आवश्क हैं. कल्पना और मनगढ़त कहानिओं का उसमे कोई स्थान नही है.*
- *द्विवेदीयुग में जीवनी लेखन को नई दिशा मिली, छायावाद तक आते आते जीवनी साहित्य का अपना अस्तित्व स्थापित हो चूका और इसमें उल्लेखनीय कार्य हुआ, छायावादोत्तर काल में जीवनी साहित्य चरमोत्कर्ष पर था और कई प्रसिद्व साहित्यकारों ने जीवनी लेखन का कार्य किया.*

- *आत्मकथा के तत्वों को ध्यान में रखकर लिखी गयी प्रथम आत्मकथा अठारहवीं शती में कवि बनारशीदास लिखित 'अर्धकथा' आती है.*
- *साहित्यकारों के अलावा भी कई लोगो ने अपनी आत्मकथा लिखी जिसमे उन्होंने अपने जीवन के संघर्षों को अंकित किया हैं.*
- *आज हिन्दी आत्मकथा परम्परा में मौलिक और अनूदित दोनों प्रकार की आत्मकथाएँ लिखी जा रही हैं.*
- *धार्मिक, राजनैतिक, समाज सेवी तथा क्रान्तिकारियों ने आत्मकथा विधा को पल्लवित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. महिला लेखिकाएँ भी इस परम्परा से बहुत सक्रिय रूप से जुड़ रही हैं.*
- *द्विवेदीयुग में संस्मरण का जन्म, शुरूआत या उद्भव होता है; जिसमे 'सरस्वती' पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसका सम्पादन महावीर प्रसाद द्विवेदी कर रहे थे.*
- *हिंदी का प्रथम संस्मरण बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखित 'हरिऔध जी का संस्मरण' है.*
- *द्विवेदी युग में अधिकांश प्रवासी भारतीयों ने संस्मरण लिखे हैं.*
- *एक स्वतंत्र गद्य विधा के रूप में संस्मरण को स्वीकृति भी छायावाद युग में मिली.*
- *छायावादोत्तर युग में संस्मरण के विषय के साथ-साथ शिल्प पर भी ध्यान दिया गया, इसलिए इस युग में लिखे गए संस्मरण विषयवस्तु, भाषाशैली और शिल्प के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट हैं.*
- *यात्रावृत्त के विकास में पत्र - पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान हैं.*
- *पत्रिका के अलावा स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी यात्रा वृत्त लिखे गये.*
- *यात्रा-वृत्त साहित्य में ज्यादात्तर तीर्थस्थानों की यात्रा और विदेशी यात्राओं का वर्णन हैं.*
- *छायावादोत्तर युग में यात्रा-वृत्त साहित्य लेखन की परंपरा अपने चरम सीमा पर रही.*
- *छायावादोत्तर युग में लिखे गये यात्रावृत्तों में सबसे अधिक विविधता, रचना-शिल्प और परिमाण(संख्या) है.*
- *यात्रावृत्तों के लेखन में सरल प्रवाही भाषा और पत्र, डायरी, निबंध आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग होता है.*
- *विदेशी यात्रावृत्तों के अलावा स्वदेशी यात्रावृत्तों का भी बहुत लेखन हुआ है. हमारे देश में कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक पर्यटन के कई सुंदर स्थान हैं जिसके बारे में यात्रा साहित्य में लिखा गया हैं.*

2.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए***
  1. *जीवनी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए.*
  2. *आत्मकथा के क्रमिक विकासक्रम को चित्रित कीजिए.*
  3. *संस्मरण के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए.*
  4. *हिंदी के यात्रा-वृत्त साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए.*
- ***टिप्पणी लिखिए***
  1. *स्वतन्त्रता के बाद का जीवनी साहित्य*
  2. *स्वातन्त्र्योत्तर युग की आत्मकथा*
  3. *छायावाद और छायादोत्तर आत्मकथा*
  4. *द्विवेदी युगीन संस्मरण साहित्य*
  5. *छायावादोत्तर यात्रा-वृत्त साहित्य*

2.9 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. https://shorturl.at/bMQV4
2. *हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल*
3. *हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेन्द्र*
4. *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. ओमप्रकाश गुप्त - डॉ.वीरेंद्रनारायण सिंह, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद.*
5. https://mycoaching.in/hindi-sahitya-ki-vidhaye

इकाई 3 'रेखाचित्र', 'पत्र साहित्य', 'डायरी', 'रिपोर्ताज' विधाओं का परिचय

रूपरेखा

3.1 *उद्देश्य*

3.2 *प्रस्तावना*

3.3 *'रेखाचित्र' का परिचय – स्वरूप एवं विकास*

3.4 *'पत्र साहित्य' का परिचय – स्वरूप एवं विकास*

3.5 *'डायरी' का परिचय – स्वरूप एवं विकास*

3.6 *'रिपोर्ताज' का परिचय – स्वरूप एवं विकास*

3.7 *सार बिंदु*

3.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

1.9 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

3.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 3 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- *'रेखाचित्र' का परिचय, स्वरूप और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगे.*
- *'पत्र साहित्य' का परिचय, स्वरूप और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगे.*
- *'डायरी' का का परिचय, स्वरूप और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगे.*
- *'रिपोर्ताज' का परिचय, स्वरूप और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगे.*

3.2 प्रस्तावना

भावों एवं विचारों की स्वाभाविक एवं सरल अभिव्यक्ति गद्य के द्वारा ही होती है. इसी कारण सामाजिक, साहित्यिक तथा वैज्ञानिक आदि समस्त विषयों के लिखने का माध्यम प्रायः गद्य है. गद्य का प्रादुर्भाव आधुनिक काल (1850 ई.) से हुआ है. इस प्रकार हिंदी में प्रथम बार हिंदी साहित्य का विकास गद्यात्मक और पद्यात्मक दो प्रकार से हुआ है. हिंदी गद्य के प्रवर्तक भारतेंदु है. भारतेंदु युग से गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ सामने आती हैं. जिनमें नाटक, निबंध, समीक्षा, उपन्यास, एकांकी, कहानी, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य, इंटरव्यू(साक्षात्कार), पत्रसाहित्य, रिपोर्ताज, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि.

3.3 *'रेखाचित्र' का परिचय – स्वरूप एवं विकास*

- ***'रेखाचित्र' का परिचय :***

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के स्कैच शब्द का हिंदी रूपांतर है. जैसे स्कैच में रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत किया जाता है, ठीक वैसे ही शब्द रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है. हिंदी साहित्य में जिस प्रकार रेखाचित्र विधा के रूप में प्रवहमान है वैसी कोई विधा या परंपरा पाश्चात्य या युरोपीय साहित्य में विकसित नहीं होती है. रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है. एकात्मकता, सरस और मार्मिक शैली, संस्मरणात्मक चित्र, ध्येय की संवेदनशीलता, कल्पना का सौंदर्य, सूक्ष्मपर्यवेक्षण शक्ति, तीव्रता, संक्षिप्तता, विवरण की न्यूनता आदि रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताएँ मानी जा सकती है. अमरनाथ के अनुसार – ''कहानी और निबंध के बीच झूलती रेखाचित्र सर्वथा एक नई विधा है. इसकी सफलता शब्दों और वाक्यों के कुशल संगुफन पर निर्भर करती है. स्केच... की तरह रेखाचित्र में भी कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है. इसमें साधन शब्द होते हैं, रेखाएँ नहीं. इसलिये इसे शब्दचित्र भी कहते हैं.''

- ***'रेखाचित्र' का विकास :***

हिंदी में रेखाचित्र के विकास को देखते हुए अन्य विधाओं की भांति स्वतंत्र विधा माना गया है. हिंदी के आधुनिक काल में ही रेखाचित्र का प्रारंभ हुआ. भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग तक रेखाचित्र नहीं लिखे गए. अतः रेखाचित्र का विकास छायावाद से माना जाता है. रेखाचित्र के विकास को ध्यान में रखते हुए एवं हिंदी साहित्य में रेखाचित्र के अध्ययन हेतु रेखाचित्र को युग के अनुसार दो भागों में बाँटा जाता है – (1) *आरंभिक युग (छायावाद)* (2) *उत्कर्ष काल (छायावादोत्तर काल)*

- ***आरंभिक युग (छायावाद) :***

*हिंदी में रेखाचित्र की शुरूआत छायावाद युग से मानी जाती है. इसके पूर्ववर्ती युग में संस्मरणात्मक रेखाचित्र की एक नयी विधा का भी प्रचलन हुआ जिसके विकास का श्रेय श्रीराम शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी तथा महादेवी वर्मा को जाता है. इस संदर्भ में श्रीराम शर्मा कृत – 'बोलती प्रतिमा' (*1937*) विशेष उल्लेखनीय है. लेखक ने अपनी भूमिका में इस कृति में संकलित रचनाओं को लेख, स्कैच और कहानियाँ माना है, किंतु यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि इस कृति की अधिकांश रचनाएँ रेखाचित्र हैं. 'भाई जगन्नाथ' इस संकलन की सर्वश्रेष्ठ रचना है. डॉ. हरवंशलाल शर्मा ने पदमसिंह शर्मा को संस्मरण एवं रेखाचित्र का जनक माना है. बनारसी दास चतुर्वेदी तथा महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र केवल पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए. बनारसीदास ने संतों,*

*समाजसेवियों, देश सेवकों और साहित्यकारों से संबंधित अनेक संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे, जिनका प्रकाशन 'विशाल भारत' तथा अन्य समकालीन पत्रिकाओं में हुआ. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में संवेदनशीलता, भावुक कल्पना, कवि ध्यय और कलात्मक अभिव्यक्ति का अभूतपूर्व उत्कर्ष मिलता है. महादेवी वर्मा के प्रतिनिधि संस्मरणात्मक रेखाचित्रों में 'रामा' (*1930*), 'बिंदा' (*1935*), 'राबिया' (*1935*), 'बिट्टो' (*1935*), 'घीसा' (*1936*) आदि में सुलभ है. ये सभी रचनाएँ आगे चलकर पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई.*

समग्रत: *इस युग में रेखाचित्र में कथ्य की दृष्टि से समाज के उपेक्षित व्यक्तियों के चित्रण पर बल दिया गया है, और शिल्प की दृष्टि से इस युग की सर्वप्रमुख उपलब्धि चित्रात्मकता है.*

- ***छायावादोत्तर काल (उत्कर्ष काल) :***

इस युग में संस्मरण तथा रेखाचित्र-साहित्य के विकास एवं उन्नयन की दिशा में हंस का रेखाचित्र-विशेषांक (मार्च 1939 *संपादक: श्रीपतराय) सर्वप्रथम उल्लेखनीय है. इसमें केवल हिंदी ही नहीं उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड आदि भाषाओं के लेखकों के भी रेखाचित्र प्रकाशित किये गये. मधुकर के रेखाचित्र विशेषांक का संपादन करने के अनंतर उन्होंने 'रेखाचित्र' (*1952*) एवं 'सेतुबंध' (*1952*) शीर्षक से रेखाचित्र संग्रहों को प्रस्तुत किया. इन्होंने अपने रेखाचित्र में देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता को प्रमुखता दी है.*

*हिंदी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र साहित्य की श्रीवृद्धि में महादेवी वर्मा ने अत्याधिक महत्वपूर्ण योगदान किया है. 'अतीत के चलचित्र' (*1941*), 'स्मृति की रेखाएँ' (*1947*), 'पथ के साथी' (*1956*) 'स्मारिका' (*1971*) और 'मेरा परिवार' उनके उल्लेखनीय रेखाचित्र-संग्रह हैं. रेखाचित्र एवं संस्मरण के तत्वगत अंतर को ध्यान में रखते हुए इन दोनों विधाओं की श्रीवृद्धि में योग देने वाले लेखकों में प्रकाशचन्द्र गुप्त (*1908-1970*) का स्थान काफी ऊँचा है. 'पुरानी स्मृतियाँ' (*1947*) में इनके स्मृतिचित्र संकलित है, तो रेखाचित्र में निर्जीव वस्तुओं, स्थानों आदि पर लिखे गए रेखाचित्र है. हिंदी रेखाचित्र के विकास में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम भी अग्रगण्य है. 'माटी की मूरतें' नामक संकलन में बारह रेखाचित्र संकलित हैं. उनका अन्य 'गेहूँ और गुलाब' में पच्चीस रेखाचित्र संकलित हैं. इस युग के अन्य रेखाचित्र लेखकों में विनय मोहन शर्मा (*1905-1993*) का रेखाचित्र संग्रह 'रेखा और रंग' अपनी चुटीली शैली तथा मार्मिक परिस्थिति चित्रण के लिए प्रख्यात हैं. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर कृत 'माटी हो गयी सोना' एवं 'दीप जले शंख बजे' (*1959*) में संग्रहीत रेखाचित्र भी उल्लेखनीय है. 'रेखाएँ और चित्र', 'मंटो मेरा दुश्मन', और 'ज्यादा अपनी कम परायी' में हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार तथा नाटककार उपेंद्रनाथ अश्क के संस्मरण और रेखाचित्र संकलित*

हैं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'समय के पाँव' (1962) में अनेक भावपूर्ण रेखाचित्र अंकित किये हैं.

देवेन्द्र सत्यार्थी को भी हिंदी का प्रमुख रेखाचित्रकार माना गया है. उनके प्रमुख संकलन 'क्या गोरी क्या सांवरी', 'रेखाएँ बोल उठी', 'एक युग एक प्रतीक' आदि. इनके रेखाचित्र में भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया है. सत्यार्थी जी के रेखाचित्र लेखन में भावात्मकता स्वाभाविक प्रवाह के रूप में ही आई है. कुछ अन्य रेखाचित्रकारों एवं उनकी रचनाओं का उल्लेख भी यहाँ आवश्यक है. यथा जगदीशचन्द्र माथुर कृत 'दस तस्वीरें', नगेन्द्र कृत 'चेतना के बिम्ब', विष्णु प्रभाकर कृत 'कुछ शब्द-कुछ रेखाएँ', 'जाने अनजाने', उपेन्द्र नाथ अश्क कृत 'ज्यादा अपनी कम पराई', चतुरसेन शास्त्री कृत 'वातायन', ओंकार शरद कृत 'लंका महारजिन', सेठ गोविंददास कृत स्मृति कण', डॉ. प्रेमनारायण टंडन कृत 'रेखाचित्र' और श्रीमती सत्यवती मल्लिक कृत 'अमिट रेखाएँ' आदि. हिंदी रेखाचित्र एवं संस्मरण विधा के अन्तर्गत पर्याप्त कार्य हुआ है. पत्र-पत्रिकाओं में इस विधा से संबंधित लेख प्रायः निकलते रहते हैं. आजकल अभिनंदन ग्रन्थ निकालने की जो परंपरा चल रही है उसने भी साहित्य की इस विधा की पर्याप्त श्रीवृद्धि की है. साहित्यकारों, राजनेताओं और समाजसेवियों से सम्बन्धित अनेक संस्मरणात्मक रेखाचित्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं, अतः इस विधा का भविष्य निश्चित रूप से उज्जवल है.

- ***बोध प्रश्न –***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1 *रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के किस शब्द का हिंदी रूपांतर है?*

2 *'अतीत के चलचित्र' के रचनकार कौन है?*

3 *रेखाचित्र को युग के अनुसार कितने भागों में बाँटा जाता है?*

4 *'बोलती प्रतिमा' के रचनकार कौन हैं?*

5 *'माटी हो गयी सोना' के रचनकार कौन हैं?*

3.4 *'पत्र साहित्य' का परिचय - स्वरूप और विकास*

- ***'पत्र साहित्य' का परिचय :***

पत्र साहित्य की वह विधा है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज में रहते हुए अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक संप्रेषित करना चाहता है, इसके लिए वह पत्रों का सहारा लेता है. अतः व्यावसायिक, सामाजिक, कार्यालय आदि से सम्बन्धित अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने में पत्र अत्यन्त उपयोगी होते हैं. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल कहते हैं कि मेरी समझ में किसी व्यक्ति की भारी-भरकम साहित्यिक कृति आँधी के समान है, उसके साहित्यिक पत्र उन झोंकों के समान है जो धीरे से आते-जाते रहते हरैं और वायु की थोड़ी मात्रा साथ लाने पर भी साँस बनकर जीवन देते हैं. समाचारों का आदान-प्रदान करना पत्र लेखन कहलाता है. प्राचीन समय में पत्र लेखन का बहुत अधिक

प्रचलन था. पत्र चाहे औपचारिक हों या अनौपचारिक दोनों ही स्थिति में पत्रों का उपयोग किया जाता था. परन्तु आज समय के आधुनिकता के साथ-साथ चीजों का भी आधुनीकरण हो रहा है. अनौपचारिक पत्रों के लिए मोबाइल, टेलीफोन, टेलीग्राम आदि का इस्तेमाल करने लगे हैं. आधुनिक युग में पत्रलेखन को कला की संज्ञा दी गई है. साहित्य में भी इसका उपयोग होने लगा. एक अच्छे पत्र के लिए कलात्मक सौंदर्यबोध और अन्तरंग भावनाओं की अभिव्यंजना आवश्यक है. पत्र में लेखक की भावनाएँ ही व्यक्त होती, बल्कि लिखने वाले का व्यक्तित्व भी उभरता है. इससे लेखक के चरित्र, दृष्टिकोण, संस्कार, मानसिक स्थिति, आचरण इत्यादि सभी एक साथ झलकते हैं. अत: पत्र लेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है.

- ***'पत्र साहित्य' का विकास :***

हिंदी साहित्य में पत्र का उद्भव द्विवेदी युग से माना जाता है. भारतेंदु युग में पत्र विधा का विकास नहीं हुआ था. हिंदी साहित्य का पहला पत्र मुंशी राम ने 1904 *में प्रकाशित करवाया था जो पत्र स्वामी दयानंद सरस्वती से संबंधित पत्रों का संकलन था. यह इस युग का ही नहीं समूचे हिंदी-साहित्य में पहला प्रकाशित पत्र संग्रह है. इस युग का दूसरा महत्वपूर्ण भगवद् दत्त ने ऋषि दयानंद का पत्र व्यवहार १९०९ शीर्षक पत्र-संग्रह संपादित किया.*

*छायावाद युग (*1920–1935*) में पत्र-साहित्य के संदर्भ में जो संग्रह प्रकाशित हुए उनमें 'पत्रांजलि', 'विवेकानंद पत्रावलि', 'पत्रावलि' तथा 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' उल्लेखनीय है. 'पत्रांजलि' (*1922*) का संपादन सतीशचन्द्र द्वारा किया गया, तो 'विवेकानंद-पत्रावली' का प्रकाशन श्री रामकृष्ण आश्रम, देहरादून से हुआ. 'पत्रावलि' नेता जी सुभाषचंद्र बोस द्वारा* 1912–1920 *के बीच लिखे गए लगभग* 153 *पत्रों का संग्रह है तथा 'पिता के पत्र पुत्री के नाम जवाहरलाल नेहरू द्वारा अंग्रेजी में लिखित पत्र-संग्रह का प्रेमचंद द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद है. पत्र-साहित्य की दिशा में ये प्रकाशन परिणाम में अल्प भले ही हैं पर इनसे विधा के स्वरूप, महत्व और इसे प्रोत्साहन देने की आवश्यकता का अनुभव अवश्य होता है.*

छायावादोत्तर काल में प्रकाशित पत्र-साहित्य को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है. (1) *व्यक्तिगत पत्रों के स्वतंत्र संकलन,* (2) *विविध विषयक ग्रंथों में परिशिष्ट आदि के अंतर्गत संकलित पत्र तथा* (3) *पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र. प्रथम वर्ग की रचनाओं में भदंत आनंद कौसल्यायन – 'कृत भिक्षु के पत्र', भाग*-1-2 (1940), *डॉ. धीरेन्द्र वर्मा – कृत 'यूरोप के पत्र' (*1944*), सत्यभक्त स्वामी कृत 'लंदन के पत्र' (*1954*), बैजनाथसिंह विनोद द्वारा संपादित 'द्विवेदी पत्रावलि' (*1954*), लक्ष्मीसागर वाष्णेय द्वारा संपादित 'प्राचीन हिंदी पत्र-संग्रह' (*1959*), डॉ. जगदीशचंद्र द्वारा लिखित 'सोवियत रूस पिता के पत्रों में' (*1966*), अमृतरापद द्वारा संपादित प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह 'चिट्ठी पत्री', जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा संपादित 'निराला के पत्र' (*1971*) आदि*

विशेषरूपेण उल्लेखनीय है. द्वितीय वर्ग से संबद्ध साहित्य, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों की महान विभूतियों से संबद्ध ग्रंथों में भी पत्र साहित्य का अमूल्य भंडार संकलित हैं. उदाहरण हरिवंशराय बच्चन द्वारा प्रणीत कवियों में 'सौम्य संत' (1960) में पंत के 126 मूल्यवान पत्र संकलित है. तीसरा वर्ग पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र: हिंदी पत्र साहित्य के विकास में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'सरस्वती', 'माधुरी', 'धर्मयुग' आदि ने भी महत्वपूर्ण योग दिया है. लगभग सभी पत्रिकाओं में 'आपका पत्र मिला', 'चिट्ठी पत्री', 'पत्र प्रसंग' आदि स्तंभों के अंतर्गत पाठकों के पत्र प्रकाशित होते रहते हैं, जिनमें साहित्य, समाज, राजनीति, धर्म आदि से संबद्ध विभिन्न समस्याओं के विषय में जनता के विचारों की अभिव्यक्ति रहती है. समग्रत: हिन्दी का पत्र-साहित्य पाठक के लिए ज्ञान और अनुभव के एकदम अछूते संसार के द्वार खोलता है.

- ***पत्र लेखन के प्रकार :***

पत्र लेखन के निम्न प्रकार हैं – निजी पारिवारिक पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, संपादक के नाम पत्र, व्यावसायिक पत्र, सरकारी पत्र, अर्द्ध सरकारी पत्र. उक्त सभी प्रकार के पत्रों को सामान्यत: दो बागों में बांटा जा सकता है – (1) *औपचारिक* (2) *अनौपचारिक. औपचारिक पत्र का अर्थ है – सरकारी या कार्यालयी स्तर पर लिखे वे सरकारी/गैस सरकारी पत्र जिसमें लिखने वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार की औपचारिकताओं का निर्वा करना पड़ता है. अनौपचारिक पत्र से तात्पर्य है जो औपचारिक नहीं है (अन्-औपचारित). वे पत्र अनौपचारिक कहे जाएँगे जिनमें किसी परिपाटी लेखन विधि को कोई महत्व नहीं दिया जाता. जो भाव मन में आया उसको अपनी स्वाभाविक भाषा में व्यक्त कर दिया. इसमें प्राय: अपने संबंधी, परिचित, मित्र की कुशलता की जानकारी चाहते हैं और अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को भी लिख देते हैं. इस प्रकार के पत्रों में भी भेजने वाला अपना नाम पता लिखता है, लेकिन इसका कोई नियम नहीं है. जैसा संबंध हो, उसी के अनुरूप संबोधन व अभिवादन लिखा जाता है.*

- ***पत्रलेखन के महत्वपूर्ण अंग :***

पत्र लेखन के महत्वपूर्ण अंग इस प्रकार हैं –

(1) *प्रेषक का पता और तिथि पत्र लेखन के लिए जिस कागज का प्रयोग किया जाता है, उसके शीर्षस्थान पर दाहिनी ओर प्रेषक का पता एवं पत्र लेखन की तिथि का उल्लेख होना चाहिए.*

(2) *मूल संबोधन पत्र के बायीं ओर घनिष्ठता, श्रद्धा या स्नेहसूचक संबोधन होना चाहिए जैसे – पूज्य श्रद्धेय, मानवीय श्रीमान. जहाँ पर सम्बोध्य स्पष्ट नहीं होते हैं, वहाँ पर सेवा में प्रति, या पदनाम अथवा समूह का नाम होता है, उसके आगे हाइफन देकर नीचे पद का नाम और संस्था का नाम एवं पता आदि लिखे जाते हैं.*

(3) *अभिवादन या शिष्टाचार संबोधन की पंक्ति के अंतिम वर्ण के नीचे एक नयी पंक्ति प्रारंभ करके अभिवादन या शिष्टाचार सूचक शब्द लिखे जाते हैं. इसके अंतर्गत बड़ों को प्रणाम आदि बराबर वालों में नमस्कार, नमस्ते आदि लिखा जाता है.*

(4) *विषयवस्तु पत्र की विषय-वस्तु को अनुच्छेदों में व्यवस्थित रूप में लिखा जाता है.*

(5) *पत्र की समाप्ति मंगलकामना सूचक या धन्यवाद सूचक उक्तियों का प्रयोग करके सम्बोध्य के साथ अपने संबंध दर्शाते हुए, अंत में हस्ताक्षर किया जाता है.*

(6) *संबोध्य का पता पत्र के अंत में सम्बोध्य व्यक्ति या पद के नाम का पूरा पता-पत्र की बायीं ओर लिखा जाता है.*

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1. *हिंदी साहित्य में पत्र का उद्भव ________ युग से माना जाता है.*
2. *हिंदी साहित्य का पहला पत्र _________ ने* 1904 *में प्रकाशित करवाया था.*
3. *छायावादोत्तर काल में प्रकाशित पत्र-साहित्य को _______वर्गों में बाँटा जा सकता है.*
4. *'यूरोप के पत्र' रचना के रचनाकार _________ है.*
5. *'पत्रांजलि'* (1922) *का संपादन ________ के द्वारा किया गया.*

3.5 *'डायरी' का परिचय - स्वरूप और विकास*

- ***'डायरी' विधा का परिचय :***

डायरी को हिंदी में दैनंदिनी कहा जाता है. किसी व्यक्ति के जीवन में किसी विशेष दिन क्या क्या घटता है, वह क्या-क्या करता है, क्या-क्या अनुभव करता है, क्या-क्या सोचता विचारता है, किस-किस से मिलता है आदि का विवरण-श्रृंखला उसकी दैनंदिनी बन जाती है. यह लिखना उसके अपने लिए होता है. इसलिए अपने मूल रूप में उसकी दैनंदिनी उसका निजी दस्तावेज होती है. इसलिए व्यक्ति विशेष की दैनंदिनी में कुछ ऐसी चीजें होती है, जिन्हें वह अपने तक ही रखना चाहता है, किसी को बताना नहीं चाहता और कुछ चीजें होती है, जिन्हें सार्वजनिक करने में उसे कोई आपत्ति नहीं होती. इसलिए अधिकांश डायरी अपने मूल रूप में प्रकाशित न होकर संपादित रूप में प्रकाशित होती है.

- ***'डायरी' विधा का विकास :***

भारत में दैनंदिनी लिखने का प्रारंभ आधुनिक काल में हुआ. हिंदी में भी डायरी लेखन प्रकाशन का प्रारंभ भारतेंदु-युग में ही हुआ, लेकिन अब तक इतनी कम दैनंदिनियां प्रकाशित हुई कि अनायास और असजग रूप से निर्मित साहित्य की इस गद्य विधा को बहुत संपन्न नहीं कहा जा सकता.

दैनंदिनी मुख्य रूप से दो रूपों में प्रकाशित हो कर सामने आयी है. एक रूप वह है जो पत्रिकाओं या लेखकों के विभिन्न विधाओं के संग्रहों, अभिनंदन या स्मारक ग्रंथों, ग्रंथावलियों आदि के अंशों के रूप में प्रकाशित हुआ और दूसरा वह रूप है जो स्वतंत्र पुस्तकों के रूप प्रकाशित हुआ है. यहाँ हमें इस बात को लेकर स्पष्ट रहना चहिए कि वे रचनाएँ दैनंदिनी नहीं होती, जिनमें इसे प्रविधि या शिल्प के रूप में अपनाया जाता है. जैसे डॉ. देवराज का उपन्यास 'अजय की डायरी', मुक्तिबोध की आलोचना पुस्तक 'एक साहित्यिक की डायरी' वसंत पोतदार का निबंध-संग्रह 'यायावर की डायरी'.

हिंदी में दैनंदिनियां अधिकांशतः पहले रूप में प्रकाशित हुई हैं. हंस के 'आत्मकथांक' (जनवरी 1932) एवं प्रेमचंद-अंक 'परिषद्-पत्रिका' (जनवरी 1979), 'इंडिया टुडे' (साहित्य वार्षिकी 1993) 'समालोचक' (मई एवं अक्टूबर 1958), 'ज्ञानोदय' (जनवरी 1964), 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'सारिका', 'दिनमान' आदि पत्रिकाओं में विभिन्न व्यक्तियों के डायरी-अंश प्रकाशित होते रहे हैं. 1967 में दो भागों में इसका डायरी-विशेषांक प्रकाशित हुआ, जिसमें सुरेंद्र चौधरी, कुमारेंदु पारसनाथ सिंह, अजित कुमार, राजेंद्र किशोर, जितेंद्रनाथ पाठक, सुरेंद्र अरोड़ा, सुदर्शन चोपड़ा, रघुवंश, गोपीकृष्ण गोपेश, राजीव सक्सेना, राजकमल चौधरी, स्वदेश दीपक, मधुरेश आदि की दैनंदिनियों के अंश प्रकाशित हुए हैं. इन अंशों को तीन खंडों – 'आत्मनिर्वासन और संघर्ष', 'यात्रा और उभरती आकृतियाँ' तथा 'कथा के सूत्र टटोलती' डायरी में विभाजित करके प्रकाशित किया गया है. निःसंदेह हिंदी दैनंदिनी लेखन के इतिहास में इस विशेषांक का विशेष महत्व है. बालमुकुंद गुप्त स्मारक ग्रंथ (सं.झाबरमल शर्मा एवं बनारसीदास चतुर्वेदी, 1950) में बालमुकुंद गुप्त को 'श्रीधर पाठक ग्रंथावली' (खंड-3, जुलाई, 1996 सं.पद्मधर पाठक) में श्रीधर पाठक की 'पं.रामनारायण मिश्र स्मृतिग्रंथ' (1984) में मिश्रजी की रघुवीर सहाय-रचनावली में रघुवीर सहाय की दैनंदिनियों के अंश संगृहीत हैं. ऐसा शायद ही कोई स्मारक या अभिनंदन ग्रंथ होगा, जिसमें स्मृति या अभिनंदित व्यक्ति की दैनंदिनी के अंश प्रकाशित न हुए हों, बशर्ते उस व्यक्ति ने दैनंदिनी लिखी हो.

इसी प्रकार लेखकों के विविध रचना-संकलनों में उनकी दैनंदिनियों के अंश संकलित हैं. अजित कुमार की 'अंकित होने दो' (1954), धर्मवीर भारती की 'ठेले पर हिमालय' (1958), रघुवंश की 'हरी घाटी' (1961), रघुवीर साय की 'दिल्ली मेरा परदेश' (1976), रवींद्र कालिया की 'स्मृतियों की जन्मपत्री' (1979), रामविलास शर्मा की 'पंचरत्न' (1980), रेणु की 'वनतुलसी की गंध' (1984) शमशेर की 'शमशेर' (सं.मलजय) एवं शमशेर की कुछ और गद्य रचनाएँ (1989), शिवपूजन सहाय की 'वागीश्वरी' (1994) आदि में दैनंदिनियों के अंश संग्रहीत हैं.

पुस्तक रूप में अनेक दैनंदिनियां प्रकाशित हुई हैं. इसमें से उल्लेखनीय दैनंदियां इस प्रकार हैं – राधाचरण गोस्वामी की 'दैनंदिनी' (1885), सत्यदेवजी की 'मेरी

डायरी' (1909), नरेन्द्रदेव शास्त्री वेदतीर्थ की 'जेल-डायरी' (1930), घनश्याम बिडला की 'डायरी के कुछ पन्ने', इलाचंद्र जोशी की 'डायरी के कुछ नीरस पृष्ठ' (1952), धीरेंद्र वर्मा की 'मेरी कॉलेज डायरी' (1971), पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की 'मेरी डायरी' (1960), बच्चन की 'प्रवास कार्यकर्ता की डायरी' (1972), दिनकर की 'दिनकर की डायरी' (1973), रामेश्वर टांटिया की 'डायरी के पृष्ठ: क्या खोया क्या पाया' (1977), जयप्रकाश नारायण की 'मेरी जेल डायरी' (1977), चंद्रशेखर की 'मेरी जेल डायरी' (1977), जानकी वल्लभ शास्त्री की 'एक असाहित्यिक की डायरी', मोहन राकेश की डायरी (1985), मलजय की डायरी, (तीन खंड- 2000 सं. नामवर सिंह), 'आस्था (नवल) की डायरी' (2001), नरेन्द्र मोहन 'साथ-साथ मेरा साया' (2003), बिशन टंडन की 'आपातकाल की डायरी' (खंड-1, 2002, खंड-2, 2005) कृष्ण बल्देव वैद की 'ख्वाब है दीवाने का' (2005) आदि.

इन दैनंदिनियों ने सबसे कम आयु में लिखी गयी और प्रकाशित हुई दैनंदिनी आस्था नवल की है. जब उनकी यह दैनंदिनी प्रकाशित हुई, तब वे दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा ही थीं और यह उनकी पहली पुस्तक भी है.

यद्यपि दैनंदिनी नितांत वैयक्तिक्र चीज है, लेकिन वह अपने समय को बिंबित करती है. इसलिए वह लेखक का वैयक्तिक्र दस्तावेज होने के साथ-साथ उसके समय का भी दस्तावेज बन जाती है. जहाँ तक दैनंदिनी-लेखक के निजी जीवन से संबंधित जानकारियों का प्रश्न है, वहाँ तो ऐसी सूचनाओं का अंबार होता है, जो अन्यत्र शायद ही मिलें, उसकी आत्मकथा में भी नहीं. इसीलिए लेखक के जीवनकाल में प्रकाशित होने वाली दैनंदिननियाँ संपादित रूप में प्रकाशित होती है. 1951 से 1982 तक प्रस्तुत मलजय की दैनंदिनी से हम उनकी निम्नमध्यवर्गीय आर्थिक परेशानियों, उनकी बहनों के स्वच्छंद आचरण उनकी बहन प्रेमा और शमशेर के प्रेम संबंध, पत्नी के मनोनुकूल सुंदर न होने के असंतोष, उनकी मनोग्रंथियों और उनकी साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं से परिचित होते हैं.

स्पष्ट है कि दैनंदिनियां लेखकों के समय, परिवेश, व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने-समझने की दृष्टि से नितांत उपयोगी होती. उनकी कलात्मकता-अकलात्मकता या उनकी प्रभावशीलता-अप्रभावशीलता तो दैनंदिनी-लेखकों की निजी क्षमताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है. हिंदी में दैनंदिनियों का प्रकाशन जोर पकड़ रहा है. इसलिए हिंदी का दैनंदिनी साहित्य क्रमशः संपन्न होता जा रहा है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1 *डायरी को हिंदी में _______ कहा जाता है.*

2 *भारत में डायरी लिखने का प्रारंभ _______ काल में हुआ.*

3 *ठेले पर हिमालय' के रचनाकार _______ हैं.*

4 *'दिल्ली मेरा परदेश' के रचनाकार ________ हैं.*

5 *'वनतुलसी की गंध' के रचनाकार ________ हैं.*

3.6 *'रिपोर्ताज' का परिचय – स्वरूप और विकास*

'रिपोर्ताज' मूलतः फ्रेंच (फ्रांसीसी) भाषा का शब्द है. इसका अंग्रेजी पर्याय रिपोर्ट माना जाता है. रिपोर्ताज का अभिप्राय किसी घटना, खबर, आँखों देखी हाल का यथा तथ्य वर्णन है जिसमें संपूर्ण विवरण द्रश्यमान हो जाता है. जबकि वास्तविक घटना का यथातथ्य चित्र उपस्थित करना रिपोर्ट कहलाता है. इस रचना विधा का प्रादुर्भाव सन् 1939 *के आसपास द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हुआ था. रूसी साहित्यकारों ने इसका विशेष प्रचार प्रसार किया तथा इसलिया एहरेनबुर्ग ने रिपोर्ताज के कुशल लेखक के रूप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की. हिंदी में रिपोर्ताज के जनक शिवदान सिंह चौहान है. इनके रिपोर्ताज 'लक्ष्मीपुरा' (रूपाभ, दिसंबर,* 1938*) को हिंदी का पहला रिपोर्ताज माना जाता है. हंस के 'समाचार और विचार' तथा 'अपना देश स्तंभों' के अंतर्गत भी उनकी इस शैली की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई जिनमें 'मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई' विशेषरूपेण उल्लेखनीय है. बंगाल के दुर्भिक्ष तथा महामारी के संदर्भ में रांगेय राघव द्वारा विशाल भारत के लिए लिखित रिपोर्ताज भी अपनी मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध है. अकालग्रस्त क्षेत्र में पहुँच कर उन्होंने पूंजीपतियों, व्यापारियों तथा मुनाफाखोरों के अमानवीय कृत्यो और भूख से बिलबिलाते नर-कंकालों पर जो मर्मस्पर्शी रिपोर्ताज लिखे, वे आगे चल कर 'तूफानों के बीच' (*1946*) में संकलित व प्रकाशित हुए.*

*प्रकाशचंद्र गुप्त, उपेन्द्रनाथ अश्क तथा रामनारायण उपाध्याय ने अपने रिपोर्ताजों के स्वतंत्र संग्रह प्रकाशित करने के स्थान पर उन्हें अपनी अन्य विषयक कृतियों में संकलित कर डाला है. प्रकाशचंद्र गुप्त ने घटनाप्रधान रिपोर्ताज लिखे हैं जो उनके रेखाचित्र-संग्रह रेखाचित्र में संगृहीत हैं. प्रकाशचंद्र गुप्त के उल्लेखनीय रिपोर्ताज 'स्वराज्य भवन', 'अल्मोडे का बाजार', 'बंगाल का अकाल' है. उपेन्द्रनाथ अश्क के रिपोर्ताज 'रेखाएँ और चित्र' (*1955*) में संकलित हैं. पहाड़ों में प्रेममय संगीत अश्क का उल्लेखनीय कथात्मक रिपोर्ताज है, जिसमें पहाड़ी गीतों के प्रतिपाद्य विषय प्रेम पर अत्यंत ज्ञानवर्धक सामग्री जुटायी गयी है. रामनारायण उपाध्याय के रिपोर्ताज उनके व्यंग्यात्मक निबंधों के संग्रह गरीब और अमीर पुस्तकें (*1958*) में संग्रहीत है.*

*रिपोर्ताज लेखन की दिशा में कतिपय अन्य उल्लेखनीय हस्ताक्षर है – भदंत आनंद कौसल्यायन, शिवसागर मिश्र, डॉ. धर्मवीर भारती, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, शमशेरबहादुर सिंह, श्रीकांत वर्मा तथा फणीश्वरनाथ रेणु, जिन्होंने क्रमशः 'देश की मिट्टी बुलाती है', 'वे लड़ेंगे हजार साल' (*1966*), 'युद्ध यात्रा' (*1972*), 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'प्लाट का मोर्चा', 'अपोलो का रथ', 'ऋणजल धनजल' (*1975*), सदृश सशक्त रचनाओं के माध्यम से रिपोर्ताज लेखन को नये आयाम दिये हैं. यह उल्लेखनीय है*

कि हिंदी का अधिकांश रिपोर्ताज साहित्य पत्र-पत्रिकाओं में ही प्रकाशित हुआ है. नयापथ, ज्ञानोदय, कल्पना, माध्यम, साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, दिनमान आदि पत्रिकाओं में समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण रिपोर्ताज प्रकाशित हुए हैं. जिनमें डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का 'खून के छींटे', फणीश्वरनाथ रेणु का 'एकलव्य के नोट्स', रामकुमार का 'पेरिम के नाट्स', विवेकीराय का 'बाढ़ ! बाढ़', 'कैलाश नारद का धरती के लिए', जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी का 'चीनियों द्वारा निर्मित काठमांडू-ल्हासा सड़क', निर्मल वर्मा का 'प्राग एक स्वप्न', सतीकुमार का 'क्या हमने कोई षडयंत्र रचा था', श्रीकांत वर्मा का 'मुक्तिफौज', कमलेश्वर का 'क्रांति करते हुए आदमी को देखना' विशेष रूपेण उल्लेखनीय है.

- ***बोध प्रश्न***

वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. *रेखाचित्र शब्द का अंग्रेजी शब्द बताइए.*
   (अ) शब्दचित्र (ब) रिपोर्ट (क) स्केच (ड) ड्रॉईंग
2. *'अतीत के चलचित्र' किसकी रचना है ?*
   (अ) अज्ञेय (ब) मधुकर (क) महादेवी वर्मा (ड) प्रकाशचंद्र गुप्त
3. *पत्र लेखन के मुख्यतः कितने प्रकार हैं ?*
   (अ) 2 *(ब)* 3 *(क)* 4 *(ड)* 5
4. *'एक साहित्यिक की डायरी' यह किस विधा की रचना है ?*
   (अ) डायरी (ब) आलोचनापुस्तक (क) रपोर्ताज (ड) आत्मकथा
5. *हिंदी का पहला रिपोर्ताज कौन सा है ?*
   (अ) लक्ष्मीराज (ब) लक्ष्मीपुरा (क) ऋणजल धनजल (ड) देश

सही / गलत बताइए

1. *'पिता के पत्र पुत्री के नाम' जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखा गया है.*
2. *'चिट्ठी पत्री' प्रेमचंद द्वारा लिखा गया है.*
3. *गद्य का प्रारंभ रीतिकाल से हुआ था.*
4. *रिपोर्ताज के जनक शिवदानसिंह चौहान है.*

3.7 *सार बिंदु*

- *रेखाचित्र का हिंदी में आरंभ छायावाद से हुआ था.*
- *रेखाचित्र के विकास को दो भागों में बाँटा गया* (1) *आरंभिक युग (छायावाद),* (2) *उत्कर्ष काल (छायावादोत्तर)*
- *छायावाद युग में बनारसीदास चतुर्वेदी तथा महादेवी वर्मा का योगदान उल्लेखनीय है.*
- *छायावादोत्तर काल में रेखाचित्र साहित्य में महादेवी वर्मा के साथ प्रकाशन्द्रगुप्त (पुरानी स्मृतियाँ), रामवृक्ष बेनीपुरी (माटी की मूरतें), विनयमोहन शर्मा (रेखा और*

रंग), देवेन्द्र सत्यार्थी (रेखाएँ बोल उठी) आदि प्रमुख रेखाचित्र कारों का योगदान उल्लेखनीय है

- *साहित्यकारों, राजनेताओं और समाजसेवियों से संबंधित अनेक संस्मरणात्मक रेखाचित्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं. अतः इस विधा का भविष्य निश्चित रूप से उज्जवल है.*
- *पत्र लेखन एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति है. जिसके द्वारा मनुष्य समाज में रहते हुए अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक सम्प्रेषित करना चाहता है.*
- *पत्र लेखन के मुख्यतः दो प्रकार है –* (1) *औपचारिक* (2) *अनौपचारिक.*
- *द्विवेदी युग का प्रमुख पत्र मुंशी राम का माना जाता है. जो पत्र विधा का प्रथम पत्र है.*
- *छायावाद युग में जो प्रकाशित हुए उनमें पत्रांजलि, विवेकानंद पत्रावलि, पत्रावलि तथा पिता के पत्र पुत्री के नाम उल्लेखनीय है.*
- *छायावादोत्तरकाल में धीरेन्द्र वर्मा – कृत यूरोप के पत्र, अमृतराय द्वारा संपादित प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह चिट्ठी पत्र, जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा संपादित निराला के पत्र आदि विशेष उल्लेखनीय है.*
- *डायरी व्यक्ति के जीवन का निजी दस्तावेज होता है.*
- *डायरी लिखने का प्रारंभ भारतेंदु युग से ही हुआ लेकिन अब तक इतनी कम दैनंदिनियां प्रकाशित हुई कि अनायास और असजग रूप से निर्मित साहित्य की इस गद्य विद्या को बहुत संपन्न नहीं कहा जा सकता है.*
- *रिपोर्ताज विधा का प्रादुर्भाव सन्* 1939 *में हुआ था.*
- *हिन्दी में रिपोर्ताज के जनक शिवदान सिंह चौहान जिनका रिपोर्ताज लक्ष्मीपुरा को माना जाता है.*
- *भदंत आनंद (देश की मिट्टी बुलाती है) धर्मवीर भारती (युद्ध यात्रा), शमशेर बहादुर सिंह (प्लाट का मोर्चा), फणीश्वरनाथ रेणु का (ऋण जल धन जल) आदि सशक्त रचनाकारों ने रिपोर्ताज लेखन को नये आयाम दिये हैं.*

3.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये

1. *पत्र का अर्थ, प्रकार एवं विशिष्ट अंगों को समझाइए.*
2. *'रेखाचित्र' का परिचय, स्वरूप एवं विकास की चर्चा कीजिए.*
3. *'पत्र साहित्य' का परिचय, स्वरूप एवं विकास की चर्चा कीजिए.*
4. *'डायरी' का परिचय, स्वरूप एवं विकास की चर्चा कीजिए.*
5. *'रिपोर्ताज' का परिचय, स्वरूप एवं विकास की चर्चा कीजिए.*

निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

1 *'रेखाचित्र' का परिचय*
2 *'पत्र साहित्य' का परिचय*
3 *'डायरी' का परिचय*
4 *'पत्र साहित्य' का परिचय*

3.9 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

- *हिंदी साहित्य का इतिहास – संपादक डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल*
- *गद्य विधाएँ – डॉ. विजय शंकर मिश्र*
- *साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ – कैलाशचंद्र भाटिया*

इकाई 4 सूचना तकनीकी युग की देन : गद्य के कुछ नवीन स्वरूप

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 सूचना तकनीकी और हिंदी

4.4 सूचना तकनीकी के नवीन स्वरूप

4.5 सूचना तकनीकी के आधार पर गद्य के नए आयाम

4.6 वैज्ञानिक प्रगति और हिंदी गद्य लेखन

4.7 सूचना प्रौद्योगिकी

4.8 तकनीकी की विकास यात्रा

4.9 इंटरनेट और हिंदी भाषा

4.10 सोशल मीडिया और हिंदी

4.11 सूचना तकनीकी और गद्य के सार

4.12 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

4.13 उपयोगी पाठ्य-सामग्री

4.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रों ! आप द्वितीय वर्ष बी.ए. के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई- 4 पढ़ने जा रहें हैं, हिंदी भाषा के प्रति आपकी रूचि को और अधिक विकसित और प्रगाढ़ बनाने के लिए हिंदी को भाषा तकनीक के माध्यम से कैसे और रुचिकर बनाई जाय, इसको लेकर यह इकाई सूचना तकनीकी युग की देन : गद्य के कुछ नवीन स्वरुप को तैयार किया गया है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- *सूचना तकनीक को अवश्य समझ पाएंगे।*
- *भाषा में इसकी उपयोगिता और महत्ता को समझ पायेंगे।*
- *सूचना तकनीक के स्वरुप को साथ ही इसके क्रमिक विकास को भी समझ पायेंगे।*
- *सोशल मीडिया के अनुगामी लाभ को समझ पाएंगे।*

4.2 *प्रस्तावना*

विद्यार्थी मित्रों ! सूचना तकनीकी ने मानवता के समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे गद्य रूपों में भी नए अवसर खुले हैं। सूचना तकनीकी का अध्ययन आधुनिक युग में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिससे हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बहुआयामी परिवर्तन हुआ है। इस तकनीकी उन्नति ने गद्य को भी नए स्वरूपों में रूपांतरित किया है, जिनसे नई दृष्टिकोण और बढ़ती उत्कृष्टता का संकेत मिलता है। इस इकाई में, हम सूचना तकनीकी के नवीन स्वरूपों पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

4.3 *सूचना तकनीकी और हिंदी*

सूचना प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को बदल दिया है और नई गद्य विधाओं को जन्म दिया है। इस युग में तकनीकी प्रगति ने सूचनाओं को एक नये स्तर पर पहुंचा दिया है और इसे अधिक उपयोगी तथा सुरक्षित बना दिया है। प्रौद्योगिकी के कारण यह नये गद्य रूपों को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वहीं, सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े नए रूप साहित्यिक जगत में गद्य को नए माध्यमों में बदल रहे हैं। ये नवीन प्रारूप विभिन्न तथ्य-आधारित, रोचक और अद्वितीय तकनीकी और साहित्यिक अनुभवों को प्रस्तुत करने में मदद कर रहे हैं। इससे साहित्य सृजन में नई दिशा-निर्देश सामने आ रहे हैं, जो आने वाले समय में और अधिक समृद्धि एवं उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

सूचना मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। भाषा सूचना या संचार का एक अनिवार्य हिस्सा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भाषा को सुलभ बनाने के लिए सूचना के क्षेत्र में क्रांति ला दिया। आधुनिक तकनीक ने संचार के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है। मीडिया के वैश्विक प्रसार ने सूचना विस्फोट जैसी स्थिति पैदा कर दी है। हिन्दी अपनी विभिन्न किस्मों का विकास कर रही है। भाषा सदैव गतिशील रहती है। मीडिया के नये आयाम ने इसे और गति दी है। एक नये दृष्टिकोण के आवश्यकता अनुसार- शब्दों, वाक्यों और अभिव्यक्तियों का चयन करना और प्रौद्योगिकी के अनुसार वाक्यों के तरीकों पर काम करना है। इसी प्रकार हिंदी नित नए प्रयोग करके व्यापक जनमत तैयार करने वाली भाषा बन सकती है, क्योंकि इसकी पैठ व्यापक है और मीडिया की मजबूरी है कि वह इतनी व्यापक पैठ वाली भाषा को नजरअंदाज नहीं कर सकता। इसलिए, विकास की परवाह किए बिना कार्यक्रम हों या सार्वजनिक शिक्षा, पत्र-पत्रिकाएँ, विज्ञापन हों या तकनीक, हिंदी को नकारा नहीं जा सकता, इतना ही नहीं मनोरंजन जगत में भी हिंदी भाषा का बहुत बड़ा योगदान है। प्रौद्योगिकी ऐसी भाषा की तलाश करती है जो विषय वस्तु की प्रकृति के लिए सार्थक और उपयुक्त हो। अतः हिंदी ने व्यवहार क्षेत्र की इस बहु-विविधता के अनुरूप स्वयं को ढालकर अपनी भाषाई संचार क्षमता को बहुत तेजी से विकसित किया है। इसी का परिणाम है कि आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय फैशन से लेकर

विज्ञान और वाणिज्य तक हर जगह हर तरह के आधुनिक संदर्भों को व्यक्त करने में सक्षम हो गई है।

4.4 *सूचना तकनीकी के नवीन स्वरूप*

सूचना तकनीकी के क्षेत्र में नित्य नए आयाम उत्पन्न हो रहे हैं-

पहला गद्य रूप है, "वाणी शैली" जिसे तकनीकी भाषा कहा जाता है। इसमें तकनीकी शब्दों का उपयोग होता है जो एक विशिष्ट क्षेत्र की समझ को बढ़ाते हैं। इसमें अक्सर कोडिंग, डिजाइन, और अन्य तकनीकी विषयों पर बातचीत होती है। इस गद्य रूप का उदाहरण है तकनीकी ब्लॉग जिसमें विकसित हो रहे प्रोजेक्ट्स और तकनीकी समस्याओं का समाधान किया जाता है।

दूसरा गद्य रूप है "सोशल मीडिया प्रवृत्ति" जिसमें लोग तकनीकी सूचना को साझा करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करते हैं। इसमें तकनीकी खोजों, नई उपयोगिताओं, और नवीनतम तकनीकी खबरों का सारांश होता है। इस गद्य रूप के अंतर्गत लोग अपने अनुभवों और दृष्टिकोणों को साझा करते हैं ताकि सोशल मीडिया सामुदायिक तकनीकी जानकारी का समृद्धि केंद्र बन सके।

तीसरा गद्य रूप है "नारवल गद्य" जिसमें कल्पना, रचनात्मकता, और विचारशीलता का समाहार किया जाता है। इसमें तकनीकी सूचना को कल्पनात्मक और सुदृढ़ भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। यह गद्य रूप विज्ञान फिक्शन, तकनीकी कविता, और नाटकों के माध्यम से व्यक्तिगत और सामाजिक प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करता है।
इन तीन गद्य रूपों के माध्यम से, सूचना तकनीकी की दुनिया ने नए स्वरूपों में अपने आप को प्रस्तुत किया है, जिससे लेखन कला और तकनीकी जगत का मेल होता है। ये नए गद्य रूप न केवल तकनीकी जानकारी को बढ़ाते हैं, बल्कि विचारशीलता और कल्पना को भी प्रोत्साहित करते हैं।

4.5 *सूचना तकनीकी के आधार पर गद्य के नए आयाम*

तकनीक के माध्यम से हिंदी लेखन में कुछ नविन बदलाव देखने को मिलते हैं-

1.*समाचार लेखन*

सूचना तकनीकी ने समाचार लेखन को नया आयाम दिया है। अब लोग रोजाना सूचना प्राप्त करने के लिए विभिन्न तकनीकी स्रोतों का उपयोग करते हैं। वेबसाइट्स, ऐप्स और सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न समाचार चैनल लोगों को ताजगी रखने में मदद करते हैं। सूचना तकनीकी ने समाचार लेखन को नए स्तर पर पहुँचाया है, जहां ऑटोमेटेड सिस्टम्स ने खबरों को संगठित रूप से प्रस्तुत करना शुरू किया है।

2. *व्यावसायिक लेखन*

व्यावसायिक लेखन में भी सूचना तकनीकी ने क्रांति की है। डिजिटल माध्यमों की महामारी के कारण, व्यापारी अब अपने उत्पाद और सेवाओं को ऑनलाइन प्रमोट करने के लिए नए लेखन स्वरूपों का उपयोग कर रहे हैं। विभिन्न डिजाइन और तकनीकी विचारों को समझाने के लिए उन्हें उत्तरदाता लेखन की आवश्यकता है जिससे उनका बिजनेस आगे बढ़ सके।

3. *तकनिकी प्रलेखन*

सूचना तकनीकी क्षेत्र में अगर कोई किसी तकनीकी प्रोडक्ट का उपयोग करना चाहता है, तो वह उसके लिए उपयोगकर्ता गाइड, ट्यूटोरियल्स, और अन्य टेक्निकल डॉक्युमेंटेशन स्वरूपों का सही स्रोत हो सकता है। इन डॉक्युमेंटेशन में सूचना तकनीकी भाषा का उपयोग किया जाता है जो उपयोगकर्ताओं को सीधे और स्पष्ट रूप से समझने में मदद करता है।

4. *व्यक्तिगत ब्लॉगिंग*

आजकल लोग अपने व्यक्तिगत तकनीकी अनुभवों और ज्ञान को बाँटने के लिए व्यक्तिगत ब्लॉग लेखन का उपयोग कर रहे हैं। यह नये स्वरूप का गद्य रूप है जिसमें लोग अपनी तकनीकी राह चलते हैं, और दूसरों को भी इस यात्रा में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं।

4.6 *वैज्ञानिक प्रगति और हिंदी गद्य लेखन*

विज्ञान-प्रवृत्ति ने भी गद्य को एक नया आयाम दिया है। इसमें विज्ञान और तकनीक के प्रगति को सामाजिक संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। यह गद्य रूप विज्ञान के अनुसंधान, नई खोजों और तकनीकी नवाचारों को सामाजिक परिवर्तन के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। इसमें सामाजिक समस्याओं का समाधान तकनीकी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जाता है, जिससे नये समाज की दिशा में प्रेरणा मिलती है।

1. *आभासी वास्तविकता*

आभासी वास्तविकता गद्य का एक और रोचक स्वरूप है जो सूचना तकनीकी में प्रगति को उचित रूप से प्रस्तुत करता है। इसमें पाठकों को वास्तविकता में महसूस करने का अनुभव होता है, जिससे साहित्यिक अनुभव में नई दिशा मिलती है। विभिन्न लेखकों ने आभासी वास्तविकता गद्य के माध्यम से कहानियों को जीवंत बनाने का प्रयास किया है, जिससे पाठक उनमें समृद्धि महसूस करते हैं।

2. *साइबरयुक्तगद्यात्मक हिंदी*

सूचना तकनीकी ने साइबरयुक्त गद्यात्मक हिंदी को एक नया दिशा दी है, जिसमें विज्ञान और साहित्यिक रचना का अद्भुत मिलन होता है। इसमें विश्वासुलू, रोमांटिक, और

तकनीकी तत्वों को जोड़कर अद्वितीय कहानियां बनती हैं। साइबरयुक्त गद्यात्मक हिंदी में अक्सर अलौकिक तत्वों, उच्च तकनीकी समृद्धि, और मानवता के साथ तकनीकी संबंधों को ध्यान में रखा जाता है।

3. *अर्थनीति*

सूचना तकनीकी के बढ़ते प्रभाव के साथ, अर्थनीति गद्य एक महत्वपूर्ण स्वरूप बन रहा है। इसमें तकनीकी विकास के असर को अर्थशास्त्रिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया जाता है। यह गद्य रूप आर्थिक प्रणाली, बाजार के नियम, और नए तकनीकी अवसरों को समझने में मदद करता है। इसमें आर्थिक सुरक्षा, डिजिटल मुद्रा, और क्रिप्टोकरेंसी जैसे विषयों पर चर्चा होती है।

4. *सोशल मीडिया*

सूचना तकनीकी के प्रगति के साथ, सोशल मीडिया में रूप को नए स्वरूपों में ले जाया है। सोशल मीडिया गद्य व्यक्ति और समाज के बीच संवाद का स्थान है, जिसमें तकनीकी उन्नति और उपयोगकर्ता जनसंख्या के साथ जुड़ा हुआ है। यह गद्य रूप व्यक्तिगत अनुभव, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक चर्चाओं का माध्यम है।

4.7 *सूचना प्रौद्योगिकी*

पिछले कुछ सालों में विज्ञान के क्षेत्र में कई बदलाव हुए हैं। पूरे विश्व में सूचना एवं तकनीकी क्रांति चल रही है, जिसके चलते सूचना युग घोषित किया गया है। अपनी मूल प्रकृति के कारण ही जापान और अमेरिका जैसे देश औद्योगिक समाज से सूचना समाज में परिवर्तित हो गये हैं। मानव सभ्यता के अंतिम अनुयायी – वैज्ञानिकता को तीस वर्षों में अपनाया गया है, यह मानव सभ्यता के इतिहास का नया प्रतिशत है। इस ज्ञान में सबसे बड़ा हिस्सा सूचना प्रौद्योगिकी का है। हिंदी लेखन आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से भी प्रभावित हुआ है। हिंदी भाषा अब देश की सीमाएं लांघकर दूसरी दुनियां तक पहुंच रही है। मानसिक स्वतंत्रता के लिए लोग भले ही अंग्रेजी का सहारा लेते हों पर अब हिंदी की पहुँच बहुयामी हो गई है। हिंदी गद्य को गति देने में इन माध्यमों ने अपनी सक्रीय भूमिका निभाई है– रेडियो टेलीविजन, टेलीफोन, वीडियो, माइक्रोफोन, प्राप्तकर्ता केंद्र, विज्ञापन, सोशल मीडिया आदि शामिल हैं।

मनुष्य अपनी विकास यात्रा में महत्वपूर्ण मील के पत्थर पार कर चुका है और वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक युग में प्रवेश कर चुका है। इन अवलोकनों में संचार के माध्यम से बहुत ही अनुपयोगी खबरें फैलाई जा रही हैं लेकिन मनुष्य के अंदर की दुनिया अभी भी उसी प्रकार की है जो बराबर कुछ न कुछ पड़ताल करती रहती है।

4.8 *तकनीकी की विकास यात्रा*

तकनीकी की दुनिया में सबसे ज्यादा रेडियो की दुनिया है जो लोगों को यह महसूस कराया इस माध्यम से भी लोगों तक पंहुचा जा सकता है। रेडियो की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह साक्षर और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोगों के लिए समान रूप से उपयोगी है। इसी कारण आज भी पूरे देश में रेडियो कार्यक्रम हिन्दी में प्रस्तुत किये गये और रेडियो के माध्यम से प्रसारित किये गये।

ऑल इंडिया रेडियो की विशेष इकाई ने वर्ष 1998 *में भारत की आजादी के वर्ष पर महिलाओं और बच्चों के लिए कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, परिवार, फ्लोरिडा, फूल, कल्याण का लक्ष्य, वंदे मातरम आदि। इसके अलावा* 22 *महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी थे। राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण. खेती, संगीत, फार्म प्रसारण, कल्याण, खेल आदि से संबंधित नायक कार्यक्रम हिंदी में भी प्रसारित किए जा रहे हैं। संचार क्रांति का प्रभाव आकाशवाणी पर भी पड़ा। न्यूजरूम में नई तकनीक का प्रवेश, हुआ और ई-मेल का प्रचलन और फोन के माध्यम से गीत-संगीत और फरमाइश चैनल का चलन भी खूब प्रचलित हुआ है। उसके बाद स्वतंत्र भारत में टेलीविजन का विकास हुआ। प्रसारण माध्यमों में टेलीविजन ही एकमात्र ऐसा प्रसारण माध्यम है जिसमें द्रव्य और श्रव्य दोनों शामिल था जिसके माध्यम से लोग हर पूरी दुनिया को देख सकते थे। टीवी लोगों के लिए एक अनूठा अनुभव था। भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भारत के संविधान में धारा* 1917 *(के) द्वारा प्रस्तुत एक मौलिक अधिकार है। टीवी कार्यक्रम सितारा के स्टार जो* 1959 *में हिंदी में प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य लोगों के यातायात, स्वास्थ्य, वयस्क शिक्षा और आत्म-विकास के खतरों के बारे में सामाजिक जागरूकता लाना था। सामाजिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देनाथा जिसकी भाषा हिंदी थी जो आगे चलकर हिंदी के विकास में काफी सार्थक सिद्ध हुई। यह विकास यात्रा आगे चलकर राष्ट्रीय एकता के लिए सहायक सिद्ध हुआ।*

सोशल मीडिया के आने के बाद हिंदी का प्रचलन में और भी प्रगति हुई। हिंदी केवल हिंदी भाषियों कि न होकर अब सबकी हो चुकी है, आज सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय जीवन से जुड़े हर पहलू का व्यवसायीकरण हो रहा है। नवीनतम तकनीक का समर्थन करने और उसे अपनाने की होड़ के कारण इस युग में कई कार्य तकनीक द्वारा ही किये जा रहे हैं। आज हर आविष्कार तकनीक पर निर्भर है। ऐसे में आम आदमी से संवाद करने की मजबूरी या यूं कहें कि आम आदमी को अपने बाजार जगत में मुनाफे का जरिया बनाने की चाहत ने हमें व्यापार जगत में भारतीय भाषाओं के इस्तेमाल की जरूरत का एहसास कराया है। सूचना तकनीक के माध्यम से हिन्दी के सर्वांगीण विकास की उज्ज्वल एवं स्पष्ट धारा प्रसारित की जा रही है। हिन्दी भाषा को पढ़ने, बोलने और सभी क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान के संचार का सशक्त माध्यम बनाना होगा।

सूचना प्रौद्योगिकी में विकसित तकनीकी शब्दावली का प्रचार-प्रसार किया जाएगा तथा तकनीकी निर्देशों, स्पेयर पार्ट्स, कानूनी भाषा तथा अन्य कार्यों की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग कर यहां के वातावरण को हिन्दी बनाया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी की भागीदारी तभी सार्थक हो सकती है जब उसे स्वतंत्र रूप से काम करने का अवसर मिले। आज हिंदी का प्रयोग गैर सरकारी- सरकारी संस्थानों में धड़ल्ले से हो रहा है।

आज हर नागरिक को जाग्रत करने के लिए प्रत्येक शिक्षण संस्थान को हिंदी को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग करना चाहिए। सरकारों को भी हिंदी के ज्ञान विज्ञान के लिए और हिंदी साहित्य यथाशीघ्र हिन्दी में उपलब्ध करवाने चाहिए। हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद के लिए आज उपलब्ध सॉफ़्टवेयर को और विकसित किया जाना चाहिए और इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इससे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा। हिंदी विश्व भाषा के रूप में तभी जीवित रहेगी जब वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और अंतरराष्ट्रीय बाजार की चुनौती का सामना कर सकेगी।

आज हिंदी के उपभोक्ताओं की बड़ी संख्या को ध्यान में रखते हुए हिंदी डेटाबेस विकसित किया जा रहा है। वेबसाइट पर विभिन्न विषयों के शब्दकोश एवं विश्वकोश हिन्दी में उपलब्ध करवाया जा रहा है। वैज्ञानिक चैनलों के साथ-साथ आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चैनल भी हिंदी में उपलब्ध कराये जाने चाहिए। इसकी स्थापना भारतीयता को बढ़ावा देने की दृष्टि से की जानी चाहिए। इस सारी तैयारी के साथ, इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी वैश्वीकरण और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संयुक्त चुनौती का सामना कर सकती है।

4.9 *इंटरनेट और हिंदी भाषा*

इंटरनेट इस युग का नवीनतम जनसंचार हथियार है। एक तरह से इस माध्यम ने सभी जनसंचार माध्यमों को बहुत बड़ी चुनौती दी है। यह माध्यम ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन का उन्नत संस्करण है। इसने सभी प्रकार के जनसंचार माध्यमों को अपने स्वरूप में समाहित कर उपभोक्ता वर्ग के समक्ष एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत किया है जो अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अद्भुत है। आप इस माध्यम पर जानकारी देख, पढ़ और सुन सकते हैं और वह भी अपनी सुविधा के अनुसार। इस माध्यम पर सूचना एवं जनसंचार प्रौद्योगिकी का इतना विशाल भंडार उपलब्ध है जिसका उपयोग कोई भी उपभोक्ता कहीं भी और किसी भी रूप में कर सकता है। पहले सभी प्रकार के जनसंचार माध्यम केवल सूचना प्रदाता के रूप में ही उपस्थित होते थे, लेकिन इस माध्यम ने सूचना प्रसारित करने की सुविधा को भी संभव बना दिया है, अर्थात इस माध्यम से हम न केवल वैश्विक संदर्भ में सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं, बल्कि सूचना संचारित करें. आप भी यह कार्य कर सकते हैं.

इंटरनेट वैश्विक पहुंच वाला एक जनसंचार माध्यम है। इस पर प्रयुक्त भाषा को विश्व के सभी लोग देख और पढ़ सकते हैं। वर्तमान संदर्भ में हिंदी इंटरनेट तक पहुंच चुकी है यानी वैश्विक समुदाय तक पहुंच चुकी है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा का प्रसार विश्व समुदाय में हुआ है।

आज इंटरनेट पर हिंदी कार्यक्रमों की विशाल श्रृंखला उपलब्ध है। इस पर हिंदी सूचना एवं मनोरंजन कार्यक्रम प्रमुख हैं, साथ ही हिंदी समाचार एवं हिंदी समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं भी देखी एवं पढ़ी जा सकती हैं। इसके अलावा रेडियो और दूरदर्शन के हिंदी कार्यक्रम इंटरनेट वेबसाइटों पर भी देखे और सुने जा सकते हैं। इन्टनेट की वजह से आज आकाशवाणी और दूरदर्शन के लाइव हिंदी कार्यक्रम सुनना और देखना संभव हो पाया है। आशय यह की इंटरनेट हमारे लिए आज सबसे महत्वपूर्व चिराग वास्तु हो गयी है जो हमारी इच्छा के अनुसार सही समय पर किसी भी रूप में वांछित जानकारी प्रदान करती है। ज्ञान-विज्ञान से संबंधित संस्थानों के कार्यक्रम भी इस माध्यम पर उपलब्ध हैं। जो लोग इन संस्थानों से सीधे नहीं जुड़ पाते हैं, वे इंटरनेट की सहायता से संबंधित संस्थान की वेबसाइट या ब्लॉग आदि पर जाकर वांछित कार्यक्रमों का लाभ उठा पाते हैं। अतः इंटरनेट माध्यम बहुउपयोगी सन्दर्भों वाला सिद्ध हो रहा है। आज कल सभी कार्यक्रम जो होस्ट किये जा रहे हैं ओ हिंदी में उपलब्ध हैं साथ ही हिंदी वेबसाइटें वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

4.10 *सोशल मीडिया हिंदी*

इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी की पहुँच विद्यार्थी मित्रों और भीं सुलभ हो गयी है इसके माध्यम से हिंदी जन सामान्य तक पहुँच पा रही है। हिंदी विधा के माध्यम से रोजगार सृजन कर सकतें हैं, जिसमें सोशल मीडिया अपनी महती भूमिका अड़ कर सकता है।

सोशल मीडिया के अनेकानेक लाभ इन माध्यमों से के द्वारा लिया जा सकता है-

1. *ब्लॉग*

हिंदी ब्लॉग लेखन और बोली जाने वाली देवनागरी लिपि में भारत ही नहीं पूरी दुनिया में बोली जाने वाली भाषा है। इसमें लिखे जाने वाले ब्लॉग लेखन की एक अपनी विधा है। 2007 *के पहले तक इसमें एक सही टूल न होने से इसमें लिखे जाने वाले ब्लॉग बहुत ही दुष्कर कार्य था किन्तु सही टूल हो जाने आज इसमें बहुत सुलभता हो गयी। पहले लिखने के साथ-साथ गूगल सर्च में भी हिंदी ब्लॉग या वेबसाइट को सर्च रिजल्ट में उचित स्थान नहीं मिला, जिसके कारण हिंदी ब्लॉगर अच्छा कंटेंट होने के बावजूद ट्रैफिक के लिए तरसते रहे, धीरे-धीरे तकनीक की सुलभता के चलते ये सब समस्याएं दूर हो गयी हैं। स्मार्टफोन की सुलभता और कम दर पर उपलब्धता ने इसके क्रमिक विकास में तेजी लाया है जिससे हिंदी पाठकों के मानसकिता में बदलाव आया है। भारत में हिंदी का बहुत बड़ा वर्ग है इसलिए* 2015 *के आसपास, प्रमुख कम्पनियों को ये लगा*

की अगर इसमें अन्य भाषा की तरह सुलभ बनाया जाय तो अच्छी प्रगति हो सकती है और ऐसा हुआ भी। हिंदी भाषियों की आवश्यकताओं को पूरा करना और सटीक खोज परिणाम खोजना ब्लॉग के लिए बरदान साबित हुआ है।

हिंदी ब्लॉग लेखन और हिंदी ब्लॉग लेखकों के लिए एक निर्णायक मोड़ था, जिसमें कोई भी अपनी पहचान जारी कर अपने विषय चुनकर आगे बढ़ सकता है। इसी प्रकार विद्यार्थी आप भी अपने रूचि का विषय चुनकर आगे बढ़ सकते हैं जैसे कोई विचार, लेख, खबर इत्यादि।

2. *फेसबुक*

फेसबुक का आरंभ 2004 *में हार्वर्ड के एक छात्र मार्क ज़ुकेरबर्ग ने की थी। इसने धीरे-धीरे पूरी दुनिया में अपना एक स्थापत्य सा हो गया लेकिन इसमें भी भाषा की दिक्क्तें उसी प्रकार थी जिस प्रकार ब्लॉग में। आरम्भ के दिनों में इसमें भी अंग्रेजी का आधिपत्य था* 2007-08 *के बाद हिंदी टूल सही से विकसित होने के बाद इसमें भी लोग अपनी अभिव्यक्ति करने लगे, जिससे चीजे सामान्य हो गईं। यह माध्यम भी हिंदी भाषा को दूर देश तक पहुंचा। लोग इस माध्यम का उपयोग कर एक दुसरे से जुड़ने लगे और आआगे चलकर यह भी एक रोजगार का माध्यम बना जिससे लोग आर्थिक रूप से धन अर्जन करने लगे। हिंदी भाषा को आगे बढ़ने में एक ये भी कारण सार्थक सिद्ध हुआ।*

3. *ट्विटर*

2006 *में जब ट्विटर आया तो यह एक संभ्रांत वर्ग का संबाद था लेकिन हिंदी के बहुत बड़े वर्ग को लम्बे समय तक नाकारा नहीं जा सकता था। हिंदी भाषा में टूल विकसित होने के बाद आज ट्विटर धीरे धीरे जन सामान्य तक पहुच गया है आज हर पढ़ा लिखा हिंदी भाषी इसमें अपना विचार प्रगट कर सकता है और अपनी सम्बेदना को दुनिया के किसी कोने तक पंहुचा सकता है। टूल पर आधुनिक संदर्भ में कई तकनीकें विकसित हुई हैं। इन तकनीकों का सीधा लाभ हिंदी को वैश्विक प्रचार-प्रसार में मिल रहा है। आज हर ई-कॉमर्स कम्पनियां अपने विपणन केलिए हिंदी का उपयोग और हर सोशल मीडिया पर हिंदी में विज्ञापन कर रही हैं ये हिंदी गद्य विधा का नया आयाम हैं।*

4. WhatsApp

WhatsApp *भी हिंदी भाषा को आगे बढ़ने में सार्थक सिद्ध हुआ।* WhatsApp *मोबाईल पर सबसे अधिक लोकप्रिय मैसेजिंग ऐप है.व्हाट्सएप मोबाइल पर सबसे लोकप्रिय मैसेजिंग ऐप है। व्हाट्सएप के माध्यम से फोटो, वीडियो, एनिमेशन और संदेश मुफ्त में भेजे और प्राप्त किए जा सकते हैं। व्हाट्सएप मैसेंजर में वॉयस ओवर आईपी (वीओआईपी) सेवा भी उपलब्ध है। मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में हर दिन नए उत्पाद और सेवाएं लॉन्च की जाती हैं, लेकिन व्हाट्सएप ने अपने करोड़ों सक्रिय उपयोगकर्ताओं के साथ जो सफलता हासिल की है, वह मेसेजिंग सेवा प्रदान करने वाला*

कोई अन्य ऐप हासिल नहीं कर पाया है। व्हाट्सएप का आविष्कार या निर्माण ब्रायन एक्टन और जान कौम ने किया था। जान कौम ने 24 फरवरी 2009 को कैलिफोर्निया, यूएसए में व्हाट्सएप को इनकॉरपोरेट किया था। इससे पहले ये दोनों Yahoo में कंप्यूटर प्रोग्रामर के तौर पर काम करते थे। उन्होंने सितंबर 2007 में याहू की नौकरी छोड़ दी। व्हाट्सएप शुरू करने से पहले दोनों ने फेसबुक में नौकरी के लिए आवेदन किया था लेकिन फेसबुक ने उनके आवेदन को खारिज कर दिया था। व्हाट्सएप पहली बार जनवरी 2009 में जारी किया गया था। इसे कई बदलावों के बाद जून 2009 में एक मैसेजिंग कम्पोनेनेट के साथ जारी किया गया था। उस समय व्हाट्सएप के 250,000 सक्रिय उपयोगकर्ता थे। आज दुनिया में व्हाट्सएप का इस्तेमाल करने वालों की संख्या 1.5 अरब से ज्यादा हो गई है। व्हाट्सएप शुरू में फ्री था लेकिन इसके तेजी से बढ़ते यूजर्स की वजह से इसे पेड सर्विस बना दिया गया। व्हाट्सएप का उपयोग फिर से मुफ्त हो चूका है। इसका कोई मासिक शुल्क नहीं है।

4.11 सूचना तकनीकी और गद्य के सार

तकनीक का संबंध किसी विशेष धर्म, जाति या देश से नहीं है। तकनीक सार्वभौमिक है, यानी दुनिया का कोई भी व्यक्ति अपने संदर्भ में इस तकनीक का लाभ उठा सकता है। इंटरनेट के माध्यम से सारे तंत्र जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार शरीर मृतपाय है बिना आत्मा के ठीक उसी प्रकार इन्टरनेट के बिना सारे उपकरण मृतपाय से हो जाते हैं। संचार प्रणाली का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि यह जाति, धर्म और सीमाओं से बंधे बिना पूरी दुनिया में पहुँचता है। किसी भी देश की छोटी से छोटी कंपनी अपने उत्पादों की गुणवत्ता के दम पर इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया पर हावी हो सकती है। विभिन्न उत्पादों की उनकी विशेषताओं सहित विस्तृत प्रस्तुति इंटरनेट और सोशल मीडिया की मुख्य विशेषता है। जिसके माध्यम से से ये हर जगह बड़ी ही सुलभता से पहुच रही है। अब सारे उत्पाद अब इंटरनेट पर हिंदी भाषा माध्यम से भी बेचे या खरीदे जा रहे हैं। जिसके माध्यम से विश्व स्तर पर हिन्दी भाषा माध्यम का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है।

अंग्रेजी वेबसाइटों के बावजूद हिंदी वेबसाइटों की वृद्धि यह दर्शाती है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी जानने वालों की संख्या काफी है और इसमें लगातार बढ़ोतरी हो रही है। हिंदी वेबसाइटों की संख्या और इन वेबसाइटों का बढ़ता उपयोग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का संकेत है। यह परिवर्तन भाषा के विस्तार के उद्देश्य से किया गया है ताकि हिंदी अधिकाधिक लोगों तक पहुंच सके। इंटरनेट पर हिन्दी में ऐसे अंग्रेजी एवं अन्य भाषा के शब्दों का चयन किया गया है जो अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को आकर्षित कर सकें तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत किये गये हों। इस प्रकार हिंदी का यह विकसित रूप हिंदी भाषा को अन्य भाषाओं की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में एक विशेष स्थान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सूचना तकनिकी ने गद्य विधाओं को नये आयामों तक पहुँचाया है और नवीनतापूर्वक व्यक्ति को समृद्धि का मार्ग दिखा रहा है। ये प्रारूप लोगों को तकनीक के माध्यम से सटीक जानकारी और सरल भाषा में समझने में मदद कर रहे हैं, जिससे हिंदी भाषा का लगातार संबर्धन हो रहा है और यह निरंतर आगे बढ़ रहा है।

प्रिय विद्यार्थी मित्रों! बी.ए. (स्नातक कला) वितीय वर्ष के चौथे प्रश्न-पत्र के लिए सूचना तकनिकी और गद्य के नवीन स्वरुप आपको बेहतर समझ आया होगा। आशा करते हैं कि इस इकाई में आप तकनीक के नए आयाम अपनाकर हिंदी को एक अन्य मानक आप लोग स्थापित करेंगे। परीक्षा के साथ-साथ आप तकनीक को अपनाकर रोजगार भी अपने लिए सृजित करेंगे।

4.12 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए***

01. *सूचना तकनीकी से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।*
02. *हिंदी गद्य को तकनीकी के माध्यम से कैसे गति दे सकतें हैं ?*
03. *सूचना तकनीकी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।*
04. *ब्लॉग से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिये।*
05. *हिंदी को व्यापक बनाने में सोशल मीडिया का कितना योगदान है? स्पष्ट करें।*

- ***निम्नलिखित टिप्पणी लिखिए***

1. *ब्लॉग*
2. *सूचना तकनीकी और हिंदी*
3. WhatsApp

4.13 *उपयोगी पाठ्य- समग्री*

01. http://surl.li/ohyou
02. http://surl.li/ohyqs
03. https://shorturl.at/cmwy3
04. https://shorturl.at/eoxU4

इकाई 5 'नाक' – पंडित बालकृष्ण भट्ट

रूपरेखा

5.1 उद्देश

5.2 प्रस्तावना

5.3 लेखक परिचय

5.3.1 बालकृष्ण भट्ट जी का जीवन परिचय

5.3.2 कृतित्व परिचय

5.4 निबंध का सार

5.5 निबंध के तत्वों के आधार पर 'नाक' निबंध का विश्लेषण

5.5.1 वैयक्तिकता

5.5.2 वैचारिकता

5.5.3 संक्षिप्तता

5.5.4 समाहारता

5.6 मुख्य अंशों की व्याख्या

5.7 सार-बिंदु

5.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

5.9 सन्दर्भ – सूची

5.1 उद्देश्य

छात्रो, इस इकाई में आप पंडित बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'नाक' का अध्ययन करने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- बालकृष्ण भट्ट जी के जीवन परिचय और कृतित्व का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- निबंध का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे.
- 'नाक' निबंध का निबंध के तत्वों के आधार पर विश्लेषण कर सकेंगे.
- 'नाक' निबंध की अंतर्वस्तु बता सकेंगे.

5.2 प्रस्तावना

आपने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ा है जैसे कहानी, उपन्यास और कविता. वैसे ही निबंध भी साहित्य की प्रमुख विधाओं में से एक है. निबंध अपने

आप में लेखक के विचारों का एक संकलन होता है. इस इकाई में हम बात करने वाले है बाल कृष्ण भट्ट की. जो भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकारों में से एक हैं. भारतेंदु काल की सभी रचनाएं राष्ट्रीय भावना और सामाजिकता से ओतप्रोत है. बालकृष्ण भट्ट जी सच्चे देशभक्त थे जो समाज सुधार पर बल देते थे. उनकी इसी भावना को दर्शाता 'नाक' एक सामान्य विषय पर लिखा गया गहन विचार प्रधान सामाजिक निबंध है. साथ ही इस वैचारिक निबंध के अंतर्गत समाज के प्रति उनकी विचारधारा प्रदर्शित होती है. प्रस्तुत निबंध में व्यंग्य और गंभीर चिंतन का दोनों का आकर्षक समन्वय किया गया है. भट्ट जी ने अपने युग की समस्याओं को व्यापक रूप में अपने निबंधों के माध्यम से चित्रित किया है. इस निबंध के द्वारा उन्होंने समाज में जो भी समस्याएँ हैं उन समस्याओं में से एक बाह्याडम्बर की समस्या भी है जिस पर लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं. बालकृष्ण भट्ट जी ने इस निबंध द्वारा समाज का दर्पण हमारे समक्ष रखा है. साहित्यकार होने के नाते उन्होंने पाठक को समाज का वास्तविक रूप दिखाकर साहित्यकार होने के कर्तव्य को बखूबी निभाया है. प्रस्तुत निबंध में 'नाक' अपने शरीर का केवल एक अंग ना होकर मनुष्य की इज्जत या आन बान का प्रतीक है. आइए अब इस रोचक निबंध का सार और विश्लेषण पढ़ने से पहले लेखक का परिचय प्राप्त कर लेते हैं.

5.3 *लेखक परिचय*

5.3.1 *बालकृष्ण भट्ट जी का जीवन परिचय*

पंडित बालकृष्ण भट्ट का जन्म ३ जून,सन् 1843 को इलाहाबाद में हुआ था. इनके पिता का नाम पंडित देवी प्रसाद था. जो शिक्षा की ओर विशेष रुचि रखते थे. उनकी माता का नाम पार्वती देवी था. जो एक पढ़ी लिखी समझदार महिला थी. बालकृष्ण भट्ट बचपन से ही अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण प्रसिद्ध थे. उन्हें अंग्रेजी और संस्कृत पढ़ने के लिए उनकी मां ने प्रेरित किया था. बालकृष्ण जी का विवाह 12 वर्ष की उम्र में सीधी सादी सुशील रामादेवी से करा दिया गया था. जो गंभीर और पति परायण महिला थी. भट्ट जी का पारिवारिक जीवन अभावपूर्ण रहा. जिसमें उनकी पत्नी ने उनका बखूबी साथ दिया. क्रांतिकारी विचार रखनेवाले बालकृष्ण भट्ट ने अपने निबंधों के माध्यम से विधवा विवाह का समर्थन किया और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया. तथा बाल विवाह और पुरानी रूढ़ियों का विरोध किया.निबन्धों के साथ ही उनके द्वारा रचित उपन्यासों और नाटकों का भी ऐतिहासिक दृष्टि से कम महत्व नहीं है. आइए अब हम ऐसे उच्च कोटि के साहित्यकार का कृतित्व परिचय प्राप्त करते हैं.

5.3.2 *कृतित्व परिचय*

जैसे कि ऊपर बताया जा चुका है पंडित बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु काल के प्रतिभाशाली निबंधकार माने जाते हैं. उन्होंने साहित्यिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक और राजनैतिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई. वे पाश्चात्य निबंधकार एडिसन से अधिक प्रभावित थे. उन्होंने भावात्मक, विचारात्मक, व्यंग्यात्मक, और संवादात्मक सभी प्रकार

के निबंध लिखे. बालकृष्ण भट्ट जी ने भावात्मक निबंध अधिक लिखे हैं. विनोद और व्यंग्य उनके निबंधों का अभिन्न अंग है. उन्होंने सीधे और सरल विषयों पर भी निबंध लिखे जैसे कि नाक, कान, बातचीत, द, पैसा, नहीं, आंसू, मुकुआ कौन कौन, इंग्लिश पढ़े सो बाबू होय, पुरुष अहेरी की स्त्री अहेर, ईश्वर भी क्या ठठोला है आदि. उनके द्वारा रचित सभी निबंध उत्कृष्ट कोटि के हैं. उनके निबंधों की विशेषता यह है कि नाम से ही पाठक आकर्षित हो जाता है. उनके भाव प्रधान निबंधों में आंसू, चंद्रोदय, मुग्धा माधुरी आदि का समावेश किया जा सकता है. बालकृष्ण भट्ट ने कई उपन्यास, नाटक लिखे और कई अनुवाद भी किये हैं किंतु प्रमुख रूप से वे निबंधकार है. उनके युग के लेखकों में वे सर्वप्रथम निबंधकार हैं यह कहना गलत न होगा. साथ ही भट्ट जी एक अच्छे और सफल पत्रकार भी थे. हिन्दी प्रचार के लिए उन्होंने संवत 1933 *में प्रयाग में 'हिंदीवर्द्धिनी' नामक सभा की स्थापना की. भट्ट जी ने उनकी हिंदी मासिक पत्रिका 'हिंदी प्रदीप' द्वारा* 32 *वर्ष तक हिंदी की सेवा की तथा अपने निबंधों को पाठकों तक पहुंचाया. रामविलास शर्मा लिखते हैं कि बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' के माध्यम से देश और समाज के लिए अपूर्व साधना का उदाहरण हमारे सामने रखा. वह अपने युग के सबसे महान विचारक थे. भट्ट जी ने लगभग* 1000 *निबंध लिखे जो चार संकलनों में प्रकाशित हैं.*

1. *साहित्य सरोज और साहित्य सुमन जिसके संपादक लक्ष्मीकांत भट्ट हैं.*
2. *भट्ट निबंध माला भाग* 1,2 *और भट्ट निबंधावली भाग* 1,2 *के संपादक धनंजय भट्ट हैं.*

इनके पुत्र धनंजय भट्ट ने इनके परिचय के संदर्भ में लिखा है कि इनका पहला लेख कवि वचन सुधा जो भारतेंदु रचित पत्रिका थी. उसमें 'काली राजा की सभा' शीर्षक से छपा. उसके बाद उनके कई लेख कवि वचन सुधा में छपे. उनकी दो कहानियाँ और 55 *कविताएँ उपलब्ध हैं. इनके द्वारा अनूदित नाटक और प्रहसनों की संख्या* 18 *मानी गई हैं. उन्होंने 'दमयंती स्वयंवर', 'बालविवाह चंद्रसेन', 'रेल का विकट खेल' आदि नाटक लिखे. जो चुटीले तथा व्यंग और हास्य से भरपूर हैं. उन्होंने 'वेणी संहार', 'मृच्छकटिक', 'पद्मावती' आदि का अनुवाद किया. उनके मुख्य उपन्यासों में 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान' का समावेश होता है.*

उन्होंने अपनी उग्र राजनीतिक विचारधारा के कारण ही अध्यापन कार्य छोड़ा था. वे वैयक्तिक कोटि के निबंध के प्रवर्तक माने जाते हैं. भट्ट जी का इसी कोटि का एक निबंध 'नाक' यहाँ प्रस्तुत है.

- ***बोधप्रश्न***

1 *बालकृष्ण भट्ट जी को संस्कृत और अंग्रेजी सीखने की प्रेरणा किससे मिली?*

(क) अपनी माँ से

(ख) अपनी बहन से

(ग) अपने पिता से

(घ) अपने चाचा से

2 *बालकृष्ण भट्ट जी की पत्नी स्वभाव से कैसी थी?*

(क) क्रूर

(ख) गंभीर और पति परायण

(ग) चालाक

(घ) भोली

3 *पंडित बालकृष्ण भट्ट किस युग के रचनाकार थे?*

(क) प्रेमचंद युग

(ख) प्रसाद युग

(ग) भारतेंदु युग

(घ) शुक्ल युग

4 *पंडित बालकृष्ण भट्ट ने लगभग कितने निबंध लिखें?*

(क) 1000

(ख) 2000

(ग) 3000

(घ) 4000

5 *पंडित बालकृष्ण भट्ट ने कौन सी पत्रिका का संपादन किया?*

(क) कवि वचन सुधा

(ख) हिंदी प्रदीप

(ग) बाला बोधिनी

(घ) चाँद

5.4 *निबंध का सार*

'नाक' निबंध भारतेंदु काल के प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित बालकृष्ण भट्ट के विचारों का संकलन है. प्रस्तुत निबंध में बालकृष्ण भट्ट जी ने समाज में फैले दुराचार और कुरीतियों जैसी तत्कालीन समाज में व्याप्त समस्याओं पर प्रकाश डाला है. इस निबंध की अंतर्वस्तु आज भी प्रासंगिक लगती है. 'नाक' का अर्थ यहां पर केवल शरीर के अंग के रूप में नहीं बल्कि इज्जत या मान सम्मान के अर्थ में लिया गया है. 'नाक' निबंध के आरंभ में ही एक कहावत कही गई है 'नकटा जिया बुरे हवाल' द्वारा समाज पर कटाक्ष किया है जिसकी 'नाक' कट जाती है वह कहीं का नहीं रहता. यहां इस निबंध में लेखक ने नकटे की दुर्दशा की बात पाठक सन्मुख रखी है. 'नाक' के कटने का डर और 'नाक' के बचाने के व्यर्थ प्रयत्न और 'नाक' के कट जाने के बाद की दुर्दशा का वर्णन लेखक ने चुटीले ढंग से इस वैचारिक निबंध में किया है. लेखक कहते हैं जो लोग अपना गुजर-बसर ठीक से नहीं कर पाते, दो वक्त की रोटी तक ठीक से नहीं जुटा पा रहे. ऐसे लोग पेट से ज्यादा 'नाक' को बचाने की चिंता करते हैं, इज्जत की चिंता करते हैं. 'नाक' के कारण इज्जत या मान सम्मान, दिखावा, आडम्बर पर जी खोल कर खर्च करते

हैं. ऐसे लोग मानते हैं कि जिंदगी भले कर्जे में डूबी रहे पर बिरादरी में 'नाक' नहीं कटनी चाहिए. सर या गर्दन भले ही कटे पर 'नाक' पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए. उनके लिए 'नाक' सबसे ऊ पर है. लेखक आगे कहते हैं कि लोग 'नाक' को बचाने के लिए क्या कुछ नहीं करते. राह भटक जाने पर भी अपनी ज़िद पर अड़े रहते हैं. किसी बड़े बुजुर्ग की भी नहीं सुनते हैं. यहाँ पर लेखक ने आज की पीढ़ी पर प्रहार किया है. जो दुसरे को अच्छा दिखाने के लिए, दुसरों पर अच्छा प्रभाव डालने के लिए अपनों की परवाह तक नहीं करते.

लेखक आगे एक उदाहरण देते हुए कहते हैं कि एक बूढ़ा बुजुर्ग है. जिसने अपनी जिंदगी में सब कुछ पा लिया है, जो जीवन के लोभ मोह से मुक्त है भगवा धारण किए हुए है, जिसके नाती पोते की संख्या दर्जनों में हैं. उसे अपनी बहू बेटियों के देखभाल की चिंता है. लेखक कहते हैं कि जैसे चादर के चार कोनों में से यदि एक कोना मैला हो जाता है या फट जाता है तो जब तक उसे ठीक ना किया जाये तब तक चादर किसी काम की नहीं रहती. उसी प्रकार यदि घर का एक भी सदस्य 'नाक' कटवा दे तो उसको बिरादरी से बाहर करवा दिया जाता है और बिरादरी को मनाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ता है. उसी प्रकार यही हाल बुजुर्ग का भी है. बुजुर्ग को भी बिरादरी के लोगों की चापलूसी करनी पड़ती है, तलवे चाटने पड़ते हैं भारी मशक्कत के बाद उन्हें बिरादरी में लेते हैं किंतु उनके द्वारा की गई अच्छाई भी लोगों को दृष्टिगत नहीं होती. बूढ़े का किया धरा नष्ट हो जाता हैं लोग मुंह बनाने लगते हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि इस 'नाक' को बचाने में कितने ही संकटों का सामना करना पड़ता है. बहुत से मतभेद होते हैं. किंतु 'नाक' नहीं कटनी चाहिए. जिन पर विशेष ईश्वर की कृपा रहती है उनकी अंत तक 'नाक' नहीं कटती. इस 'नाक' को बचाने में आजीवन गृहस्थी का मोह नहीं छूटता. चाहे अपने पीछे छूटे, आपस में झगड़े हो, सब स्वीकार्य है पर 'नाक' का कटना स्वीकार्य नहीं है. समाज या परिवार को बिखरने में जिन तत्वों का हाथ हैं उन्हीं तत्वों में से एक 'नाक' भी है. अंत में लेखक यह कहते हैं कि 'नाक' जो है समाज को अंधकार में धकेलने वाले, समाज को बिखेरने वाले तत्वों में से एक है. इसी के साथ लेखक ने अन्य तत्व जो समाज को छिन्न-भिन्न करते हैं उनकी ओर भी इशारा किया है. समाज के वे कौन से तत्व हैं इस पर हमें विचार करने के लिए छोड़ दिया गया है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. *.......समाज को छिन्न भिन्न कर देती है.*
2. *'नाक' का अर्थ यहांपर केवल शरीर के अंग के रूप में नहीं बल्कि...........के अर्थ में लिया गया है.*
3. *कहावत '..............' द्वारा समाज पर कटाक्ष किया है.*
4. *इस 'नाक' को बचाने में आजीवन............. का मोह नहीं छूटता.*

5. *'नाक' निबंध.......... के प्रसिद्ध साहित्यकार पंडित बालकृष्ण भट्ट के विचारों का संकलन है.*

5.5 *निबंध के तत्वों के आधार पर 'नाक' का विश्लेषण*

5.5.1 *वैयक्तिकता*

पंडित बाल कृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'नाक' एक लघु निबंध है. समाज की आपसी समस्याओं को मिटाकर उन्होंने नया रास्ता दिखाने की कोशिश की है. वे एक सजग लेखक थे उनकी कृतियों में सजगता देखने को मिलती है. इस निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की छाप है नवजागरण काल में अनेक सामाजिक समस्याएँ व्याप थी. उन समस्याओं का अपने निबन्धों में समाज के प्रति अपने दायित्व को लेखक ने बखूबी निभाया है.यह निबंध प्रासंगिक होने के साथ इस निबंध में सजीवता और आत्मीयता के दर्शन होते हैं. बालकृष्ण भट्ट जी अंधश्रध्दा और बाह्यआडम्बर जैसी कुरीतियों के विरोधी थे. वे प्रगतिशील विचारों के हिमायती थे. अपने अन्दर जो मूल्य हैं उनका सिंचन वे समाज में करना चाहते थे. अपने निबंधों द्वारा उन्होंने त्याग, प्रेम, शांति, बलिदान, संतोष आदि मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है. इस निबंध के माध्यम से पाठक को यह बताने का प्रयास किया गया है कि भारतीय समाज में जो कुरीतियाँ हैं, दोष हैं, वह घातक हैं. हम जो हैं जैसे हैं वैसे ही रहें हमें झूठा आडंबर और दिखावा नहीं करना चाहिए. छोटी-छोटी मान्यताएँ, पूर्वाग्रह हमें आगे बढ़ने से रोकते हैं. जो है जैसा है उसे वैसे ही स्वीकार करना चाहिए.

5.5.2 *वैचारिकता*

इनके साहित्य का विषय समाज से आता है बालकृष्ण भट्ट के समय की सामाजिक परिस्थितियों का ब्यौरा हमें इस निबंध में मिलता है. कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है. यहां पर यह बात सिद्ध होती दिखाई पड़ती है. बालकृष्ण भट्ट अपने लेखन द्वारा आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे और भट्ट जी की इसी विचारधारा के दर्शन हमें उनके इस निबंध में होते हैं. समाज में बदलाव लाना साहित्यकार का कर्तव्य है और इस कर्तव्य का निर्वाह उन्होंने बखूबी किया है. जिस समय यह निबंध लिखा गया उस समय समाज समस्याओं से घिरा हुआ था. उन्हीं में से एक समस्या 'नाक' निबंध में दर्शायी गयी है. आन-बान-शान को बचाने के लिए मनुष्य किस हद तक जा सकता है. यह इस निबंध में दर्शाया गया है. सामाजिक नियमों को निभाने के लिए मनुष्य अपने अस्तित्व को भी खो बैठता है. बालकृष्ण भट्ट जी के 'नाक' निबंध में उनके विचारों की गहनता और अनूठापन दिखाई पड़ता है.

5.5.3 *संक्षिप्तता*

'नाक' निबंध में संक्षिप्तता एक महत्वपूर्ण और प्रधान विशेषता है. बाल कृष्ण भट्ट जी के निबंध बहुत छोटे होते हैं. लेखक अपनी बात कम शब्दों में तीखे ढंग से

कहते हैं. प्रस्तुत निबंध में भी लेखक तटस्थता से अपनी बात सरलता से पाठकों तक पहुँचाने में सफल रहें है. अपने शब्दों के माध्यम से लेखक ने गागर में सागर भरने वाली बात की है. उन्होंने अपने विषय का आरंभ बडे ही रोचक और चुटीले ढंग से किया है. निबंध का आरंभ एक कहावत से होता है-'नाक' निगोड़ी भी क्या ही बुरी बला है जिसके नहीं तो उसका फिर जीना ही क्या? कहावत है - 'नकटा जिया बुरे हवाल' है तो न जानिए क्या-क्या फसाद बरपा करती है, जरा-जरा सी बात में इसके कट जाने का डर लगा रहता है।" दो ही परिच्छेद में अपनी बात को निष्पक्षता से लेखक ने बखूबी प्रस्तुत किया है और अंत में समाज की अन्य समस्याओं की ओर इशारा करते हुए निबंध का समापन किया है. भट्ट जी के ज्यादातर निबंधों की यही विशेषता रही है.

5.5.4 *समाहारता*

समाहारता के अंतर्गत शैली, भाषा आदि का समावेश कर सकते हैं. भाषाशैली द्वारा सम्प्रेषण सरल बनता है. शैली की यदि बात करें तो यह निबंध का एक महत्वपूर्ण अंग है. बालकृष्ण भट्ट के निबंधों की शैली बहुत ही रोचक और विषय के अनुरूप होती है. वह अपनी बात सरल शैली में लोगों तक पहुंचाना चाहते थे. इनके 'नाक' निबंध पर दृष्टिपात करने पर यह पता चलता है कि इस निबंध में एक लयात्मकता है. प्रस्तुत निबंध में व्यंगात्मक शैली द्वारा समाज पर सटीक निशाना साधा गया है. हम बात करते हैं तो इनकी रचनाओं में भाषा, विचार और कल्पना का भी सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है. इस निबंध में उनके अनुभव का प्रभाव दिखाई देता है. उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है. भट्ट जी मुहावरों के प्रयोग में सर्वाधिक निपुण है तथा उनके समकालीन लेखकों की तुलना में उनके निबंधों में व्यंग अधिक जोरदार है. उनकी नित्य व्यावहार की और भाषा बोलचाल के निकट होने के साथ साथ उनके निबंधों में उर्दू, अंग्रेजी और संस्कृत शब्दों का भी यथा स्थान प्रयोग दिखाई पड़ता है. भाव के अनुरूप शब्दों का चयन करने में वे कुशल थे. 'नाक' निबंध में उनकी प्रवाहमयी भाषा बड़ी सजीव और रोचक बन पड़ी है. प्रस्तुत निबंध में भाषा सरल है तो कहीं पर जटिल बन पड़ी है, कहीं पर वाक्य छोटे छोटे हैं, तो कहीं संयुक्त वाक्य की झड़ी प्राप्त होती है. प्रस्तुत निबंध में अपने आप में निबंधकार की सफलता निश्चित होती है.

कहावत : *नकटा जिया बुरे हवाल.*

मुहावरे : *भाजी बंद करना, नाक-भौं सिकोड़ने लगना*

संस्कृत शब्द : *भोजनाच्छान, यावज्जीव*

उर्दू शब्द : *रहनुमा बिरादरी*

- ***बोध प्रश्न***

निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत बताइये

1. *'नाक' निबंध में संक्षिप्तता एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है.*
2. *इस निबंध में 'नाक' हमारी संस्कृति का प्रतीक है.*

3. *इस निबंध में उर्दू शब्दों का प्रयोग अधिक है.*
4. *'नाक' निबंध में लेखक का व्यक्तित्व छलकता है.*
5. *लेखक पुराने विचारों के समर्थक थे.*

5.6 *मुख्य अंशों की व्याख्या*

- ***निम्नलिखित गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिये***

'नाक' निगोड़ी भी क्या ही बुरी बला है जिसके नहीं तो उसका फिर जीना ही क्या?''

सन्दर्भ : *उपर्युक्त अंश पंडित बालकृष्ण भट्ट के 'नाक' निबंध से लिया गया है. जो इस निबंध की प्रथम पंक्ति है.*

व्याख्या: *बला शब्द हमेशा बुरी चीज के लिए संबोधित किया जाता है.'नाक' को इस निबंध में बुरी बला कहा गया है तथा सभी समस्याओं की जड़ समझा गया है. लेखक इस निबंध द्वारा यह कहना चाहते हैं कि 'नाक' जो है समाज को अंधेरे में धकेलने का काम करती है 'नाक' ही इंसान से अच्छे बुरे बुरे कार्य और व्यवहार कराती है. निबंध में 'नाक' इंसान की झूठी शान ओ शौकत का प्रतीक है. मनुष्य पेट से लाचार होता है पर 'नाक' को बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ता. नकटे की दुर्दशा पर व्यंग्य किया गया है. 'नाक' अच्छे अच्छों को घुटनों के बल ला देती है ऐसी 'नाक' जो है वह बुरी बला है ऐसा लेखक का विचार है. जिसकी 'नाक' नहीं होती वह समाज में सर उठाकर जीने लायक नहीं रहता. प्रस्तुत अंश में व्यंगात्मक ढंग से इस मान्यता को लेखक ने नकारा है.*

विशेष : *प्रस्तुत अंश में 'नाक' को प्रतीकात्मक रूप देकर समाज का यथार्थ सामने लाने का प्रयत्न किया गया है. लेखक ने व्यग्यात्मक ढंग से अपनी बात को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है.*

लेखक ने खड़ीबोली बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है.

1. *समाज को छिन्न-भिन्न करने में जहाँ और बहुत सी बातें हैं उनमें 'नाक' निगोड़ी भी एक है.*
2. *बूढ़े का किया धरा सब नष्ट हो गया, हाथ मल पछताता रह गया.*

5.7 *सार- बिन्दु*

- *प्रस्तुत इकाई में आपने पंडित बालकृष्ण भट्ट के 'नाक' निबंध का अध्ययन किया.*
- *इस निबंध में 'नाक' मनुष्य की आन बान, इज्जत को सूचित करता है.*
- *इस निबंध की विषय वस्तु विचार प्रधान है.*
- *भाषा अलंकारिक और मुहावरेदार है. खड़ीबोली हिंदी की सरल और बोलचाल की भाषा के साथ ही अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया गया है.*
- *'नाक' निबंध में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है.*

- *इस निबंध का शीर्षक भी बहुत ही रोचक और छोटा है जिससे पाठकों की जिज्ञासा को बढ़ावा मिलता है.*
- *प्रस्तुत निबंध द्वारा लेखक के तत्कालीन समाज की परिस्थितियों के साथ साथ समस्याओं का भी पता चलता है.*
- *'नाक' निबंध छोटा है पर लेखक के विचार वस्तु का विस्तार बड़ा है.*
- *प्रस्तुत निबंध में निबंधकार समाज में व्याप्त बुराइयों और पूर्वाग्रहों की ओर संकेत देते हैं.*

5.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिये***

1 *'नाक' निबंध में वर्णित सामाजिक समस्या पर विचार कीजिए.*

2 *'नाक' एक वैचारिक निबंध है स्पष्ट कीजिए.*

3 *'नाक' निबंध के शीर्षक की सार्थकता बताइए.*

4 *'नाक' निबंध के प्रासंगिकता पर विचार कीजिये.*

- ***संक्षिप्त में उत्तर लिखिए***

1. *पंडित बालकृष्ण भट्ट जी को कौन-कौन सी भाषाओं का ज्ञान था?*
2. *प्रस्तुत निबंध में 'नाक' से क्या तात्पर्य है?*
3. *'नकटा जिया बुरे हवाल' कहावत का अर्थ बताइए.*
4. *लेखक ने 'नाक' निबंध में किस समस्या की ओर इशारा किया है?*
5. *'नाक' निबंध किस युग में लिखा गया ?*

- ***निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत बताइए***

1. *'नाक' के कट जाने के बाद की दुर्दशा का वर्णन लेखक ने चुटीले ढंग से इस निबंध में किया है.*
2. *'नाक' एक भावात्मक निबंध है.*
3. *'नाक' निबंध में लेखक ने 'नाक' की उपयोगिता के बारे में बताया है.*
4. *'नाक' में अधिकतर उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है.*
5. *'नाक' निबंध राजनीतिक समस्या से सम्बंधित है.*

- ***निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए***

1. *'नाक' निबंध की अंतर्वस्तु*
2. *पंडित बालकृष्ण भट्ट की निबंध कला*
3. *पंडित बालकृष्ण भट्ट का कृतित्व*
4. *समाज को बिखेरने वाले तत्व या समस्याएं*
5. *'नाक' निबंध में संक्षिप्तता*

5.9 *संदर्भ सूची ग्रंथ*

1. *भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा,*
2. *भट्ट-निबंधावली (दो भाग), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,* 1994
3. *बालकृष्ण भट्ट, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ,* 2012
4. http://gadyakosh.org
5. http://www.hindisamay.com/writer/

इकाई 6 'भय' रामचंद्र शुक्ल : पाठ और विश्लेषण

रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 लेखक परिचय

6.3.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जीवनपरिचय

6.3.2 कृतित्व परिचय

6.4 निबंध का सार

6.5 निबंध कला की दृष्टि से 'भय' निबंध की विशेषताएँ

6.5.1 वैयक्तिकता

6.5.2 वैचारिकता

6.5.3 संक्षिप्तता

6.5.4 समाहारता

6.6 मुख्य अंशों की व्याख्या

6.7 सार-बिंदु

6.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

6.9 संदर्भ-सूची

6.1 उद्देश्य

बी.ए. द्वितीय वर्ष हिंदी के चतुर्थ प्रश्नपत्र (मुख्य) 'हिंदी की कथेतर विधाएँ' के अंतर्गत खंड 2 – 'निबंध' की यह द्वितीय इकाई है. निबंध आधारित इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे.
- उनके निबंधलेखन की विशेषताओं को समझ सकेंगे.
- 'भय' निबंध की अंतर्वस्तु को स्पष्ट कर सकेंगे.
- निबंध के तत्वों के आधार पर 'भय' निबंध का विश्लेषण कर सकेंगे.

6.2 प्रस्तावना

छात्रो, इस खंड में हम निबंध सम्बंधित अध्ययन कर रहे हैं. पिछली इकाई में आपने बालकृष्ण भट्ट के 'नाक' निबंध का अध्ययन किया. प्रस्तुत इकाई आचार्य रामचंद्र

के 'भय' से सम्बंधित है. प्रस्तुत निबंध उनके चिंतामणि भाग –1 के उनके मनोविकार सम्बंधित 10 *निबंधों में से एक है. इस निबंध में लेखक ने 'भय' से सम्बंधित सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है. 'भय' के अर्थ से लेकर रूप और स्वरूप तक सभी सन्दर्भों में विस्तार से विचार विमर्श किया गया है.*

'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ के प्रतिभाशाली लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल को हिंदी जगत में कौन नहीं जनता उनका व्यक्तित्व और कृतित्व किसी परिचय का महोताज नहीं है. किन्तु ऐसे प्रतिभाशाली साहित्यकार के जीवन और कृतित्व को जाने बिना इकाई का अध्ययन अधूरा रहेगा. तो आइये आचार्य रामचंद्र शुक्ल का परिचय प्राप्त करलेते हैं.

6.3 *लेखक परिचय*

6.3.1 *आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जीवन परिचय*

हिंदी साहित्य के बीसवीं शताब्दी के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म 4 *अक्टूबर* 1884 *(वि. सं* 1941*)अश्विन शुक्ल पुर्णिमा को बस्ती ज़िले के अगौना नामक गाँव में हुआ था. उनके पिता का नाम पं. चंद्रबली शुक्ल था. जो एक सुपरवाइजर कानूनगो के पद पर नियुक्त थे. सन्* 1891 *ई. में वे सपरिवार हमीरपुर जिले के राठ तहसील आ गये. यहीं से शुक्ल जी की शिक्षा आरम्भ हुई. शुक्ल जी के पिता पाश्चात्य संस्कृति और मुस्लिम सभ्यता के पक्षधर थे. हिंदी से ज्यादा वे फारसी और उर्दू भाषा पर बल देते थे किन्तु बालक रामचंद्र शुक्ल को हिंदी भाषा से बचपन से ही विशेष लगाव था. सन* 1892 *ई. में उनके पिता की मिर्जापुर के सदर कानूनगो के पद पर नियुक्ति हुई. समस्त परिवार वहीं आकर रहने लगा. जिस समय शुक्ल जी की अवस्था नौ वर्ष की थी, अपने सबसे छोटे भाई कृष्णचन्द्र शुक्ल के जन्म के बीस दिन बाद उनकी माता का देहान्त हो गया. तीन भाइयों में से आयु में सबसे बड़े भाई रामचंद्र शुक्ल पर तो जैसे दुःख का पहाड़ ही टूट पड़ा.* 1893 *में उनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया. मातृसुख के अभाव के साथ-साथ विमाता से मिलने वाले दुःख ने उनके व्यक्तित्व को अल्पायु में ही परिपक्व बना दिया. मिर्जापुर की प्रकृति की छाया में वे पले बढ़े. प्रकृति सही उन्हें माँ सा सौहार्द प्राप्त हुआ. ठाकुर बलभद्र सिंह, पं.विद्येश्वरी और पं.वागेश्वरी जैसे विद्वानों के सहचर्य और प्रकृति के सानिध्य में उन्हें एक सच्चे भारतीय होने का अहसास और गर्व हुआ जो आजीवन बना रहा.*

शुक्ल जी का अध्ययन के प्रति झुकाव बाल्यकाल से ही था. राठ तहसील में उन्होंने अक्षरारंभ किया तथा सुचारू रूप से उन्होंने अपना अध्ययन मिर्जापुर में ही आरम्भ किया. वे हिंदी भाषा के साथ साथ अवधी, उर्दू, फारसी और संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था. किंतु इसके लिए उन्हें अनुकूल वातावरण न मिल सका. मिर्जापुर के लंदन मिशन स्कूल से 1901 *में स्कूल फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण की. पिता जी ने उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा पर उनकी रुचि वकालत में न होकर साहित्य में*

थी. अत: परिणाम यह हुआ कि वे उसमें अनुत्तीर्ण रहे. शुक्ल जी के पिताजी ने उन्हें नायब तहसीलदारी की जगह दिलाने का प्रयास किया, किंतु उनकी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण यह संभव न हो सका.

उनके कार्यक्षेत्र पर यदि दृष्टि डालें तो 1903 *से* 1908 *तक 'आनन्द कादम्बिनी' के सहायक संपादक का कार्य किया. कुछ दिनों तक रामचंद्र शुक्ल मिर्ज़ापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक रहे. इसी समय से उनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे और धीरे-धीरे उनका कार्य क्षेत्र बढ़ने लगा और उनकी ख्याति चारों तरफ फैलने लगी.* 1908 *में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़े. श्यामसुन्दरदास के शब्दों में 'शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय पं. रामचंद्र शुक्ल को प्राप्त है. वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भी संपादक रहे.* 1919 *में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए. जहा बाबू श्याम सुंदर दास की मृत्यु सन्* 1937 *ई. के बाद से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर रहते हुए ही सन्* 1941 *ई. में उनकी साँस के दौरे में ह्रदय गति बन्द हो जाने से मृत्यु हो गई.*

6.3.2 *कृतित्व परिचय*

आचार्य रामचंद्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक होने के साथ साथ छायावादी निबन्धकार, अनुवादक, आलोचक के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुआयामी और महत्वपूर्ण है. आइये, अब हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभाशाली लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के रचना कर्म पर एक दृष्टि डाल लेते हैं.

अनुवाद : *कल्पना का आनंद, साहित्य, मेगस्थनीज का भारतीय वर्णन, प्राचीन भारत का एक शक राजा, राज्य प्रबंध शिक्षा, आदर्श जीवन, विश्व प्रपंच, शशांक(बांग्ला से अनुदित उपन्यास), बुद्धचरित, भारत में हूण.*

कविता संग्रह : *मधुस्त्रोत जिसमें कुल इकतीस कविताएँ संगृहीत हैं.*

कहानी : *इनकी कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय'* 1903 *में सरस्वती पत्रिका में छपी जो हिंदी साहित्य की पहली कहानी कही जाने वाली दस कहानियों की दौड़ में शामिल रही है.*

इतिहास ग्रन्थ : *'हिंदी साहित्य का इतिहास'*

निबन्धात्मक ग्रन्थ : *'काव्य में रहस्यवाद', 'विचार-वीथी', चिंतामणि भाग-*1 *से* 4, *'त्रिवेणी'*

आलोचनात्मक ग्रंथ : *रसमीमांसा, सूरदास, गोस्वामी तुलसीदास, जायसी पर की गई आलोचनाएँ, आदि शुक्ल जी की आलोचनात्मक रचनाएं हैं.*

सम्पादित ग्रन्थ : *भ्रमरगीत सार, जायसी ग्रंथावली, वीरसिंहदेव चरित, तुलसी ग्रंथावली, भारतेंदु संग्रह*

कोष : *हिंदी शब्द सागर*

जीवनी : *श्री रायकृष्ण दास की जीवनी*

● *बोध प्रश्न*

1. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' का प्रकाशन वर्ष कौनसा है?**

   (क) 1910 (ख) 1903

   (ग) 1900 (घ) 1905

2. **'शशांक' किस भाषा से अनुदित उपन्यास है?**

   (क) बांग्ला (ख) मराठी

   (ग) तमिल (घ) अंग्रेजी

3. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का चिंतामणि कितने भागों में प्रकाशित है?**

   (क) एक (ख) दो

   (ग) तीन (घ) चार

4. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल के कवितासंग्रह का क्या नाम है?**

   (क) मधुमालती (ख)मधुस्त्रोत

   (ग) मधुपान (घ)मधुसुधा

5. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी नगरी प्रचारिणी सभा से किस वर्ष जुड़े?**

   (क) 1910 (ख) 1903

   (ग) 1908 (घ) 1907

6.4 *निबंध का सार*

प्रस्तुत निबंध 'भय' आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार संबंधित दस निबंधों में से एक है. चिंतामणि भाग 1 में लेखक ने विचारों का चिंतन मंथन करके जो वैचारिक मणि निकाले हैं उनकी बात लेखक ने उनके मनोविकार सम्बन्धी निबंधों में की है. 'भय' निबंध भी उन्हीं मनोंविकारों में से एक है. लेखक ने आरम्भ में ही 'भय' के अर्थ पर प्रकाश डाला है. आगे वे 'भय' और क्रोध का अंतर स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि एक ही वाक्य को अलग अलग ढंग से बोलने से 'भय' क्रोध में बदल जाता है जैसे यदि किसी गँवार को ज्योतिष द्वारा भविष्य वाणी की जाती है कि कल तुम्हारे हाथ पैर टूटेंगे तो वह भयभीत होगा पर जब उसे कोई यह चेतावनी दे कि कल कोई उसके हाथ पैर तोड़ने वाला है तो वह क्रोधित हो जाएगा. शुक्ल जी के अनुसार 'भय' के दो रूप हैं एक साध्य और दूसरा असाध्य. वे कहते हैं कि दो मनुष्य एक पहाड़ी नदी के किनारे बैठे या आनंद से बातचीत करते चले जा रहे थे. इतने में सामने शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी. यदि वे दोनों उठकर भागने, छिपने या पेड़ पर चढ़ने आदि का प्रयत्न करें तो बच सकते हैं.इस प्रकार यदि वे बचने की कोशिश करें तो 'भय' का रूप साध्य होगा यदि वे डरकर अपनी जगह से हिल भी न पायें तो उसे असाध्य 'भय' का रूप कह सकते हैं.

शुक्ल जी निबंध में पुरुष और स्त्री के स्वभावगत 'भय' के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि पुरुष के 'भय' की निंदा की जाती है जब कि स्त्री के 'भय' को

वे मनोरंजन की वस्तु बतलाते है. आगे 'भय' के स्वरूप को अधिक स्पष्ट करने के लिए लेखक कहते हैं कि 'भय' का कारण असहनशीलता और अविश्वास है. वे अपनी इस बात को व्यापारी के उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं कि किसी भीरु व्यापारी में अपने व्यवसाय कौशल पर अविश्वास और अर्थ हानि को सहने की अक्षमता उसे भयभीत होने पर मजबूर करती है. आगे शुक्ल जी बताते हैं कि धर्मभीरुता को सब प्रशंसनीय मानते हैं किन्तु उसमें उन्हें प्रशंसनीय कोई बात नहीं नजर आती. क्योंकि उन्हें धर्म के प्रति वफादार लोगों से ज्यादा धार्मिक लोग पसंद हैं. धर्म से जुड़े हुए लोग उन्हें ज्यादा पसंद हैं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का मानना है कि जिस प्रकार हमारे मन में दुखात्मक भावों में आशंका होती है वैसी ही आशंका सुखात्मक भावों में आशा की होती है. चुनाव हमारे हाथ में होता है. आगे वे एक बच्चे के उदाहरण के माध्यम से बताते है कि किस प्रकार क्रोध का 'भय' स्वरूप आकार लेता है.

लेखक यूरोप क्रांति का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जब तक आपस में लड़कर रक्त नहीं बहा तब तक यूरोपीय लोगों का ध्यान अधोगति से होने वाले अनर्थ पर नही गया. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद हम भी स्वदेशी के हिमायती हो गए किन्तु यह केवल एक फेशन की लहर हो ऐसा लेखक को प्रतीत होता है. वे उस समय चली विश्वप्रेम और अध्यात्मित्ता की लहर को हवा का मात्र एक झोंका कहते हैं. लेखक स्थायी मूल्यों को अपनाने के पक्षधर हैं.

लेखक 'भय' को असभ्यता का लक्षण मानते है. वे अज्ञान और अशिक्षितों की टिका करते हैं कहते कि वे 'भय' के कारण विद्वानों को कम और थानेदारों को अधिक महत्व देते हैं. प्रस्तुत निबंध में रामचंद्र शुक्ल जी ने 'भय' के हर स्वरूप, हर पहलुओं पर चर्चा की है. चाहे छोटे बच्चे के मन का 'भय' हो चाहे अबोध प्राणी का. हर एक के लिए 'भय' के अलग अलग रूप है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'भय' का कारण दुख को ही मानते हैं. मनुष्य ही मनुष्य के 'भय' का कारण है. मनुष्य तो पशु से भी नहीं डरता. स्वयं पशुओं जैसा व्यवहार करके मनुष्य को डरता है.यहीं मनुष्य का सबसे बड़ा दुख है.

समय के साथ 'भय' भी किस प्रकार अपना रूप बदलता है इसका भी दर्शन हमें इस निबंध में होता है.

अंत में लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्रत्येक प्राणी का सुखी होने का अधिकार है, उसी प्रकार सभी को भयमुक्त मुक्त होने भी. निर्भयता के संपादन के लिए वे दो बाते जरूरी मानते हैं एक तो यह की किसीको हम कष्ट न दें या भयभीत न करें दूसरा हमें कोई कष्ट पहुँचाने या भयभीत करने का साहस न कर सके. इन दोनों बातों में से पहली बात उत्कृष्ट शील से तो दूसरी पुरुषार्थ से सम्बंधित है.

6.5 *निबंध कला की दृष्टि से 'भय' निबंध की समीक्षा*

6.5.1 *वैयक्तिकता*

शुक्ल जी ने अपने निबंधों के माध्यम से अपने में निहित लोकमंगल की भावना को प्रस्तुत किया है उनका व्यक्तित्व उनके निबंधों में झलकता है. वे समाज को व्यक्ति से ऊ पर मानते हैं. शुक्ल एक बहुत ही सुलझे हुए व्यक्ति थे. अन्य मनोविकार संबंधी निबंधों की तरह उनके इस निबंध में भी मानव मन की गुत्थियाँ खोलने का किया गया है. हमें उनके मस्तिष्क की परिपक्वता का पता उनके इस निबंध के माध्यम से पता चलता है. किस परिस्थिति में कौन सा भाव उत्पन्न होता है, वह भाव क्या कहलाता है इसकी स्पष्ट समझ आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने सभी मनोविकार सम्बन्धी निबंधों के माध्यम से दी है. प्रस्तुत निबंध में भय और क्रोध का अंतर भी स्पष्ट किया गया है. वे कर्म पर विश्वास करने वालों में से थे वे कहते हैं कि यदि दो मनुष्य एक पहाड़ी नदी के किनारे बैठे या आनंद से बातचीत करते चले जा रहे थे. इतने में सामने शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी. यदि वे दोनों उठकर भागने, छिपने या पेड़ पर चढ़ने आदि का प्रयत्न करें तो बच सकते हैं. स्त्री और पुरुष में जो भीरुता है (स्वभावगत 'भय') अलग अलग दृष्टिकोण से देखा जाता है इस पर भी टिपण्णी करते हैं. वे कहते हैं कि स्त्रियों की भीरुता तो उनकी लज्जा के समान ही रसिकों के मनोरंजन की वस्तु रही है. पुरुषों की भीरुता की पूरी निंदा होती है. जो कायरता कहलाती है. यहाँ पर वे अपने निष्पक्ष व्यक्तित्व का दर्शन करते हैं. वे अच्छे इन्सान को धर्म से ऊ पर मानते हैं और इंसानियत को अधिक महत्त्व देते हुए कहते हैं कि जो किसी बुराई से यही समझकर पीछे हटते हैं कि उसके करने से अधर्म होगा, उसकी अपेक्षा वे कहीं श्रेष्ठ हैं जिन्हें बुराई अच्छी ही नहीं लगती.

6.5.2 *वैचारिकता*

कोई भी निबंध लेखक के विचारों का संकलन होता है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदर्श विचारों के धनी हैं. उनका बहुआयामी व्यक्तित्व उनके विचारों से छलकता है. 'भय' मनोविकार से सम्बंधित निबंध होने के साथ साथ एक वैचारिक निबंध भी है. वे बहुत ही उच्च विचारों वाले विद्वान थे जो दूरदर्शी थे. उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं. बुद्धि का संबंध विचारों से है. उन्होंने अपने निबंधों में मानव मन के सभी विचारों, भावों, विकारों का मनोवैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है. 'भय' भी उन्हीं में से एक है. शुक्लजी सामाजिक बदलाव के पक्ष में है. उनका जीवंत चिंतन यहाँ प्रस्तुत है. भय कब और कैसे व्यक्ति को प्रभावित करता है इसका उल्लेख उन्होंने उदाहरण सहित किया है. ''जिस कार्य के करने से मनुष्य को भय होगा उस कार्य के करने के पहले भी लोग कहते हैं कि उस कार्य से भय मालूम होता है. जैसे कोई किसी से कहे कि इस गड्ढे को फाँद जाओ वा जिधर शेर बैठा है उधर से निकल जाओ और वह कहे कि डर मालूम होता है तो उसे यथार्थ में डर नहीं मालूम होता है बल्कि हिचक मालूम होती है.'' उनके अनुसार उनकी बुद्धि हृदय को भी साथ लेकर यात्रा के लिए निकली है.

6.5.3 *संक्षिप्तता*

संक्षिप्तता निबंध का एक महत्वपूर्ण बिंदु है. यूँ तो आचार्य रामचंद्र शुक्ल के ज्यादातर निबंध बृहद होते है. किन्तु जब वे अपनी बात को संक्षिप्त में कहते है तो अर्थ विस्तार बड़ा होता है. 'भय' निबंध की यदि बात करे तो 'भय' संक्षिप्त निबंधों की कोटि में आएगा. निबंध का शीर्षक जिस प्रकार छोटा है निबंध भी उसी प्रकार छोटा है ज्यादा बड़ा नहीं है. 'भय' निबंध में लेखक ने मानो 'भय' नामक मनोविकार की शस्त्रक्रिया ही कर दी है. बच्चे, स्त्री, पुरुष और पशु सबके लिए भय की अलग अलग व्याख्या की है. परिस्थितियों के अनुरूप सबके लिए भय का स्वरूप बदलता है. निबंध में उदाहरणों की भरमार होने से अर्थ समझने में सरलता होती है. उसी के कारण 'भय' निबंध का विस्तार हो गया है. लेखक के लेखन में गागर में सागर भरने वाली बात है.

6.5.4 *समाहारता*

प्रस्तुत निबंध की भाषा सरल है किन्तु अर्थ में गंभीरता है. शुक्ल जी कहकर छूट जाते हैं और अर्थ ग्रहण समझने वाले पर छोड़ देते हैं. खड़ीबोली लिखे गए इस निबंध की भाषा सरल होने के साथ साथ प्रौढ़ भी है. शुक्ल जी पाठक को अपने भावों के माध्यम से रसास्वाद कराने में सक्षम है. वे कहते हैं ''जब तक दु:ख का उपादान अपनी क्रिया से हमारा सामीप्य लाभ करता न जान पड़ेगा तब तक यथार्थ में भय न जान पड़ेगा'' इस वाक्य से उनकी भाषा की गहनता का पता चलता है. वे एक आलोचक, समीक्षक और इतिहासकार भी थे. इसलिए उनके लिए भाषा में आचार्यत्व के प्रभाव भी दिखाई पड़ता है.

प्रस्तुत निबंध में शुक्ल जी की भाषा बहुत ही सर्जनात्मक है जो व्यावहारिक और व्याकरणिक दृष्टि से भी उचित है. कहावत का सार्थक प्रयोग किया है जहाँ 'भय' भूला कि आफत आई. कहावतों के बजाय दृष्टान्तों का समावेश अधिक हुआ है. भावों के अनुरूप शैली का उपयोग करना लेखक बखूबी जानते हैं. इस प्रकार उनकी भाषा सारगर्भित है, शैली विचारात्मक शैली है जो भावों के अनुरूप है. भाषा और शैली भावों के सम्प्रेषण में सफल बन पड़े हैं. शुक्ल जी ह्रदय, बुद्धि और मन के संबंध को स्पष्ट करने की कोशिश की है.

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'भय' के कितने रूप हैं ?*
2. *स्त्री के 'भय' को आचार्य रामचंद्र शुक्ल कैसा बताते हैं?*
3. *स्त्री और पुरुष की भीरुता में क्या अंतर है ?*
4. *'भय' निबन्ध में कौनसी सैली का प्रयोग हुआ है?*
5. *शुक्ल जी ने 'भय' निबन्ध में किस संबंध को स्पष्ट करने की कोशिश की है?*

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए

1 *कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय'* 1903 *में..............पत्रिका में छपी.*

2 1919 *में................... में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए.*

3 *'भय' का विषय दो रूपों में सामने आता है –...........रूप में और...........रूप में.*

4 *स्त्रियों की भीरुता तो उनकी लज्जा के समान ही रसिकों के.............. की वस्तु रही है.*

6.6 *मुख्य अंशों की व्याख्या*

जो किसी बुराई से यही समझकर पीछे हटते हैं कि उसके करने से अधर्म होगा, उसकी अपेक्षा वे कहीं श्रेष्ठ हैं जिन्हें बुराई अच्छी ही नहीं लगती.

सन्दर्भ : *उपर्युक्त वाक्य आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार संबंधित निबन्ध 'भय' से लिया गया है. धर्म भीरुता के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचार यहाँ प्रस्तुत हुए हैं.*

व्याख्या : *'भय' निबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं. इस मनोविकार के सभी पक्षों के सन्दर्भ में चर्चा की है.आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि 'भय' धर्मभीरु लोगों को बुराई करने से रोकता है. ऐसे धर्मभीरु लोग अधर्म से बचने के लिए बुराई नहीं करते. यह बात अच्छी है पर इससे भी श्रेष्ठ वे लोग हैं जिन्हें बुराई अच्छी ही नहीं लगती. वे लोग अधर्म को टालने के लिए ही नहीं बल्कि कतई बुराई करना पसंद नहीं करते. ऐसे लोग धर्मभीरु लोगों से ज्यादा श्रेष्ठ है. केवल धर्म की रक्षा करने वाले से ज्यादा धर्म पर चलने वाले लोगों को यहाँ श्रेष्ठ बताया गया है. लेखक का मानना है कि कर्म ही धर्म से ऊ पर है.*

विशेष : *शुक्ल जी ने प्रस्तुत मनोविकार सम्बन्धी 'भय' निबंध में 'भय' के सभी पहलुओं पर विचार व्यक्त किए हैं. उपर्युक्त वाक्य से उनके आदर्श विचारों के दर्शन हमें होते हैं.*

भाषा सरल और प्रवाहमयी है.उनके व्यक्तित्व की एक झांकी हमें यहाँ प्रदर्शित होती है.

निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए

1 *दुखात्मक भावों में आशंका की वही स्थिति समझनी चाहिए जो सुखात्मक भावों में आशा की.*

2 *अपरिचित के 'भय' में जीवन का कोई गूढ़ रहस्य छिपा जान पड़ता है. प्रत्येक प्राणी भीतरी आँख कुछ खुलते ही अपने सामने मानों एक दुख-कारण-पूर्ण संसार*

फैला हुआ पाता है. जिसे क्रमशः कुछ अपने ज्ञानबल से और कुछ बाहुबल से थोड़ा-बहुत सुखमय बनाता चलता है.

3 *जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है, उसी प्रकार मुक्तातंक होने का भी. पर कार्य-क्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़कर जिस प्रकार सुखी होना प्रयत्न-साध्य होता है उसी प्रकार निर्भय रहना भी.*

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए

1. *आचार्य राम चन्द्र शुक्ल का जन्म कब और कहाँ हुआ था?*
2. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रारम्भिक शिक्षा सुचारू रूप से कहाँ पर प्रारंभ हुई?*
3. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल की चर्चित कहानी का नाम बताइए.*
4. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल का प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ कौन सा है?*
5. *'भय' चिंतामणि के किस भाग में से लिया गया है?*

कथन सही हैं अथवा गलत, बताएँ

1. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल केवल उच्च कोटि के आलोचक थे.*
2. *पुरुष के 'भय' की प्रशंसा की जाती है.*
3. *धर्म से डरनेवालों की अपेक्षा धर्म की ओर आकर्षित होनेवाले को शुक्ल जी श्रेष्ठ मानते हैं.*
4. *शुक्ल जी के पिता पाश्चात्य संस्कृति और मुस्लिम सभ्यता के पक्षधर थे.*
5. *बाल्यावस्था से ही शुक्ल जी हिन्दी प्रेमी थे.*

6.7 *सार बिन्दु*

- *आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी निबंध यात्रा को 'बुद्धि की यात्रा हृदय के साथ' कहा है. यह बात इस निबंध को पढ़ने से सही साबित होती है.*
- *प्रस्तुत निबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का व्यक्तित्व तो छलकता ही है साथ ही उनके आदर्श विचारों के दर्शन भी होते हैं.*
- *यह निबंध मानवीय मनोविज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है.*
- *प्रस्तुत निबंध में लेखक द्वारा 'भय' सम्बन्धित विचार प्रदर्शित करते हुए सटीक और विषयानुरूप उदाहरणों द्वारा 'भय' का स्वरूप स्पष्ट किया गया है तथा इस निबन्ध में 'भय' संबंधित अनेक पक्षों पर चर्चा की गई है.*
- *शुक्ल जी हिंदी के जितने बड़े विद्वान, आलोचक और इतिहासकार हैं उनकी भाषा उतनी ही सहज और सरल है किन्तु चोटदार भी है. वाक्य सरल बनाए गये हैं.*

6.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिये

1 *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए.*

2 *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए.*

3 *निबन्ध कला के आधार पर 'भय' निबंध का विश्लेषण कीजिये.*

4 *हिंदी साहित्य में आचार्य रामचंद्र के योगदान पर प्रकाश डालिए.*

5 *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार सम्बंधित निबंध की विशेषताएँ लिखिए.*

निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

1 *'भय' निबंध की अंतर्वस्तु*

2 *'भय' का स्वरूप साध्य और असाध्य 'भय'*

3 *'भय' निबंध में लेखक की वैचारिकता*

4 *'भय' निबंध का कला पक्ष*

6.9 *संदर्भ सूची*

1 https://bharatdiscover.org

2 *चिंतामणि प्रथम भाग :आचार्य रामचंद्र शुक्ल*

3 https://www.hindisamay.com

इकाई 7 'वसंत आ गया है' - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 लेखक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

7.3.2 कृतित्व परिचय

7.4 हिंदी निबंध के क्षेत्र में हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का योगदान

7.5 'वसंत आ गया है' निबंध का परिचय और वाचन

7.6 'वसंत आ गया है' निबंध की अन्तर्वस्तु

7.7 'वसंत आ गया है' का उद्देश्य

7.8 सार बिंदु

7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

7.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 7 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- *इस इकाई को पढ़ने के बाद हिंदी साहित्य के निबंध विधा की जानकरी से प्राप्त हो सकेंगे.*
- *हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे.*
- *हिंदी निबंध के क्षेत्र में हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के योगदान को जान सकेंगे.*
- *'वसंत आ गया है' निबंध का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.*
- *'वसंत आ गया है' निबंध की अन्तर्वस्तु को जान सकेंगे.*

7.2 प्रस्तावना

'वसंत आ गया है' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा भावात्मक शैली में लिखा गया एक छोटा-सा ललित निबंध है. साहित्यिक दृष्टि से हिंदी में निबंध का उद्भव और विकास आधुनिक युग की देन है. राष्ट्रीय जागरण, देशप्रेम, व्यक्तिस्वातंत्र्य, अंतर्राष्ट्रीयता, वैज्ञानिक मशीनों का प्रयोग, आवश्यकताओं की वृद्धि, गद्य का प्रचन, मुद्रणकला का

प्रचार, समाचार पत्रों का प्रकाशन और अंग्रेजी साहित्य का संपर्क आदि अनेक कारणों से साहित्य के अनेक रूपों के साथ निबंध रूप का भी आविर्भाव हुआ. निबंध को अंग्रेजी में 'कम्पोजीशन' और 'एस्से' के अर्थ में ग्रहण किया जाता है. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृत में भी निबंध का साहित्य है. प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी. उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी. किन्तु वर्तमान में निबंध संस्कृत के निबंध से ठीक उल्टे हैं. उनमें व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्वप्रधान है. हिंदी निबंध की शुरूआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है. हिंदी के प्रारंभिक निबंधों को शुक्लजी ने गद्य प्रबंध कहा. हिंदी निबंध के विकास के केंद्र में रामचंद्रशुक्ल शुक्ल को मानते हुए उसे तीन युगों में बाँटा गया है. (1) शुक्ल पूर्व युग (1850-1920) (भारतेन्दु – द्विवेदी युग) (2) शुक्ल युग (1920-1940) (3) शुक्लोत्तर युग (1940 से आज तक)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी शुक्लोत्तर युग के निबंधकार हैं. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शुक्लोत्तर युग में एक बार फिर निबंधों में वैयक्तिकता का समावेश हुआ, निबंध के विषयों में विविधता बढ़ने लगी है. निबंध का आकार भी छोटा हुआ है भाषा बोलचाल की-सी होने लगी है. उसमें तत्सम शब्दों के स्थान पर तद्भव और देशी शब्दों का प्रयोग अधिक होने लगा है. शुक्लोत्तर युग में प्रमुख शैलियों ने निबंध लेखन को उत्कर्ष पर पहुँचाया-ललित निबंध, व्यंग्य निबंध और वैचारिक निबंध शैलियाँ. 'वसंत आ गया है' निबंध यह ललित निबंध की श्रेणी में आता है. ललित निबंधों में निबंधकार अपने भावात्मक व्यक्तित्व को इस रूप में प्रस्तुत करना चाहता है कि वह सरस, अनुभूति-जन्य, आत्मीय और रोचक लगे. इसमें बल सरस शैली पर दिया जाता है. इसकी भाषा में शुष्कता नहीं बल्कि कल्पनाशीलता, सहजता व सरसता होती है. ललित निबंध में गहरे विश्लेषण, उबाऊ वर्णन, जटिल वाक्य रचना से बचा जाता है. हिंदी साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रमुख रूप से ललित निबंध लिखे हैं. इसके अतिरिक्त विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि प्रमुख ललित निबंधकार है. द्विवेदी जी का रचनात्मक और विवेचनात्मक साहित्य जितना विशाल है उसकी नेपथ्य भूमि उतनी ही विस्तीर्ण है. इनके साहित्य में भारतीय साहित्य और संस्कृति की प्राणधारा का सा उन्मेष देखने को मिलता है जहाँ परम्परा आधुनिक दृष्टि का आलोक पाकर और भी दीप्त हो उठी है.

7.3 लेखक परिचय

इस उप इकाई में हम हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे.

7.3.1 जीवन परिचय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म 19 अगस्त 1907 ई. को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा, ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था. इनके

पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी और माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था. इनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था. द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था. द्विवेजी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई. उन्होंने 1920 *में बसरिकापुर के मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की. सन्* 1923 *में विद्याध्ययन के लिए काशी आये.* 1930 *में ज्योतिष विषय में आचार्य की उपाधि प्राप्त की. द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और उनका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था.* 8 *नवम्बर,* 1930 *से द्विवेदी जी ने शांति-निकेतन में हिंदी का अध्यापन प्रारम्भ किया. वहाँ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा अपना स्वतंत्र लेखन भी व्यवस्थित रूप से आरंभ किया. बीस वर्षों तक शांतिनिकेतन में अध्यापन के उपरान्त द्विवेदी जी ने जुलाई* 1950 *में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया.* 1957 *में राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किये गये. प्रतिद्वन्द्वियों के विरोध के चलते मई* 1960 *में द्विवेदीजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये. जुलाई* 1960 *से पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ में हिंदी विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष रहे. अक्टूबर* 1967 *में पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रेक्टर पद पर उनकी नियुक्ति हुई और* 25 *फरवरी* 1970 *को इस पद से मुक्त हुए.* 1973 *में आलोक पर्व निबंध संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया.* 4 *फरवरी* 1979 *को पक्षाघात के शिकार हुए और* 19 *मार्च* 1979 *को ब्रेनट्यूमर के कारण दिल्ली में उनका निधन हो गया.*

7.3.2 *कृतित्व परिचय*

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने निबंध, उपन्यास और आलोचना क्षेत्र में महतवपूर्ण कार्य किया है .

- *रचनाएँ*
- *आलोचना – 'सूरसाहित्य', 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद', 'कबीर', 'नाथ संप्रदाय', 'हिंदी साहित्य का आदिकाल', 'आधुनिक हिंदी साहित्य पर विचार', 'साहित्य का मर्म', 'मेघदूतः एक पुरानी कहानी', 'लालित्य तत्व', 'साहित्य सहचर', 'कालिदास की लालित्य योजना', 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप', 'हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास', 'मृत्युंजय रवीन्द्र', 'सहजसाधन', 'हिंदी साहित्य', 'अशोक के फूल' .*
- *निबंध संग्रह – 'अशोक के फूल', 'कल्पलता', 'मध्यकालीन धर्मसाधना', 'विचार और वितर्क', 'विचार प्रवाह', 'कुटज', 'आलोक पर्व'.*
- *निबंध – 'कल्पतरु', 'गतिशील चिंतन', 'साहित्य सहचर', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', 'अशोक के फूल', 'देवदारु,' 'बसंत आ गया है', 'वर्षा धनपति से घनश्याम तक', 'मेरी जन्मभूमि', 'घर जोड़ने की माया' .*

- *उपन्यास – 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचंद्रलेख', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा' आदि रचनाएँ लिखकर हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान दिया है.*

7.4 *हिंदी निबंध के क्षेत्र में हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का योगदान*

हिंदी साहित्य की तर्कसंगत व्याख्या एवं उसके सम्यक मूल्यांकन के लिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आने वाली नई पीढ़ियों के प्रेरणास्रोत बने रहेंगे. एक निबंधकार के रूप में उनकी निबंध शैली अनूठी व अद्वितीय है. साहित्यिक प्रतिभा संपन्न विभूति के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का नाम सर्वोपरि है. ये बातें साहित्यकारों ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की जयंती की पूर्व संध्या पर कही. साहित्यकार डॉ. सतीश कुमार राय कहते हैं कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कविता से अपनी साहित्य यात्रा की शुरूआत की. आचार्यजी पांडित्य और रचनात्मकता के जीवंत प्रतिमान रहे हैं. शास्त्र की व्याख्या और मौलिक उद्भावनों से उन्होंने जहाँ हिन्दी साहित्य लेखन और आलोचना को समृद्ध किया है. वहीं उनके उपन्यासों और ललित निबंधों में लालित्य के दर्शन होते हैं. इतिहास बोध, परंपरा-चिंतन, सृजनात्मक लेखन और संवाद के कारण वे हिन्दी साहित्य में अमर रहेंगे.

द्विवेदी जी के निबंध के विषय भारतीय, संस्कृति, इतिहास, ज्योतिष, साहित्य विद्या धर्मों और संप्रदायों का विवेचन आदि हैं. वर्गीकरण की दृष्टि से द्विवेदीजी के निबंध दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं - विचारात्मक और आलोचनात्मक. विचारात्मक निबंधों की दो श्रेणियाँ हैं. प्रथम श्रेणी के निबंध में दार्शनिक तत्वों की प्रधानता रहती है. द्वितीय श्रेणी के निबंध में सामाजिक जीवन संबंधी होते है. आलोचनात्मक निबंध भी दो श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं. प्रथम श्रेणी में ऐसे निबंध हैं जिनमें साहित्य के विभिन्न अंगों का शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन किया गया है और द्वितीय श्रेणी में वे निबंध आते हैं जिनमें साहित्यकारों की कृतियों पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार हुआ है. द्विवेदीजी के इन निबंधों में विचारों की गहनता, निरीक्षण की नवीनता और विश्लेषण की सूक्ष्मता रहती है. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में गंभीर शोध और शास्त्रीय चिन्तन है. लेकिन ये विषय प्रधान निबंध नहीं है. ये व्यक्ति प्रधान निबंध है. द्विवेदी जी से निबंध में प्रस्तुत विषय का जो संबंध है उस पर वे जोर देते हैं और तब उस विषय की प्रासंगिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं . इसमें भी जानकारी होती है. चाहे 'अशोक का फूल' निबंध हो या 'कुटज' सबके बारे में द्विवेदी जी प्राथमिक जानकारी देते हैं, लेकिन केवल इस जानकारी को देने के लिए ये निबंध नहीं लिखे गये हैं. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों को विद्यालयी स्तर के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाता रहा है. इसलिए आपने भी उनके कई निबंधों का अध्ययन कर लिया होगा. उनके चर्चित निबंध हैं – 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'कुटज', 'देवदारु', 'आम फिर बौरा गए', 'बसंत आ गया है', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', 'जबकि दिमाग खाली है', 'शव-साधना', 'ठाकुरजी की बटोर' आदि. डॉ. नामवरसिंह ने इस तथ्य का भी जिक्र किया है

कि द्विवेदी जी की पुस्तक कल्पलता में कल्पलता शीर्षक से कोई निबंध नहीं है. कल्पवृक्ष के स्थान पर उनको कल्पलता अधिक पसंद थी, शायद अपनी प्रकृति में स्वच्छंदता और चंचलता के कारण. वे अपने निबंधों के विषय प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति से उठाते हैं और फिर उसे समकालीन जीवन और चिन्तन तक ले आते हैं. इसमें ज्योतिष, इतिहास, साहित्य, मानव-जीवन के विविध पक्ष जुड़ते रहते हैं. बीच-बीच में हास्य-व्यंग्य विनोद के द्वारा विषय को बोधगम्य बनाते चलते हैं. ऐसा करते समय वे अपनी बात को हल्का नहीं करते. उसकी गंभीरता बनी रहती है. फिर उनके कथ्य के निष्कर्ष बहुत दूर तक जाते हैं. सिर्फ प्रस्तुत संदर्भ तक ही सीमित नहीं रहते. द्विवेदीजी का हिंदी निबंध और आलोचनात्मक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है . वे उच्च कोटि के निबंधकार और सफल आलोचक हैं. उन्होंने सूर, कबीर, तुलसी आदि पर जो विद्वतापूर्ण आलोचनाएँ लिखी हैं, वे हिंदी में पहले नहीं लिखी गईं. उनका निबंध-साहित्य हिंदी की स्थाई निधि है. उनकी समस्त कृतियों पर उनके गहन विचारों और मौलिक चिंतन की छाप है. विश्व-भारती आदि के द्वारा द्विवेदी जी ने संपादन के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है. द्विवेदी जी के साहित्य में मानवता का परिशीलन सर्वत्र दिखाई देता है. उनके निबंध तथा उपन्यासों में यह दृष्टि विशेष रूप से प्रतीत होती है.

- ***बोध प्रश्न***

निम्नलिखित में से सही कथनों पर (✔) और गलत पर (×) का निशान लगाइए.

(क)	*निबंध का जन्म नाटक से होता है .*	*( )*
(ख)	*निबंध छंदोबद्ध गद्य रचना है .*	*( )*
(ग)	*'वसंत फिर आ गया' यह हजारी प्रसाद का निबंध है .*	*( )*
(घ)	*हजारी प्रसाद के पिताजी का नाम अनमोल द्विवेदी है.*	*( )*

7.5 *'वसंत आ गया है' निबंध का परिचय और वाचन*

- ***परिचय***

'वसंत आ गया है' यह निबंध हजारीप्रसाद द्वारा लिखा गया है. यह एक ललित निबंध है. 'वसंत आ गया है'निबंध उस समय लिखा गया है जब द्विवेदी जी शांतिनिकेतन में निवास करते थे. द्विवेदी जी ने अपने समीपस्थ वृक्षों का अवलोकन करते हुए बताया है कि जब वसंत आ जाता है तब इस आदर्श की प्रतिध्वनि समाज के साथ-साथ ही इतर प्राणियों पर भी गूंज उठती है. तब इस शांतिनिकेतन में स्थित कुछ वृक्षों पर ऋतुराज के आगमन की सूचना पूर्व से ही मिल गई है. जिससे वे अपने को स्वागत के लिए पुष्पों और नई कपोलों के रूप में सज्जित किए हुए हैं पर कुछ कारणों से वसंतागमन के पूर्व सूचना ही उपलब्ध नहीं हो सकी. अतः वे ज्यों के त्यों नवं विकास से ही अपने पूर्व रूप में ही खड़े हुए हैं. 'वसंत आ गया है' यह निबंध द्विवेदी जी के निबंध-संग्रह 'अशोक के फूल' का एक निबंध है.

- ***निबंध से कुछ अंश : (पाठ वाचन)***

जिस स्थान पर बैठकर लिख रहा हूँ, उसके आस-पास कुछ थोड़े से पेड़ है. एक शिरीष है, जिस पर लंबी-लंबी सुखी छिमिया अभी लटकी हुई है. पत्ते कुछ झड़ गए हैं और कुछ झड़ने के रास्ते में है. जरा सी हवा चली नहीं कि अस्थिमालिका वाले उन्मक्त कापालिक भौरव की भाँति जड़-जड़ाकर झूम उठते हैं. कुसुम जन्म ततो नव पल्लवाः का कही नाम गन्ध भी नहीं है. एक नीम है, जवान है, मगर कुछ अत्यन्त छोटी किसलयिकाओं के सिवा उमंग का कोई चिन्ह उसमें भी नहीं है. फिर भी यह बुरा मालूम नहीं होता. नसें भीगी हैं और आशा तो है ही. दो कृष्णचूड़ाएँ हैं. स्वर्गीय कविवर रविन्द्रनाथ के हाथ से लगी वृक्षावली में यह आखिरी है. इन्हें अभी शिशु ही कहना चाहिए. फूल तो इनमें कभी आए ही नहीं, पर वे अभी नादान हैं. भरे फाल्गुन में इस प्रकार जड़ी है, मानो आषाढ़ ही हो. नील मसृण पत्तियाँ और सूच्यग्र शिखान्त. दो-तीन अमरूद हैं, जो सूखे सावन भरे भादो कभी रंग नहीं बदलते-इस समय दो-चार श्वद पुष्प इन पर विराजमान हैं, पर से फूल माध में भी थे और जेठ में भी रहेंगे. जातीय पुष्पों का एक केदार हैं, पर ऐसी मुर्दनी छाई हई है कि मुझे कवि-प्रसिद्धियों पर लिखे हुए एक लेख में संशोधन की आवश्यकता महसूस हुई है.

एक मित्र ने अस्थान में एक मल्लिका का गुल्म भी लगा रखा है, जो किसी प्रकार का बस जी रहा है. दो करबीर और एक कोविदार के झाड़ भी उन्हीं मित्र की कृपा के फल हैं, पर वे बुरी तरह चुप है. कहाँ भी उल्लास नहीं, उमंग नहीं और उधर कवियों की दुनिया में हल्ला हो गया, प्रकृति रानी नया शृंगार कर रही हैं, और फिर जाने क्या-क्या. कवि के श्रम में रहता हूँ. नितांत ठूँठ नहीं हूँ, पर भाग्य प्रसन्न न हो तो कोई क्या करे?

कांचनार वृक्ष इस हिन्दी भवन में है. एक ठीक मेरे दरवाजे पर और दूसरा मेरे पड़ोसी के. भाग्य की विडम्बना देखिए कि दोनों एक ही दिन के लगाए गए हैं. मेरा वाला ज्यादा स्वस्थ और सबल है. पड़ोसी वाला कमजोर, मरियल. परन्तु इसमें फूल नहीं आए. और वह कम्बख्त कन्धे पर से फूल पड़ा. मरियल-सा पेड़ है, पर क्या मजाल कि आप उसमें फूल के सिवा और कुछ देखो पत्ते हैं नहीं और टहनियाँ फूलों से ढक गई है. मैं रोज देखता हूँ कि हमारे वाले मियाँ कितने अग्रसर हुए? कल तीन फूल निकले थे. उसमें दो तो एक संथाल बालिका तोड़कर ले गई. एक रह गया. मुझे कांचनार फूल की ललाई बहुत भाती है . सबसे बड़ी बात यह है कि इन फूलों की पकौड़ियाँ भी बन सकती है. पर दुर्भाग्य तो देखिए कि इतना स्वस्थ पेड़ ऐसा सुना पड़ा हुआ है और वह कमजोर, दुबला लहक उठा ! कमजोर में भावुकता ज्यादा होती होगी . पढ़ता-लिखता हूँ. यही पेशा है. सो दुनिया के बारे में पोथियों के सहारे ही थोड़ा-बहुत जानता हूँ. पढ़ा हूँ, हिन्दुस्तान के जवानों में कोई उमंग नहीं है, इत्यादि-इत्यादि. इधर देखता हूँ कि पेड़-पौधे और भी बुरे हैं.

सारी दुनिया में हल्ला हो गया कि वसंत आ गया. पर इन कमबख्तों को खबर ही नहीं. कभी-कभी सोचता हूँ कि इनके पास तक सन्देश पहुँचाने का क्या कोई साधन नहीं हो सकता?

महुआ बदनाम है कि उसे सबके बाद वसंत का अनुभव होता है, पर जामुन कौन अच्छा है. वह तो और भी बाद में फूलता है. और कालिदास का लाडला यह कर्णिकार? आप जेठ में मौज में आते हैं. मुझे ऐसा लगता है कि वसंत भागता-भागता चलता है. देश में नहीं, काल में. किसी का वसंत पन्द्रह दिन का है तो किसी का नौ महीने का. मौजी है अमरूद. बारह महीने इसका वसंत ही वसंत है. हिन्दी भवन के सामने गंधराज पुष्पों की पाँत है. ये अजीब है, वर्षा में ये खिलते हैं लेकिन ऋतु विशेष के उतने कायल नहीं हैं. पानी पड़ गया तो आज भी फूल ले सकते हैं.

कवियों की दुनिया में जिसका कभी चर्चा नहीं हुई, ऐसी एक घास है - विष्णुकान्ता. हिन्दी भवन के आँगन में बहुत है. कैसा मनोहर नाम है ! फूल और भी मनोहर होते हैं. जरा-सा तो आकार होता है, पर बलिहारी है उस नील में मेदुर रूप की. बादल की बात छोड़िए. जरा-सी पुरवैया बह गई तो इसका उल्लास देखिए. बरसात के समय तो इतनी खिलती है कि मत पूछिए. मैं सोचता हूँ कि इस नाचीज लगा को सन्देश कैसे पहुँचता है? थोड़ी दूर पर वह पलास सा फूल है कि ईर्ष्या होती. मगर उसे किसने बताया की वसंत आ गया है? मैं थोड़ा-थोड़ा समझता हूँ. वसंत आता नहीं, ले आया जाता है. जो चाहे और जब चाहे अपने घर ले आ सकता. वह मरियल कांचनार ले आया है. अपने मोटेराम तैयार कर रहे हैं, और मैं? मुझे बुखार आ रहा है. यह भी नियती का मजाक ही है और मेरे पास आया बुखार. अपने कांचनार की ओर देखता हूँ और सोचता हूँ, मेरी वजह से तो यह नहीं रुका है?

- ***बोध प्रश्न***

सही विकल्प पसंद करके उत्तर लिखिए

1. *निम्नलिखित में से कौन ललित निबंधकार नहीं है.*

   (अ) विवेकी राय *(ब) कुबेरनाथराय*

   (क) रामचंद्र शुक्ल *(ड) हजारीप्रसाद द्विवेदी*

2. *हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ था?*

   (अ) 19 *अगस्त,* 1908 *(ब)* 19 *अगस्त,* 1907

   (क) 19 *अगस्त,* 1910 *(ड)* 19 *अगस्त,* 1906

3. *अशोक के फूल यह किस विधा की रचना है?*

   (अ) आलोचना *(ब) कहानी*

   (क) नाटक *(ड) निबंध*

4. *'बसंत आ गया है' निबंध किस निबंध संग्रह में संकलित है?*

   (अ) कल्पलता *(ब) अशोक के फूल*

   (क) कुटज *(ड) विचार और वितर्क*

7.6 *'वसंत आ गया है' निबंध की अन्तर्वस्तु*

इस निबंध में द्विवेदी जी ने बताया है कि प्रकृति और मानव में गहरा संबंध है. प्रकृति की अमिट छाप मानव के अंतर्मन पर पड़ती है. प्रकृति के अनुकूल मानव का विकास होता है. प्रकृति और मानव के बीच का संघर्ष भी शाश्वत है. प्रकृति नित्य अपना स्वरूप बदलती रहती है. प्रकृति के हर ऋतु के अनुसार ही सृष्टि के उपादानों में विकास पाया जाता है. इन्हीं ऋतुओं में एक वसंत ऋतु के आगमन होते ही प्रकृति चहक उठती है. प्रकृति फूलों से लद जाती है. चारों तरफ का वातावरण सुगंधित हो जाता है. आम, अमरूद, नीम आदि भी अपनी पुरानी पत्तियों को झाड़कर नवीन पत्ते धारण कर लेते हैं. कुछ से फूल है जिस पर बसंत का कोई असर नहीं होता जैसे मल्लिका, कोविदास, केदार. करवीर, आदि चुप्पी साधे खड़े हैं. प्रकृति में शोर मच गया है कि वसंत आ गया, लेकिन वृक्षों में कोई प्रभाव नहीं है. निबंधकार का कहना है कि कमजोरों में भावुकता ज्यादा होती है. अमीरों की अपेक्षा निर्धन अधिक प्रसन्न होते हैं. इसमें धैर्य और संतोष होता है. इस निबंध के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि मानव को प्रकृति की गति परखना चाहिए. उसी के अनुकूल अपनी मनोवृत्ति को बदलना चाहिए. वह अपनी मस्ती को धरती पर बिखेर देता है . मानव इसे मस्त भले ही न हो लेकिन वह अपने धर्म का पालन करना है. कुछ लोग इस आनंद का लाभ उठाते हैं तो कुछ लोग दूर ही रहते हैं. लेखक का मानना है कि प्रकृति में भी कुछ ऐसे वृक्ष और पौधे है – जिन पर वसंत का कोई असर नहीं पड़ता है. सारी दुनिया में हल्ला हो गया कि वसंत आ गया है, लेकिन कुछ फूलों को इसकी खबर तक नहीं है. किसी का वसंत एक महीने का होता है, किसी का पंद्रह दिनों का. अंत में लेखक का कहना है कि वसंत आता नहीं ले जाया जाता है. लेखक यहाँ पर कर्म की प्रधानता को देता है. जो व्यक्ति जितना कर्म पर कर्म की प्रधानता देता है, जो व्यक्ति जितना कर्म है वह उतना ही बुलंद और हर्षित है. जिस प्रकार प्रकृति में वसंत आया है. ठीक उसी प्रकार मानव अपने जीवन को हरा-भरा बना ले तो उसका वसंत क्षणभंगुर नहीं होगा. मानव को प्रकृति से सीखना चाहिए. अपना जीवन सुसज्जित करके हमेशा हरियाली एवं सुख शांति की प्रतिस्थापना करनी चाहिए. तभी मानव जीवन सुखमय हो सकता है. जब तक मन प्रसन्न नहीं रहेगा, तब तक वसंत या सावन की मस्ती व्यर्थ है . मन और आत्मा की शांति में हर्ष हो, तो जेठ की कड़ी धूप भी सुहानी लगेगी, इसलिए मानव को कर्म की प्रधानता देनी चाहिए. इस निबंध में लेखक मानव को संदेश दिया है कि कठिन कर्मों के बल पर जीवन को सुन्दर बनाना चाहिए. मानव अगर विश्वास और साहस के बवल पर आगे बढ़े तो जीवन में वसंत ला सकता है. इस निबंध में विचार और भावना दोनों की प्रधानता दिखलायी पड़ती है. इस ललित निबंध के सहारे लेखक ने राष्ट्रीय सवालों को मानव के समक्ष रखकर से सजग करने का भरसक प्रयास किया है. हम देखते हैं कि वसंत जागरण एवं नवीन चेतना का जन्म होता है. लेखन ने प्रकृति कि ओर संकेत कर मानव को कर्मज्यता की और दिशा निर्देश किया है.

7.7 *'वसंत आ गया है' का उद्देश्य*

आचार्य हजारी प्रसाद द्वारा लिखित 'वसन्त आ गया है' यह एक विचारात्मक निबंध है. इस छोटे से निबन्ध में गंभीर उद्देश्य छिपा हुआ है. विषय देखने पर चाहे जितना भी साधारण मालूम पड़े, किन्तु उद्देश्य इसका साधारण नहीं है. ऋतुराज वसंत का आगमन अपने समस्त ऐश्वर्य के साथ हो चुका है, किन्तु प्रकृति के सभी पेड़ पौधे एक समान नहीं दिख पड़ते. कुछ तो वसन्त की आभा से दीप्त हो चुके हैं और कुछ ही दीखते. कुछ को नये क्लेवर प्राप्त हो गये हैं, तो कुछ अपने चेहरे पर मुहर्रमी सूरत लिए हुए है. लेखक कहता है कि वसन्त किसी पर स्वयं आता नहीं, अपितु वह उसके द्वारा लाया जाता है. वह जब चाहे वसन्त का आह्वान कर सकता है. शांति निकेतन में लेखक जहाँ पर बैठा है, उसके आगे ही दो कचनार के पेड़ है — एक जो खूब मोटा ताजा स्वस्थ एवं सबल है फूल-फल से रिक्तहै, तथा दूसरा जो मरियल सा है — फूल - फल से लदा हुआ है. प्रथम के जीवन में वसन्त का अभाव है, तो दूसरे पर वसन्त का प्रभाव. दोनों पेड़ एक ही बार लगाए गये-लेकिन दोनों के भाग्य अलग-अलग है. एक देखने में स्वस्थ एवं सबल रहने पर भी, दिल से भ्रांत, क्लांत चेहरे पर कांति नहीं क्लांति है, प्रसन्नता नहीं उदासी है, और दूसरा शरीर से देखने में दुर्बल रहने पर भी दिल में उल्लास उत्साह एवं उमंग की सरिता ताजगी है, अप्रसन्नता नहीं प्रसन्नता है. अर्थात् एक फल-फूल से हीन है तो दूसरा फूल-फल से समन्वित. मानव जीवन में भी यही बात लागू होती है. एक शरीर से स्वस्थ रहने पर भी मायूस बना रहता है तो दूसरा क्षीणकाय रहने पर भी अहर्निश बुजदिल नजर आता है. यह तो मन की मौज है . कोई सम्पन्न होकर भी दिल में उदासीनता का भयंकर रोग पाले हुए हैं, चेहरे पर कभी प्रसन्नता नहीं लाता, हमेशा रोनी-सी सूरत बनाए रखता है, तो कोई विपन्न रहने पर भी चेहरे पर मुस्कान की आभा से समन्वित दीख पड़ता है. एक सुख में रोता है तो दूसरा संकट में मुस्कुराता है, अपना-अपना भाग्य है. कोई इस पर क्या कह सकता है? द्विवेदीजी ने इस छोटे से निबन्ध में मानव-जीवन का सार उपस्थित कर दिया है. प्रसन्न-चित्त मनुष्य ही संसार में कुछ कर सकता है, दूसरों पर अपना प्रभाव जमा सकता है, दूसरे के दिल में घर बना सकता है. प्रसन्न रहने वाला व्यक्तिअपने आपके लिए भी भार नहीं है. वसन्त समय के साथ गतिमान है. जो चाहे उसे अपने जीवन में जिस किसी भी समय उतार ले सकता है. मनुष्य ही वसन्त की इच्छा के अधीन नहीं अपितु वसन्त ही मनुष्य के इच्छाधीन है.

प्रस्तुत निबन्ध को पढ़ने से यह पता चलता है कि द्विवेदी जी किसी भी सामन्य विषय को अपनी प्रतिष्ठा का परिधान पहनाकर कितना सुन्दर एवं रोचक बना देते हैं. प्राचीनता और नवीनता दोनों का अनोखा समन्वय द्विवेदीजी अपने निबन्धों में दिखाया करते हैं. उनके निबन्धों में उनका व्यक्तित्व प्रधान रूप में उभर आता है. द्विवेदीजी को विनोद एवं व्यंग्य बड़े प्रिय है. अपने गम्भीर से गम्भीर निबन्धों में भी वे मौका निकालकर हास्य एवं व्यंग्य की छटा दिया देते हैं. अपने लेखकों को वे गम्भीरता की मरूभूमि में ही नहीं छोड़ देना चाहते, बल्कि वहाँ भी अपनी विनोद प्रियता के फलस्वरूप

एवं व्यंग्य की धारा बहाकर 'ओएसिस' का निर्माण कर लेते हैं. द्विवेदी जी की यह प्रवृत्ति है कि वे अपनी मित्र मण्डली में, साहित्यिक गोष्ठी में अथवा जहाँ कहीं भी रहते हैं — गंभीरता का निस्तब्ध वातावरण कायम रहने देना नहीं चाहते. वे किसी व्यक्तिके चेहरे पर अधिक देर तक मायूसी नहीं देख सकते. कोई न कोई हास्य एवं व्यंग्य का प्रसंग निकालकर हँसा ही देंगे. उसकी मुहर्रमी-सूरत वे दूर करके ही छोड़ते हैं. प्रस्तुत निबन्ध में भी द्विवेदी जी के हृदय में एक मरियल कचनार के पेड़ को देखकर तरह-तरह की भावनाएँ उठ रही है. कवि का हृदय था, वे अपने हृदय को थाम न सके. कलम हाथ में ली और हृदयगत भावनाओं को एक के बाद एक दूसरे कागज पर उतारने लगे. जरा उनकी कलम की करामात तो देखिए — जाति-पुष्पों का एक केदार है, इस पर ऐसी मुर्दनी छायी हुई है कि मुझे कवि प्रसिद्धियों पर लिखे हुए एक तेज में संशोधन की आवश्यकता महसूस हुई है. एक मित्र के प्रस्थान में एक मल्लिका का गुल्म भी लगा रखा है, जो किसी प्रकार बस जी रहा है. दो करवीर और एक कोविदार झाड़ भी उन्हीं मित्र की कृपा के फल है. कहीं भी उल्लास नहीं है और उधर कवियों की दुनिया में हल्ला हो गया प्रकृति रानी नया श्रृंगार कर रही है, और फिर जाने क्या-क्या. कवि के आश्रय में रहता हूँ. नितांत ठूठ नहीं हूँ, पर भाग्य प्रसन्न न हो तो कोई क्या करे ? थोड़ी दूर पर पलास ऐसा फूला हुआ है कि ईर्ष्या होती है. मगर उसे किसने बताया कि वसन्त आ गया है? मैं थोड़ा-थोड़ा समझता हूँ. वसन्त आता नहीं ले आया जाता है. जो चाहे जब चाहे अपने घर ले आ सकता है. वह मरियल कचनार ले आया है. अपने मोटे-राम तैयारी कर रहे हैं और मैं? मुझे बुखार आ रहा है. यह भी नियति का मजाक ही हैं. सारी दुनिया में हल्ला हो गया है कि वसन्त आ रहा है और मेरे पास आया बुखार! अपने कचनार की ओर देखता हूँ, मेरी ही वजह से वह यही रुका है. इस निबन्ध का विषय इतना हल्का-फुल्का है. लेकिन लेखक ने इतने साधारण से विषय में भी अपनी प्रतिभा के बल पर जान डाल दी है. इसकी भाषा अत्यन्त ही सरल एवं बोधगम्य है. इसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों के बहुल प्रयोग के साथ-साथ उर्दू के प्रचलित शब्दों का भी खुलकर प्रयोग हुआ है. द्विवेदी जी प्रसाद जी की तरह केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों का ही प्रयोग नहीं करते अपितु अपनी भावनाओं की अभिव्यक्तिके लिए तथा अपने कथन को सरलता एवं सरसता प्रदान करने के लिए जरूरत पड़ने पर उर्दू तथा अन्य भाषाओं के प्रचलित एवं अर्थपूर्ण शब्दों का भी प्रयोग करते हैं. नीरस विषय भी द्विवेदी जी के सुघड़ हाथों में पड़कर सरस एवं सजीव बन जाता है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *'कल्पतरू' यह .... का निबंध है.*
2. *हिंदी निबंध के विकास को .... युगों में बाँटा गया है.*
3. *हजारीप्रसाद द्विवेदी .... युग के निबंधकार है.*

4. *'बसंत आ गया है' निबंध द्विवेदी जी ने तब लिखा था, जब वे............ में निवास करते थे.*

7.8 *सार बिंदु*

इस निबन्ध को पढने के बाद साररूप कह सकते है कि –

- *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आलोचक, शोधकर्ता, उपन्यासकार और निबंधकार के रूप में हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित हैं.*
- *आचार्य द्विवेदी की हिंदी साहित्य का इतिहास से संबधित पुस्तकें 'हिंदी साहित्य की भूमिका' और 'हिंदी साहित्य का आदिकाल' अत्यंत चर्चित रही है.*
- *निबंध साहित्य में भी द्विवेदी जी का उल्लेख शुक्ल जी के साथ किया जाता है.*
- *निबंध का अर्थ होता है नि+बंधु अर्थात् जो रचना अच्छी तरह से बँधी हुई हो अर्थात् सुगठित हो.*
- *हिंदी में भारतेंदु युग और द्विवेदी युग में जब साहित्यिक पत्रकारिता का उदय हुआ था, निबंध का प्रारंभ और विकास भी तभी हुआ था.*
- *निबंध का आकार छोटा होता है जिसे हम एक बैठक में पढ़ सकते हैं.*
- *हिंदी साहित्य के प्रारंभ के साथ ही निबंध के विकास के केन्द्र में रामचंद्र शुक्ल को मानते हुए उसे तीन युगों में बाँटा गया (*1*) शुक्ल पूर्व युग (*1850–1920 (2) *शुक्ल युग (*1920–1940*)* (3) *शुक्लोत्तर युग (*1940– *आज तक)*
- *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी शुक्लोत्तर युग के निबंधकार है.*
- *हिन्दी साहित्य में हजारीप्रसाद द्विवेदी ने प्रमुख रूप से ललित निंबध लिखे हैं. इतिहास बोध, परंपरा-चिंतन, सृजनात्मक लेखन और संवाद के कारण द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य में अमर रहेंगे.*
- *द्विवेदी जी के निबंध दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं – विचारात्मक और आलोचनात्मक.*
- *'वसंत आ गया है' यह निबंध द्विवेदी जी द्वारा लिखित एक ललित निबंध है. यह निबंध द्विवेदी जी के निबंध संग्रह अशोक के फूल निबंध संग्रह में संकलित हैं. इस निबंध में द्विवेदी जी ने बताया है कि प्रकृति और मानव में गहरा संबंध होता है.*
- *वसन्त जब आता है तो प्रथमतः सबको न्यस्त व्यागमूर्ति बनाकर उनका पूर्व-संचित धन उन्मुक्त भाव से दान भरा देता तब अपार सौन्दर्य रूप में पल्लवों, कोपलों और पुष्पों की सम्पत्ति बाँट देता है.*
- *गुरूदेव रवीन्द्रनाथ के हाथ से लगाई दो कृष्ण चुड़ाये हैं, जो अभी नादान हैं. अतः हरी-भरी रहकर भी फाल्गुन आषाढ़ मास की दशा को प्राप्त है.*
- *भारत के नवयुवक उमंग और उत्साह से हीन दिखाई देते हैं. ऐसा पढ़ने में आया है किन्तु लेखक की दृष्टि में तो भारत के पेड़ पौधे भी उमंगों से हीन दिखाई देते हैं, क्योंकि जो अविकसित वृक्ष है उन्हें अभी तक यही पता नहीं चल पाया है कि बसंत*

आ गया है. महुआ और जामुन को देखने से लगता है कि बसंत आता नहीं है, ले आया जाता है.

- *प्रस्तुत निबंध को पढ़ने से यह मालूम पड़ता है कि द्विवेदी जी किस प्रकार एक मामूली-से मामूली विषय को अपनी प्रतिष्ठा का परिधान पहना कर कितना सुन्दर एवं रोचन बना देते हैं.*
- *'वसंत आ गया' निबंध में भी द्विवेदी जी के हृदय में एक मरियल कचनार के पेड़ को देखकर तरह-तरह की भावनाएँ उठ रही है.*

3.9 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये

1. *हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए*
2. *हिन्दी साहित्य में निबंध के क्षेत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान लिखिए*
3. *'वसंत आ गया है' निबंध की अन्तर्वस्तु की चर्चा कीजिए*

टिप्पणी लिखिए

1. *हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन परिचय*
2. *हजारीप्रसाद द्विवेदी के इतिहास संबंधी रचनाएँ*
3. *'वसंत आ गया है' – निबंध का उद्देश्य*
4. *'वसंत आ गया है' – निबंध का सारांश*

7.10 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

1. *हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी (विश्वविद्यालय प्रकाशन –* 2015*)*
2. *हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल*
3. *अशोक के फूल – हजारीप्रसाद द्विवेदी*

इकाई 8 'अतिथि' – डॉ. रामविलास शर्मा

रूपरेखा

8.1 *उद्देश्य*

8.2 *प्रस्तावना*

8.3 *निबंध का अर्थ एवं हिंदी साहित्य में विकास*

8.4 *लेखक परिचय*

8.4.1 *जीवन परिचय*

8.4.2 *कृतित्व परिचय*

8.5 *''अतिथि'' निबंध का परिचय*

8.5.1 *''अतिथि'' निबंध का परिचय*

8.5.2 *''अतिथि'' निबंध की अन्तर्वस्तु*

8.7 *सारांश*

8.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

8.9 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

8.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 8 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- *इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निबंध के अर्थ एवं स्वरूप को समझ सकेंगे.*
- *हिंदी साहित्य में निबंध के प्रारंभ और उसके विकास को समझ सकेंगे.*
- *''अतिथि'' निबंध के रचनाकार रामविलास शर्मा का जीवन परिचय समझेंगे साथ ही हिन्दी साहित्य में उनके योगदान को समझेंगे.*
- *इस इकाई को पढ़ने के बाद हम ''अतिथि'' निबंध का परिचय और उसकी अन्तर्वस्तु को जान पाएँगे.*

8.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य को देखा जाए तो पता चलता है कि आधुनिक काल (1850 ई.) से पूर्व हिंदी साहित्य में गद्य का अभाव था. आधुनिक काल में गद्य के विकास के साथ ही हिंदी भाषा का विकास अधिक मात्रा में हुआ. भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति गद्य के द्वारा ही होती है. इसी कारण सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि समस्त विषयों

के लिखने का माध्यम प्रायः गद्य है. गद्य के माध्यम से ही हम अपने दैनिक जीवन में सभी कार्यों को संपन्न करते हैं. निजी जीवन पत्र, डायरी आदि में कहानी, उपन्यास, निबंध, जीवनी आदि लेखन का माध्यम गद्य ही होता है. गद्य का क्रमिक विकास हिंदी के आधुनिक काल के आरंभ से हुआ. हिंदी गद्य अनेक विधाओं के रूप में उपलब्ध है, जिनमें – निबंध, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, गद्यकाव्य, आलोचना, यात्रावृत्त, डायरी, पत्र, आदि विधाओं का विकास हुआ है. जीवन की ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए इन विधाओं का विकास हुआ है. इन विधाओं में व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन प्रकाशित होता है. उनके व्यक्तिगत जीवन के द्वंद्व, उल्लास और पीड़ा के वास्तविक चित्र इन गद्य विधाओं में मिलते हैं. कलाकार के व्यक्तिगत अनुभव में उसके युग की संवेदनशीलता छिपी होती है. इन्हीं विधाओं में से ऐसी ही एक विधा निबंध है . जिसके अध्ययन के माध्यम से कलाकार की व्यक्तिगत विशिष्टता के साथ-साथ उस युग के यथार्थ को पहचान सकेंगे. साहित्य में आधुनिक विचार और बोध के परिणाम स्वरूप गद्य का प्रचलन हुआ. पारंपरिक समाज के टूटने और नए समाज के गठन के कारण नई साहित्यिक विधाओं का प्रचलन अनिवार्य था. नई सांस्कृतिक और राजनैतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में हिंदी निबंध का आरंभ हुआ. नई तकनीक के विकास से मुद्रणयंत्रों का प्रचलन प्रारंभ हुआ. मुद्रण यंत्र के आविष्कार से पूर्व हमारे साहित्य में वाचिक परंपरा की प्रधानता थी. भारतेन्दु युग में वाचिक परंपरा का रूपांतरण साहित्य की लिखित परंपरा में हुआ. यथार्थ संबंधी आग्रह नये प्रश्नों को उभार रहे थे. इसलिए पारंपरिक साहित्य की विधा में उन नये प्रश्नों का सामंजन नहीं हो रहा था. अनुभूतियों के बाह्य और अभ्यांतर यथार्थ के प्रस्तुतीकरण के लिए नई विद्या का आविष्कार हुआ. निबंध का विकास भी इन्हीं वास्तविकताओं के कारण हुआ. मानवतावादी विचार ने मनुष्य में स्वतंत्रता के बोध को विकसित किया. वह अब अपनी इच्छानुसार अनुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र था. निबंध ने इस स्वाधीनता को प्रसारित करने का अवसर दिया.

8.3 *निबंध का अर्थ एवं हिंदी साहित्य में विकास*

इस उपइकाई में हम निबंध का अर्थ और हिंदी साहित्य में उसके विकास को जानेंगे .....

- ***अर्थ एवं स्वरूप***

निबंध का मौलिक अर्थ है बाँधना. नि+बंध (बांधना) निबंध शब्द का संस्कृत में समानार्थी और अधिक व्यापक शब्द प्रबंध आता है. इसका मूल अर्थ है – संदर्भ या ग्रंथ रचना. लेकिन आज निबंध और प्रबंध दोनों ही अपने मूल या रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त नहीं होते. निबंध का शाब्दिक अर्थ हैं – सूत्रों में आबद्ध गढ़ी हुई रचना. निबंध आकार में लघु और अत्यधिक संगठित और समान शैली में लिखा गया होता है. निबंध गद्य की

केन्द्रिय विधा है. हिंदी में यह विधा आधुनिक युग की देन है. यह व्यक्तिऔर समाज की मानसिक चेतना और भावानुभूति की निर्बध अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है. आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं – 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है. 'अपने कथन का तर्क, परस्पर संवाद का समन्वय करते हुए लेखक अपने व्यक्तित्व का प्रभाव पाठक के मन पर अंकित कर सकता है. वैचारिकता और आत्मप्रकाशन का ऐसा प्रभावशाली और रोचक माध्यम संभवतः अन्य विधाएँ नहीं है.

- **निबंध की परिभाषाएँ**

किसी भी साहित्य प्रकार की व्याख्या करने की मनुष्य की प्रवृत्ति उसके बुद्धिनिष्ठता की परिचायक है. समय-समय पर विद्वानों, आचार्यों और समीक्षकों ने निबंध की अनेक परिभाषाएँ प्रस्तुत की है.

हम कुछ पाश्चात्य और कुछ भारतीय विद्वानों की परिभाषाओं के संदर्भ में विचार करेंगे.

- **पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की परिभाषाएँ**

1. अंग्रेजी के प्रख्यात रचनाकार डॉ. सैम्युअल जानसन ने कहा है कि – 'निबंध मस्तिष्क के असंबद्ध विचारों का विस्फोटन है.'
2. निबंधों के जनक मोन्तेत के अनुसार – 'निबंध विचारों, उद्धरणों और कथाओं का मिश्रण है.'
3. सर एडमंड गास ने निबंध को गद्य में सीमित आकार का लेख माना है.

- **भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की परिभाषाएँ**

1. रामचंद्र शुक्ल – 'गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है.' आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता है.
2. बाबू गुलाबराय – 'निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता साथ ही आवश्यक संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो.

निबंधों का वर्गीकरण अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग प्रकार किया है. सभी दृष्टिकोण से देखने पर निबंधों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जाता है. विचारात्मक निबंध, भावात्मक निबंध, आत्मपरक निबंध, वर्णनात्मक निबंध, विवरणात्मक निबंध आदि.

- **हिंदी निबंध का विकास**

हिंदी निबंध का विकास भारतेंदु युग से ही माना जाता है. भारतेंदु युग में नई चेतना जाग रही थी. निबंध का उदय गद्य के विकास का ही परिणाम है. हिंदी निबंध के

विकास के चार चरण माने जाते हैं. (1) *भारतेन्दु युग* (2) *द्विवेदी युग* (3) *शुक्ल युग* (4) *शुक्लोत्तर युग.*

- ***भारतेन्दुयुगीन निबंध साहित्य (* 1857 *ई. से* 1900 *ई.)***

गद्य की अन्य विधाओं के साथ ही भारतेन्दु युग से हिंदी निबंध का सूत्रपात एवं विकास होता है. इस युग के निबंधकारों में भारतेन्दु हरिशचन्द्र प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन, श्री निवासस्थान आदि के नाम उल्लेखनीय हैं . भारतेन्दु हरिशचन्द्र आधुनिक हिंदी गद्य के जन्मदाता हैं. वे इस युग के प्रतिभा सम्पन्न निबंधकार हैं. उन्होंने समाज, राजनीति, धर्म, इतिहास, साहित्य आदि विविध विषयों पर निबंध रचना की है. इनके यात्रा संबंधी निबंध भी विशेष महत्व रखते हैं. जिन्दादिली, आत्मीयता एवं व्यंग्यात्मकता भारतेन्दु के निबंध साहित्य की विशेषताएँ हैं.

बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार कहे जा सकते हैं. बालकृष्ण भट्ट 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक थे. इनके निबंध 'भट्ट निबंधमाला', 'भट्ट निबंधावली' तथा 'साहित्य सुमन' संग्रहों में संकलित है. विचारात्मक एवं भावात्मक दोनों प्रकार के निबंधों की रचना में भट्ट जी सफल रहे हैं. प्रतापनारायण मिश्र उस युग के स्वच्छन्द एवं मस्तजीवी निबंधकार हैं. इनके निबंध ब्राह्मण पत्रिका में प्रकाशित होते थे. प्रतापनारायण मिश्र की ग्रंथावली में इनके निबंध संग्रहीत हैं. मनोरंजन तथा व्यंग्य इनके निबंधों की विशेषताएँ हैं. समग्र रूप से भारतेन्दु युग के निबंधों में हास्य-व्यंग्य, देश-प्रेम, समाज-सुधार और मनोरंजन जैसी विशेषताएँ प्रधान रूप से पाई जाती है.

- ***द्विवेदी युगीन निबंध साहित्य (* 1900 *ई. से* 1920 *ई.)***

द्विवेदी युग के प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी आचार्य, समीक्षक और निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं. आचार्य द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' के सम्पादक रहते हुए विविध विषयों पर निबंधों की रचना की थी. उन्होंने संस्कृति, साहित्य, समाज, धर्म, शिक्षा, इतिहास आदि विषयों पर विचारात्मक एवं आलोचनात्मक निबंधों की रचना की थी. उनके निबंधों में निबंध-कला के उत्कर्ष के स्थान पर विचारों और तथ्यों को प्राथमिकता है. अतः उनके निबंध बातों का संकलन बन गए हैं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पद्म सिंह शर्मा, बालमुकुन्द गुप्त, गोविन्दनारायण मिश्र, श्यामसुन्दर दास, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, अध्यापक पूर्णसिंह इस युग के प्रसिद्ध निबंधकार है. इस युग के निबंधों से निबंध का विचार क्षेत्र व्यापक हुआ है. विचार-प्रधान निबंधों की रचना में इस युग के लेखक को सफलता मिली है, परन्तु भारतेन्दु युगीन आत्मीयता जिन्दादिली तथा सजीवता का इस युग के निबंध में अभाव है.

- ***शुक्ल युगीन निबंध साहित्य (* 1920 *ई. से* 1940 *ई.)***

शुक्ल युग के निबंधकारों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शीर्षस्थ है. आचार्य शुक्ल ने मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक एवं आलोचनात्मक निबंधों की रचना की है, जो

'चिन्तामणि' (दो भाग) में संगृहीत है. शुक्लजी के निबंध विचारात्मक निबंधों का आदर्श प्रस्तुत करते हैं. इनमें वृद्धि और भाव का सन्तुलित समन्वय मिलता है. उत्साह, भय, करुणा आदि शुक्लजी के मनोभाव संबंधी प्रसिद्ध निबंध है. 'कविता क्या है?' आदि इनके साहित्यिक एवं समीक्षात्मक निबंध है. शुक्लजी की भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सक्षम है.

शुक्ल युग के निबंधकारों में बाबू गुलाबराय, पदुमलाल, पुन्नालाल, बख्शी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, महादेवी वर्मा, राहुल सांकृत्यायन आदि उल्लेखनीय है. इन निबंधकारों की अपनी मौलिक विशेषताएँ हैं. बाबू गुलाबराय ने आत्मपरक निबंधों की रचना की है. महादेवी के निबंध संस्मरणात्मक है. राहुल सांकृत्यायन के निबंधों में विषय-वैविध्य है. सियारामशरण गुप्त के निबंध वैयक्तिक है. इस युग में श्री राम ने अबोट विषयक निबंध लिखे हैं. डॉ.रघुवीर सिंह के भावात्मक निबंध भी प्रसिद्ध है. शुक्ल युग के इन निबंधकारों में विचारों की गम्भीरता के साथ-साथ भाषा-शैली की प्रौढ़ता भी मिलती है.

- ***शुक्लोत्तर युगीन निबंध साहित्य (1940 ई. से अब तक)***

शुक्लोत्तर युग के निबंधकारों में हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने ललित निबंधों के लिए प्रसिद्ध है . उन्हें सांस्कृतिक चेतना का निबंधकार माना जा सकता है. प्राचीन और नवीन का सामंजस्य उनकी उल्लेखनीय विशेषता है. 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'कल्पलता', 'आलोक पर्व' आदि संग्रहों में द्विवेदीजी के निबंध संग्रहीत है. उनकी भाषा प्रौढ़ है और शैली में व्यंग्य-विनोद. इस युग के अन्य निबंधकारों में वासुदेवशरण अग्रवाल, आचार्य नन्दु दुलारे वाजपेयी, डॉ.नगेन्द्र, भगतशरण उपाध्याय, जैनेन्द्र, रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, डॉ.इन्द्रनाथ मदान, डॉ. सत्येन्द्र आदि के नाम भी पर्याप्त चर्चित हैं.

विगत चार दशकों में हिन्दी निबंध के क्षेत्र में कतिपय नई प्रतिभाओं का आविर्भाव हुआ है. इन्होंने ललित निबंध के मार्ग को प्रशस्त किया है. इन निबंधकारों डॉ.विद्यानिवास मिश्र, धर्मवीर भारती, नामवर सिंह, शिवप्रसाद सिंह, श्री लाल शुक्ल, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, हरिशंकर परसाई, कुबेरनाथ राम, विवेकी राय आदि के नाम उल्लेखनीय है. इनमें डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबंध के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है. इन्होंने आचार्य द्विवेदी की सांस्कृतिक-साहित्यिक ललित निबंध-परंपरा को विकसित किया. 'छितवन की छाँह', 'कदम की फूली डाल', ''तुम चन्दन हम पानी' आदि मिश्रजी के निबंध-संग्रह है. इनके निबंधों में अनुभूति और चिन्तन का मेल है और भाषा के लालित्य और प्रवाह है. हरिशंकर परसाई हास्य व्यंग्य-प्रधान निबंधों के लिए प्रसिद्ध है. इस प्रकार ललित निबंध का भविष्य उज्जवल कहा जा सकता है.

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर लिखिए

1. *निबंध को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है?*
2. *निबंध के विकास को कितने भागों में बांटा गया है?*
3. *निबंध की परिभाषा लिखिए.*
4. *'अशोक के फूल' किस साहित्यकार की रचना है?*
5. *आचार्य द्विवेदी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?*

सही जोड़े मिलाइए: (निबंधकारों को उनके युग के साथ)

1. *बालमुकुंद गुप्त*	*भारतेंदु युग*
2. *हजारीप्रसाद द्विवेदी*	*शुक्लोत्तर युग*
3. *अध्यापक पूर्णसिंह*	*द्विवेदी युग*
4. *महादेवी वर्मा*	*शुक्ल युग*

8.4 *लेखक परिचय*

इस उपइकाई में हम रामविलास शर्मा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे....

8.4.1 *जीवन परिचय*

रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ऊँच गाँव – सानी गाँव में हुआ था. उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की. पीएच.डी. करने के उपरांत उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में ही कुछ समय तक अंग्रेजी विभाग में अध्यापन कार्य किया. सन् 1943 *से* 1971 *तक वे आगरा के बलवंत राजपूत कॉलेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे.* 1971 *के बाद कुछ समय तक वे आगरा के ही के.एम.मुंशी विद्यापीठ के निदेशक रहे. जीवन के आखिरी वर्षों में वे दिल्ली में रहकर साहित्य, समाज और इतिहास से संबंधित चिंतन और लेखन करते रहे और यही उनका देहावसान हुआ.*

8.4.2 *कृतित्व परिचय*

रामविलास शर्मा आलोचक, भाषाशास्त्री, समाजचिंतक और इतिहासवेत्ता रहे हैं. साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने कवि और आलोचक के रूप में पदार्पण किया. उनकी कुछ कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित तार सप्तक में संकलित हैं. हिंदी की प्रगतिशील आलोचना को सुव्यवस्थित करने और उसे नयी दिशा देने का महत्वपूर्ण काम उन्होंने किया. उनके साहित्यचिंतन के केन्द्र में भारतीय समाज का जनजीवन, उसकी समस्याएँ और उसकी आकांक्षाएँ रही है. उन्होंने वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के काव्य का नया

मूल्यांकन और तुलसीदास के महत्व का विवेचन भी किया है. रामविलास शर्मा के आधुनिक हिंदी साहित्य का विवेचन और मूल्यांकन करते हुए हिन्दी की प्रगतिशील आलोचना का मार्गदर्शन किया. अपने जीवन के आखिरी दिनों में वे भारतीय समाज, संस्कृति और इतिहास की समस्याओं पर गंभीर चिंतन और लेखन करते हुए वर्तमान भारतीय समाज की समस्याओं को समझने के लिए, अतीत की विवेक-यात्रा करते रहे. महत्वपूर्ण विचारक और आलोचक के साथ-साथ रामविलास जी एक सफल निबंधकार भी हैं. उनके अधिकांश निबंध 'विराम चिन्ह' नाम की पुस्तक में संग्रहीत है. उन्होंने विचार प्रधान और व्यक्तिव्यंजक निबंधों की रचना की है. प्रायः उनके निबंधों में विचार और भाषा के स्तर पर एक रचनाकार की जीवंतता और सहृदयता मिलती है. स्पष्ट, कथन, विचार की गंभीरता और भाषा की सहजता उनकी निबंध-शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं. रामविलास शर्मा को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था. अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों में सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश सरकार का भारत-भारती पुरस्कार, व्यास सम्मान और हिंदी अकादमी दिल्ली का शलाका सम्मान उल्लेखनीय है. पुरस्कारों के प्रसंग में शर्मा जी के आचरण की एक बात महत्वपूर्ण है कि वे पुरस्कारों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सम्मान को तो स्वीकार करते थे लेकिन पुरस्कार की राशि को लोकहित में व्यय करने के लिए लौटा देते थे. उनकी इच्छा थी कि यह राशि जनता को शिक्षित करने के लिए खर्च की जाए.

रामविलास शर्मा जी की उल्लेखनीय कृतियाँ हैं – 'भारतेन्दु और उनका युग', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण', 'प्रेमचंद और उनका युग,' 'निराला की साहित्य साधना' (तीन खंड), 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी' (तीन खंड), 'भाषा और समाज', 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, इतिहास दर्शन', 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश' आदि.

8.5 'अतिथि' निबंध का परिचय

इस इकाई में हम ''अतिथि'' निबंध का परिचय और उसकी अन्तर्वस्तु को जानेंगे......

8.5.1 'अतिथि' निबंध का परिचय

'अतिथि' से मेरा मतलब उन लोगों से नहीं है, जो बिना तिथि बताये आपके भोजन में शरीक होने के लिए आ जाते हैं. इस तरह का आतिथ्य अब चाय-पानी तक रह गया है, खासकर महँगाई के जमाने में लोग भोजन के लिए पूछते हुए सवाल को मन में दोहरा लेते हैं. अगर आपका जजमान जिसके यहाँ आप 'अतिथि', यानी मान-न-मान मैं तेरा मेहमान बने हैं – दम साधकर घबराहट में एक ही साँस में आपसे भोजन के लिए ऐसे पूछे तो आप उसके शब्दों का उत्तर उनकी ध्वनि में पढ़कर तुरंत ही नहीं दे देंगे. यदि

मीठी-मीठी बातें करके वह आपसे भोजन के लिए ऐसे आग्रह करे जैसे वह आपकी बाट ही जोह रहा था और आपके बिना उसका भोजन विष-तुल्य हो जाएगा, तो आप निश्चय जानीये कि उसने कोई भारी दाँव सोच रखा है. आप लेखक हो और मेहमाननवाज प्रकाशक हो तो समझ लीजिए कि दालदा की पूड़ियाँ और कद्दू की तरकारी खिलाकर वह आपसे मुफ्त लेख लिखाना चाहता है. इस काल के 'अतिथि'-सत्कार से ब्राह्मण सावधान.

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि 'अतिथि' से मेरा मतलब उन लोगों से नहीं है. मेरा मतलब उन लोगों से है जो तिथि की बात दूर, घड़ी, पल, घंटा, पहर का ध्यान न रखे हुए एकदम अयाचित आ धमकते हैं. इन सभी शब्दों में अ लगाने से इनका नामकरण हो सकता है, लेकिन जब तक अच्छी हिंदी के लेखक इस ओर अपना उत्तरदायित्व नहीं निभाते, तब तक मैं उन्हें 'अतिथि' ही कहता हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि शब्द पर न जाकर, आप मेरा मतलब समझ ले.

आप सोचिये, चौबीस घंटों में ऐसा कौन-सा घंटा या मिनट है, जब कभी न कभी किसी 'अतिथि' ने आकर आपका काम न रोक दिया हो. वे लोग धन्य हैं, जिन्हें बारह से चार तक कम से कम रात के समय इन मेहमानों से नजात मिली हो. कॉलेज का अध्यापक अगर लेखक भी हो तो उसके लिए 'अतिथि' की आवाज यमदूत के संदेश से कम भयावह नहीं होती. सवेरे चाय पीकर या स्वस्थ मन के हुए तो दूध-बादाम पीकर आप कॉलेज की किताबें लेकर बैठे. दस मिनट के बाद जब आपकी तन्मयता बढ़ रही थी, तभी आ गये 'अतिथि' जी. कहंगे-आप शायद काम कर रहे थे. मैं थोड़ी देर बैठूँगा. अब आप यह तो कहने से रहे – नहीं थोड़ी देर भी न बैठिये. अरब के तबूं में पहले ऊँट की गर्दन आयी, फिर क्रमशः दस जब गए और आपकी उदासीनता, अँगड़ाईयाँ, इधर-उधर देखन, खामोश रहना-वह सभी कुछ व्यर्थ करते रहे. आखिर वे आपकी परेशानी का पूरा मजा लेकर उठे. आपका समय नष्ट करने के लिए खेद प्रकट किया और अंत में चलने ही लगे कि उन्हें वह असली काम याद आ गया जिसके लिए वह आये थे. आप जल्दी से निपटाने के फिराक में कमरे से बाहर निकले, लेकिन वह सीढ़ी पर एक पैर रखकर फिर जम गये. खैर, दस मिनट के बाद उन्होंने नमस्ते भी किया, लेकिन आपको घूमकर चलने का मौका न देकर उन्होंने अपना पुनश्च फिर आरंभ कर दिया. यहाँ एक-एक क्षण कल्प हो रहा है, यह किसी को क्या मालूम?

भोजन के उपरांत अखबार पढ़ते-पढ़ते आप कहीं झपकी लेने लगे, तो 'अतिथि' की आवाज़ ब्रह्मांड पर सोंटे की तरह ऐसे गिरती है कि स्वप्न-सत्य सब एक हो जाता है. तारपिडी लगने से जैसे जहाज का मल्लाह चौंक उठता है, वैसे ही कुछ क्षण को तो हृदय-वीणा के तार ऐसे झनझना उठते हैं जैसे उसकी तुंबी पर पत्थर पड़े हों. सौभाग्य से नींद पूरी करके, हाथ-मुँह धोकर, प्रसन्नाचित आप बहुत दिनों के पत्रों का जवाब लिखने बैठे, तभी यह सोचकर कि यह आपका फुर्सत का समय होगा, 'अतिथि'

जी पुनः आ पधारे. कहीं कॉलेज की छुट्टियाँ हुई, तब तो 'अतिथि' को छूट ही मिल जाती है. आपने बड़ी शिष्टता बरसते हुए किसी काम का जिक्र किया, तो बस वह बरस पड़े- अजी, अब भी तुम्हें काम है? अब छुट्टियाँ है, तुम्हें फुरसत ही फुरसत है. और फिर जमे तो बेहोश होकर अंगद का पैर बनकर रह गये. रात में आप बहुत निश्चिंत होकर लेख लिखने बैठे. कुछ देर तक कागज़ खराब करने के बाद जब सुरूर आया, तभी आपके फालतू समय में हिस्सा बटाने के लिए पुनः 'अतिथि' जी आ धमके . क्या करे बेचारे. दिन में आपके मिलन का ठीक नहीं रहता. रात में खुद अपने काम का नुकसान करके आपको कृतार्थ करने आये हैं. उन्हें क्या मालूम उनके कारण हिंदी का भंडार कितने रत्नों से वंचित रह जाता है. कितने ही महाग्रंथों की रचना का विचार इन महापुरुषों का ध्यान आते ही तज देना पड़ता है. कम से कम कवि होने का विचार तो छोड़ ही देना पड़ा क्योंकि इन कविता के दुश्मनों का कोई ठिकाना नहीं, कब कल्पना लोक में वनमानुष बनकर कूद न पड़े. संपादक चिट्ठी लिखते हैं, फिर तार भेजते हैं, पत्रों का उत्तर न पाने वाले गालियाँ लिखकर भेजते हैं. समय पर भोजन-स्नान के बदले, आलोक बनने से अभिशाप स्वरूप, निठल्ले कवियों से कविता और उन्हीं के मुँह उसकी प्रशंसा सुननी पड़ती है. लेकिन इस दर्द को कोई क्या समझे? अगर इस लेख को मैं अपने कमरे में टाँग दूँ तो क्या आप समझते हैं, उनकी स्थिरता में अथवा जड़ता में कोई अंतर आ जायेगा? वे इस लेख की प्रशंसा करने के बहाने ही जम जाएँगें और फिर तो दस-पाँच मिनट में उठनेवाले कोई और ही होंगे.

8.5.2 *'अतिथि'-निबंध की अन्तर्वस्तु*

'अतिथि' निबंध यह रामविलास द्वारा रचित निबंध है. प्रस्तुत निबंध में रामविलास जी ने बताया है जब किसी के भी घर असमय या बिना बताए 'अतिथि' आ जाते हैं तो किस प्रकार समस्याओं का सामना करना पड़ता है. रामविलास जी आजकल का जो महँगाई का जमाना है ऐसे में भोजन में शरीक होने वाले 'अतिथि' की जगह अब वह 'अतिथि' चाय-पानी तक रह गया है. रामविलास जी प्रस्तुत निबंध में बताते हैं कि वे लोग धन्य हैं, जिन्हें बारह से चार तक कम से कम रात के समय इन मेहमानों से निजात मिली हो. कॉलेज का अध्यापक हो या चाहे विद्यार्थी हो यदि वह लेखक है तो उसके लिए 'अतिथि' की आवाज़ किसी यमदूत के संदेश से कम नहीं होती है. 'अतिथि' निबंध में रामविलास जी ने किस प्रकार एक लेखक को अपने लेखन में समस्याएँ उत्पन्न होती है, उनका वर्णन किया है. यूँ तो लेखक के जीवन में कई समस्याएँ होती हैं. जैसे आर्थिक समस्या, पारिवारिक संबंध की समस्या, वैवाहिक जीवन को पर्याप्त समय देने में लेखन को समय न दे पाना आदि इन सभी के अतिरिक्त एक और समस्या है 'अतिथि' की समस्या. इस पर वैसे तो किसी का ध्यान नहीं गया परंतु रामविलासजी ने इस निबंध में एक प्रसंग बताया है यदि उस पर विचार किया जाए तो पता चलता है कि लेखक के लेखन में या पठन में 'अतिथि' किस प्रकार हस्तक्षेप करते हैं. निबंध का वह प्रसंग –

यदि कोई लेखक सवेरे चाय पीकर या स्वस्थ मन के हुए तो दूध-बादाम पीकर वह कॉलेज की किताबें लेकर बैठे. धीरे-धीरे दस मिनट के बाद जब उसकी तन्मयता बढ़ रही हो, और अनक तभी 'अतिथि' आ जाये. और आकर कहते हैं — आप शायद काम कर रहे थे, मैं थोड़ी देर बैठूँगा. और वह 'अतिथि' से यह तो नहीं कह सकते की थोड़ी देर भी बैठना उनके कार्य में हस्तक्षेप करने जैसा है.

जब भी कोई व्यस्त व्यक्ति जिसके पास करने को कई काम हो, फालतू की बातों का जिसके पास समय ही न हो, उसके लिए 'अतिथि'यों का उनके घर आना, और आने के साथ ही कुछ व्यर्थ की बातें करना, आपकी परेशानी का पूरा मज़ा लेकर, समय नष्ट करने बाद अंत में जाने के वक्त उन 'अतिथि'यों को याद आता है, वह काम जिसके लिए वे आए थे. उस वक्त आपके काम में जो बाधा पड़ी थी वह किसी को क्या मालूम? इस प्रकार निबंध में बताया है 'अतिथि'यों का बिना वक्त पर अचानक आना और सामने वाले के काम में खलल डालना.

रामविलासजी ने इन 'अतिथि'यों को कविता के दुश्मन तक कह दिया है. जब भी लेखक निश्चिंत होकर लेख लिखने बैठते है. तब कुछ देर तक कागज खराब करने के बाद जब सुरूर आता है, तभी पुनः 'अतिथि' जी आ जाते हैं. उन्हें क्या मालूम उनके कारण हिंदी का भंडार कितने रत्नों से वंचित रह जाता है. कवि होने का विचार तो ऐसे ही कई लेखक छोड़ ही देते हैं क्योंकि इन कविता के दुश्मनों यानी 'अतिथि'यों का क्या पता, कब इस कल्पना लोक में कूद पड़े. इस प्रकार प्रस्तुत निबंध में रामविलास शर्मा जी उस दर्द को बताते हैं जो उनके लेखन में बहुत ही बाधा करता हो.

इस निबंध को पढ़ने के बाद पता चलता है कि हो न हो रामविलास जी के जीवन में 'अतिथि'यों का बहुत ही आना जाना हुआ करता था. इस बड़ी मुश्किल समस्या पर इतना रोचकपूर्ण निबंध लिखकर उन्होंने अपने लेखन में आनेवाली समस्याओं का वर्णन किया है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *प्रतापनारायण मिश्र ....युग के निबंधकार है.*
2. *रामविलास शर्मा जी ....युग के निबंधकार हैं.*
3. *'प्रेमचंद और उनका युग' .... रचना है.*
4. *रामविलास शर्मा जी का देहांत .... शहर में हुआ.*

सही विकल्प का चयन कीजिए

1. *'निबंध मस्तिष्क के असंबद्ध विचारों का विस्फोटन है.'- निबंध की यह परिभाषा किस विद्वान ने दी है?*

(अ) सर एडमंड गास *(ब) बेकन*

(क) हडसन *(ड) डॉ. सैम्युअल जॉनसन*

2. *'गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है.' – यह कथन किसका है?*

(अ) रामचंद्र शुक्ल *(ब) बाबू गुलाबराय*

(क) मोन्तेत *(ड) हजारीप्रसाद द्विवेदी*

3. *निबंध का विकास किस युग से माना जाता है?*

(अ) आदिकाल *(ब) भारतेंदु युग*

(क) द्विवेदी युग *(ड) छायावाद युग*

4. *''अतिथि'' यह किस विधा की रचना है ?*

(अ) नाटक *(ब) निबंध*

(क) कहानी *(ड) पत्र*

5. *रामविलास शर्मा आगरा के बलवंत राजपूत कॉलेज में किस विषय के प्राध्यापक रहे ?*

(अ) हिंदी *(ब) गुजराती*

(क) पंजाबी *(ड) अंग्रेजी*

8.7 *सारांश*

- *साहित्य में आधुनिक विचार और बोध के परिणाम स्वरूप आधुनिक काल (*1850 *ई. से) से गद्य का प्रचलन हुआ.*
- *निबंध तथा अन्य गद्य विधाओं की प्राथमिक शर्त है निजी अनुभवों की प्रामाणिक तथा विश्वसनीय अभिव्यक्ति*
- *अनुभवों की विविधता ने ही आधुनिक साहित्य में विधाओं और विविध शैलियों को प्रस्तावित किया.*
- *निबंध का विकास भी इन्हीं अनुभूतियों के प्रस्तुतीकरण के कारण हुआ.*
- *निबंध गद्य लेखन की एक विधा है. जिसका प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है.*
- *साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध है.*
- *निबंध को अंग्रेजी में कम्पोजीशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है. निबन्ध वह रचना है जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तार और पांडित्यपूर्ण विचार किया जाता है. वास्तव में निबन्ध का अर्थ है बंधन.*
- *आधुनिक युग में भारतेंदु युग से निबंध लिखने की परंपरा का आरंभ होता है.*
- *हिंदी निबंध के विकास को चार भागों में बांटा गया है.* (1) *भारतेंदुयुग* (2) *द्विवेदी युग* (3) *शुक्ल युग* (4) *शुक्लोत्तर युग.*
- *भारतेंदु युग के प्रमुख निबंधकार भारतेंदु हरिशचंद्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त तथा राधाचरण गोस्वामी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं.*

- *द्विवेदी युगीन निबंधकारों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्र बंधु, डॉ. श्यामसुंदरदास, डॉ. पदमसिंह शर्मा, अध्यापक पूर्ण सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बनारसी दास चतुर्वेदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं.*
- *शुक्ल युग आर्य रामंद्र शुक्ल के नाम पर इस युग का नामकरण किया गया है.*
- *शुक्ल युग के निबंधकारों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गुलाबराय, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा आदि उल्लेखनीय है.*
- *शुक्लोत्तर युग में शुक्ल परवर्ती निबंधकारों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, जैनेन्द्र, रामविलास शर्मा, डॉ. विश्वंभर मानव, प्रभाकर माचवे, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह दिनकर आदि प्रमुख निबंधकार हैं.*
- *रामविलास शर्मा जी शुक्लोत्तर युग के श्रेष्ठ निबंधकार माने जाते हैं. रामविलास शर्मा के साहित्यिक जीवन का आरंभ सन्* 1934 *से होता है जब वह सूर्यकांत*
- *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ.रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं, जो भाषा साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं.*
- *रामविलास शर्मा संपूर्ण साहित्य नये और पुराने को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखने-परखने का कार्य किया है.*
- *शर्मा जी ने सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों समीक्षा-पद्धतियों से अपने विचारों को पुष्ट करने का प्रयत्न किया है.*
- *''अतिथि'' निबंध विधा की रचना है.*
- *''अतिथि'' निबंध के रचनाकार रामविलास शर्मा जी है.*
- *शर्मा जी ने एक लेखक को ध्यान में रखकर उसके लेखन के समय वह किस प्रकार समय निकालकर शांति से लेखन के लिए एकचित्त होकर लिखने के लिए बैठ जाता है और एक दो पेज वह लिखता है, और धीरे-धीरे जैसे वह विषय में प्रवेश करता है कल्पना के सागर में डूब कर शब्दों के मोती निकालता है, वहाँ तक पहुँचता ही है कि अचानक कोई दरवाजे पर आ पहुँचता है वह होते हैं — 'अतिथि'.*
- *रामविलास जी ने निबंध में अपने उन अनुभवों का प्रस्तुतीकरण किया है जो एक लेखकों की वास्तविक समस्या है.*
- *'अतिथि'यों का यों अचानक किसी भी समय पर आ जाना और आकर उनके काम में बाधा उत्पन्न करना इस विषय को 'अतिथि' निबंध में रामविलास शर्मा जी बहुत ही वास्तविक प्रसंगों के उदाहरणों को द्वारा समझाया है .*

8.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये***

1. *रामविलास शर्मा जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए .*
2. *निबंध अर्थ एवं स्वरूप तथा हिंदी साहित्य में निबंध का विकास समझाइए .*

3. *''अतिथि'' निबंध की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए*

- ***टिप्पणी लिखिए***

1. *निबन्ध का अर्थ एवं स्वरूप*
2. *हिंदी निबंध का विकास*
3. *'अतिथि'-निबंध की अन्तर्वस्तु*
4. *''अतिथि'' निबंध का परिचय*

- ***सही जोड़े मिलाइए : (निबंधकारों को उनके युग के साथ)***

1. *बालमुकुंद गुप्त*	*भारतेंदु युग*
2. *हजारीप्रसाद द्विवेदी*	*शुक्लोत्तर युग*
3. *अध्यापक पूर्णसिंह*	*द्विवेदी युग*
4. *महादेवी वर्मा*	*शुक्ल युग*

4.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1 *हिंदी साहित्य का इतिहास संपादक डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल*

2 *हिंदी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. बाबूराम (*2002 - *वाणी प्रकाशन)*

3 *'अतिथि' रामविलास शर्मा*

4 https://rb.gy/9qkdi

इकाई 9 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र'- हरिशंकर परसाई

रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 लेखक परिचय

9.3.1 जीवन परिचय

9.3.2 कृतित्व परिचय

9.4 व्यंग्य के क्षेत्र में परसाई जी का योगदान

9.5 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' निबंध का परिचय

9.6 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' की अन्तर्वस्तु

9.7 सारांश

9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

9.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

9.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई-9 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- *हरिशंकर परसाई जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानेंगे.*
- *व्यंग्य के क्षेत्र में हरिशंकर परसाई जी के योगदान को जानेंगे.*
- *हरिशंकर परसाई जी की रचना 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' का परिचय और अन्तर्वस्तु को जानेंगे.*

9.2 प्रस्तावना

'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' एक व्यंग्य विधा है, इसके रचनाकार हरिशंकर परसाई जी हैं. वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा. 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' व्यंग्य प्रधान रचनाएँ हैं. व्यंग्य का जन्म अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर से उपजे असंतोष से होता है. विद्वानों में इस बात पर मतभेद लगातार बना रहा है कि व्यंग्य को एक अलग विधा माना जाए या वह किसी भी विधा के भीतर स्पिरिट के रूप में मौजूद रहे. दरअसल व्यंग्य एक माध्यम है जिसके द्वारा जीवन

की विसंगतियों, खोखलेपन और पाखंड को दुनिया के सामने उजागर करता है. हम सब इन से परिचित तो होते हैं किंतु उन स्थितियों को दूर करने, बदलने की कोशिश नहीं करते बल्कि बहुधा उन्हीं विद्रूपताओं विसंगतियों के बीच जीने की उनसे समझौता करने की आदत बना लेते हैं. व्यंग्यकार अपनी रचनों में ऐसे पात्रों और स्थितियों के प्रति पाठकों को सचेत करते हैं. जैसा कि व्यंग्य नाम से ही स्पष्ट है, इस विधा में सामाजिक विसंगतियों का चित्रण सीधे-सीधे न होकर परेक्षत: होता है (व्यंजना के माध्यम से) इसीलिए व्यंग्य में मारक क्षमता अधिक होती है.

हिंदी में संत साहित्य से व्यंग्य का आरंभ माना जा सकता है. कबीर ने जाति-भेद, हिंदू-मुसलमानों के धर्माडंबर, आदि पर कबीर के व्यंग्य बड़े मारक है. आगे चलकर रीतिकाल में व्यंग्यों का प्रयोग नहीं हुआ. कबीर के बाद भारतेंदु ने सामाजिक विषमताओं के प्रति व्यंग्य को हथियार बनाया. अंग्रेजों के खिलाफ लिखते हुए वे कहते हैं – 'होय मनुष्य क्यों भये, हम गुलाम वे भूप.' स्वतंत्रता-पूर्व युग में युगीन समस्याओं पर व्यंग्य करने की प्रवृत्ति प्रेमचंद में भी बहुत मिलती है. इन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में आम आदमी और कृषक वर्ग की दैनंदिन कठिनाइयों पर करारा व्यंग्य किया है . प्रेमचंद के बाद के रचनाकारों में निराला साहित्य में व्यंग्य देखा जा सकता है . सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'कुकुरमुत्ता' आदि रचनाओं में व्यंग्य की अभिव्यक्ति विद्रूपता फैलाने वाले समाज के खिलाफ चुनौती के रूप में हुई है. स्वतंत्रता के बाद भारत में समाज, राजनीति, धर्म, शिक्षा, आदि सभी क्षेत्रों में असंगतियाँ बढ़ी हैं. आम आदमी के लिए शांतिपूर्वक जीवन जीने के अवसर कम हुए हैं. सत्य, सदाचरण, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा आदि शाश्वत मूल्यों का स्थान अनेक विसंगतियों ने ले लिया है. आजादी पूर्व देखे गए स्वप्न तो बीसवीं शताब्दी के छठे दशक आते-आते ही खण्डित हो गए. गुलाम भारत में होने वाले शोषण अत्याचार आजादी के बाद कम होने के बजाय और अधिक बढ़ गए. व्यक्तिऔर समाज की आंतरिक जटिलताओं के साथ-साथ अन्तर्विरोध भी बढ़े हैं. व्यक्तिनिजी स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है. ये विसंगतियाँ और जटिलताएँ व्यंग्य के लिए आधारभूमि बनी. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में व्यंग्य का पर्याप्त सृजन हुआ है. निरन्तर बढ़ती सामाजिक विषमताओं से विक्षुब्ध होकर करुणापूर्वक व्यंग्य लेखन की एक लम्बी परम्परा मिलती है. हरिशंकर परसाई जी इस परम्परा के प्रतिनिधि रचनाकार है. परसाई के व्यंग्य लेखन की भाषा सप्रयास नहीं है. उसका मानना है कि समाज में रहने के कारण वह हमें अनुभव देता है और विषयानुरूप नई भाषा सिखाता है. यही कारण है कि परसाई की भाषा उनके कथ्य का अनुसरण करती है. शरद जोशी भी परसाई की ही तरह एक अलग भाषाई तेवर के साथ व्यंग्य लेखन करते हैं. शिल्प की सजगता इनके व्यंग्य लेखन की विशेषता है. श्रीलाल शुक्ल का नाम भी स्वातंत्रयोत्तर व्यंग्य लेखन में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है. इनके उपन्यास रागदरबारी ने मोहभंग की स्थितियों के यथार्थ को सजीव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है. रवीन्द्रनाथ त्यागी का लेखन आत्म व्यंग्य के कारण महत्वपूर्ण माना जाता है. सामाजिक मूल्यों के

विघटन को केंद्र में रखकर समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में व्यंग्य का लगातार सृजन हो रहा है. समकालीन व्यंग्य में सुरेश कांत 'अफसर गए बिदेस', ज्ञान चतुर्वेदी 'दंगे में मुर्गा', सुशील सिद्धार्थ 'नारद की चिंता', नरेन्द्र कोली 'मेरी इक्यावन व्यंग रचनाएं' आदि का नाम लिया जा सकता है. सुशील सिद्धार्थ का 'नारद की चिंता' प्रमुख व्यंग्य संग्रह है.

9.3 *लेखक परिचय*

इस उपइकाई में हम हरिशंकर परसाई जी के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे....

9.3.1 *जीवन परिचय*

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 *गस्त* 1922 *को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में जमानी नामक गाँव में हुआ था. गाँव से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे नागपुर चले आये थे. नागपुर विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. हिंदी की परीक्षा पास की. कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन कार्य भी किया. इसके बाद उन्होने स्वतंत्र लेखन प्रारंभ कर दिया. उन्होंने जबलपुल से साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन भी किया, परन्तु घाटा होने के कारण इसे बंद करना पड़ा. हरिशंकर परसाईं जी ने खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को बहुत ही निकटता से पकड़ा है. उनकी भाषा शैली में खास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है. मात्र अठारह वर्ष की उम्र में हरिशंकर परसाई ने जंगल विभाग में नौकरी की. वे खण्डवा में छः मास तक बतौर अध्यापक भी नियुक्त हुए थे. उन्होंने दो वर्ष जबलपुर में स्पेस ट्रेनिंग कॉलिज में शिक्षण कार्य का अध्ययन किया.* 1943 *से हरिशंकर जी वही मॉडल हाई स्कूल में अध्यापक हो गये. किंतु वर्ष* 1952 *में हरिशंकर परसाई को यह सरकारी नौकरी छोड़ दी. उन्होंने वर्ष* 1953 *से* 1957 *तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की.* 1957 *में उन्होंने नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरुआत की. अपनी हास्य व्यंग्य रचनाओं से सभी के मन को भा लेने वाले हरिशंकर परसाई का निधन १० अगस्त १९९५ को जबलपुर, मध्यप्रदेश में हुआ.*

9.3.2 *कृतित्व परिचय*

- ***रचनाएँ***

- *कहानी संग्रह – 'हँसते है रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'भोलाराम का जीव'.*
- *उपन्यास – 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल'*
- *संस्मरण – 'तिरछी रेखाएँ'*
- *निबंध संग्रह – 'पगडंडियों का जमाना', 'जैसे उनके दिन फिरे,' 'सदाचार का ताबीज,' 'शिकायत मुझे भी है,' ''ठिठुरता हुआ गणतंत्र',' 'अपनी-अपनी बीमारी,' 'वैष्णव की फिसलन', 'विकलांग श्रद्धा का दौर,' 'भूत के पाँव पीछे', 'बेइमानी की*

परत', 'सुनो भाई साधो,' 'तुलसीदास चंदन घिसे', 'कहत कबीर', 'हँसते हैं रोते हैं', 'तब की बात और थी', 'ऐसा भी सोचा जाता है', 'पाखण्ड का अध्यात्म', 'आवारा भीड के खतरे', 'प्रेमचंद के फटे जूते'

- ***सम्मान***
  - *विकलांग श्रद्धा का दौर के लिए* 1982 *में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया .*
- ***हरिशंकर परसाई पर केन्द्रित साहित्य***
  - *'आँखन देखी' – संपादक कमला प्रसाद*
  - *'देश के इस दौर में' – विश्वनाथ त्रिपाठी*
  - *'सुनो भाई साधो' – हरिशंकर परसाई*
- ***बोध प्रश्न***

सही विकल्प का चयन कीजिए

1. *किस प्रकार की विधा में हरिशंकर परसाई ने अपनी लेखनी चलायी है?*

   (अ) हास्य लेखन *(ब) करुण लेखन*

   (क) भक्तिलेखन *(ड) व्यंग्य लेखन*

2. *कौन-सी पुस्तक हरिशंकर परसाई ने नहीं लिखी?*

   (अ) शुद्ध कविता की खोज *(ब) बेइमानी की परत*

   (क) पगडंडियों का जमाना *(ड) सदाचार का ताबीज*

3. *हरिशंकर परसाई ने एम.ए. कहाँ से पास किया था?*

   (अ) पटना विश्वविद्यालय *(ब) बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय*

   (क) दिल्ली विश्वविद्यालय *(ड) नागपुर विश्वविद्यालय*

4. *'स्वतंत्रता दिवस भीगता है, गणतंत्र दिवस ठिठुरता है'- यह उक्ति किस पाठ से ली गयी?*

   (अ) 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' *(ब) मंगर*

   (क) गौरा *(ड) पंच परमेश्वर*

9.4 *हरिशंकर परसाई जी का हिन्दी व्यंग्य लेखन में योगदान*

इस उपइकाई में हम हरिशंकर प रसाई जी का हिन्दी साहित्य में व्यंग्य लेखन में योगदान को जान पाएंगे...

हरिशंकर परसाई जी हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा, उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करती बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती है, जिनसे किसी भी और राजनैतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को उन्होंने

बहुत ही निकटता से पकड़ा है. उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है. उनकी भाषा शैली में खास किस्म का पनापन महसूस होता है कि जैसे लेखक सामने ही बैठे हैं. 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' रचना हरिशंकर परसाई की एक सशक्त व्यंग्य रचना है. हरिशंकर परसाई की भाषा भी व्यंग्य प्रधान है.

परसाई की रचनाएँ आजाद भारत का सृजनात्मक इतिहास कही जा सकती है. इन रचनाओं का वर्तमान भारत की यथार्थ स्थितियों के संदर्भ में ही आकलन किया जा सकता है. स्वतंत्र भारत के सकारात्मक–नकारात्मक सभी पहलुओं की परसाई ने बखूबी पड़ताल की है. निजी अनुभूतियों की निर्वैयक्तिक अभिव्यक्ति उनके व्यंग्य लेखन की विशिष्टता है. परसाई की सृजनशील दृष्टि निम्नवर्गीय सामान्य आदमी से प्रारम्भ होकर बहुराष्ट्रीय समस्याओं तक को अपने भीतर समेटती है. परसाई व्यंग्य के माध्यम से सृजन और संहार दोनों एक साथ करते हैं. परसाई का व्यंग्य जब शोषक वर्ग के प्रति होता है तो वह उस वर्ग के प्रति घृणा और आक्रोश उत्पन्न करता है लेकिन जब वही व्यंग्य अभावग्रस्त व्यक्ति पर होता है तो करुणा पैदा करता है. व्यंग्य के विषय में स्वयं परसाई जी कहा करते थे– 'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों का पर्दाफाश करता है.' हरिशंकर परसाई कि व्यंग्य रचनाओं में 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'सदाचार का तावीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'विकलांग राजनीति', 'मध्यमवर्गीय कुत्ता', 'असहमत', 'चूहा और मैं', 'डिवाईन ल्यूनेटिक मिशन', 'प्रथम स्मगलर', 'खेती', 'अश्लील पुस्तकें', 'आवारा भीड़ के खतरे', 'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है.', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' , 'हरिशंकर परसाई– दो खुले खत' आदि व्यंग्य रचनाएँ लिखकर व्यंग्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो हिंदी साहित्य में सदैव अविस्मरणीय रहेगा.

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर

1. *'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' किस विधा की रचना है?*
2. *हरिशंकर परसाई का जन्म कब और कहाँ हुआ था?*
3. *'रानी नागफनी की कहानी' किसकी रचना है?*
4. *व्यंग्य के विषय में स्वयं परसाई जी क्या कहा करते थे?*
5. *व्यंग्य अभावग्रस्त व्यक्ति पर होता है तो क्या पैदा करता है?*

9.5 *'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' निबंध का परिचय*

इस उपइकाई में हम हरिशंकर परसाई जी के निबंध 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' का जानकारी प्राप्त करेंगे.....

चार बार मैं गणतंत्र-दिवस का जलसा दिल्ली से देख चुका हूँ. पाँचवी बार देखने का साहस नहीं. आखिर यह क्या बात है कि हर बार जब मैं गणतंत्र-समारोह देखता, तब मौसम बड़ा क्रूर रहता. छब्बीस जनवरी के पहले ऊपर बर्फ पड़ जाती है. शीत-लहर आती है, बादल छा जाते हैं, बूँदाबूँदी होती है और सूर्य छिप जाता है. जैसे दिल्ली की अपनी कोई अर्थनीति नहीं है, वैसे ही अपना मौसम भी नहीं है. अर्थनीति जैसे-डॉलर, पौण्ड, रूपया, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष या भारत सहायता क्लब से तय होती है, वैसे ही दिल्ली का मौसम कश्मीर, सिक्किम, राजस्थान आदि तय करते हैं. इतना बेवकूफ भी नहीं कि मान लूँ, जिस साल मैं समारोह देखता हूँ, उसी साल सा मौसम रहता है. हर साल देखने वाले बताते है कि हर गणतंत्र दिवस पर मौसम ऐसा ही धूपहीन ठिठुरनवाला होता है. आखिर बात क्या है? रहस्य क्या है? जब कांग्रेस टूटी नहीं थी, तब मैंने एक कांग्रेस मंत्री से पूछा था कि यह क्या बात है कि हर गणतंत्र-दिवस को सूर्य छिपा रहता है? सूर्य की किरणों के तले हम उत्सव क्यों नहीं मना सकते? उन्होंने कहा-जरा धीरज रखिए? हम कोशिश में हैं कि सूर्य बाहर आ जाए. पर इतने बड़े सूर्य को बाहर निकालना आसान नहीं है. बल लगेगा. हमें सत्ता के कम से कम सौ वर्ष तो दीजिए. दिए, सूर्य को बाहर निकालने के सौ वर्ष दिए, मगर हर साल उसका छोटा-मोटा कोना तो निकलना चाहिए. सूर्य कोई बच्चा तो नहीं है जो अंतरीक्ष की कोख में अटका है, जिसे आप आपरेशन करके एक दिन में निकाल देंगे. इधर जब कांग्रेस के दो हिस्से हो गए तब मैंने एक इंडिकेटी कांग्रेस से पूछा. उसने कहा हम हर बार सूर्य को बादलों से बाहर निकालने की कोशिश करते हैं, पर हर बार सिंडीकेट वाले अड़ंगा डाल देते थे. अब हम वादा करते हैं कि अगले गणतंत्र दिवस पर सूर्य को निकालकर दिखाएँगे. एक सिंडिकेट पास खड़ा होकर सुन रहा था. वह बोल पड़ा यह लेडी (प्रधानमंत्री) कम्युनिस्टों के चक्कर में आ गई है. वही उसे उकसा रहे हैं कि सूर्य को निकालो. उन्हें उम्मीद है कि बादलों के पीछे से उनका प्यारा लाल सूरज निकलेगा. हम कहते हैं कि सूर्य को निकालने की क्या जरूरत है? क्या बादलों को हटाने से काम नहीं चल सकता? मैं संसो पाई भाई से पूछता हूँ. वह कहता है — सूर्य गैर-कांग्रेसवाद पर अमल कर रहा है. उसने डाक्टर लोहिया के कहने पर हमारी पार्टी-फार्म दिया था. कांग्रेसी प्रधानमंत्री को सलामी लेते वह कैसे देख सकता है? किसी गैर-कांग्रेसी को प्रधानमंत्री बना दो, तो सूर्य क्या, उसके अच्छे भी निकल पड़ेंगे. जनसंघी भाई से पूछा. उसने कहा सूर्य-सेक्युलर होता तो इस सरकार की परेड में निकल आता. इस सरकार से आशा मत करो कि भगवान अंशुवली को निकाल सकेगी. हमारे राज्य में ही सूर्य निकलेगा. साम्यवादी ने मुझसे साफ कहा-यह सब सी.आई.ए. का षडयंत्र है. सातवें बेड़े से बादल दिल्ली भेजे जाते हैं. स्वतंत्र पार्टी के नेता ने कहा-रूस का पिछलग्गू बनने का और क्या नतीजा होगा? प्रसोपा भाई ने कहा-सवाल पेचीदा है. नेशनल कौंशिल की अगली बैठक में इसका फैसला होगा तब बताऊँगा. राजाजी से मिल न सका. मिलता तो वह इसके सिवा क्या कहते कि इस राज में तारे निकलते हैं, यही गनीमत है. मैं इंतजार करूँगा. जब भी सूर्य निकलें. स्वतंत्रता-दिवस भी तो भरी बरसात

में होता है. अंग्रेज बहुत चालाक है. भरी बरसात में स्वतंत्र करके चले गए. उस कपटी प्रेमी की तरह भागे, जो प्रेमिका का छाता भी ले जाए. वह बेचारी भीगती से स्टैण्ड जाती है, तो उसे प्रेमी की नहीं छाता चोर की याद आती है. स्वतंत्रता-दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है. मैं ओवरकोट में हाथ डाले परेड देखता हूँ. प्रधानमंत्री किसी विदेशी मेहमान के साथ खुली गाड़ी में निकलती है. रेडियो टिप्पणीकार कहता है — घोर करतल ध्वनि हो रही है. हम सब तो कोट में हाथ डाले बैठे हैं. बाहर निकालने का जी नहीं हो रहा है. हाथ अकड़ जाएँगे. लेकिन हम नहीं बजा रहे हैं, फिर भी तालियाँ बज रही है. मैदान पर जमीन पर बैठे वे लोग बजा रहे हैं, जिनके पास हाथ गरमाने के लिए कोट नहीं है. लगता है, गणतंत्र ठिठुरते हुए हाथों की तालियों पर टिका है. गणतंत्र को उन्हीं हाथों की ताली मिलती है, जिनके मालिक के पास हाथ छिपाने के लिए गर्म कपड़ा नहीं है. पर कुछ लोग कहते है कि गरीबी मिटनी चाहिए. तभी दूसरे कहते हैं — ऐसा कहने वाले प्रजातंत्र के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं. गणतंत्र समारोह में हर राज्य की झांकी निकलती है. यह अपने राज्य का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती है. सत्यमेव जयते हमारा मोटो है पर झाड़ियाँ झूठ बोलती है. इनमें विकास कार्य, जनजीवन इतिहास आदि रहते हैं. असल में हर राज्य को उस विशिष्ट बात को यहाँ प्रदर्शित करना चाहिए जिसके कारण पिछले साल वह राज्य मशहूर हुआ. गुजरात की झाँकी में इस साल दंगे का दृश्य होना चाहिए, जलता हुआ घर, और आग में झोंके जाते बच्चे. पिछले साल मैंने उम्मीद की थी आंध्र की झाँकी में हरिजन जलते हुए दिखाए जाएँगे. मगर ऐसा नहीं दिखा. यह कितना बड़ा झूठ है कि कोई राज्य दंगे के कारण अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पाए, लेकिन झाँकी सजाए लघु उद्योगों की. दंगे से अच्छा गृह उद्योग तो इस देश में दूसरा नहीं है. मेरे मध्यप्रदेश ने दो साल पहले सत्य के नजदीक पहुँचने की कोशिश की थी. झाँकी में अकाल-राहत कार्य दर्शाए गए थे. पर सत्य अकेला रह गया था. मध्यप्रदेश में उस साल राहत कार्यों के कारण नहीं, राहत कार्य में घपले के कारण मशहूर हुआ था. मेरा सुझाव माना जाता तो मैं झाँकी में झूठे मास्टर रोल भरते दिखाता नेता, अफसर, ठेकेदारों के बीच लेन-देन का दृश्य दिखाता. उस झाँकी में वो बात नहीं आई. पिछले साल स्कूलों के टाट-पट्टी कांड से हमारा राज्य मशहूर हुआ. मैं पिछले साल की झाँकी में यह दृश्य दिखाता-मंत्री, अफसर वगैर खड़े हैं और टाट पट्टी खा रहे हैं. जो हाल झाँकियों का है वही हाल घोषणाओं का. हर साल घोषणा की जाती है कि समाजवाद आ रहा है पर अभी तक नहीं आया. कहाँ अटक गया? लगभग सभी दल समाजवाद लाने का दावा करते हैं, लेकिन वह नहीं आ रहा. मैं एक सपना देखता हूँ. समाजवाद आ गया. वह बस्ती के बाहर टीले पर बड़ा है. बस्ती के लोग आरती सजाकर उसका स्वागत करने के लिए खड़े हैं. पर टीले को घेरे खड़े हैं, उन सभी लोगों को मैं कहकर आया कि समाजवाद मैं ही लाऊँगा. समाजवाद टीले से चिल्लाता है-मुझे बस्ती में ले चल. मगर टीले को घेरे समाजवादी लोग कहते हैं कि पहले यह तय होगा कि कौन तेरा हाथ पकड़कर ले जाएगा. समाजवाद की घेराबंदी है. संसोण-प्रसोपावाले जनतांत्रिक समाजवादी है, पीपुल्स डेमोक्रेसी और नेशनल

डेमोक्रेसी वाले समाजवादी हैं. क्रांतिकारी समाजवादी हैं. हरेक समाजवाद का हाथ पकड़कर उसे बस्ती में ले जाकर लोगों से कहना चाहता है — लो मैं समाजवाद ले आया. समाजवाद परेशान है. समाजवाद आने को तैयार खड़ा है, मगर समाजवादियों में आपस में घोल-घप्पा हो रहा है. पत्थर पड़ने लगते हैं. खबरदार उधर से मत जाना. एक समाजवादी उसका एक हाथ पकड़ता है, तो दूसरा हाथ पकड़कर खींचता है. तब बाकी समाजवादी छीना-छपटी करके हाथ छुड़ा देते हैं. लहू-लुहान समाजवाद टीले पर खड़ा है. इस देश में जो जिसके लिए प्रतिबद्ध है, वही उसे नष्ट कर रहा है. सहकारिता के लिए प्रतिबद्ध इस आंदोलन के लोग ही सहकारिता को नष्ट कर रहे हैं. सहकारिता तो एक स्पिरिट है सब मिलकर सहकारितापूर्वक खाने लगते हैं और आंदोलन को नष्ट कर देते हैं. समाजवाद को समाजवादी ही रोके हुए हैं. यह तो प्रधानमंत्री ने घोषणा कर दी है कि अब समाजवाद आ ही रहा है. मैं एक कल्पना कर रहा हूँ. दिल्ली में फरमान जारी हो जाएगा-समाजवाद सारे देश के सैर पर निकल रहा है. उसे सब जगह पहुँचाया जाए. उसके स्वागत और सुरक्षा का पूरा बंदोबस्त किया जाए. एक सचिव दूसरे सचिव से कहेगा-लो ये एक ओर बी.आई.पी. आ रहे हैं. अब इनका इंतजाम करो. नाक में दम है. कलेक्टरों को हुक्म चला जाएगा. कलेक्टर एस.डी.ओ. को लिखेगा. एस.डी.ओ. तहसीलदार को. पुलिस-दफ्तरों में फरमान पहुँचेंगे, समाजवाद की सुरक्षा की तैयारी करो.

पूरा फोर्स दंगे से निपटने में लगा है. मुख्य सचिव दिल्ली लिख देगा — हम समाजवाद की सुरक्षा करने में असमर्थ है. उसका आना अभी मुलत्वी किया जाए. जिस शासन व्यवस्था में समाजवाद के आगमन के कागज दब जाएँ और जो उसकी सुरक्षा की व्यवस्था न करे, उसके भरोसे समाजवाद लाना है तो ले आओ. मुझे खास ऐतराज भी नहीं है. जनता के द्वारा न आकर अगर समाजवाद दफ्तरों के द्वारा आ गया तो एक ऐतिहासिक घटना हो जाएगी.

- ***बोध प्रश्न***

सही जोड़े मिलाइए

1. *निराला*	*कहत कबीर*
2. *श्रीलाल शुक्ल*	*कुकुरमुत्ता*
3. *हरिशंकर परसाई*	*नारद की चिंता*
4. *सुशील सिद्धार्थ राग*	*दरबारी*

9.6 *'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' की अन्तर्वस्तु*

इस उपइकाई में हम हरिशंकर परसाई के निबंध 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' की अन्तर्वस्तु की जानकारी प्राप्त करेंगे....

'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' में परसाई हँसाने की हड़बड़ी नहीं करते. वो पढ़नेवाले को देवता नहीं मानते, न ग्राहक को वो सिर्फ उन्हें एक नागरिक मानते हैं, वह भी उस देश का जिसका स्वतंत्रता दिवस बारिश के मौसम में आता है और गणतंत्र दिवस कड़ाके की ठंड में. परसाई की निगाह से यह बात नहीं बच सकी तो सिर्फ इसलिए कि ये दोनों पर्व उनके लिए सिर्फ उत्सव नहीं सोचने विचारने के दिन भी है. वे नहीं चाहते हैं कि इन दिनों को सिर्फ थोथी राष्ट्रश्लाघा में व्यर्थ कर दिया जाए, जैसा कि आम तौर पर होता है. गणतंत्र दिवस का समारोह देखने परसाई राजपथ से निकलने वाली झांकियों पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूकते वो कहते हैं कि ये झांकिया अपने से झूठ बोलती है. इनमें विकास कार्य, जनजीवन इतिहास रहते हैं. असल में इन झांकियों में राज्य की वो घटनाएँ प्रदर्शित होनी चाहिए जिस वजह से वह चर्चा में रहा. गुजरात की झाँकी में दस साल दंगे का दृश्य होना चाहिए, जलता हुआ घर और घर में झोंके जाते बच्चे. पिछले साल मैंने उम्मीद की थी कि आंध्र की झांकी में हरिजन जलाते हुए दिखाए जाएँगे. मगर ऐसा नहीं दिखा. यह कितना बड़ा झूठ है, कि कोई राज्य दंगे के कारण अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पाए लेकिन झांकी सजाए लघु उद्योगों की दंगों से अच्छा गृह उद्योग तो इस देश में दूसरा है नहीं. परसाई का 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर व्यंग्य करता है. परसाई कहते हैं जैसे दिल्ली की अपनी अर्थनीति नहीं है, वैसे ही अपना मौसम भी नहीं है. अर्थनीति जैसे डॉलर, पौंड, रूपया, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष या भारत सहायता क्लब से तय होती है, वैसे ही दिल्ली का मौसम कश्मीर, सिक्कम, राजस्थान आदि तय करते हैं. स्वतंत्रता दिवस भी तो भरी बरसात में स्वतंत्र करके चले गए. उस कपटी प्रेमी की तरह भागे जो प्रेमिका का छाता भी ले जाए. 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' हरिशंकर परसाई के व्यंग्य का एक संकलन है जिसमें वो अपनी जानी मानी व्यंग्य शैली से खूब हँसाते हैं और हँसाते हँसाते गहरी बात कह जाते हैं.

'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' में हरिशंकर परसाई जी की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर एक व्यंग्य है. परसाई जी इस दावे पर व्यंग्य करते हैं कि देश के सभी राज्य हर क्षेत्र में तीव्र गति से विकास कर रहे हैं. गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश की राजधानी दिल्ली में हर राज्य की ओर से दिखाई जानेवाली झाँकिया अपने आप में एक बड़ा परिहास होती है. पिछले वर्ष राज्य अपने जिन काले कारनामे के लिए प्रसिद्ध हुए थे, राज्यों को उन्हीं की झाँकी दिखलानी चाहिए, लेकिन वे तो अपने विकास और श्रेष्ठता प्रदर्शित करनेवाली झाँकियाँ दिखलाते हैं. हरिशंकर परसाई जी लिखते हैं कि हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र समारोह के अवसर पर मौसम खराब रहता है. शीत लहर आती है. बादल छा जाते हैं. बूंदा-बाँदी वर्षा होती है और सूर्य छिपा रहता है. हर गणतंत्र दिवस पर मौसम ऐसा ही धूपहीन ठिठुरने वाला होता है. इस रहस्य की खोज करने पर हरिशंकर परसाई जी को उनके एक मित्र कांग्रेसी मंत्री ने बताया कि गणतंत्र दिवस को सूर्य की किरणों को मनाने की कोशिश हो रही है. इतने बड़े सूर्य को बाहर लाना या उसके सामने से बादलों को हटाना आसान नहीं है. हमें सत्ता में रहने के लिए कम-से-कम सौ वर्ष तो दीजिए. इस

पर हरिशंकर परसाई जी कहते हैं कि हाँ सौ वर्ष दिए मगर हर साल उसका कोई छोटा कोना निकलता तो दिखना चाहिए. परसाई जी कहते हैं कि कांग्रेस का दो भागों में विभाजन हो गया. सूर्य को गणतंत्र दिवस पर बाहर निकालने का दावा कुछ कमजोर होने लगा. जब फिर एक कांग्रेसी से पूछा गया तो उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हम हर बार सूर्य को बादलों से बाहर निकालने की कोशिश करते थे, पर हर बर सिंडिकेट वाले अडंगा डाल देते थे. अब हम वादा करते हैं कि अगले गणतंत्र दिवस पर सूर्य को निकाल कर दिखाएँगे. कांग्रेस नेता की यह बातें सुनकर एक सिंडीकेटी मित्र बोल पड़े ये लेडी प्रधानमंत्री कम्युनिस्टों के चक्कर में आ गई है वही उसे उकसा रहे हैं कि सूर्य को निकालें. उन्हें उम्मीद है कि बादलों के पीछे से उनका प्यारा लाल सूरज निकलेगा. वास्तव में सूर्य निकालने की क्या जरूरत है? क्या बादलों को हटाने से काम नहीं चल सकता है? इस बात को सुनते ही एक जनसंघी भाई जो अब भारतीय जनता पार्टी में है कहने लगे कि सूर्य गैर कांग्रेसवाद पर अमल कर रहा है. यदि सूर्य सेक्युलर होता है तो इस सरकार की परेड में निकल आता. इस सरकार से आशा मत करो केवल हमारे राज्य में ही सूर्य निकलेगा. इस प्रकार अनेक दृष्टिकोण से बातें आती रहीं एक साम्यवादी ने कहा, यह सब सी आई.ए. का षडयंत्र है. सातवें बेड़े से बादल दिल्ली भेजे जाते हैं.

यह भी कैसी आश्चर्य की बात है कि स्वतंत्रता दिवस पर भारी बरसात होती है. स्वतंत्रता दिवस गाता है और गणतंत्र दिवस ठुठुरता है. ठिठुरते गणतंत्र दिवस के अवसर पर ओवर कोट से हाथ बाहर निकालना बहुत कठिन होता है लेकिन रेडियो से प्रसारित समाचार में कहा जाता हैं कि करतल ध्वनि-अर्थहीन होती है. परन्तु भारत तो सत्यमेव जयते का प्रचारक है. यहाँ झूठ बोलना पाप है. इसी प्रकार राज्यों की झाँकियाँ भी विकास की झूठी प्रचार करती दिखाई देती हैं. भारत में केवल गणतंत्र दिवस ही ठिठुरन का शिकार नहीं है बल्कि समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष, सहकारिता इत्यादि भी ठिठुर कर रह गई है. यहाँ छीना-झपटी और अफसरशाही का राज है .

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *संत साहित्य में व्यंग्य का आरंभ .... से माना जाता है.*
2. *'होय मनुष्य क्यों ये हम गुलाम वे भूप' यह पंक्ति.......................... की है.*
3. *हरिशंकर परसाई जी के .... व्यंग्य रचना को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया.*
4. *'आँखन देखी' रचना .... पर केन्द्रित है.*
5. *'सुनो भाई साधो' .... की रचना है.*

सही विकल्प का चयन कीजिए

1. ***किस प्रकार की विधा में हरिशंकर परसाई ने अपनी लेखनी चलायी है?***

   (अ) हास्य लेखन *(ब) करुण लेखन*

   (क) भक्ति लेखन *(ड) व्यंग्य लेखन*

2. ***कौन-सी पुस्तक हरिशंकर परसाई ने नहीं लिखी ?***

   (अ) शुद्ध कविता की खोज *(ब) बेइमानी की परत*

   (क) पगडंडियों का जमाना *(ड) सदाचार का ताबीज*

3. ***हरिशंकर परसाई ने एम.ए. कहाँ से पास किया था ?***

   (अ) पटना विश्वविद्यालय *(ब) बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय*

   (क) दिल्ली विश्वविद्यालय *(ड) नागपुर विश्वविद्यालय*

4. ***'स्वतंत्रता दिवस भीगता है, गणतंत्र दिवस ठिठुरता है'- यह उक्ति किस पाठ से ली*** *गयी?*

   (अ) 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' *(ब) मंगर*

   (क) गौरा *(ड) पंच परमेश्वर*

9.7 *सारांश*

इकाई पढने के बाद सार रूप हम कह सकते है कि - प्रमुख विधाओं जैसे नाटक, निबंध, उपन्यास, आदि के साथ-साथ गौण विधाएँ आत्मकथा, डायरी, यात्रावृत्त, जीवनी, व्यंग्य आदि विधाएँ का विकास भी हिंदी के आधुनिक काल के भारतेंदु युग से हुआ था.

- *हिंदी में वैसे तो संत साहित्य से व्यंग्य का आरंभ माना जा सकता है. कबीर ने जाति-भेद, हिंदु मुसलमानों के धर्माडंबर आदि पर इनके व्यंग्य बड़े मारक हैं.*
- *व्यंग्य का जन्म अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर से उपजे असंतोष से होता है. विद्वानों में यह मतभेद लगातार बना रहा है कि व्यंग्य को एक अलग विधा माना जाए या वह किसी भी विधा के भीतर स्पिरिट के रूप में मौजूद रहे .*
- *हरिशंकर परसाई जी हिंदी के पहले रचनाकार है जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया.*
- *हल्के फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा*
- *उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करती बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती है, जिनसे किसी भी सच्चाइयों को निकटता से देखा जा सके.*

- *आधुनिक काल में भारतेंदु युग में व्यंग्य की शुरूआत हुई और कबीर के बाद भारतेंदु ने सामाजिक विषमताओं के प्रति व्यंग्य को हथियार बनाया.*
- *स्वतंत्रता पूर्व युग में युगीन समस्याओं पर व्यंग्य करने की प्रवृत्ति प्रेमचंद में भी बहुत मिलती है.*
- *प्रेमचंद के बाद निराला के साहित्य में व्यंग्य देखा जा सकता है. निराला की कुकुरमुत्ता आदि रचनाओं में व्यंग्य की अभिव्यक्ति विद्रूपता फैलाने वाले समाज के खिलाफ चुनौती के रूप में हुई है.*
- *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में व्यंग्य का पर्याप्त सृजन हुआ है. हरिशंकर परसाई जी इस परंपरा के प्रतिनिधि रचनाकार हैं.*
- *व्यंग्य के विषय में स्वयं परसाई जी कहते हैं – व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों का पर्दाफाश करता है.*
- *परसाई की व्यंग्य रचनाओं में विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार का तावीज, वैष्णव की फिसलन, आवारा भीड़ के खतरे, 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', आदि व्यंग्य रचनाएँ लिखकर व्यंग्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो हिंदी साहित्य में सदैव अविस्मरणीय रहेगा.*

9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये***

1. *हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए .*
2. *हरिशंकर परसाई के 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' शीर्षक निबंध को अपने शब्दों में समझाइए .*
3. *हिंदी साहित्य के व्यंग्य लेखन में हरिशंकर परसाई जी के योगदान की चर्चा कीजिए .*

- ***टिप्पणी लिखिए***

1. *व्यंग्य के क्षेत्र में हरिशंकर परसाई जी के योगदान*
2. *परसाई जी का कृतित्व*
3. *'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' की अंतर्वस्तु*
4. *'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' निबन्ध का परिचय*

9.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1 *हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी (विश्वविद्यालय प्रकाशन*–2015)

2 *हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र - डॉ. हरदयाल*

3 *प्रतिनिधि व्यंग्य – हरिशंकर परसाई*

4 https://rb.gy/sk29t

5 https://www.doubtnut.com/qa-hindi/526190547

इकाई 10 जीवनी : 'आवारा मसीहा' - विष्णु प्रभाकर

रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 जीवनी लेखक – विष्णु प्रभाकर

10.4 जीवनी : वस्तु एवं संवेदना

10.5 भाषा-शैली

10.6 'आवारा मसीहा' शीर्षक की सार्थकता

10.7 सारबिंदु

10.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

10.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

10.1 उद्देश्य

पिछली इकाईयों में हमने अलग अलग विधा की रचनाओं के बारे में जाना. इस इकाई में हम जीवनी विधा में विष्णु प्रभाकर की लिखी बंगाली साहित्यकार शरत्चन्द्र की जीवनी को पढ़ेंगे. इस इकाई को पढने के बाद आप –

- विष्णु प्रभाकर के बारे में जान पाएँगे.
- इस जीवनी की वस्तु सम्वेदना को जान सकेंगे.
- जीवनी की भाषा– शैली का विश्लेष्ण कर पाएँगे
- 'आवारा मसीहा' शीर्षक की सार्थकता को समझ पाएँगे.

10.2 प्रस्तावना

जीवनीलेखन के लेखक द्वारा किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को उजागर करने का कार्य करते है. जीवनीकार जिस व्यक्ति के जीवन का विस्तृत वर्णन करता है, उसे वह तब ही प्रभावी रूप दे सकता है जब वह उस व्यक्ति के जीवन के अंतर्विरोधो और मर्म को समझ सकता है. प्रस्तुत जीवनी में यही कार्य विष्णु प्रभाकरजीने किया है. उन्होंने बंगाली साहित्यकार शरत्चन्द्र के जीवन की पर्तों, अनेक घटनाओं को केवल बटोरा नहीं, जाँच–पड़ताल करके प्रमाणिक रूप से 'आवार मसीहा' में शब्दांकित किया है.

'आवारा मसीहा' श्री शरत्चन्द्र के जीवन का चरित है जिनके विषय में अनेक लोगों ने अनेक प्रकार की बातें और मत रखे हैं.किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए की जब

विष्णु प्रभाकर जी ने यह जीवनी लिखी थी, तब बंगला साहित्य में भी शरत्चन्द्र जी की कोई प्रमाणिक जीवनी उपलब्ध नही थी. 14 वर्षो के अथाह प्रयत्नों के बाद लिखी गई इस जीवनी को कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया है.

10.3 *जीवनी लेखक - विष्णु प्रभाकर*

विष्णु प्रभाकर (जन्म: 21 *जून,* 1912 *- मृत्यु:* 11 *अप्रैल,* 2009*) अपने साहित्य में भारतीय वाग्मिता और अस्मिता को व्यंजित करने के लिये प्रसिद्ध रहे हैं. विष्णु प्रभाकर जी ने कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, निबंध, एकांकी, यात्रा वृत्तांत और कविता आदि प्रमुख विधाओं में अपनी बहुमूल्य रचनाएँ की हैं. प्रभाकर जी ने आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रकाशन संबंधी मीडिया के प्रत्येक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की थी. देश-विदेश की अनेक यात्राएँ करने वाले विष्णुजी जीवन पर्यन्त पूर्णकालिक मसिजीवी रचनाकार के रूप में साहित्य साधना में लीन रहे थे.*

'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित प्रसिद्ध बांग्ला लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है. शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की गणना भारत के ऐसे उपन्याकारों में की जाती है जो सच्चे अर्थों में देशभर में अत्यन्त लोकप्रिय थे. उनकी प्राय: सभी रचनाओं का अनुवाद भारत की सभी भाषाओं में हुआ और वे खूब चाव से बार बार पढ़ी गयी, आज भी पढ़ी जाती है. परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि एकाध को छोड़कर उनकी कोई भी संतोषजनक जीवनी बांग्ला में भी उपलब्ध नहीं है. इस कार्य को पूरा करने का बीड़ा अनेक वर्ष पूर्व श्री विष्णु प्रभाकर ने उठाया था. वे स्वयं प्रथम श्रेणी के कथाकार थे और शरतचंद्र में गहरी आस्था रखते थे, उन्होंने यात्रा पत्र-व्यवहार, भेंटवार्ता आदि समस्त उपायों और साधनों से इस कार्य को पूर्ण किया, जो कि इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है. यह जीवन चरित्र केवल बहुत विस्तार से उन पर प्रकाश डालता है अपितु उनके जीवन के कई अज्ञात पहलुओं को भी उजागर करता है.

'आवारा मसीहा' का प्रथम संस्करण मार्च 1974 *में प्रकाशित हुआ था. इसके विषय में लेखक कहते हैं- ''सन्* 1959 *में मैंने अपनी यात्रा आरम्भ की थी और अब* 1973 *है.* 14 *वर्ष लगे मुझे 'आवारा मसीहा' लिखने में समय और धन दोनों मेरे लिए अर्थ रखते थे क्योंकि मैं मसिजीवी लेखक हूं. लेकिन ज्यू ज्यू आगे बढ़ता गया, मुझे अपने काम में रस आता गया, और आज मैं साधिकार कह सकता हूं कि मैंने जो कुछ किया है पूरी आस्था के साथ किया है और करने में पूरा आनन्द भी पाया है. यह आस्था और यह आनन्द, यही मेरा सही अर्थों में पारिश्रमिक है.''*

इस पुस्तक की सामग्री के तीन प्रमुख स्रोत रहे हैं - एक तो उन व्यक्तियों से साक्षात्कार जो किसी न किसी रूप में शरत बाबू से संबंधित रहे. दूसरे उनके समकालीन

मित्रों के लेख संस्मरण और तीसरे उनकी अपनी रचनाओं में इधर-उधर बिखरे हुए वे स्थल और प्रसंग जिनका उनके जीवन से सीधा सम्बन्ध रहा है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *'आवारा मसीहा'के रचनाकार .... है.*
2. *विष्णुजी जीवन पर्यन्त पूर्णकालिक .... रचनाकार के रूप में साहित्य साधना में लीन रहे थे.*
3. *'आवारा मसीहा' प्रसिद्ध बांग्ला लेखक .... की जीवनी है.*
4. *'आवारा मसीहा' का प्रथम संस्करण........... में प्रकाशित हुआ था.*
5. *'आवारा मसीहा' लिखने में................. का समय लगा.*
6. *'आवारा मसीहा' की सामग्री के प्रमुख........... स्रोत रहे हैं*

10.4 *जीवनी : वस्तु एवं संवेदना*

'आवारा मसीहा' विष्णुप्रभाकर द्वारा रचित बंगला साहित्य के उपन्यासकार श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है, जिसे लेखक ने तीन पर्वों में विभाजित किया है-

- *प्रथम पर्व 'दिशाहार',*
- *दूसरा पर्व 'दिशा की खोज'*
- *तृतीय पर्व 'दिशान्त'.*

1. *दिशाहारा- यह प्रथम पर्व है इसके अंतर्गत शरत् के बाल्यकाल का वर्णन है.*
2. *दिशा की खोज- इस दूसरे पर्व में शरत के लेखन विकास के प्रेरणा के स्रोत, रचनाओं की पृष्ठभूमि और पात्रों से समरसता, रंगून प्रवास आदि की चर्चा है.*
3. *दिशांत- इस तृतीय पर्व में शरत् के पुनः स्वदेश लौटने, प्रौढ़ लेखक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करने, देश के स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ने और देशसेवी के रूप में समर्पित होने और एक बार फिर जीवन के अंत समय तक लेखन कार्य में संलग्न होने का चित्रण है.*

'दिशाहारा' की शरुआत मामा सुरेन्द्र और छोटे शरत् की मित्रता से होती है. शरत् पिछले तिन वर्षो से मामा के घर अपनी माँ के साथ रह रहा है.क्योकि उनके पिता यायावर प्रकृति के होने के कारण कही पर टिक नही पाते थे. भागलपुर में छात्रवृत्ति क्लास में भर्ती करवा दिया जहा पर शरत् का पहली बार साहित्य से परिचय हुआ. छात्रवृत्ति की परीक्षा पास करने के बाद, जब वह अंग्रेजी स्कूल में भर्ती हुआ, तब भी उसकी प्रतिभा में ज़रा भी कमी नहीं हुई. गागुंली परिवार में पतंग उड़ाना वैसे ही वर्जित था जैसे शास्त्र में समुद्र - यात्रा. परन्तु शरत् था कि पतंग, उड़ाना, लट्टू घूमाना, गोली और गुल्ली-डंडा जैसे निषिद्ध खेल उसे बड़े प्रिय थे. नीले आकाश में नृत्य करती हुई उसकी पतंग को देखकर दल के दूसरे सदस्यों के हृदय नाच उठते.बाग से फल चुरा लाने

की कला में भी वह माहिर था. उसकी तीक्ष्ण बुद्धि के सामने मालिकों के सब उपाय व्यर्थ हो जाते. यदि कभी पकड़ा भी जाता तो वीरों की तरह दण्ड ग्रहण करता. कथाशिल्पी शरत्चन्द्र के सभी प्रसिद्ध पात्र देवदास, श्रीकान्त, दुर्दान्तिराम और सव्यसाची इस कला में निष्णात है. वह खिलाड़ी था, विद्रोही भी उसे कह सकते हैं, पर बदमाश वह किसी भी दृष्टि से नहीं था. भले ही तत्कालीन मापदण्ड के अनुसार उसे यह उपाधि मिली हो . पिता की तरह उसमें भी प्रचुर मात्रा में सौंदर्य-बोध था. पढ़ने के कमरे को खूब सजाकर रखता. चौकी और उस पर एक सुन्दर-सी टिपाई, एक बन्द डेस्क, और उसमें पुस्तकें, कापियाँ, कलम- दवात इत्यादि-इत्यादि. उसकी पुस्तकें झक-झक करती थीं. कापियां वह स्वयं करीने से काटकर ऐसे तैयार करता था कि देखते ही बनता था. शरत् स्वभाव से भी अपरिग्रही था. दिन-भर में वह जितनी गोलियां और लट्टू जीतता, संध्या को वह उन सबको छोटे बच्चों में बांट देता. देने में उसे मानो आनन्द आता था, लेकिन यह देने के अभिमान का आनन्द नहीं था, यह था भार-मुक्ति का आनन्द, नींद और आहार पर भी उसे अधिकर था. बचपन से ही वह स्वल्पाहारी था. बड़े होने पर कथाशिल्पी शरत्चन्द्र की 'बड़ी बहू' सबसे अधिक इसीलिए तो परेशान रहती थी.

शरत् का एक अन्य शौक था, नदी के किनारे मौन, एकांत में शांति से बैठना, कितनी ही बार उसने गंगा किनारे बैठकर यह सौगंध खाई होगी कि - मैं सूर्य, गंगा और हिमालय को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ- जीवनभर सौंदर्य की उपासना करूंगा, जीवनभर अन्याय के विरूद्ध लडूँगा, कोई छोटा काम नहीं करूंगा. एक दिन अध्यापक अघोरनाथ अधिकारी गंगा स्नान के लिए जा रहे थे. शरत् उनके कपड़े लेकर पीछे चल रहा था. तभी किसी स्त्री के रोने का स्वर सुनाई दिया. उनके पूछने पर कि कौन रोता है? शरत् ने कहा, मास्टर मोशाई, इस नारी का पति अंधा था, लोगों के घरों में काम-काज करके यह उसको खिलाती थी कल रात वह अंधा स्वामी मर गया. यह बहुत दु:खी है, दु:खी लोग बड़ों की तरह दिखाने के लिए जोर-जोर से नहीं रोते. उनका रोना दु:ख में विदीर्ण प्राणों का क्रन्दन होता है. वाकई में यह सचमुच का रोना है. छोटी सी आयु में ही रोने का इतना सूक्ष्म विश्लेषण सकुनकर मास्टर दंग रह गये. उन्होंने अपने मित्र से इसकी चर्चा की तो उनके मित्र ने कहा, जो रूदन के विविध रूपों को पहचानता है, वह साधारण बालक नहीं है. बड़ा हकर निश्चय ही मनस्तत्व के व्यापार में प्रसिद्ध होगा. उस पर प्रारंभ से ही बंकिमचंद्र और रवीन्द्रनाथ का प्रभाव था.

शरत् की माँ का निधन होने के बाद शरत् के जीवन में कोई मधुरता रही नही.पिता के यायावर स्वभाव के कारण उन्हें की स्थान बदलने पड़े.अभ्यास में भी व्यवधान हुआ, आवारगी भी बढ़ती गयी. उसमे आवारगी के साथ-साथ असाधारण स्मृति भी थी.जिसके कारण जीवन के कई अनुभव हुए.इसी अनुभवो के चलते दिशा की खोज में वो बर्मा चले गये. बर्मा के जहाज की चार दिन की यात्रा में मनुष्य के जीवन को निकट से देखने का अनुभव हुआ.शादी करना,दो साल में बीवी की प्लेग के कारण

मौत,बंगाल वापस आना,पांडुलिपियों का जलना आदि हादसों का उनके जीवन पर काफी समय तक गहरा प्रभाव रहा. इस दौरान उनकी कहानियाँ, उपन्यास आदि प्रकाशित होते रहे और उनकी रचनाएँ पुरे बंगाल में छा गयी. जैसे देवदास निष्कृति, श्रीकान्त प्रथम पर्व, एकादश वैरागी,चरित्रहिन, गृहदाह, स्वामी, श्रीकान्त द्वितीय पर्व आदि...आदि.

जिस समय वे लोकप्रियता के चरम पर थे तब उनके जीवन में एक अन्य क्रांति आई. देश के राजनीतिक स्तर पर परिस्थितियाँ बदली और शरत् भी उससे बच नहीं पाये. 'पाथेर दाबी' में उनके राजनीतिक विचार जोरशोर से उभरकर आये है.यह उपन्यास क्रांतिकारियों के लिए गीता के समान था.वे अधिकांश क्रांतिकारियों का समर्थन करते थे. शरत् की साहित्य सेवा को देखते हुए ढ़ाका विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की उपाधि से सम्मानित किया.

वृद्धावस्था में वे केन्सर से पीडित रहें फिरभी आत्मशक्ति कम न हुई. अंतिम समय में ऑपरेशन कराने के लिए उसके पास धन नहीं था. मित्रों की सहायता से एक नर्सिंग होम में दाखिल करवाया पर वे वहाँ टिक नहीं पाये. चोरी से तम्बाखू का सेवन करते रहे. क्रमशः कमजोर होते चले, आँखे भी नहीं खुलती थी फिरभी एक नर्स के आने पर उन्होंने कहा कि यह लंगडी है. पूछने पर बताया कि उसकी सेंडिल का आवाज.सम नहीं थी अतः पता चला. ऑपरेशन की स्थिति नहीं रही , अंततः 16 *जनवरी* 1938 *को वे अपना पार्थिव शरीर छोड़ गये. अपनी कलम और सेवा एवं विचक्षण बुद्धि के कारण विश्व में विख्यात हो गये.*

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *'आवारा मसीहा' जीवनी .... पर्वो में लिखी गयी है.*
2. *प्रथम पर्व के अंतर्गत शरत् के .... काल का वर्णन है.*
3. *स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ने का वर्णन .... पर्व में है.*
4. *........... शरत् का पहली बार साहित्य से परिचय हुआ.*
5. *.............विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की उपाधि से सम्मानित किया.*
6. *शरत् वृद्धावस्था में .... की चपेट में आ गये थे.*

10.5 *भाषाशैली*

- ***भाषा***

भाषा भावों की वाहिका होती है अर्थात् रचनाकार के मानसिक भावों को भाषा के माध्यम से पूर्णत प्राप्त होती है. किसी भी रचना की भाषा का रूप देखते समय हमें दो दृष्टियों से विचार करना पड़ता है. रचनाकार की अपनी भाषा और दूसरा उसके चरित्रों के द्वारा प्रयुक्त भाषा. दूसरे प्रकार की भाषा भी लेखक के गुण कौशल की परिचायक होती

है, फिरभी पात्रों की विभिन्न मनःस्थितियो के अनुकूल भाषा में भेद हो सकता है. किसीभी साहित्यिक रचना का महत्व उसके अन्य गुणों के साथ-साथ उसकी भाषआ-शैली के आधार पर आँका जा सकता है.

'आवार मसीहा' में जीवनी को पाठक के सम्मुख रखने में लोखक ने निम्न भाषा रूप को प्रयुक्तकिया है -

1. *साधारण बोलचाल की भाषा.*
2. *शुद्ध परिनिष्ठित खड़ी बोली.*
3. *चिन्तन प्रधान भाषा.*
4. *अलंकृत एवं काव्यात्मक भाषा.*

1. *साधारण बोलचाल की भाषा*

प्रभाकरजी ने अधिकांश स्थलों पर परिनिष्ठत भाषा प्रयोग किया है. अनेक स्थलों पर शरत् एवम उससे संबंधित पात्रों को सहज बोलचोल की भाषा का प्रयोग करते हुए पाते हैं. संवादों की भाषा में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है. उदा.-

''हँसकर शरत् ने उत्तर दिया, 'अच्छा पहले तुम्हीं बताओ तो यह क्या है?'' 'और क्या होगै, तस्वीर.'

'यह क्या बात हुई. तस्वीर छोड़कर वहाँ क्या हो सकता है? तुम्हारी कल्पना शक्ति की बात तो तब है जब यह बता सको कि किसकी तस्वीर है?'

'यदि मैं कहूँ कि नारदमुनि की है तो?'
'वही तो है देख!'

'यह कहते-कहते शरत् ने चित्र पर से पर्दा हटा दिया. मैं तो अवाक रह गया. सचमूच उस बूढ़े का चित्र था. गाँव के तालाब के पास अस्त-व्यस्त वृक्ष समूह उसके बीच टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता, उस रास्ते की छाया में बैठा हुआ वृद्ध बिलकुल नारद मुनि जैसा. सरकार उस चित्र को देख ही रहे थे कि वह बूढ़ा आ पहुँचा. सीढ़ी पर पैर रखते ही उसने पुकारा, 'देवता घर पर है क्या?'

शरत् ने कहा, ''देखो नारद, तुम्हे एक काम करना होगा. बहुत कठिन नहीं. रोज सवेरे मेरे घर आकर बैठना होगा. चाय आदि लेते हुए, यह चित्र बनाते हुए देखना होगा.' चाय की बात सुनकर वृद्ध नारदमुनि के मुँह में पानी भर आया.''

2. *शुद्ध परिनिष्ठित खड़ी बोली*

इस प्रकार की भाषा जीवनी के करीब सारे पात्र बोलते हैं. मुलतः शरत् के पत्र बंगालीभाषा में लिखे गये थे. रवीन्द्रनाथ के भाषण भी बंगाली में दिये गये थे. अतः लेखक ने उन पात्रों, भाषणों का हिंदी में अनुवाद किया है. परंतु दोनों ही शिक्षित

साहित्यकार थे,उन्होंने बंगला में भी अधिकांशतः संस्कृत के शब्दावली का प्रयोग किया था. अनुवाद करते समय परिनिष्ठित हिंदी का प्रयोग होना स्वाभाविक है. उदा.-

''पंटु, कैसा दुर्भाग्यपूर्ण जीवन है मेरा. कैसे अर्थहीन, निष्फल,नारस, दिन,मास,वर्ष सिर पर से गुज़र जाते हैं. सोच नहीं सकता? भगवान ने जब बुद्धि दी थी थोड़ी सुबुद्धि भी दे सकते थे. नहीं दी तो इतना प्यार करना क्यों सिखाया? प्यार करने के लिए एक पात्र दे देते तो क्या उनके विशेव में मनुष्यों की कमी पड़ जाती? नहीं जानता यह उनका कैसा न्याय है?''

3. *चिन्तन प्रधान भाषा*

साहित्यकारों के जीवन में ऐसे अनेक क्षण आते हैं जब वे धर्म,राजनीति, प्रेम, व्यक्ति जीवन, पाप-पुण्य आदि के विषय में विचार करते हैं. 'आवारा मसीहा'में इन्हीं समस्याओं का जब भी विश्लेषण किया है तब से संवादों की भाषा चिन्तन प्रधान हो गयी है. शरत् एक स्वामिजी के सामने जीवन की समस्याओं को रखता है और वे उत्तर देते हैं. उदा.-

''शरत ने उस दिन स्वामिजी से पूछा, ''अच्छा स्वामिजी, आप ईश्वर को क्यों नहीं देख पाते?''

स्वामिजी बोले- ''ठाकुर ने कहा है, समुद्र में रत्न है यत्न करने की आवश्यकता है. संसार में ईश्वर है, साधना करनी चाहिए. काई से ढ़के तालाब के सामने खड़े होकर यदि जल लेना चाहो तो काई को हटाना पड़ेगा. इसी प्रकार माया से ढ़के नेत्र लेकर ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते. सबसे पहले माया से मुक्तहोना होगा.''

4. *माधुर्यगुण युक्तभाषा*

''संपूर्ण रचना को देखा जाए तो प्रसादता भाषा का सर्व प्रधान गुण है, भावुक स्थलों में वर्णन की भाषा माधुर्यपूर्ण हो गई है. उदा.- जैसे वह कहीं खो गया हो, कई क्षण इसी तरह आत्मविभोर बैठा रहा; फिर बोला, मनुष्य से किसी भी अवस्था में धृणा नहीं करनी चाहिए. जो व्यक्तिखराब दिखाई देते हैं उन्हें सुधारने की चेष्टा करनी चाहिए. यह बहुत बड़ा काम है. भगवान के इस राज्य में मनुष्य जितना शक्तिशाली है उतना दुर्बल भी है. किसी दिन सोमवार को यहाँ आकर देखो तो पाओगे कि मैं सच कह रहा हूँ. सिर का भूत जब भी उतर जाता है तो संसार का भान होता है.

5. *चित्रात्मकता*

कहीं-कहीं किसी पात्र का चरित्र अकन करते समय अथवा किसी स्थिति का वर्णन करते समय लेखक ऐसे शब्दचित्र उपस्थित करते है कि वह दृश्य आँखों के सामने साकार हो उठता है. उदा. - सुनकर शरत् बाबू और मामा लोग बड़े जोर से हँस पड़े. शरत् बरामदे में जा पहुँचे. सब वैष्णव-वैष्णवी श्याम सुदर राधिकारमण पुकारते हुए वहाँ

से भाग गये. तब शरत् बड़े आराम से शतरंजी के उपर बैठ गये और बोले, ''अच्छा हुआ यह विपत्ति टली.''

उदा.- शरत् फिर मौन हो गया, कई क्षण बाद बोला, ''गेरुवा वस्त्र बिना पहने क्या सन्यासी हुआ जा सकता है?''
स्वामिजी ने उत्तर दिया, ''धर्म का संबंध मन से है. गेरुवा न पहनने पर भी मुक्त हुआ जा सकता है. इसलिए पहले मन चाहिए, बाद में बाहर की सहायता. मन यदि अच्छा है तो बाहर का रंग-वस्त्र तुम्हारी सहायता करेंगे नहीं तो ढ़ोंग की सृष्टि ही होगी.''

6. *अलंकृत एवं काव्यात्मक भाषा*

जीवनी का संबंध साहित्यकार शरत् से अतः स्वाभाविक है कि भाषा अलंकृत और काव्यात्मक प्रयुक्त हुई है.इससे सम्बद्ध पात्र स्वाभाविक एवं यथार्थ दिखाई देते हैं. उदा.-
''लेकिन कहना जितना सरल था मोक्षदा का छोड़ना उतना ही कठिन था.बचपन से ही जो दूसरों के लिए प्राण संकट में डालता आया है, वह कैसे निरीह लड़की को छोड़ देगा, इसलिए एक दिन लौटकर शरत् ने मोक्षदा से कहा, आज मैंने तुम्हारे लिए एक वर ढूँढ़ लिया है.''

मोक्षदा शरत् की और देखती रह गई, फिर उसकी आँखें भर आई. बोली, ''इस तरह की बातें करते हुए आपको अच्छा लगता है?''

''शरत् ने कहा, ना-ना, परिहास नहीं कर रहा हूँ और तुम्हें बुरा भी नहीं मानना चाहिए. आखिर तुम्हें विवाह करना ही है, जो व्यक्ति मैंने तुम्हारे लिए ढूँढ़ा है वह तुम्हारा आदर करता है, तुम्हारे प्रति सहृदय भी है.''

कुल मिलाकर हम देख सकते हैं कि जीवनी की भाषा में सरलते, रोचकता, प्रवाहिता, प्रसंगानुकूलता,पात्रानुकूलता,वाक्य में संक्षिप्तता, चुस्तता,प्रभावात्मकता, सुघड़ता, कलात्मकता सुचारु रूप से गूंथा हुआ हैं. तद्भव, तत्सम्, देशज, अरबी, फारसी आदि शब्द भी सहज रुप से आ गये हैं.

- ***शैली***

प्रभाकरजी की भाषा शैली अत्यन्त उत्कृष्ट, सुघड़, कलात्मक और प्रवाहपूर्ण है. 61 वर्ष की आयु को समेटने के लिए 500 के लगभग पृष्ठों का प्रयोग हुआ है, परंतु कहीं भी भाषा शैली में बिखराव या शिथिलता नहीं आयी. विश्व प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार की जीवनी लेखन में उन्होंने अनेंक शैलियों का प्रयोग किया है, जिससे रचना में विविधता के साथ रोचकता बनी रही है. युग के अनुरूप, जीवन में अनुरूप भाषा रूपों की प्रयोग किया गया है. संक्षेप में कह सकते है कि एक क्षीणकाय व्यक्ति के महान् जीवन की महाकाय गाथा 'आवारा मसीहा' के रूप में प्रभाकरजी ने प्रदान की है.

'आवारा मसीहा' में वर्णन की विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया गया है, जिससे कथा रसात्मक एवं रोचक बन पड़ी है. जीवनी में आत्मकथ्यों को प्रस्तुत और प्रामाणिक करने के लिए,यह आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है. संवादों मं जहाँ भी कथा में पूर्व का संबंध होता है नाटकीयता लाने के लिए नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है.

शरत् के जीवन को सरलता से समज सके इसलिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है. शरत् की जीवनी लिखते समय प्रभाकरजी को उनके लिखे पत्रों का सहारा लेना पड़ा. पत्रों के द्वारा चरित नायक के जीवन को समझनेके लिए पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया.जीवनी को रसात्मक बनाने के लिए लेखक ने कथा के साथ काव्यात्मकता का सायुज्य बिठाया है. जीवनी को रसात्मक बनाने से जीवनी की गरिमा द्विगुणित हो गयी है. चित्रात्मक शैली का प्रयोग भी जीवनी में अनेक स्थानों पर हुआ है, लेखक अपने शब्दों से जीवनी में अनेक स्थानों पर ऐसे वर्णन करते है कि आँखों के सामने वह चित्र साकार हो उठता है.

- ***बोध प्रश्न***

एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *'आवारा मसीहा' में लेखक ने भाषा के कौनसे रूप को प्रयुक्तकिया है?*
2. *'आवारा मसीहा' कितने पृष्ठों में लिखी गयी है?*
3. *शरत के पत्रों को समजने के लिए लेखक ने कौनसी शैली का उपयोग किया है?*
4. *शरत के पत्र कौनसी भाषा में लिखे गये थे?*
5. *शरत किसके सामने अपने जीवन की समस्याओं को रखते है?*

10.6 *'आवारा मसीहा' शीर्षक की सार्थकता*

किसी भी साहित्य की कृति का शीर्षक उस कृति के बारे में बहुत कुछ बता देता है. शीर्षक यदि प्रभावशाली हो तो उसको पढ़ते ही हम पूरी कृति पढने के लिए तैयार हो जाते है. इसीलिए शीर्षक प्रभाव उत्पन्न करे ऐसा होना चाहिए. 'आवारा मसीहा' श्री विष्णु प्रभाकरजी द्वारा रचित बंगला साहित्य के अग्रगण्य कथाकार शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की प्रामाणिक जीवनी है. शरत् जीवनी का प्रधान चरित्र है। जीवनीकार ने प्रथम दो पर्वो में शरत् का आवारापन का चित्रण किया और ये आवारापन उनके बचपन की देन थी. शरत् के जीवन के अधिकांश हिस्सा ऐश्वर्यशाली पर्यटन में ही गुज़रा था, जिससे तृतीय पर्व में शरत का मसीहा रूप उभरकर आता है। इसीलिए तो लेखक ने उनकी जीवनी का नाम आवार मसीहा रखा है. यद्यपि वे आवारा रहे पर जहाँ उन्होंने दु:ख देखा वहाँ अपनी उपस्थिति से दु:ख एवं संकट दूर करने का प्रयास किया. इनके विषय में एक धारणा अवश्य रही कि शरत् एक नितांत स्वच्छन्द व्यक्तिथे. अत: उनका जीवन किसीके ले भी अनुकरणीय नहीं बन पाया. वे जीवनभर अफीम, शराब, वेश्या के संपर्क में रहे, परंतु उसकी दृष्टि प्रत्येक स्थान पर सौंदर्य को निहारती और पीती रही.न जाने कितना बार उसने

गंगा किनारे पवित्र एकान्त में बैठकर दूर से आती हुई बच्चों की शरारतभरी आवाज़ें सुनी, संभवतः वहीं उसने प्रतिज्ञा की होगी –''मैं सूर्य, गंगा,हिमालय को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि जीवनभर सौंदर्य की उपासना करूँगा.'' शायद इसी आवारापन का परिणाम है कि उनके अंतर का मसीहा जाग्रत हो गया. बचपन से ही उनके मन में अन्याय के विरुद्ध लड़ने तथा मानवता के प्रति सहानुभूति के भाव उदय हो गये थे.

एक बार वह अपने मास्टर के साथ कहीं जा रहा था,तभी किसी स्त्री का रूदन सुनकर मास्टर ठिठक गये. पूछने पर शरत् ने बताया, ''मास्टर मुशाई, इस नारी का स्वामी अंधा था, लोगों के घरों में काम–काज करके वह उसको खिलाती थी. कल रात वह अंधा स्वामी मर गया.वह बहुत दुःखी हुई. दुःखी व्यक्ति बड़े लोगों की तरह दिखाने के लिए जोर–जोर से नहीं रोते. उनका रोना दुःख से विदीर्ण प्राणों का क्रंदन होता है. मास्टर मुशाई, यह सचमुच का रोना है.''

ऐसी थी उनकी दृष्टि जो दुःखी व्यक्तियों के हृदय के भावों को समझ लेती थी. मानवता के प्रति अपार सहानुभूति की की भावना का ही परिणाम था कि जब रंगून में प्लेग फैला तो शरत् ने अपनी जान की चिंता किये बिना बीमारों की सहायता करता रहा.मृतकों का अंतिम संस्कार करता रहा.लेखक ने उनकी इस मसीहा प्रवृति का वर्णन किया है.

उपर्युक्त वविवेचन से हम कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर जी ने दिया शीर्षक 'आवारा मसीहा' सम्पूर्णतः योग्य सार्थक है.

- ***बोध प्रश्न***

एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *'आवारा मसीहा' का प्रमुख पात्र कौनसा है?*
2. *'आवारा मसीहा' में कितने पर्वो में शरत का आवारापन दिखाई देता है?*
3. *शरत का मसीहा रूप किस पर्व में उभरकर सामने आया?*
4. *रंगून में कौनसा रोग फैला था?*
5. *'आवारा मसीहा' का साहित्य प्रकार कौनसा है?*

10.7 *सारबिंदु*

उपर्युक्त विवेचन के बाद सार रूप कह सकते है कि 'आवारा मसीहा' श्री विष्णु प्रभाकर जी रचित बंगला के साहित्यकार शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है. जो तिन पर्वो में लिखी गयी है.

- *प्रथम पर्व ''दिशाहारा'' में शरत् के बाल्यकाल का वर्णन एवं संकलित घटनाएं हैं. इस काल में उनकी जीजीविषा ने उन्हें भटकाया है.*

- *द्वितीय पर्व ''दिशा की खोज'' उनका उपन्यास रचना में प्रवृत्त होना, आजीविका अर्जित करने के लिए देश-विदेश जाना, जीवन के अनुभवों को अर्जित करना बताया है.*
- *तीसरे पर्व ''दिशान्त'' में उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित होना,सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत होना, अंत में जीवनलीला समापत होने तक की घटनाएं वर्णित हैं, जिसमे उनका मसीहा रूप उभरकर सामने आया है.*
- *शरत् सुंदर नहीं था परंतु उनकी आँखे बहुत सुंदर और आकर्षक थी. पूरे दिन के परिश्रम के बाद जीत में जो मिलता था उसे बच्चो में बाँट देते थे, उसे देने में सुख मिलता था, अभिमान से उन्होंने कभी कुछ नहीं दिया.*
- *वे रवीन्द्रनाथ को अपना गुरू मानते थे.*
- *उनमें जूठ को सच बनाकर, प्रभावक रूप से कहने की अनोखी कला थी. उनमें सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करने की अद्भूत क्षमता थी, किसी भी चीज को गहराई से देखते थे.*
- *उनकी अधिकांश कहानियाँ यमुना, विख्यात पत्रिका में प्रकाशित होती रहती थीं. एक बार चरित्रहीन और नारी प्रबन्ध की पांडुलिपियाँ जलकर खाक हो गई, तब से उनमें हृदयाघात के लक्षण नज़र आने लगे थे.*
- *राजनीति में योग देना देशवासियों का कर्तव्य मानते थे. 'पाथेरदाबी' में उनके राजनीती संबंधी विचार व्यक्तहुए हैं. जिसको अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था.*
- *शरत् की साहित्य सेवा को देखते हुए ढ़ाका विश्वविद्यालय ने उन्हे डी.लिट् की उपाधि से म्मानित किया था. पुस्तकों से उन्हें काफी धन मिला फिर भी उनकी जेब सदा से खाली रही.*
- *वृद्धावस्था में उन्हें कैन्सर हुआ था फिरभी आत्मशक्ति तनिक भी कम नहीं हुई थी. ऑपरेशन करने के लिए पर्याप्त धन नहीं था, मित्रों की सहायता से अंग्रेजी नर्सिंगहोम में दाखिल कराया पर कायदे के हिसाब से वे वहाँ नहीं रह पाये.*
- 16 *जनवरी रविवार* 1938 *को वे अपना पार्थिव शरीर छोड़ गये, इस विश्व को यह बंगाली बाबू साहित्य की अमूल्य निधि देकर चले गए, ताकि आज भी लोगों के दिलो-दिमाग में छाये हुए है. सशक्तकलम के धनी को वंदन.*

10.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***विस्तृत रूप से उत्तर दीजिये***

1. *'आवारा मसीहा' जीवनी के मूलाधार कौन है, किनके आसपास जीवनी रची गई है, लेखक को जीवनी लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई?*
2. *'आवारा मसीहा' की कथावस्तु वस्तु बताते हुए, शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए.*
3. *'आवारा मसीहा' में जीवनी के तमाम तत्व मौजूद हैं - चर्चा कीजिए.*
4. *शरत् बाबू के जीवन की झाँकि उनकी जीवनी के आधार पर करवाईए.*

- ***टिप्पणी लिखिए***

1. *जीवनी लेखक विष्णु प्रभाकर*
2. *'आवारा मसीहा' जीवनी की वस्तु सम्वेदना*
3. *'आवारा मसीहा'की भाषा*
4. *'आवारा मसीहा' की शैली.*

10.9 *उपयोगी पाठ्य सामग्री*

1. *हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक – डॉ. नगेन्द्र*
2. *विष्णु प्रभाकर रचनावलियों के तमाम भाग.*
3. *'आवारा मसीहा' : एक विवेचन – लेखक डॉ.कृष्णदेव शर्मा*
4. *'आवारा मसीहा' : वस्तु और शिल्प – लेकख डॉ माया अग्रवाल.*
5. *वेब पेज ऑन गूगल – विष्णु प्रभाकर.*
6. *विकीपीडिया – विष्णु प्रभाकर.*
7. *गूगल से 'आवारा मसीहा' – नोट्स.*

इकाई 11 आत्मकथा – 'अपनी खबर' - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

रूपरेखा

11.1 ***उद्देश्य***

11.2 ***प्रस्तावना***

11.3 ***आत्मकथा का अर्थ स्वरूप एवं हिंदी में विकास***

11.4 ***लेखक परिचय***

  11.4.1 ***जीवन परिचय***

  11.4.2 ***कृतित्व परिचय***

11.5 ***आत्मकथा – 'अपनी खबर' का परिचय***

11.6 ***सार बिंदु***

11.7 ***परीक्षोपयोगी प्रश्नावली***

11.8 ***उपयोगी पाठ्यसामग्री***

11.1 *उद्देश्य*

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 11 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- *हिंदी साहित्य की विधा आत्मकथा का अर्थ एवं स्वरूप को जान सकेंगे.*
- *हिंदी साहित्य में आत्मकथा के विकास को जान सकेंगे.*
- *पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी का जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.*
- *'अपनी खबर' आत्मकथा की विषयवस्तु (कथावस्तु) को जान सकेंगे.*

11.2 *प्रस्तावना*

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की शुरुआत सन् 1850 से मानी जाती है. आधुनिक काल पिछली दो सदियों में विकास के अनेक पड़ावों से गुजरा है. जिसमें गद्य तथा पद्य में अलग अलग विचारधाराओं का विकास हुआ. जहाँ काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी इसी प्रकार गद्य में इसको भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, रामचंद शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग के नाम से जाना जाता है. आधुनिक युग के गद्य साहित्य में अनेक ऐसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ जो पहले या तो थी ही नहीं या फिर इतनी विकसित नहीं थी कि उनको साहित्य की एक अलग विधा का नाम दिया जा सके. धीरे-धीरे डायरी, यात्राविवरण, आत्मकथा, रूपक, रेडियोनाटक

पटकथा लेखन आदि के हिंदी साहित्य में विकास को देखकर उन्हें स्वतंत्र विधा का दर्जा, प्राप्त हुआ. आत्मकथा भी हिन्दी साहित्य की स्वतंत्र एवं विकसित गद्य विधा है. इसका विकास आधुनिक काल के भारतेंदु युग से हुआ है.

11.3 *आत्मकथा का अर्थ स्वरूप एवं हिंदी में विकास*

आत्मकथा लेखन में लेखक के द्वारा कही गयी बातों पर विश्वास करते हुए उसको सच माना जाता है क्योंकि उसके लिए लेखक स्वयं साक्षी एवं जिम्मेदार होता है. आत्मकथा लेखन आत्मकथाकार के जीवन के व्यक्तित्व उद्‌घाटन, ऐतिहासिक तत्वों की प्रामाणिकता तथा उद्देश्य के कारण महान होता है. आत्मकथा का उद्देश्य लेखक द्वारा स्वयं का आत्मनिर्माण करना, आत्मपरीक्षण करना तथा उसके साथ अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करना होता है. आत्मकथा लेखक इसके द्वारा आत्मांकन, आत्मपरिष्कार तथा आत्मोन्नति भी करना चाहता है. आत्मकथा के लिए अंग्रेजी में 'ऑटोबायोग्राफी' शब्द प्रचलित है. जबकि लेखक स्वयं के जीवन का क्रमिक ब्यौरा प्रस्तुत करता है तो उसे आत्मकथा कहा जाता है. आत्मकथा को परिभाषित करने से पहले इस शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ को जान लेना चाहिए. आत्म शब्द यह 'आत्मन' शब्द से उत्पन्न हुआ है. इसका अर्थ होता है 'स्वयं का'. आधुनिक हिन्दी शब्दकोश में आत्मकथा शब्द-स्त्रीलिंगी संज्ञा में लिया है. हरिवंशराय बच्चन कहते है – ''आत्मकथा, लेखन की वह विधा है, जिसमें लेखक ईमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने देश, काल, परिवेश से सामंजस्य अथवा संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है.'' साहित्य में आत्मकथा किसी लेखक द्वारा अपने ही जीवन का वर्णन करनेवाली कथा को कहते हैं. यह संस्मरण से मिलती-जुलती लेकिन भिन्न है. जहाँ संस्मरण में लेखक अपने आसपास के समाज, परिस्थितियों व अन्य घटनाओं के बारे में लिखता है वहाँ आत्मकथा में केन्द्र लेखक स्वयं होता है. डॉ. नगेन्द्र को आत्मकथा को इस प्रकार परिभाषित किया है – ''आत्मकथाकार अपने संबंध में किसी मिथक की रचना नहीं करता कोई स्वप्न सृष्टि हीं रचता, वरन् अपने गत जीवन के खट्टे-मीठे, उजाले, अँधेरे, प्रसन्न विषण्ण, साधारण-असाधारण संचरण पर मुड़कर एक दृष्टि डालता है. अतीत को पुनः कुछ क्षणों के लिए स्मृति में जी लेता है और अपने वर्तमान तथा अतीत के मध्य संबंध सूत्रों का अन्वेषण करता है.''

- ***हिंदी साहित्य में आत्मकथा***

भारतेंदु-युग हिंदी गद्य के बहुमुखी विकास का युग है. हिंदी की प्रथम आत्मकथा लिखने का श्रेय बनारसीदास जैन को दिया जाता है, जिन्होंने सन् 1641 *ई. में 'अर्द्ध कथानक' शीर्षक आत्मकथा लिखकर इस विधा का परिचय कराया. इससे कहा जाता है कि इस विधा का बीजारोपण* 17*वीं शताब्दी में ही हो गया था, परन्तु इस वास्तविक विकास आधुनिककाल में भारतेन्दु युग से हुआ है. भारतेन्दु जी स्वयं* 1910

ई. में 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक आत्मकथा लिखकर इस विधा का श्रीगणेश किया था. प्रतापनारायण मिश्र, सुधाकर द्विवेदी, दयानन्द सरस्वती, अत्यानन्द अग्निहोत्री, अम्बिकादत्त व्यास तथा स्वामी श्रद्धानन्द इस युग के प्रमुख आत्मकथाकार है. इसके बाद द्विवेदी युग में स्वयं महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'आत्मकथा' शीर्षक लिखकर इस विधा पर अपनी कलम चलाई तथा इसे विकसित रूप प्रदान किया. इसके पश्चात् परमानन्द द्वारा लिखित 'आपबीती' रामप्रसाद बिस्मिल की 'मैं क्रांतिकारी कैसे बना' आदि आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई. द्विवेदी युग के अन्य आत्मकथाकारों में इन्द्र विद्यावाचस्पति, भवानीदयाल सन्यासी आदि नाम विशेष महत्त्व के हैं.

द्विवेदी युग के पश्चात बाबू श्यामसुन्दर दास की 'मेरी आत्म कहानी' तथा प्रेमचंद द्वारा सम्पादित पत्रिका 'हंस' का आत्मकथा विशेषांक सन् 1932 *में प्रकाशित हुआ. इसी के पश्चात डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन, विनोदशंकर व्यास, वियोगी हरि, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', यशपाल वृंदावनलाल वर्मा, डॉ. नगेन्द्र, रामदरश मिश्र, भीष्म साहनी, बाबू गुलाबराय, सेठ गोविन्ददास, देवराज उपाध्याय, हरिभाऊ उपाध्याय, हरिवंशराय बच्चन आदि विद्वानों ने आत्मकथा की रचना करके इस विधा के विकास को तीव्र गति प्रदान की. छायावादोत्तर काल में जीवन साहित्य के समान इस युग में आत्मकथा लेखन की प्रवृत्ति भी पर्याप्त बलवती रही. साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखकर इस विधा को समृद्ध किया. आधुनिक काल के पहले तीन कालखंडों की तुलना ने इस कालखंड में साहित्यकारों की आत्मकथाएँ अधिक संख्या में प्रकाशित हुई. कवियों, कथाकारों, आलेचकों आदि सभी ने अपनी-अपनी आत्मकथाएँ लिखीं. हरिभाऊ उपाध्याय की आत्मकथा 'साधना के पथ पर' में लेखक ने सन्* 1892 *से* 1945 *तक के जीवनानुभवों को लिपिबद्ध किया है. राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा पाँच खंडों में 'मेरी जीवन यात्रा' शीर्षक से प्रकाशित हुई. स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की आत्मकथा 'स्वतंत्रता की खोज में निर्धन' तथा 'नेत्रहीन व्यक्तिकी कथा' है.* 1947 *के बाद आत्मकथा का विकास और अधिक हुआ. यशपाल की आत्मकथा 'सिंहावलोकन' का प्रकाशन लखनऊ से तीन खण्डों में हुआ है. छठे दशक के प्रारम्भ में ही पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' की आत्मकथा 'अपनी खबर' प्रकाशित हुई. 'अपनी खबर'में पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' ने मुक्तिबोध से आत्मीय और आकुल आवेग के साथ अपनी अजीब जिंदगी में आए कुछ प्रमुख व्यक्तियों के चरित्र की गहरी छानबीन की है. हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा अत्यन्त लोकप्रिय है. आत्मकथा का प्रथम खण्ड 'क्या भूलूं क्या याद करूँ'* 1969 *में प्रकाशित हुआ. मोहनदान नैमिशराय – 'अपने-अपने पिंजरे', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन', मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तुरी कुण्डल बसै', तुलसीराम की 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका', श्यौराज सिंह बेचैन की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' आत्मकथाएँ इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल है.*

- ***बोध प्रश्न***

1. *आधुनिक काल की शुरुआत........................ ई.स. से मानी जाती है.*
2. *आत्मकथा का विकास........................युग से माना जाता है.*
3. *'अर्द्धकथानक' आत्मकथा के लेखक................ है.*
4. *'अपनी खबर' यह........................ विधा की रचना है.*
5. *'मेरी जीवन यात्रा' आत्मकथा की रचना............ ने की है.*

11.4 *लेखक परिचय*

11.4.1 *जीवन परिचय*

पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' का जन्म सन् 1900 *में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के चुनार नामक कस्बे में हुआ था. इनके पिता की मौत इनकी बाल्यावस्था में ही हो गई थी. अतः इनकी पढ़ाई अधिक नहीं हो पाई. प्रारंभिक शिक्षा इन्होंने चुनार के चर्च मिशन स्कूल और वाराणसी के सेन्ट्रल हिन्दु स्कूल में प्राप्त की थी. छोटी उम्र में ही इन्होंने रामलीला मंडलियों के साथ देश के अनेक भागों की यात्रा की, जिससे जीवन की वास्तविक पाठशाला में ही उनको असली शिक्षा प्राप्त हुई. इस यात्रा में ही, इन्होंने जीवन को निकट से देखा-परखा और विविध अनुभव हासिल किए. पाण्डेय बेचन शर्मा स्वभाव से अलमस्त और मनमौजी थे. सन्* 1920 *से पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' आज दैनिक में लिखने लगे, जिससे इनके पत्रकार जीवन का प्रारम्भ हुआ. ये मुंबई के सिनेमा जगत् में भी काफी दिनों तक रहे. ये प्रेमचंद युग के सबसे बदनाम उपन्यासकार हुए. इन्होंने अपने उपन्यासों में समाज की बुराइयों को, उसकी नंगी सच्चाई को बिना लाग-लपट के बड़े साहस के साथ, किंतु सपाट बयानबाज़ी से प्रस्तुत किया. सन्* 1967 *दिल्ली में 'उग्र' जी का देहांत हुआ.*

11.4.2 *कृतित्व परिचय*

पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' जी ने अपनी रचनाओं में समाज के उस वर्ग को अपने साहित्य का विषय बनाया, जिसे दलित या पतित वर्ग कहते हैं और उसके दर्शाने में उन्होंने किसी प्रकार के शील या अभिजात का परिचय नहीं दिया. इन्होंने कलकत्ता के मारवाड़ी समाज को भी अपने साहित्य का विषय बनाया. 'उग्र' की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है –

उपन्यास – *'बुधुआ की बेटी', 'दिल्ली का दलाल', 'चंद हसीनों की खतूत' आदि पाण्डेय जी के प्रसिद्ध उपन्यास है.*

आत्मकथा – *'अपनी खबर'*

कहानी संग्रह – *'रेशमी', 'व्यक्तिगत', 'सनकी अमीर', 'चिनगारियाँ', 'पंजाब की महारानी', 'जब सारा आलम सोता है', 'दोजख की आग', 'उग्र का हास्य', 'निर्लज्जा', 'बलात्कार', 'चाकलेट', 'इन्द्रधनुष', 'कला का पुरस्कार' इत्यादि 'उग्र' के अनेक*

कहानी संग्रह समय-समय पर प्रकाशित हो चुके हैं. इनमें से अधिकांश अब उपलब्ध नहीं है.

पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' की कई रचनाएँ ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थी. स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कुछ रचनाएँ पुनः प्रकाशित भी हुई, लेकिन 'उग्र' का सम्पूर्ण कथा साहित्य एक साथ संकलित नहीं है. 'उग्र' जी के साहित्य और इसके साथ-साथ हिंदी कथा साहित्य के विकास को समझने के लिए उनकी सारी कहानियों का एक साथ प्रकाशन अनिवार्य रूप से आवश्यक है.

- ***बोध प्रश्न***

सही जोड़े मिलाइए

1. *चिनगारियाँ*	*(अ)आत्मकथा*
2. *दोजख की आँख*	*(ब)कहानी संग्रह*
3. *दिल्ली का दलाल*	*(क)कहानी संग्रह*
4. *अपनी खबर*	*(ड)उपन्यास*

- ***सही विकल्प का चयन कीजिए***

1. *पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का जन्म कब हुआ ?*

(अ) 1900 *(ब)* 1910

(क) 1920 *(ड)* 1925

2. *निम्न में से कौन-सी रचना पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' की नहीं है ?*

(अ) निर्लज्जा *(ब) अपनी खबर*

(क) बलात्कार *(ड) मेरी आत्मकहानी*

3. *'उग्र' जी ने अपनी आत्मकथा में अपने कितने गुरु बताए हैं ?*

(अ) एक *(ब) दो*

(क) पाँच *(ड) चार*

4. *'अपनी खबर'आत्मकथा प्रकाशन कब हुआ था ?*

(अ) 1955 *(ब)* 1960

(क) 1965 *(ड)* 1970

11.5 *आत्मकथा – 'अपनी खबर' का परिचय*

- ***परिचय***

'अपनी खबर' पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा हिंदी में लिखी गई एक आत्मकथा है. यह आत्मकथा नैतिकता के धरातल पर अपने उन्मुक्त अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती है. एक तरफ इस आत्मकथा पर अश्लील होने का आरोप लगा तो दूसरी और 'उग्र' की आत्माभिव्यक्ति को तुलसी और निराला के आत्मवेदना के समकक्ष भी रखकर पढ़ा गया. इस आत्मकथा में 'उग्र' ने अपने बचपन से लेकर प्रौढ़ावस्था तक की उन तमाम

गतिविधियों का अकुंठ और अनावृत्त वर्णन किया है जिसे समाज में वर्जित माना जाता है. इसमें पाठक को आत्मवेदना के साथ-साथ आत्म व्यंग्य का भी आभास मिलता है. इस आत्मकथा में बचपन के उनके विद्रोही स्वभाव के कारण ''उग्र'' उपनाम मिलने से लेकर रामलीला में देखी गई अनैतिकता, स्कूली दिनों के संघर्ष और सहपाठियों के सहयोग का वर्णन है. 'उग्र' ने अपनी आत्मकथा में अपने पाँच गुरु बताये हैं. पहले उनके उद्दंड भाई त्रिदंडी जिन्होंने तमाम बुराइयों के बावजूद उनके भीतर लिखने का शौक जगाया. दूसरे कमलपति त्रिपाठी के भाई काशीपति त्रिपाठी, जिनसे उन्होंने सहृदयता सीखी. तीसरे लक्ष्मी पत्रिका के संपादक व हिन्दी शब्दसागर के संपादक मंडल के सदस्य लाला भगवानदीन, जिनसे उन्हें दृष्टि मिली. चौथे, दैनिक आज के संपादक बाबूराव विष्णु पराडकर, जिन्होंने न सिर्फ उन्हें राह दिखायी बल्कि उनकी अनेक रचनाओं का संस्कार, परिष्कार व प्रकाशन किया और पाँचवें प्रभा के संपादक कृष्णदत्त पालीवाल जिनसे उन्हें उत्साह प्राप्त होता है. 'अपनी खबर' आत्मकथा का प्रकाशन 1960 में हुआ था.

- ***'अपनी खबर' कथावस्तु***

लेखन ने अपनी आत्मकथा को 17 अध्यायों में लिखा है. इन 17 अध्यायों में 'उग्र' जी ने अपने जीवन के इक्कीस वर्षों की कथा बताई है. इस आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने अपने तथा औरों के सही रूप को पहचानने की कोशिश की है. लेखक मनुष्य और मनुष्य के भीतर छिपे पशु को भी पहचानना चाहता है. आत्मकथा के प्रमुख अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं – 'धरती और धान', 'चुनार', 'नाना भागवतदास', 'राममनोहरदास', 'भानुप्रताप तिवारी', 'बच्चा महाराज', 'पं.जगन्नाथ पाँडे', 'लाला भगवान दीन', 'पं.बाबूराव विष्णु पराड़कर', 'बाबू शिवप्रसाद गुप्त', 'पं.कमलापति त्रिपाठी', 'बनारस और कलकत्ता', 'जीवन-संक्षेप', 'असंबल गाम'.

- ***'अपनी खबर'(प्रथम अध्याय)***

पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' जी अपने जीवन के आरंभिक बीस बरसों की घटनाओं से कसमसाती कहानी सुनाना चाहते हैं. उनके जीवन के साठ साल समाप्त हो गए थे. 'उग्र'जी का जन्म सन् 1957 में पौष शुक्ल अष्टमी की रात साढ़े आठ बजे हुआ था. उनके पिता का नाम बैजनाथ पांडे था. वे एक ब्राह्मण थे. 'उग्र'जी की माता का नाम जयकली था. 'उग्र' जी ने प्रथम अध्याय में अपने जीवन का परिचय देते हुए बताया की उनके एक दर्जन बहन-भाई थे जिनमें अधिकतर पैदा होते ही या साल-दो साल के होते होते प्रभु के प्यारे हो गये थे. अतः उनके जन्म पर कोई उत्साह प्रकट नहीं किया गया. 'उग्र'जी को जन्मते बेच डाला था, वो भी केवल टके पर. अलबत्ता-जन्मजात बिका का बिल्ला-जैसा नाम गले मढ़ा गया – बेचन ! बेचन नाम वैसा नहीं जिसे ओमप्रकाश की तरह भारत-प्रचलित कहा जाए. साठ वर्ष की उम्र में 'उग्र' जी को ऐसा लगता है कि यह नाम नहीं, तिलस्मी गंडा है, जिसके आगे काल का हथकण्डा भी नहीं चल पा रहा है. 'उग्र'जी जब बोलना भी नहीं सीखे थे कि पिता का स्वर्गवास हो गया और उसके बाद वे

अपने बड़े भाई के पास आए जो विवाहित थे और पिता के बाद घर के पालक थे. 'उग्र' जी अपनी इस आत्मकथा में उस गली की भी कहानी बताते हैं जहाँ उन्होंने जन्म लिया था. सद्दूपुर मुहल्ले की एक गली-बँभन-टोली. गली में दो-तीन घरों को छोड़ बाकी खाते-पीते, एकाध तो पूँजीवाले भी थे और एक 'उग्र' जी शानदार भिखारी सड़क पर कपड़े फैलाया गलियों में हाथ पसारकर भीख माँगते हैं और लोग ब्राह्मण जानकर उनके घर भीख पहुँचा जाते थे. यह कथा 55 वर्ष पूर्व की थी. तभी तथाकथित सनातन धर्म का नाश उसी के अनुगामियों ठेकेदार ब्राह्मणों द्वारा हो चुका था. 'उग्र'जी को ब्राह्मण-ब्राह्मणी से शूद्र शूद्राणी अधिक आकर्षक जान पड़ते थे. एक बार जब एक वेश्या का प्रवेश 'उग्र'जी के घर हुआ था. मुहल्ले के आधे दर्जन मनचले ब्राह्मण युवक उस वेश्या से मिलने 'उग्र'जी के यहाँ आ जमते थे. 'उग्र'जी को यह पसंद नहीं था. 'उग्र' जी का भाई नशा भी करता और घर के सभी सदस्य को मारता, भाई का यह आचरण 'उग्र' जी को पसंद नहीं था. जब 'उग्र' जी ने पढ़ना शुरू किया तब उन्होंने अपने एक मित्र की हनुमानचालीसा चुरा ली थी. धीरे-धीरे वे रामलीला-मण्डली में जुड़े. इस प्रकार प्रथम अध्याय में 'उग्र' जी अपने जीवन के जन्म तथा बाल्यावस्था वर्णन करते हैं.

- ***धरती और धन (अध्याय-2)***

इस अध्याय की शुरुआत में पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' जी अपनी माता जयकली जिन्हें वे आई पुकारा करते थे उनसे करते हैं. 'उग्र'जी यह कहना चाहते थे कि मेरी जननी इस कदर अनपढ़ थीं कि जो सार्थकता उन्हें ऊ र्द जी में मिलती थी वह 'उग्र' जी में नहीं. उनकी माता उन्हें उर्द कहकर पुकारती थी. 'उग्र'जी को अपनी माता से पता चलता है कि उनके पिताजी चुनार के खासे धनिक वणिक बिहारीसाहु के राममंदिर में वैतनिक पुजारी थे. उन्हें क्षय रोग से उनकी मृत्यु हो गई थी. पिताजी की मात्र एक झलक 'उग्र'जी की आँखों में है. 'उग्र'जी की चाची का 'उग्र' जी पर वात्सल्य था. 'उग्र'जी सोलह वर्ष के थे तब भी उनकी माँ उन्हें मारने को ललकती थी. 'उग्र'जी की आई पर क्रोधिनी थी साथ ही परम भोली. जब 'उग्र' जी का भाई परदेश होता घर में एक भूनी भोग भी न होती, तब 'उग्र'जी की आई मुहल्ले-टोले से मन-आध मन गेहूँ ले आती, एक निहायत करुण गीत गाती-गाती भाभी के साथ उसे पीसतीं. तब कुछ पैसे मिलते और उनके घर चूल्हा चेतना, मुँह निवाले लगते. 'उग्र'जी खुश हो चहकने लगते और उनकी आई कहावन सुनाकर खुश हो जाती — पेट में पड़ा चारा, तो नाचे लगा बेचारा.

- ***चुनार (तीसरा अध्याय)***

इस अध्याय में पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' जी रामचंद्र के जीवन के साथ-स्वयं के जीवन की बात करते हैं. 'उग्र' जी कहते हैं — रामचंद्र भगवान अयोध्या नगरी में पैदा हुए थे, जो पवित्र तीर्थ मानी जाती है. मैं चुनार में पैदा हुआ, जो काशी के कलेजे और गंगातट पर होकर भी त्रिशंकु की साया में होने से तीर्थ नहीं है. प्रस्तुत अध्याय 'उग्र'जी अपने जन्मस्थान चुनार का वर्णन करते हैं. भले ही चुनार तीर्थ का स्थान नहीं है, फिर

भी, चुनार उन्हें अयोध्या और साकेत से भी अधिक प्रिय है. 'उग्र'जी कहते हैं सारी अयोध्या में जितने गढ़े-गढ़-मन्दिर-मूर्तियाँ हैं, उतनी और चरणादि (चुनार) की अनपढ़ पार्वतीय विभूति के बाएँ चरण की सबसे छोटी अँगुली के नाखून से निकाली जा सकती है. प्रस्तुत अध्याय का अभिप्राय यह है कि महाकवि ने जिस अयोध्या का वर्णन किया है वस्तुतः वह आज का नहीं त्रेता युग का है. फिर भी, उसकी सफाई, रोशनी, छिड़काव, जनता को तरह-तरह से सुख पहुँचाने का सक्रिय निश्चय आज के कलकत्ता-बम्बई ही नहीं लन्दन-न्यूयोर्क के म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के आगे आज भी प्रसन्न चुनौती-जैसा है.

- ***नामा भागवतदास***

इस अध्याय में सन् 1910 की बात कही गई है जब भारत-पाकिस्तान एक थे. साधु नागा भागवतदास का परिचय यहाँ करवाया गया है. एक रामलीला मण्डली थी जिनको मिण्टगुमरी के दर्शनार्थियों ने अपने यहाँ रामलीला दिखलाने के लिए आग्रह किया था. अयोध्या से जो रामलीला मण्डली थी वे सभी लीलाधारी थे कुल मिलाकर सैंतालिस थे. असल में ये लीलाधारी नागा महन्त भागवतदास महाराज की जमाता थी. साथ में एक घोड़ा भी था जो महन्त भागवतदासजी का था. भागवतदासजी एक आँख से काने थे. साधु-जमात और रामलीला-मण्डली की मूर्तियों की सम्यक् आर्थिक व्यवस्था महन्त भागवतदास के ही हाथों में थी. मिण्टगुमरी के भक्तों ने रामलीला-भूमि के निकट ही मण्डलीवालों के ठहरने की व्यवस्था की थी. 'उग्र' जी और उनके बड़े भाई साहब भी सी मण्डली में काम करते थे. महन्त भागवतदास हिम्मतवाले जीवटवाले साधु महात्मा थे. तभी तो सन् 1910 ई. में सीमान्त प्रदेश के विख्यात शहर बन्नू में जाकर रामलीला दिखाने की जरूरत की उन्होंने. बन्नू में अनेक सरहदी सौगात संग्रह करने के कारण 'उग्र'जी और उनके बड़े भाई चुनार लौट आए. 'उग्र'जी के आग्रह करने पर भी उनके मझले भाई और माताजी ने चुनार आना स्वीकार नहीं किया.

- ***राममनोहरदास***

इस अध्याय से 'उग्र'जी ने मण्डली को छोड़कर जब चुनार वापस आए वहाँ से लेकर राममनोहरदास की मण्डली में शामील होने तक का वर्णन किया है. 'उग्र'जी जब चुनार आए फिर अयोध्या से मझले भाई श्रीचरण पांडे उर्फ सियारामदास ने उन्हें पत्र दिया था कि वह इन दिनों महन्त राममनोहरदास की मण्डली में है. महन्तजी मालदार थे साथ ही भागवतदास कानियाँ से कहीं उदार. 'उग्र'जी ने भाई के आग्रह पर राममनोहरदास की मण्डली में जुड़ जाते हैं.

- ***भानुप्रताप तिवारी और बच्चा महाराज***

पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' जी ने अपनी आत्मकथा में भिन्न-भिन्न अध्यायों में अपने जीवन से जुड़े व्यक्तियों का भी साथ-साथ वर्णन किया है. इस अध्याय में 'उग्र' जी ने भानुप्रताप तिवारी की बात कही है. जब 'उग्र' जी सात वर्ष के थे, वे साठ के रहे होंगे. भानुप्रताप तिवारी का प्रभाव 'उग्र' जी पर सारे जीवन रहा. बचपन से ही 'उग्र' जी के

मुहल्ले में दो हस्तियाँ ऐसी थी जिनका प्रभाव उन पर सारे जीवन रहा. एक तो भानुप्रताप तिवारी और दूसरे महादेव मिश्र उर्फ बच्चा महाराज. बच्चा महाराज चालीस की उम्र के थे जब 'उग्र' जी सात बरस के थे.

- ***पं.जगन्नाथ पांडे और लाला भगवान दीन***

जब पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' चौदह साल के थे वे रामलीला मण्डली से छुट्टी मनाने बड़े भाई के संग चुनार गए थे. इस बार जब 'उग्र'जी घर पर आए तो कहीं उन्हें ऐसा लगा कि उनका सौभाग्य जागा है क्योंकि उनके चाचा और चाची ने उन्हें गोद लेने का निर्णय किया था. 'उग्र'जी के चाचा ने उनकी शिक्षा-दीक्षा का निर्णय किया. फलतः चौदह वर्ष की वय में चुनार में चर्च मिशन स्कूल में उनका नाम थर्ड क्लास में लिखाया गया. सिक्स क्लास में आए तब उनके चाचा को एक सुन्दर-सा पुत्र पैदा हुआ सो 'उग्र' जी को पुनः गैर-जिम्मेदार भाई के पास जाना पड़ा. 'पुनि मो कहँ सोइ दिन, सोई राती'. फीस की कमी, कपड़ों की कमी, राशन की कमी. 'उग्र'जी बताते हैं कि उनके पाँच गुरु थे. उन पाँचों में एक उनके ज्येष्ठ भाई को भी मानते थे. फिर काशीपति त्रिपाठी, लाला भगवान दीन और विष्णु परारडकर के शुभ नाम हैं. 'उग्र'जी ने चाचा से कहकर पुनः स्कूल आरंभ की. एक दिन गाँधीजी के जन्म दिवस पर स्कूल के हॉल में सभा हुई थी वहीं पर 'उग्र' जी ने महात्माजी पर एक तुकबन्दी पढ़ी थी. तब तालियों की गड़गड़ाहट सभा में और दूसरे ही दिन पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' हिन्दू स्कूल में मानवीय कवि ! 'उग्र' जी को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था. इन्हीं घटनाओं के निकट 'उग्र' जी का परिचय कमलापति त्रिपाठी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, लाल भगवानवान दीन से परिचय हुआ था.

- ***बनारस और कलकत्ता***

इस अध्याय में 'उग्र' जी ने अपने चुनार से जब वे बनारस पढ़ने गए उस का वर्णन किया है. जब वे बनारस पढ़ने गए तब अपने सामाजिक स्टेटस पर बड़ा ही लज्जित जैसा महसूस किया था. बनारस फिर 'उग्र' जी कलकत्ता चले गए थे. कलकत्ता जाकर 'उग्र' जी को लगा कि राष्ट्रीय रण के इस मौके पर कलकत्ता में अकारण ही आए. उन्हें पुनः बनारस ही लौट जाना चाहिए. बनारस में तो फिर भी उनका व्यक्तित्व विकस रहा था. लेकिन कलकत्ता में तो 'उग्र' जी नौकरी करने के भी काबिल नहीं थे. तभी विश्वनाथ जी ने उन्हें बनारस बुला लिया था.

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *'अपनी खबर' पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा लिखी गई कौन-सी विधा की रचना है?*
2. *बचपन में किस स्वभाव के कारण पांडेय बेचन शर्मा का उपनाम ''उग्र'' पड़ा?*
3. *पांडेय बेचन शर्मा ''उग्र'' ने अपनी आत्मकथा में कितने गुरु बताये हैं?*
4. *पांडेय बेचन शर्मा ''उग्र'' ने अपनी आत्मकथा को कितने अध्यायों में लिखा है ?*

5. *पांडेय बेचन शर्मा ''उग्र'' जी की माता का नाम किया था ?*

11.6 *सार बिंदु*

इस इकाई को पढने के बाद सार रूप हम कह सकते है की–

- *आत्मकथा लेखन की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जाती है.*
- *पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रेमचंद युग के उपन्यासकार है.*
- *इन्होंने अपने उपन्यासों में समाज की बुराइयों को उसकी नंगी सच्चाई को ना लाग-लपट और साहस के साथ सपाट बयानबाजी से प्रस्तुत किया.*
- *'अपनी खबर' पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा लिखी गई एक आत्मकथा है, जिसका प्रकाशन सन्* 1960 *में हुआ था.*
- *यह आत्मकथा नैतिकता के धरातल पर अपने उन्मुक्त अभिव्यक्ति में 'उग्र' ने अपने बचपन से लेकर प्रौढ़ावस्था तक की तमाम गतिविधियों का अंकुठ और अनावृत्त वर्णन किया है. जिसे समाज में वर्जित माना जाता है.*
- *'अपनी खबर' आत्मकथा के* 17 *अध्यायों में 'उग्र' जी ने अपने जीवन के इक्कीस वर्षों की कथा बताई है.*
- *प्रमुख अध्यायों के नाम इस प्रकार है–धरती और धान, चुनार, राममनोहरदास, बनारस और कलकत्ता, जीवन-संक्षेप आदि. प्रथम अध्याय में 'उग्र' जी ने अपने जीवन के आरंभिक बीस बरसों की घटनाओं की कहानी बताई है. '*
- *एक अध्याय नार है, चुनार 'उग्र' जी के जन्म स्थान है. इस अध्याय में 'उग्र' जी ने चुनार की गलियों का वर्णन किया है. 'उग्र' जी रामचन्द्र के जीवन के साथ-साथ स्वयं के जीवन की बात करते हैं.*
- *'उग्र' जी कहते हैं — रामचन्द्र भगवान अयोध्या नगरी में पैदा हुए थे, जो पवित्र तीर्थ मानी जाती है. मैं चुनार में पैदा हुआ, जो काशी के कलेजे और गंगातट पर होकर भी त्रिशंकु की साया में होने से तीर्थ नहीं है. प्रस्तुत अध्याय 'उग्र' जी अपने जन्मस्थान चुनार का वर्णन करते हैं.*
- *आगे के अध्याय में वे उन व्यक्तियों का उल्लेख करते हैं जिनका उनके जीवन में प्रभाव रहा हैं. जैसे नागा भागवतदास, राममनोहरदास, भानुप्रताप तिवारी, बच्चामहाराज, पं.जगन्नाथ पांडे और लाला भगवान दीन इन सभी का वर्णन अलग-अलग अध्यायों में मिलता हैं. इनके नामों के शिर्षक से ही अध्यायों का नाम भी रखा है.*
- *जीवन संक्षेप अध्याय में 'उग्र' जी ने बताया की सन्* 1921 *ई. में जेल से आने के बाद 'उग्र' जी कहानियाँ, कविताएँ, गद्यकाव्य, व्यंग्य और विनोद बराबर लिखते रहे.*

11.7 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये***

1 *पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी के व्यक्तित्र और कृत्तित्व पर प्रकाश डालिए.*

2 *आत्मकथा का स्वरूप स्पस्ट करते हुए हिंदी साहित्य में उसकी विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए.*

3 *'अपनी खबर' आत्मकथा का सविस्तार से वर्णन कीजिए.*

- ***निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए***

1 *'अपनी खबर'(प्रथम अध्याय)*

2 *धरती और धन (अध्याय-2)*

3 *नामा भागवतदास*

4 *राममनोहरदास*

5 *बनारस और कलकत्ता*

11.8 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

1 *हिंदी साहित्य का इतिहास – संपादक डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल*

2 *'अपनी खबर'– पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र'*

3 *हिंदी गद्य साहित्य – उपलब्धि की दिशाएँ – डॉ. रामदरश मिश्र*

4 https://rb.gy/kmnxwt

5 https://www.hindikunj.com/2021/03/apni-khabar-pandey-bechan-sharma.html

इकाई 12 संस्मरण – 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' : मृदुला गर्ग

रूपरेखा

12.1 *उद्देश्य*

12.2 *प्रस्तावना*

12.3 *मृदुला गर्ग का जीवन परिचय*

12.4 *संस्मरण की अवधारणा*

12.5 *संस्मरण के प्रमुख तत्त्व*

12.6 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' : वाचन*

12.7 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की व्याख्या*

12. 8 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की अंतर्वस्तु*

12.9 *सार-बिंदु*

12.10 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

12.11 *उपयोगी पाठ्य-सामग्री*

12.1 *उद्देश्य*

प्रिय विद्यार्थी मित्रो ! इस इकाई में हम हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार एवं संस्मरणकार मृदुला गर्ग का सुप्रसिद्ध संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' का अध्ययन करेंगे. इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- *लेखक मृदुला गर्ग का साहित्यिक परिचय प्राप्त कर सकेंगे.*
- *संस्मरण की अवधारणा और उसके मूलभूत आधार को समझ सकेंगे.*
- *हिंदी में संस्मरण लेखन की परंपरा को समझ सकेंगे.*
- *संस्मरण के रूप में 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की विशिष्टता को समझ सकेंगे.*
- *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण के अंतर्वस्तु का विवेचन तथा अज्ञेय के रचना-व्यक्तित्व और भाव-बोध के मुख्य आयामों को समझ सकेंगे.*
- *संस्मरण के रूप में 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' के संरचनात्मक विशिष्टता को समझने के क्रम में भाषा और शिल्प की विशेषताओं को समझ सकेंगे.*

12.2 *प्रस्तावना*

प्रिय विद्यार्थी मित्रों. 'हिंदी की कथेत्तर गद्य विधाएँ' नामक पाठ्यक्रम की इस इकाई में हम मृदुला गर्ग द्वारा रचित संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' का अध्ययन करने जा रहे हैं.

मृदुला गर्ग ने लगभग आधी सदी से हिंदी कथा साहित्य में अपनी उपस्थिति बनाई हुई हैं. उनकी रचनाओं में मन के भीतर और बाहर का संवाद निरंतर सुना जा सकता है. स्त्री-पुरुष के संबंधों पर केंद्रित उनकी रचनाएँ हमें सोचने के लिए विवश करती हैं. इस संस्मरण-लेख के केंद्र बिंदु में प्रयोगवादी कविता के प्रमुख कवि और साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हैं. हम इस संस्मरण को पढ़े, समजे,और विश्लेष्ण करे उससे पहले इस संस्मरण के संस्मरणकार(संस्मरण लेखिका) मृदुला गर्ग जी के विषय में जानकारी प्राप्त करते है.

12.3 *मृदुला गर्ग का जीवन परिचय*

मृदुला गर्ग जी का जन्म 25 *अक्तूबर,* 1938 *ई. को कोलकाता के एक संपन्न परिवार में हुआ था. पिता बी.पी. जैन कोलकाता में सेवारत थे. मृदुला गर्ग जी के जन्म के तीन वर्ष बाद उनका तबादला दिल्ली में हो गया था. यही कारण है कि मृदुला जी की पढ़ाई दिल्ली में हुई. मृदुला जी की चार बहनें (मंजुल भगत, अचला बंसल, चित्रा जैन, रेणु जैन) एवं एक भाई (राजीव जैन) हैं. मंजुल भगत हिंदी की प्रसिद्ध कथा-लेखिका हैं. अचला बंसल अंग्रेजी की लेखिका हैं; जबकि चित्रा जैन एवं रेनू जैन गृहणी हैं. भाई राजीव जैन राजभाषा हिंदी के कवि हैं. मृदुला जी का विवाह* 1963 *ई. में आनंद प्रकाश गर्ग के साथ हुआ. इनसे शशांक विक्रम और आशीष विक्रम दो बेटे हैं.*

हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में सामान्य ज्ञान रखने वाली मृदुला गर्ग जी स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया; किंतु उनका मन हिंदी साहित्य की ओर अधिक रमा. इसका परिणाम यह हुआ कि साहित्य उनके भीतर समा गया और मन में निहित बड़े साहित्यकारों का भय भी समाप्त हो गया. 'थ्रू द लुकिंग ग्लास' नामक कहानी बचपन में पढ़ीं तो उन्हें एहसास हुआ 'दौड़ेंगे नहीं तो ठौर पर खड़े नहीं रह पाओगे' उनके ह्रदय पर अमिट छाप छोड़ गई. सन् 1960 *से* 1963 *ई. तक दिल्ली के इंद्रप्रस्थ कॉलेज और जानकी देवी कॉलेज में उन्होंने प्राध्यापिका के रूप में अध्यापन कार्य भी किया.*

- ***साहित्यिक परिचय***

मृदुला गर्ग बचपन में ही शरतचंद्र, प्रेमचंद, ऑस्कर वाइल्ड, दास्तोयवस्की जैसे बड़े लेखकों का अध्ययन कर चुकी थीं, जिसका परिणाम उनके साहित्य सर्जन में देखने को मिला. मृदुला जी अपने लेखन की शुरुआत कहानी से कीं. 1971 *ई. में उनकी पहली*

कहानी 'रुकावट' कमलेश्वर के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'सारिका' में छपी. 1972 *ई. में दूसरी कहानी 'कितनी कैदें' 'कहानी पत्रिका' द्वारा पुरस्कृत भी हुई.*

अध्यापन से अपने कार्य-जीवन का आरंभ करने वाली मृदुला गर्ग जी ने उपन्यास, कहानी-संग्रह, नाटक, निबंध और संस्मरण आदि विधा पर खूब लिखी हैं. उनकी अब तक 50 *से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. इसके अतिरिक्त वे 'इंडिया टुडे' के हिंदी संस्करण में 'कटाक्ष' नामक स्तंभ भी लिखती रही हैं; जो अपने तीखे व्यंग्य के कारण साहित्य-समाज में खूब पसंद किया गया. पर्यावरण के प्रति सजग रहने वाली मृदुला जी संयुक्त राज्य अमेरिका की कोलंबिया विश्वविद्यालय में* 1990 *ई. में आयोजित एक सम्मेलन में हिंदी साहित्य में महिलाओं के प्रति भेदभाव विषय पर व्याख्यान भी दे चुकी हैं. मृदुला जी की प्रसिद्धि का ही परिणाम है कि अभी तक उनकी रचनाएँ जर्मन, चेक, जापानी और अंग्रेजी सहित अनेक विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं. उनकी प्रमुख रचनाओं की बात करे तो –*

कहानी-संग्रह : *कितनी कैदें (*1975 *ई.), टुकड़ा-टुकड़ा आदमी (*1975 *ई.), डैफोडिल जल रहे हैं (*1978 *ई.), ग्लेशियर से (*1980 *ई.), उर्फ सैम (*1982 *ई.), दुनिया का कायदा (*1983 *ई.), शहर के नाम (*1990 *ई.), चर्चित कहानियाँ (*1993 *ई.), समागम (*1996 *ई.), मेरे देश की मिट्टी, अहा (*2001 *ई.), हरी बिंदी (*2004 *ई.), स्थगित कल (*2004 *ई.), जूते का जोड़, गोभी का तोड़ (*2006 *ई.), संगति-विसंगति (दो वैल्यूम) (*1973 *से* 2003 *ई. तक की संपूर्ण कहानियाँ), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (*2008 *ई.), यादगारी कहानियाँ (*2009 *ई.), स्त्री मन की कहानियाँ (*2010 *ई.), मंजूर नामंजूर (*2013 *ई.), वो दूसरी (*2014 *ई.), हर हाल बेगाने (*2014 *ई.), लोकप्रिय कहानियाँ (*2015 *ई.), वसु का कुटुम (*2016 *ई.).*

उपन्यास : *उसके हिस्से की धूप (*1975 *ई.), वंशज (*1976 *ई.), चित्तकोबरा (*1979 *ई.), अनित्य (*1980 *ई.), मैं और मैं (*1984 *ई.), कठगुलाब (*1996 *ई.), मिलजुल मन (*2009 *ई.).*

- ***कथेत्तर गद्य-साहित्य***

नाटक : *एक और अजनबी (*1978 *ई.), जादू का कालीन (बाल नाटक) (*1993 *ई.), तीन कैदें (*1996 *ई.), साम दाम दण्ड भेद (*2003 *ई.).*

लेख-संग्रह : *रंग-ढंग (*1975 *ई.), चुकते नहीं सवाल (*1999 *ई.), कर लेंगे सब हजम (व्यंग्य-लेख) (*2007 *ई.), खेद नहीं है (*2006-2008 *ई. तक 'कटाक्ष' (व्यंग्य लेख) (*2010 *ई.).*

संस्मरण : *दीदी की याद में (1998 ई.), एक महाआख्यान जो लघु उपन्यास-सा निबट गया (1998 ई.), कुछ अटके कुछ भटके- यात्रा-संस्मरण (2006 ई.), कृति और कृतिकार- स्मृति लेख (2023 ई.)*

- ***पुरस्कार व् सम्मान***

- *साहित्यकार सम्मान – हिन्दी अकादमी दिल्ली(1988ई.)*
- *साहित्य भूषण सम्मान- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ (1999 ई.)*
- *साहित्यकार सम्मान- हिंदी अकादमी, दिल्ली(1988 ई.)*
- *हैलमैंन-हैमैट ग्रांट पुरस्कार- ह्यूमन राइटवाच, न्यूयॉर्क(2001 ई.)*
- *लाइफटाइम कॉन्ट्रीब्यूशन सम्मान- विश्व हिंदी सम्मेलन, सूरीनाम(2003 ई.)*
- *व्यास सम्मान- कठगुलाब रचना के लिए(2004 ई.)*
- *मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा 'उसके हिस्से की धूप'(उपन्यास) तथा 'जादू का कालीन' (नाटक) के लिए सम्मान(क्रमशः वर्ष 1975 और 1993 ई.)*
- *साहित्य अकादमी पुरस्कार - 'मिलजुल मन'(उपन्यास) के लिए, दिल्ली (2013 ई.)*
- *राम मनोहर लोहिया सम्मान- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान(2016 ई.)*
- *डी.लिट्. 'ऑनोरिस कौसा' आई.टी.एम. विश्वविद्यालय, ग्वालियर(2016 ई.)*

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. *मृदुला जी का जन्म भारत के प्रदेश में जज हुआ था?*
2. *मृदुला जी ने दिल्ली के किस कॉलेज में अध्यापन-कार्यजज किया है?*
3. *मृदुला जी मूलतः किस विषय की प्राध्यापिका जज रही हैं?*
4. *मृदुला जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस कृति पर जज मिला था?*
5. *मृदुला गर्ग जी की पहली कहानी कौन-सी .... है?*
6. *मृदुला गर्ग जी ने लेखन की शुरुआत साहित्य की किस विधा जज से की थीं?*

12.4 *संस्मरण की अवधारणा*

प्रिय विद्यार्थी मित्रों! मूल रचना के विषय-वस्तु को जानने से पहले हमें संस्मरण विधा की अवधारणा, प्रमुख तत्त्व आदि को जानना भी आवश्यक है. अतः क्रम से संस्मरण विधा के बारे में बात करे तो -

- ***संस्मरण***

'संस्मरण' का शाब्दिक अर्थ है- 'सम्यक् स्मरण', अर्थात् संस्मरणकार अतीत (बीता हुआ समय) में पहुँच कर अपने स्मृति में संरक्षित व्यक्ति, वस्तु, घटना अथवा दृश्य का इस प्रकार वर्णन करे कि वह पाठक के हृदय में उपस्थित हो जाए - जो 'संस्मरण' कहलाता है. अर्थात् जो वस्तु स्मृति रूप में शेष है, वह भाषिक संरचना के माध्यम से जीवन-स्वरुप में प्रकट हो जाए, उसे 'संस्मरण' कहते हैं. 'हिंदी साहित्य कोश' के

अनुसार- ''संस्मरण में लेखक जो स्वयं देखा है, जिसका वह स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है. उसके वर्णन में उसकी अनुभूति एवं संवेदनाएँ भी रहती हैं.

'संस्मरण' के लिए अंग्रेजी में दो शब्दों 'मेमाइर' और 'रिमिनसेसेज' का प्रयोग मिलता है; किंतु अंग्रेजी के इन दोनों शब्दों में मामूली अंतर है. 'मेमाइर' वस्तुपरक संस्मरण है; जबकि 'रिमिनसेसेज' में लेखक अपने व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत जीवन के अनुभूत सत्यों को कहीं अधिक स्पष्टता के साथ व्यक्त करता है. बावजूद इसके हिंदी में इन दोनों शब्दों के लिए 'संस्मरण' का ही प्रयोग होता है.

- ***हिंदी संस्मरण साहित्य का विकास***

*हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से संस्मरण विधा हिंदी में आया. हिंदी का प्रथम संस्मरण बालमुकुंद गुप्त द्वारा लिखित 'हरिऔध जी का संस्मरण' है. द्विवेदी युग के लेखकों में पं. पद्मसिंह शर्मा का 'पद्म पराग' विशेष उल्लेखनीय है; जिसमें महाकवि अकबर, सत्यनारायण कवि रत्न, भीमसेन शर्मा आदि पर मार्मिक संस्मरण है. बनारसीदास चतुर्वेदी जी की पुस्तक 'संस्मरण' (*1952 *ई.) और 'हमारे आराध्य' (*1952 *ई.) संस्मरण विधा की अमूल्य धरोहर हैं.*

- ***कुछ महत्त्वपूर्ण संस्मरण और संस्मरणकार***

क्रम	***संस्मरण***	***लेखक***
1	*मेरी तीर्थ यात्रा*	*श्रीधर पाठक*
2	*मेरा जीवन*	*बाबू शिवपूजन सहाय*
3	*मैंने स्मृति के दीप जलाये*	*रामनाथ सुमन*
4	*पथ के साथी*	*महादेवी वर्मा*
5	*दीप जले शंख बजेकन*	*हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'*
6	*माटी की मूरतें*	*रामवृक्ष बेनीपुरी*
7	*मंटो मेरा दुश्मन*	*उपेंद्रनाथ 'अश्क'*
8	*ये और वे*	*जैनेंद्र कुमार*
9	*समय के पाँव*	*माखनलाल चतुर्वेदी*
10	*दस तस्वीरें*	*जगदीश चंद्र माथुर*
11	*लोकदेव नेहरु*	*रामधारी सिंह 'दिनकर'*
12	*स्मृति लेखा*	*अज्ञेय*

- ***संस्मरण की विशेषताएँ***
  - *संस्मरण लेखक की निजी अनुभूतियों पर आधारित रचना है.*
  - *संस्मरण में स्मरणकर्त्ता और स्मरणीय दोनों की समान स्थिति होती है.*
  - *संस्मरण में लेखक वर्ण्य-वस्तु के साथ-साथ अपनी मनःस्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को भी प्रस्तुत करता है.*

- *संस्मरण यथार्थ पर आधारित रचना है.*
- *संस्मरण किसी महान् एवं श्रद्धेय व्यक्तियों से संबंधित होता है.*
- *संस्मरण में आत्मतत्त्व, संवेदना और अनुभूतियों का समावेश होता है.*
- *संस्मरण में रोचकता, अभिव्यंजनात्मकता, स्पष्टता और संक्षिप्तता आवश्यक है.*

- ***बोध प्रश्न***

सही जोड़ मिलाइए

1	*पथ के साथी*	*(अ) श्रीधर पाठक*
2	*मेरी तीर्थ यात्रा*	*(ब) महादेवी वर्मा*
3	*माटी की मुरते*	*(क) रामवृक्ष बेनीपुरी*
4	*हमारे आराध्य*	*(ड) बनारसीदास दास चतुर्वेदी*

12.5 *संस्मरण के प्रमुख तत्व*

प्रिय विद्यार्थी मित्रों! कोई भी रचना तात्विक-दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है; इसलिए हम संस्मरण विधा के तत्त्वों के विषय में यहाँ समझने का प्रयास करेंगे. संस्मरण विधा के निम्नलिखित पाँच तत्त्व होते हैं-

1. *वर्ण्य-विषय : संस्मरण में जीवन की किसी महत्त्वपूर्ण घटना या लेखक के जीवन-संपर्क में आए किसी महान् अथवा श्रद्धेय व्यक्ति का अविस्मरणीय चरित्र को प्रस्तुत किया जाता है.*
2. *पात्र-योजना : पात्र-योजना के माध्यम से संस्मरणकार दूसरे के संबंध में ही नहीं; बल्कि स्वयं के संबंध में अनुभवों के आधार पर संस्मरण लिखता है.*
3. *परिवेश : संस्मरण में परिवेश के द्वारा ही उसकी वास्तविकता का ज्ञान होता है; इसलिए संस्मरणकार वर्ण्य-विषय के परिवेश, उसकी भौगोलिक और सांस्कृतिक वातावरण का पूरा ख्याल रखता है.*
4. *भाषा-शैली: भाषा-शैली संस्मरण विधा का अनिवार्य तत्त्व है. पत्रकारिता से संस्मरण की भाषा उत्पन्न हुई है. भाषा की तरह संस्मरण की शैली विशिष्ट होती है. यही वजह है कि संस्मरण सिंहावलोकन (अर्थात् सिंह की तरह अवलोकन. आगे-पीछे सभी स्थितियों का सूक्ष्म निरिक्षण) शैली में लिखा जाता है.*
5. *उद्देश्य: उद्देश्य किसी रचना की सार्थकता को सिद्ध करता है. अत: संस्मरण में भी किसी व्यक्ति की महत्ता, उपलब्धि, विशेषता, लाभ-हानि, स्थान-विशेष और परिस्थिति आदि से संस्मरणकार प्रभावित और प्रेरित होता है; जिसका वह स्मृति के आधार पर संबंधित विषय-वस्तु का ही वर्णन करता है.*

12.6 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' – वाचन*

https://shorturl.at/CGOW2

प्रिय विद्यार्थी! उपर्युक्त लिंक को गूगल सर्च बॉक्स में टाइप कीजिए. इंटरनेट के हिंदी समय डॉट कॉम (hindisamay.com) *में मूल रचना पी.डी.एफ.* (PDF) *फाइल के रूप में खुल जायेगी.*

12.7 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' – व्याख्या*

आइये, विद्यार्थी मित्रों! इस अनुभाग में हम संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की विशिष्टता को देखते हैं. पहले महत्त्वपूर्ण अंश की व्याख्या सभी अंगों समेत की जाएगी. लेकिन उसके बाद केवल व्याख्या के लिए मात्र संकेत दिए जाएँगे और उसे पहले व्याख्या के आधार पर पूरी तरह विकसित करना ही इस अनुभाग के लिए आपका अभ्यास होगा. व्याख्या देखने से पहले यह जरूरी है कि आप संस्मरण को पूरी तरह से पढ़ लिया हो. यदि संस्मरण को पढ़े बिना आप व्याख्याएँ पढ़ने व समझने का प्रयास करेंगे तो संबंधित संस्मरण के विषय में आपका ज्ञान अधूरा ही रह जाएगा. इसलिए आगे पढ़ने से पहले आप पूरा संस्मरण कम-से-कम एक बार अवश्य पढ़ लीजिए और संभव हो सके तो रचना का एक प्रिंटआउट (फोटो कॉपी) भी साथ में रखिए.

1. *''घर का संस्कार भी बौद्धिक और उदार था, उम्र का सदस्य अपनी राय देने को सर्वथा स्वतंत्र था. दरअसल पिता जी का अज्ञेय से अच्छा परिचय था पर उन्होंने उनसे बात करने से इनकार कर दिया. कहा, हम दोनों से अपना रिश्ता वे तभी जाहिर करेंगे जब वे हमारे पिता की तरह जाने जा सकें, हम उनकी बेटियों की तरह नहीं. तकदीर हमारी, ऐसे नैतिक जन हमारी ही किस्मत में लिखे थे.''*

- ***उपर्युक्तअंश की व्याख्या***

संदर्भ : *प्रस्तुत पंक्तियाँ मृदुला गर्ग जी द्वारा लिखित संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' से लिया गया है. मृदुला गर्ग हिंदी कथा साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर हैं. विभिन्न विषयों पर अभी तक उन्होंने लगभग* 50 *से अधिक पुस्तकें लिख चुकी हैं. उनके बहुत से संस्मरण साहित्य की चुनिंदा पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं. रेडियो से लेकर सोशल मीडिया के माध्यम पर उनकी रचनाएँ पढ़ी एवं सुनी जा सकती हैं. 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण* 90 *(लगभग) के दशक में प्रकाशित हुआ था. यह संस्मरण हिंदी साहित्य के प्रयोगवादी कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को केंद्र में रखकर लिखा गया है. यह एक व्यक्तिप्रधान संस्मरण है, जिसमें अज्ञेय की रचनात्मक-बोध के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व को भी दर्शाने की कोशिश की गई है.*

प्रसंग : *प्रस्तुत अंश संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' से लिया गया है. प्रस्तुत संस्मरण में संस्मरणकार अज्ञेय को प्रस्थान बिंदु मानकर वर्तमान साहित्यिक विश्रृंखलता और व्यक्तिकी कथनी-करनी के अंतर को प्रस्तुत किया है.*

व्याख्या : *प्रस्तुत संस्मरण में संस्मरणकार मृदुला गर्ग ने कथाकार एवं कवि अज्ञेय को साहित्य में सूर्य की भाँति स्थिर एवं ऊ र्जा से परिपूर्ण बताया है. उन्होंने अज्ञेय की सौम्यता, स्थिरता, विषय की समझ और नवोदित रचनाकारों के प्रति उनकी आत्मीयता को बड़ी ही सहजता के साथ दिखाने का प्रयास किया है. मृदुला गर्ग जी ने अज्ञेय में प्रकृति के प्रति काव्यात्मक लगाव और दार्शनिक रुचि के छवि (चित्र) को उभारा है.*

मृदुला गर्ग जी का पारिवारिक संस्कार बौद्धिकता को न केवल प्रश्रय देता है; बल्कि कम उम्र का व्यक्तिभी अपनी बात रख सकते में यहाँ पूरी तरह आजाद था. मृदुला गर्ग और मंजुल भगत चाहती थी कि कहानी-संग्रह 'गुलमोहर के गुच्छे' (मंजुल भगत) पर चर्चा के लिए सप्रू हाउस, दिल्ली में पिता जी अज्ञेय को आमंत्रित करें. मृदुला गर्ग यह जानती थी कि पिता जी से अज्ञेय के संबंध काफी मधुर हैं. बावजूद इसके पिता ने यह कहते हुए साफ मना कर दिया की बेटी और बाप का यह रिश्ता अज्ञेय से तभी जाहिर करुँगा जब हम अपनी बेटियों के पिता के रुप में जाने जा सकेंगे. नैतिकता और मूल्य-बोध का यह भाव मृदुला गर्ग जी को पिता से विरासत में मिली थी. यही कारण है कि संस्मरणकार ने संस्मरण में व्यक्तिके नैतिक पतन और दिखावेपन पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया है.

विशेष

- *छोटे और सरल वाक्य का प्रयोग.*
- *प्रारंभ में ही मृदुला गर्ग ने संस्मरण में लेखक के कथनी-करनी, दिखावेपन और साहित्यिक-बोध जैसे विषय को उभारने की कोशिश की हैं.*
- *संस्मरण के विषय वस्तु को दिखाने के लिए मृदुला गर्ग ने अज्ञेय को केंद्र में रखकर लेखकीय उत्तरदायित्व को समझाने की कोशिश की हैं.*
- *पारिवारिक आदर्श और मूल्य रचनाकार को तटस्थ एवं वर्ण्य-विषय के प्रति गंभीर बनाता है.*

2. *''यह वह जमाना था जब रवींद्रनाथ ठाकुर के बाद किसी लेखक की सदेह छवि मोहित करती थी तो अज्ञेय की. अपनी छवि की तराश में वे सजग-सतर्क थे. एक शब्द में कहना हो तो उस छवि को यही नाम दूँगी, तराश....दूसरे के अहम् को तराश कर बौना बनाने का माद्दा. साधारण को तराश कर सानुपातिक कर डालने का भी. उनके व्याख्यानों से बढ़कर मेरे लिए धरोहर उनका वह तेवर है, जिसके चलते वे किसी के आगे झुकते न थे.''*

संदर्भ : *पूर्वत् (पहले की तरह)*

प्रसंग : *प्रस्तुत संस्मरण के सातवें पैराग्राफ में अज्ञेय की तुलना रवीन्द्रनाथ ठाकुर से करते हुए उनके व्यक्तित्व के आभा-मंडल को चित्रित (बताने की) करने की कोशिश की गई है.*

व्याख्या : *भारतीय सांस्कृतिक-चेतना में नयी जान फूँकने वाले रवीन्द्रनाथ ठाकुर के समान विशाल व्यक्तित्व एवं भारतीय जन-जीवन को प्रकृति की सुंदरता से रू-ब-रू कराने वाले कवि अज्ञेय भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं. अज्ञेय प्रयोगवादी कवि हैं. यही कारण है कि वे परंपरा से हटकर व्यक्ति की निजता पर रचनाएँ की हैं.*

मृदुला गर्ग जी ने प्रस्तुत संस्मरण के माध्यम से यह बताने की कोशिश की हैं कि अज्ञेय का व्यक्तित्व अहम् से ऊपर उठकर जन-साधारण किस्म का था. यह अज्ञेय के व्यक्तित्व की खासियत रही है कि कोई भी अभिमानी व्यक्ति उनके संपर्क में आते ही अपने अहम् का त्याग कर देता था. उनका घुमक्कड़ी स्वभाव ही उनके व्यक्तित्व को धार देती थी. यही वजह है कि उन्होंने जीवन-पर्यंत किसी के आगे न झुक कर बल्कि सामने वाले व्यक्ति के अहम् को दूर कर उसे समुचित तरीके से (सानुपातिक) सरल बना देते थे. मृदुला गर्ग जी स्वयं इस बात को स्वीकार करती हैं कि मैं अज्ञेय के जितने व्याख्यानों से प्रभावित नहीं हुई उतनी मैं उनके भाव-बोध और विचारों से.

विशेष :

- *छोटे-छोटे वाक्य वर्ण्य-विषय को सफल बनाते हैं.*
- *रवीन्द्रनाथ ठाकुर का उदाहरण देकर संस्मरणकार ने अज्ञेय के व्यक्तित्व को और भी ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया है.*
- *संस्मरण में अज्ञेय की सरलता, सहजता एवं जन-उत्तरदायित्व को भी रेखांकित किया गया है.*

3. *''कुछ न कह कर, बहुत कुछ कह गए थे उसे दिन अज्ञेय! हमें ईमानदारी का अमूल्य सबक सिखला दिया था या समझिए कि पिता जी की सीख पर मोहर लगा दी थी. उस बेलौस और ईमानदारी की वजह से, आगे चल कर, हमने तरह-तरह के अन्याय सहे पर ईमानदारी नहीं छोड़ी. चाय के दौरान उनका पिता जी से मिलना भी हो गया और उनके यह कहने से कि, 'तो आप उनके पिता हैं; हमारे हाथ लॉटरी लग गई. पिता जी सार्वजनिक रूप से हमारे पिता तवजीह हो गए!''*

संदर्भ : *पूर्वत्*

प्रसंग : *पहले के उदाहरणों के समान ही इस अंश को आप स्वयं लिखें. (सहायता के लिए यह कथन किस संदर्भ में कहा गया है?).*

व्याख्या : *प्रस्तुत संदर्भ की व्याख्या करने से पहले हमें पूर्व के कथनों पर ध्यान देना होगा. जिसमें मृदुला गर्ग जी ने पिता जी को मंजुल भगत की किताब पर चर्चा*

के लिए अज्ञेय को बुलाने के लिए कहती हैं; किंतु पिता जी ने यह कहते हुए मना कर दिया था कि- "हम दोनों से अपना रिश्ता वे तभी तभी जाहिर करेंगे जब वे हमारे पिता की तरह जाने जा सकें, हम उनकी बेटियों की तरह नहीं." यह कथन चरित्रार्थ तब होता है जब अज्ञेय जी मृदुला गर्ग के घर पर आकर पिता से कहते हैं- "तो आप इनके पिता हैं"- मृदुला गर्ग के लिए मानो पिता जी द्वारा कही गई बातें आज चरितार्थ हो गया. यह किसी व्यक्ति के सफल होने की पहचान है. वजह साफ है व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से है. माँ-बाप की पहचान संतान के कर्मों से है और व्यक्ति की पहचान उसके अपने कर्मों से. मृदुला गर्ग जी यह मानती हैं कि पिता जी द्वारा प्राप्त ईमानदारी और नैतिक-मूल्यों की वजह से जीवन में कई अन्याय सहें, किंतु ईमानदारी नहीं छोड़ी.

(इस व्याख्या को आपको अपने तरीके से और विकसित करना है.)

विशेष :

- संस्मरणकार के नैतिक-मूल्यों और ईमानदारी को जीवन का अभिन्न हिस्सा माना है.
- संस्मरणकार स्वयं को केंद्र में रखकर अपने भावों को प्रस्तुत किया है.
- शेष पूर्वत्

4. "हिंदी साहित्य जगत् में ईमानदारी से अपनी भावनाएँ प्रकट करने का रिवाज. नहीं था. हर लेखक अजब दार्शनिक या गुस्सैल मुद्रा अपनाएँ घूमता था, जैसे साहित्य का जनाजा कंधों पर उठाए हो. प्रेम, कला, शिल्प, वैयक्तिक्र-अस्मिता, रस आदि तिरस्कार और उपेक्षा के भाव थे, बल्कि यूँ समझिए कि 'भाव' ही तिरस्कृत था."

संदर्भ : पूर्वत्

प्रसंग : संस्मरणकार ने साहित्य जगत् की विकृतियों पर प्रकाश डालते हुए साहित्यकारों के दिखावेपन पर क्षोभ प्रकट किया है.

व्याख्या : प्रस्तुत प्रकरण में मृदुला गर्ग जी ने हिंदी साहित्य में साहित्यकारों की भावना और उनकी ईमानदारी पर प्रश्न-चिन्ह खड़ा की हैं. उनका मानना है कि हिंदी साहित्यकार किसी विचारधारा में बँध कर ही रचना को गति दे पाने में सफल हो पाते हैं. जबकि कायदे से होना चाहिए था की रचना भाव-प्रधान हो; किंतु साहित्य में ऐसा संभव नहीं है. यहाँ लेखक की रचना में एक ऐसा दर्शन है जो आमजन के लिए अबूझ बनी हुई है; जबकि रचना आमजन के सुख-दुख की स्थली रही है. साहित्य सौंदर्य का उपासक रहा है. प्रकृति के अवयव उसके लिए सामग्री उपलब्ध कराते रहे हैं; बावजूद इसके वह क्रोध, ईर्ष्या और विचारधाराओं को मानो कंधों पर उठाए साहित्य का जनाजा लिए फिर रहा है. इस तरह का विचार साहित्य और उसके भाव-सौंदर्य को खत्म करने पर तुला हुआ है.

(इस व्याख्या को आपको अपने तरीके से और विकसित करना है.)

विशेष : (स्वयं लिखें)

- ***बोध प्रश्न***

निम्नलिखित अंश की व्याख्या कीजिए

1 *"मैं सोच रही थी, अगर अज्ञेय जैसा मनमौजी और दबंग व्यक्ति सारिका की फूहड़ टिप्पणियों से प्रभावित हो, चित्तकोबरा पढ़ने से परहेज कर सकता था तो आमजन का क्या हाल हुआ होगा? तब तक चुप्पी का पाठ हृदयगम कर लिया था, सो अपनी भावों को तनिक ऊ पर उठा, सम पर ले आई पर कुछ कहा नहीं. अज्ञेय ने क्षणांश को मुझे ताका. 'एक छाया चेहरे पर थिरक कर गुजर गई, जैसे पत्ता खड़का हो."*

12.8 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की अंतर्वस्तु*

प्रिय विद्यार्थी मित्रों! इस अनुभाग के अंतर्गत् संस्मरण के प्रमुख पाँच तत्त्वों के आधार पर उसके अंतर्वस्तु का मूल्यांकन करेंगे.

तो आइये, तत्त्वों के परिप्रेक्ष्य में संस्मरण का क्रमशः उसके अंतर्वस्तु का मूल्यांकन किया जाए-

वर्ण्य - विषय

मृदुला गर्ग जी ने संस्मरण के माध्यम से अज्ञेय और उनके रचनात्मक व्यक्तित्व का चित्रण किया है. संस्मरण के केंद्र में अज्ञेय हैं. किंतु अज्ञेय के माध्यम से संस्मरणकार ने स्वयं की तटस्थता, ईमानदारी और रचनात्मक नैतिक दायित्व को भी चित्रित किया है. साथ ही वर्तमान रचनाकार के षड्यंत्र पर चिंता व्यक्त करते हुए इसे साहित्य-समाज के लिए घातक बताया है.

मृदुला गर्ग जी ने अज्ञेय की तुलना साहित्य जगत् में सूर्य के प्रकाश पुंज से की हैं. संस्मरण मंजुल भगत की पुस्तक पर चर्चा के लिए अज्ञेय को बुलाने से शुरू होता है और विकास अज्ञेय के माध्यम से साहित्यकारों की वैचारिकी, लेखक का दार्शनिक और गुस्सैल स्वभाव के वर्णन से किया गया है. मृदुला गर्ग जी का मानना है कि लेखक स्वयं को प्रगतिशील घोषित तो कर देता है; बावजूद इसके घर में पत्नी का पारंपरिक और उसका निःस्वार्थ प्रेम ही उसे आकर्षित करता है.

संस्मरणकार ने अज्ञेय में ऐसे व्यक्तित्व की झलक देखती हैं; जिसमें अहं (घमंड) रंच-मात्र नहीं है. अज्ञेय का विचार ही नहीं; बल्कि उनकी सदेह छवि भी संस्मरणकार को मोहित करता है; इसलिए वह आगे कहती हैं कि उनका परिधान और सधे हुए विचार किसी भी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है. उनकी यह खूबी रही है कि दूसरे व्यक्ति के अहं को अपने विचार से बौना कर उसे समाजोन्मुखी बना देता है. अज्ञेय के सामने स्वयं को पराजित होता देख उनकी सदाशयता और गंभीर व्यक्तित्व के आगे वे नतमस्तक हो जाती हैं. क्योंकि विनम्रता व्यक्ति को आदर्श के शिखर पर लेकर जाता है, जबकि अहं पतन की ओर.

इस तरह मृदुला गर्ग अज्ञेय के माध्यम से संस्मरण को विविध सोपानों तक ले जाकर अज्ञेय के नैतिक, ईमानदारी और आदर्शवादी व्यक्तित्व को रूप देने में सफल होती हैं. वर्ण्य-विषय में संस्मरणकार ने प्रस्तुत संस्मरण को तीन चरणों से आगे बढ़ाया है- 1. *प्रारंभ* 2.*विकास* 3.*चरमोत्कर्ष. अध्ययन की सुविधा के लिए हम इस संस्मरण को तीन भागों में विभाजित करके देख सकते हैं. पहले वह है जिसमें संस्मरणकार ने मंजुल भगत की पुस्तक के बहाने अज्ञेय के रचनात्मक-कौशल और विशाल व्यक्तित्व को बताती हैं. दूसरा भाग वह है जिसमें हिंदी के रचनाकारों के छल-छद्म और कथनी-करनी के अंतर को दिखाया गया है. तीसरे भाग में मृदुला गर्ग स्वयं को अज्ञेय के व्यक्तित्व के आगे अपने को छोटा और नतमस्तक होता देख रही हैं.*

- ***बोध प्रश्न***

नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

1. *संस्मरण में उपर्युक्त ...... चरण हैं.*
2. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण ...... आधारित है.*
3. *संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' का कथानक ....है.*

पात्र-योजना

'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण में कुल चार पात्र हैं- मृदुला गर्ग, अज्ञेय, मंजुल भगत और बी.पी. जैन. संस्मरणकार ने संस्मरण के अनुरूप सीमित संख्या में ही पात्रों का संयोजन किया है. संस्मरण का समायोजन ठीक हो- इसके लिए मृदुला गर्ग ने मुख्य पात्र के अतिरिक्त स्वयं को और बहन मंजुल भगत तथा पिता बी.पी. जैन को ही लिया है. बावजूद इसके संस्मरण में अज्ञेय और मृदुला गर्ग मुख्य कलेवर (शरीर) रचते हैं. बहन और पिता संस्मरण को गति देने के लिए महज उपकरणों की तरह इस्तेमाल होते हैं.

संस्मरण का स्वरूप छोटा है. उसका कथानक सामान्यतः किसी विचार को प्रस्तुत करने में समर्थ है. अर्थात् संस्मरण के माध्यम से संस्मरणकार ने अज्ञेय के रचना-व्यक्तित्व को उभारने की पूरी कोशिश की है. जैसे अज्ञेय का काव्य-व्यक्तित्व कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के समक्ष है. उनका भाव-बोध, तेज व्यक्तित्व और प्रकृति के प्रति उनकी जिज्ञासा ने उनके काव्य-व्यक्तित्व को न केवल निखार दिया है; बल्कि स्वयं में वे एक सुलझे हुए व्यक्ति के रूप में संस्मरण में उपस्थित होते हैं. उनकी यह विशेषता रही है कि दंभी और घमंडी व्यक्ति भी उनके सामने पड़ते ही अपने आप को असहाय पाता है. व्यक्ति अपनी है हठधर्मिता छोड़कर जन-सहभागिता में अपनी भूमिका का निर्वहन करने लगता है.

दूसरे प्रमुख पात्र के रूप में स्वयं लेखक हैं अर्थात् मृदुला गर्ग. संस्मरण में वे एक युवा-लेखिका के रूप में प्रस्तुत होती हैं. मृदुला गर्ग पेशे से अर्थशास्त्र में प्राध्यापक हैं; किंतु उनका लगाव साहित्य से ज्यादा है. यही कारण है कि साहित्य-जगत् को एक-

से-बढ़कर एक नायाब रचना दे पाने में वे समर्थ हुई हैं. मृदुला गर्ग अज्ञेय के विशाल व्यक्तित्व से प्रभावित हैं. उनकी तुलना वे सूर्य के प्रकाश पुंजों से करती हैं. साथ ही मृदुला गर्ग यह स्वीकार करती हैं कि अज्ञेय का व्यक्तित्व असाधारण किस्म का है. अज्ञेय के सामने पहुँचा व्यक्तिअपनी ही बातों से पराजित होकर नतमस्तक हो जाता है.

मृदुला गर्ग जहाँ एक ओर संस्मरण में अज्ञेय के रचना-धर्म, प्रकृति-प्रेम और औदात्य गुणों (इसके अनेक अर्थ हैं- 1) *विचार की महत्ता* 2) *भाव की तीव्रता* 3) *अलंकार का समुचित प्रयोग* 4) *उत्कृष्ट भाषा* 5) *रचना की गरिमा.) की बखान करती हैं, वहीं वर्तमान साहित्यकारों की मनःस्थिति का भी वर्णन करती हैं. उनका मानना है कि आज का साहित्यकार प्रगतिवाद जैसी विचारधारा को सिर पर रखकर व्यक्ति की भावना से इतर विचार को आधार बनाकर रचना कर रहा है. उसकी रचना कथनी-करनी के तत्त्व को परिपुष्ट कर पाने में असमर्थ हैं.*

मंजुल भगत और बी.पी. जैन ये दोनों पात्र संस्मरण को गति और वैचारिक रूप से मजबूत बनाते हैं. मंजुल भगत अपनी कहानी-संग्रह 'गुलमोहर के गुच्छे' पर चर्चा के लिए अज्ञेय को पिता जी के माध्यम से बुलाना चाहती हैं; जबकि पिता जी दोनों बेटियों को रचनात्मक-स्तर पर और भी मजबूत होने की सलाह देते हैं. साथ ही वे यह भी कहते हैं कि व्यक्ति की सफलता उनके कर्मों में निहित है. माता-पिता बच्चों को चलना तो सिखा देते हैं, लेकिन मंजिल उसे स्वयं पानी होती है. एक पिता की सार्थकता तब है, जब वह अपने बच्चों के पिता के रूप में जाना जाए. यह वैचारिक-दृष्टि बी.पी. जैन अपने दोनों बेटियों को दे पाने में समर्थ होते हैं.

- ***बोध प्रश्न***

1. ***सही जोड़े मिलाइए***

(A) *मृदुला गर्ग*	*(अ) गुलमोहर के गुच्छे की रचनाकार*
(B) *मंजुल भगत*	*(ब) अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका*
(C) *विशाल व्यक्तित्व*	*(क) अज्ञेय*
(D) *मृदुला गर्ग के पिता*	*(ड) बी.पी. जैन*

2. *संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' का केंद्रीय पात्र किसे कहा जा सकता है?*
3. *प्रस्तुत संस्मरण में किसका चरित्र उसकी रचना के अनूपरुप है?*
4. *प्रस्तुत संस्मरण में कुल कितने पात्र हैं?*

परिवेश

'परिवेश' शब्द को दूसरे अर्थ में देशकाल और वातावरण के नाम से भी जाना जाता है. 'देश' का अर्थ है- 'संस्थान' और 'काल' यानी 'समय' तथा 'वातावरण' किसी

रचना की परिस्थिति से है. चूँकि संस्मरण व्यक्ति के आंतरिक भावों का प्रगटीकरण है; इसलिए संस्मरण में परिवेश की विशेष भूमिका होती है.

संस्मरण में मंजुल भगत की कहानी संग्रह 'गुल्मोहर के गुच्छे' पर चर्चा के लिए सप्रू हाउस, दिल्ली को स्थान के रूप में चुना जाता है. संबंधित पुस्तक पर चर्चा के लिए मुख्य अतिथि अज्ञेय हैं. अज्ञेय की उपस्थिति संस्मरण के परिवेश को गति प्रदान करता है. मृदुला गर्ग स्वयं अज्ञेय के रचना-कौशल से प्रभावित होती हैं और उन्हें एक आदर्श व्यक्ति के रूप में चित्रित करती हैं.

इस संस्मरण की एक खूबी है कि यह मात्र एक ही विषय या विचार पर केंद्रित न होकर बल्कि विविध मुखी है. जैसे- प्रस्तुत संस्मरण में मंजुल भगत की किताब पर चर्चा से शुरू होकर पिता की वैचारिकता, अज्ञेय का विशाल रचना-व्यक्तित्व, वर्तमान साहित्यकारों की स्थिति और रचनाकार का अज्ञेय के प्रति नतमस्तक होना आदि परिवेश को चित्रित किया गया है.

स्थान, काल और घटना की निरंतरता ही संस्मरण को गति प्रदान करते हैं. इस दृष्टि से प्रस्तुत संस्मरण में उपर्युक्त तीनों का ही (स्थान, काल और घटना) ठीक ढंग से निर्वहन हुआ है.

- ***बोध प्रश्न***

नीचे लिखे वाक्य सही हैं अथवा गलत बताएँ

1 स्थान, काल और घटना प्रवेश का अभिन्न अंग है.

2 प्रस्तुत संस्मरण में परिवेश के अंगों का निर्वहन नहीं किया गया है.

3 प्रस्तुत संस्मरण में मृदुला गर्ग की मुलाकात अज्ञेय से सप्रू हाउस, दिल्ली में होती है.

4 प्रस्तुत संस्मरण में लेखिका ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से अज्ञेय के व्यक्तित्व को उभारा है.

- ***भाषा-शैली***

संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की भाषा स्वाभाविक, व्यावहारिक और बोधगम्य है. इसमें हिंदी खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है; क्योंकि संस्मरण में सभी पात्र पढ़े-लिखे संभ्रांत हैं. संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू-फारसी के भी शब्दों का प्रयोग हुआ है. लेखिका चूँकि स्वयं उच्च कोटि की रचनाकार एवं प्राध्यापिका हैं; इसलिए संस्मरण की भाषा में प्रांजलता दिखाई पड़ती है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत संस्मरण की भाषा आसानी से समझ में आने वाली प्रवाहमयी भाषा है, जो संस्मरण के लिए उपयुक्त है.

शैली का अर्थ है - अभिव्यक्ति का तरीका. अर्थात् जो लेखक कहना चाह रहा है, वह किस प्रकार कह रहा है? कभी लेखक अपनी बात सीधे रूप में कहता है तो कभी

भूमिका बनाकर. कहने का तात्पर्य यह है कि लेखक जब यथार्थवादी होता है तो वह अपनी बात यथार्थवादी तरीके से कहता है; किंतु वहीं जब वह रचना में भूमिका बाँधने की कोशिश करता है तो वह आलंकारिक-शैली में अपनी बात कहने लगता है.

इस दृष्टि से प्रस्तुत संस्मरण में लेखिका ने यथार्थवादी-दृष्टि अपनायी हैं. मंजुल भगत की रचना के बहाने लेखिका ने अज्ञेय की वैचारिकी, उनकी तटस्थता का वर्णन किया ही है, साथ ही पिता की ईमानदारी और नैतिक-चारित्र्य का प्रभाव किस रूप में मृदुला गर्ग पर पड़ता है - स्पष्टतः दिखाई पड़ता है. हालांकि संस्मरण एक व्यक्ति की कथा होती है, इसलिए नाटकों की भाँति इसकी शैली में बहुत ज्यादा परिवर्तन की गुंजाइश नहीं होती है.

इस तरह 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण में लेखिका ने सफलतापूर्वक विशिष्ट शैली को अपनाते हुए अज्ञेय के कवि-व्यक्तित्व के साथ-साथ स्वयं का सिंहावलोकन (पीछे से देखते हुए आगे बढ़ना. यहाँ यदि रचना के संदर्भ में बात की जाए तो मृदुला गर्ग ने प्रस्तुत संस्मरण में अज्ञेय और स्वयं के वैचारिक स्वरूप का मूल्यांकन करते हुए वर्तमान वस्तु-स्थिति को स्पष्ट किया है.) किया है.
आइये, अब जाने की हमने कितना समझा.

- ***बोध प्रश्न***

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर सही विकल्प का चयन करते हुए दीजिए

1. *संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' की भाषा है-*
   (क) कठिन और स्वाभाविक *(ख) खड़ी हिंदी बोली के साथ उर्दू-फारसी*
   (ग) संस्कृतनिष्ठ हिंदी *(घ) इनमें से कोई नहीं*
2. *एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण में इस भाषा के शब्द नहीं मिलते-*
   (क) हिंदी *(ख) उर्दू-फारसी*
   (ग) अंग्रेजी *(घ) मराठी*
3. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण की शैली है-*
   (क) यथार्थवादी *(ख) आलंकारिक*
   (ग) रूपात्मक *(घ) उपर्युक्तसभी*

- ***उद्देश्य***

प्रत्येक रचना में रचनाकार का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य निहित होता है. उद्देश्य रहित रचना निरर्थक होती है. संस्मरणकार संस्मरण-लेखन के माध्यम से आत्मतोष तो पाता ही है, इसके साथ ही उसका यह भी उद्देश्य रहता है कि संस्मरण में वर्णित घटनाएँ/विषय-वस्तु पाठकों को प्रेरणा देकर उनके जीवन में नयी स्फूर्ति का संचार करती रहे. इसे दूसरे अर्थ में भी समझ सकते हैं. संस्मरणकार संस्मरण में उन

तत्त्वों को रेखांकित करता है जो गद्य की अन्य विधाओं में नहीं आ पाती. व्यक्ति या घटना की निजता का संस्मरण में समावेश होता है; जो किन्हीं कारणों से पाठक-समुदाय की आँखों से ओझल रहता है.

प्रस्तुत संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' में संस्मरणकार मृदुला गर्ग ने अज्ञेय के निजी जीवन से जुड़े विषयों को चित्रित किया है. कपिला मलिक (वात्स्यायन) और अज्ञेय के संबंध-विच्छेद से लेकर उनकी पसंद-नापसंद, सादगी, वैचारिक-दृढ़ता, ईमानदारी और जैनेंद्र से उनका मनमुटाव आदि विषय को लेखिका ने संस्मरण में चित्रित किया है. भाव, कथ्य, विषय और भाषा-शैली आदि की दृष्टि से यह संस्मरण अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफल रहा है.

- ***बोध प्रश्न***

नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर हाँ अथवा नहीं में देना है

1 *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण व्यक्तिप्रधान रचना है.*

2 *संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' अज्ञेय के व्यक्तिगत रुचियों-अरुचियों को रेखांकित किया गया है.*

3 *संस्मरण 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो- विषय-वस्तु, भाव और भाषा-शिल्प की दृष्टि से सफल रहा है.*

12.9 *सार बिंदु*

प्रिय विद्यार्थी मित्रों! उम्मीद है कि आपने पूरी इकाई को पढ़कर अच्छी तरह से समझ लिया होगा. अब आप इकाई के प्रत्येक उप-शीर्षक से उसकी महत्त्वपूर्ण बातें एक जगह अवश्य लिखें जिससे इस इकाई को निष्कर्ष रूप में याद रखने में आपको आसानी होगी. हम भी यही काम करने जा रहे हैं. आप स्वयं द्वारा बनायी गयी सूचि से संबंधित सूचि से मिलान कीजिए और देखें कि हमसे कुछ बिंदु छूट तो नहीं गया है.

- *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण की लेखिका मृदुला गर्ग जी एक सजग, संवेदनशील, प्रकृति-प्रेमी, साहित्यकार, शिक्षक एवं समाजसेवी हैं.*
- *साठोत्तरी-पीढ़ी के महिला कथाकारों में सम्मिलित मृदुला गर्ग कथा साहित्य के अलावा संस्मरण में अपनी अमिट छाप छोड़ने में कामयाब रही हैं.*
- *कथानक के प्रवाह के मुख्यतः तीन चरण होते हैं-* 01. *प्रारंभ* 02. *विकास* 03. *चरमोत्कर्ष. 'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' में संस्मरण के तीनों चरणों का निर्वहन हुआ है.*
- *इस संस्मरण में कुल चार पात्र हैं. दो मुख्य (मृदुला गर्ग तथा अज्ञेय) और दो गौण (मंजुल भगत एवं बी.पी. जैन) पात्र हैं.*
- *संस्मरण में मंजुल भगत की पुस्तक पर चर्चा से प्रारंभ होकर मृदुला गर्ग जी का अज्ञेय के व्यक्तित्व से प्रभावित होने तक के विषयों को रेखांकित किया गया है.*

- *संस्मरण की भाषा सहज, स्वाभाविक और व्यावहारिक है.*
- *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' में संस्मरणकार ने यथार्थवादी शैली का निर्वहन किया है.*
- *प्रस्तुत संस्मरण में मृदुला गर्ग जी ने अज्ञेय के रचना-व्यक्तित्व के बहाने तत्कालीन साहित्य-लेखकों की रचनाधर्मिता पर कटाक्ष (व्यंग्य) की हैं.*
- *प्रस्तुत संस्मरण में मृदुला गर्ग जी ने नैतिकता, आदर्श और मानवीय-मूल्य को सर्वोपरि रखा है.*
- *प्रस्तुत रचना संस्मरण विधा की सारी खूबियों को अपने में समेटे है- जो तात्विक-दृष्टि से सफल है.*

12.10 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए***

1. *मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए.*
2. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण का वर्ण्य - विषय लिखते हुए प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व को संक्षिप्त रूप में लिखिए.*
3. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' संस्मरण की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए.*

- ***निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए***

1. *मृदुला गर्ग*
2. *अज्ञेय का रचना-व्यक्तित्व*
3. *बी.पी. जैन*
4. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' वर्ण्य-विषय*
5. *'एक छाया चेहरे से गुजरी जैसे पत्ता खड़का हो' भाषा-शैली*
6. *संस्मरण के प्रमुख तत्त्व*

12.11 *उपयोगी पाठ्य-सामग्री*

1. https://shorturl.at/bMQV4
2. https://shorturl.at/mNO15
3. https://shorturl.at/pBFW2
4. https://rb.gy/7arul
5. *विविधा, डॉ. श्रद्धानंद, अमृत प्रकाशन, वाराणसी,* 2014.

इकाई 13 यात्रावृत्त - 'चीड़ो पर चाँदनी' - निर्मल वर्मा

रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 यात्रावृत्तांत अर्थ, स्वरूप एवं हिंदी साहित्य में उसका विकास

13.4 लेखक परिचय

13.4.1 जीवन परिचय

13.4.2 कृतित्व परिचय

13.5 'चीड़ो पर चाँदनी' – यात्रावृत्त का परिचय और वर्णन

13.6 सार बिंदु

13.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

13.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

13.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 13 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- *हिंदी साहित्य की गद्य विधा यात्रावृत्त का अर्थ और स्वरुप की जानकारी प्राप्त करेंगे.*
- *हिंदी साहित्य में यात्रावृत्त के विकास को जानेंगे.*
- *निर्मल वर्मा जी का जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.*
- *निर्मल वर्मा जी का यात्रावृत्त 'चीड़ों पर चाँदनी' का वर्णन करेंगे.*

13.2 प्रस्तावना

हिन्दी गद्य साहित्य का विकास आधुनिक काल से माना जाता है. आधुनिक काल की शुरुआत सन् 1850 से मानी जाती है जो भारतेंदु का जन्म वर्ष है. हिंदी गद्य साहित्य की प्रमुख एवं प्रचलित विधाओं के विकास के साथ ही गौण समझी जाने वाली अन्य गद्य विधाएँ जैसे जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र आदि का विकास भी आधुनिक काल के भारतेंदु युग से माना जाता है. इस युग में न केवल हिंदी गद्य का स्वरूप स्थिर हुआ, वरन् उसके शुद्ध साहित्योपयोगी और व्यवहार उपयोगी रूपों की पूर्ण प्रतिष्ठा भी हुई. हिन्दी साहित्य में अन्य विधाओं की भांति यात्रावृत्तान्त एक आधुनिक गद्य विधा के रूप में स्वीकृत है. हिंदी में यात्रा वृत्तान्त लिखने की परम्परा का सूत्रपात भी भारतेन्दु युग से माना जाता है. यात्रावृत्तांत साहित्य की वह विधा है जिसमें लेखन किसी स्थान की यात्रा का वर्णन करता है,यह वर्णन अत्यन्त रोचक होता है. यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है. हम अगर मानव इतिहास पर नजर डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है. अपने जीवन काल में हर आदमी कभी न कभी कोई न कोई यात्रा

अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं. यात्रा साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करता है. इन स्थानों की प्राकृतिक विशिष्टता, सामाजिक संरचना, समाज के विविध वर्गों के सह-संबंध, वहाँ की भाषा, संस्कृति और सोच की जानकारी भी इस साहित्य से प्राप्त होती है.

13.3 यात्रावृत्तांत अर्थ, स्वरूप एवं हिंदी साहित्य में उसका विकास

यात्रा साहित्य को यात्रा-वृत्तांत या यात्रा संस्मरण इत्यादि नामों से भी जाना जाता है. जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों का वर्णन करता है तो उसे यात्रावृत्त या यात्रा साहित्य कहते हैं. लेखक वर्ण्य विषय का वर्णन आत्मीयता तथा निजता के साथ करता है जिस विषय का वह वर्णन करता है उसके साथ उसका जुड़ाव होता है तथा उसके जीवन-संदर्भ भी उसमें आते हैं. यात्रा शब्द का अर्थ है जाना, गति, सफर. एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की क्रिया अर्थात सफर. डॉ. हरदेव बाहरी हिंदी शब्द कोश में इसका अर्थ बताते हैं – एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, प्रस्थान या प्रयाण, यात्रा व्यवहार. जैनाचार्य श्री विजयधर्म सूरि की दृष्टि में यात्रा शब्द गमन या प्रस्थान आदि का बोध करता है. वे उल्लेख करते हैं – 'प्रस्थीयते स्थानाच्चलते'. डॉ. हरदेव बाहरी ने संस्कृत हिंदी शब्दकोश में यात्रा शब्द का प्रयोग अटन, देशाटन, पर्यटन, विचरण, भ्रमण, सफर, अतिक्रमण तथा गति के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है. यायावरी भी यात्रा के पर्याय रूप में प्रयुक्त होता है. सदैव घूमने-फिरने वाले को साधारणतः यायावर कहा जाता है और क्रिया को यायावरी. मुसाफिरी भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है. वृतान्त का आशय है – एक वृत्त का अंत. यात्रा में एक परिवृत्त की दुनिया गोल है अर्थात हम घूम-फिर कर एक वृत्त पूरा करते हैं. इस प्रकार दुनिया का चक्कर पूरा करना-यात्रावृत्त है. अंग्रेजी में टूरिज्म यात्रा का पर्याय है. यात्रावृत्त आकल्पनिक गद्य विधा है. इसमें यात्राकार ने यात्रा के दौरान सामना की गई परिस्थितियों के यथार्थ अंकन का प्रयास करता है. हालाँकि कलात्मक अभिव्यक्ति होने के कारण कल्पना से नकारा नहीं जा सकता. कल्पना का संयोग उसे रोचक बना देता है. लेखक की भावनाएँ उस परिवेश और वहाँ के मनुष्य की जीवनगत संवेदना को आत्मसात करती है, वह यात्रावृत्त मानो वहाँ का मानवीय इतिहास हो. जिसमें घटनाओं के साथ-साथ व्यक्तिचेतना, संस्कार, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक और आर्थिक क्रियाएँ, राजनीतिक और भौगोलिक स्थितियाँ, विचार तथा धारणाएँ समाहित होती हैं.

- **हिन्दी साहित्य में यात्रा वृत्तांत**

हिंदी साहित्य की सभी गद्य विधाओं की भाँति यात्रावृत्तांत विधा का विकास भी भारतेंदु युग से ही माना जाता है. यात्रावृत्त-लेखन की दिशा में भी भारतेंदु युग के लेखकों ने योग दिया है. भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने यात्रा विषयक अनेक रचनाएँ लिखी, जो 'कविवचनसुधा' के 1871 *से* 1879 *तक के अंकों में समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं. इसमें 'सरयू-पार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' और 'हरिद्वार की यात्रा' उल्लेखनीय हैं. बालकृष्णकृष्ण ने 'गयायात्रा' और प्रतापनारायण मिश्र ने 'विलायत यात्रा' नामक रचनाएँ लिखी जो, क्रमशः 'हिन्दी-प्रदीप' के मार्च,* 1894 *तथा नवंबर* 1897 *के अंकों ने अंकों में प्रकाशित हुई हैं. भारतेंदु-युग में लिखी गयी यात्रावृत्त संबंधी रचनाओं के अध्ययन अनुशीलन के अनंतर यह*

कहना उचित होगा कि विदेश-यात्रा संबंधी वर्णनों में लंदन को प्रमुखता मिली है, तो स्वदेश यात्रा संबंधी वर्णनों में तीर्थस्थानों को.

- **द्विवेदी युगीन यात्रासाहित्य**

यात्रावृत्त के विकास की दृष्टि से यह युग महत्वपूर्ण है. तत्कालीन पत्रिकाओं में अनेक यात्रावृत्तांत प्रकाशित हुए. उदाहरणस्वरुप स्वामी मंगलानंद की 'मॉरीशस यात्रा', श्रीधर पाठक की 'देहरादून-शिमला यात्रा', लोचनप्रसाद पांडेय द्वारा लिखी गयी 'हमारी यात्रा' का उल्लेख किया जा सकता है. पुस्तकाकार रूप में भी यात्रावृत्त संबंधी अनेक ग्रंथ इस युग में प्रकाशित हुए. इस दृष्टि से देवीप्रसाद खत्री की कृति बद्रिकाश्रम यात्रा, गोपालराम गहमरी की कृति लंकायात्रा का विवरण, आदि यात्रावृत्त संबंधी साहित्य है. स्वामी सत्यदेव परिव्राजक इस युग के उल्लेखनीय यात्रावृत्त लेखक है. उनकी तीन कृतियाँ उपलब्ध होती है- अमेरिका दिग्दर्शन, मेरी कैलासयात्रा, अमरीका भ्रमण. समग्रतः कहा जा सकता है कि द्विवेदी-युग में लिखी गयी यात्रावृत्त संबंधी रचनाओं में न केवल पहले से चली आती हुई परंपरा को जीवित बनाये रखा, अपितु भावी विकास की दिशा में भी मूल्यवान योग दिया.

- **छायावाद युगीन यात्रावृत्त**

द्विवेदी युग की भांति इस युग में भी यात्रावृत्त लेखन का पर्याप्त प्रचलन रहा. सर्वश्री रामनारायण मिश्र ने 'यूरोप यात्रा के छह मास', गणेशनारायण सोमानी कृत 'मेरी यूरोप यात्रा' आदि ने यात्रा साहित्य को यथाशक्ति समृद्ध किया. यात्रावृत्त लेखन में राहुल सांकृत्यायन का अन्यतम स्थान है. इस युग में उन्होंने 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'मेरी तिब्बत-यात्रा', शीर्षक ग्रंथों की रचना की. सेठ गोविंददास ने भी यात्रावृत्त-साहित्य के विकास में योग दिया है. उनके द्वारा रचित 'हमारा प्रधान उपनिवेश' में दक्षिण अफ्रीका का सामाजिक राजनीतिक स्थितियों का वर्णन है. विषयानुरूप सुबोध भाषा तथा पत्र, डायरी, निबंध आदि विविध शैलियों का प्रयोग इस युग के यात्रा साहित्य की शिल्पगत विशेषताएँ हैं.

- **छायावादोत्तर यात्रावृत्त**

छायावादोत्तर युग हिंदी गद्य की सर्वांगीण उन्नति का युग है. विषय वैविध्य, रचनाशिल्प तथा परिमाण इन तीनों दृष्टियों से छायावादोत्तर युग के यात्रावृत्त अपने सभी पूर्ववर्ती युगों से अधिक संपन्न है. स्वतंत्रता प्राप्ति के फलस्वरूप भारत के विश्वभर के देशों के साथ राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंध जुड़े. छायावादोत्तर काल के यात्रावृत्त साहित्य में जिन लेखकों का मुख्य योगदान रहा, उनमें से कुछ ने छायावाद युग में भी यात्रावृत्त लिखे थे. इस दृष्टि में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की कृति 'मेरी पाँचवीं जर्मन यात्रा', कनैयालाल मिश्र आर्योपदेशक की कृति 'मेरी इराक यात्रा' आदि ने पाठकों के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है. इस युग में रूस से संबंधित यात्रावृत्तों की संख्या अन्य देशों की अपेक्षा कुछ अधिक ही है. इस वर्ग की जिन रचनाओं ने पाठकों का मन अपनी और आकर्षित कर लिया उनमें डॉक्टर सत्यनारायण की 'रोमांचक रूस', महेश प्रसाद श्रीवास्तव की 'दिल्ली से मॉस्को', राहुल सांकृत्यायन की 'रूस में पच्चीस रात', डॉ. नगेन्द्र की 'तंत्रालोक में यंत्रालोक तक' विशेष उल्लेखनीय हैं.

इस युग में ऐसे यात्रावृत्त भी पर्याप्त मात्रा में लिखे गये हैं, जिनमें किसी एक देश से संबद्ध यात्राओं का विवरण देने के स्थान पर एकाधिक देशों से संबद्ध यात्रावृत्तों को एक

*स्थान पर संकलित कर दिया है. इस दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं – 'राहुल यात्रावली', 'यात्रा के पन्ने', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में', 'पैरों में पंख बाँध कर' तथा 'उड़ते चलो, उड़ते चलो'. रामवृक्ष बेनीपुरी ने डायरी शैली के माध्यम से इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, इटली आदि के विवरण प्रस्तुत किये हैं. विष्णु प्रभाकर ने 'हँसते निर्झर : दहकती भट्टी' में देश विदेश से संबंधिक इक्कीस यात्रावृत्तों को संकलित किया है. स्वदेश यात्रा संबंधी यात्रावृत्त भी पर्याप्त संख्या में प्रकाशित हुए हैं. कश्मीर में कन्याकुमारी तक के वैविध्य-भरे स्थानों से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं. विष्णु प्रभाकर ने ज्योतिपुंज हिमालय (*1982*) में हिमालय पर्वत की अपनी तीन यात्राओं का तिथिक्रम वर्णन किया है. राहुल सांकृत्यायन की स्वदेश यात्रा विषयक प्रकाशित कृतियां हैं – 'किन्नर देश में', 'राहुल यात्रावलि' तथा 'दार्जिलिंग परिचय'. अज्ञेय कृत 'अरे यायावर रहेगा याद' (*1953*) में अज्ञेय ने असम से लेकर पश्चिमी सीमा प्रांत तक की गयी यात्रा का वर्णन किया है. यात्रावृत्तों को सृजनात्मक उपलब्धि का रूप देने वाली रचनाओं में मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक' (*1953*) का उल्लेखनीय स्थान है. अज्ञेय के समान रघुवंश ने 'हरीघाटी में' सन्* 1949 *में की गयी अपनी हजारीबाग यात्रा का सपाट वर्णन कर एक महत्वपूर्ण सृजनात्मक उपलब्धि बन गयी है. निर्मल वर्मा अज्ञेय ने क्रमशः 'चीडों पर चाँदनी' और 'एक बूंद सहसा उछली' महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत हैं. अब यात्रावृत्तों की बुनावट में पहले की अपेक्षा बहुत फर्क आ गया है. यह परिवर्तन कथ्य में नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की दिशा में भी आया है.*

- **बोध प्रश्न**

सही विकल्प का चयन कीजिए

1. *यात्रा शब्द का पर्याय नहीं है.*
   - *(अ) देशाटन* *(ब) सफर*
   - *(क) स्मरण* *(ड) पर्यटन*
2. *भारतेंदु हरिश्चन्द्र का यात्रावृत्त कौन सा है ?*
   - *(अ) हरिद्वार की यात्रा* *(ब) युरोप यात्रा*
   - *(क) जीवन यात्रा* *(ड) मोरीशस यात्रा*
3. *बालकृष्ण भट्ट किस युग के लेखक हैं ?*
   - *(अ) भारतेंदु युग* *(ब) द्विवेदी युग*
   - *(क) छायावाद युग* *(ड) रीतिकाल*
4. *कौन-सी रचना निर्मल वर्मा की नहीं है ?*
   - *(अ) वे दिन* *(ब) परिंदे*
   - *(क) एक चिथड़ा सुख* *(ड) एक बूंद सहसा उछली*
5. *'आखिरी चट्टान तक' के लेखक कौन हैं ?*
   - *(अ) प्रेमचंद* *(ब) महादेवी वर्मा*
   - *(क) निराला* *(ड) मोहन राकेश*

13.4 लेखक परिचय

13.4.1 जीवन परिचय

निर्मल वर्मा जी का जन्म 3 *अप्रैल,* 1929 *को शिमला में हुआ था. दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. करने का बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया*

इन्हें वर्ष 1959 से 1972 तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था और इस दौरान उन्होंने लगभग समूचे यूरोप की यात्रा करके वहाँ भी भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का नजदीक से परिचय प्राप्त किया था. 1959 से प्राग के प्राच्य विद्या संस्थान में सात वर्ष तक रहे. उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स ऑफ इंडिया के लिए सांस्कृतिक रिपोर्टींग की. 1972 में स्वदेश लौटे. 1977 में आयोवा विश्वविद्यालय (अमरीका) के इंटरनेशनल राईटर्स प्रोग्राम में हिस्सेदारी की. उनकी कहानी माया दर्पण पर फिल्म बनी जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ. वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज (शिमला) के फेलो रहे और मिथक-चेतना पर कार्य किया, निराला सृजनपीठ भोपाल और यशपाल सृजनपीठ (शिमला) के अध्यक्ष रहे. 1988 में इंगलैंड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह द वर्ल्ड एल्सव्हेलर प्रकाशित. इसी समय बीबीसी द्वारा उनपर डाक्युमेंट्री फिल्म प्रसारित हुई थी. फेफड़ों की बीमारी से जूझने बाद 73 वर्ष की अवस्था में अक्टूबर, 2005 को दिल्ली में उनका निधन हो गया.

13.4.2 कृतित्व परिचय

अपनी भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए जाने जाने वाले निर्मल वर्मा को आधुनिक हिंदी कहानी के सबसे प्रतिष्ठित नामों में गिना जाता रहा है. उनके लेखन की शैली सबसे अलग और पूरी तरह निजी थी. रामस्वरूप चतुर्वेदी जी लिखते हैं – निर्मल वर्मा के गद्य में कहानी, निबन्ध, यात्रावृत्त और डायरी की समस्त विधाएँ अपना अलगाव छोड़कर अपनी चिन्तन क्षमता और सृजन-प्रक्रिया में समरस हो जाती है – आधुनिक समाज में गद्य से जो विविध अपेक्षाएँ की जाती है, वे यहाँ सब एकबारगी पूरी हो जाती है. निर्मल जी का जन्म पहाड़ों पर हुआ था जिसके कारण पहाड़ों से उन्हें विशेष लगाव था. निर्मल वर्माजी नयी कहानी आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं. इनके उपन्यास में 'वे दिन', 'लालटीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'रात का रिपोर्टर', 'अंतिम अरण्य'. उनके कहानी संग्रह हैं - 'परिंदे', 'जलती झाड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'बीच बहस में', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'कव्वे और काला पानी', 'सूखा तथा अन्य कहानियाँ', 'ग्यारह लंबी कहानियाँ', 'एक दिन का मेहमान', 'संपूर्ण कहानियाँ', 'कुत्ते की मौत' (कहानी). डायरी व यात्रा संस्मरण 'चीडों पर चाँदनी', 'हर बारिश में', 'धूँध से उठती धुन', रिपोर्ताज-'प्रयाग एक स्वप्न', निबंध – 'शब्द और स्मृति', 'संस्कृति समय और भारतीय' उपन्यास, 'कला मिथक और यथार्थ', 'परंपरा और इतिहास बोध', 'हमारे समय का नायक', 'हर बारिश में कला का जोखिम', 'ढलान से उतरते हुए', 'दूसरे शब्दों में' आदि. नाटक – 'तीन एकान्त', 'वीक एण्ड', 'धूप का एक टुकड़ा', 'डेढ़ इंच पर' आदि रचनाएँ लिखकर हिंदी साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

- **सम्मान और पुरस्कार**

  - *1999 में साहित्य में सम्पूर्ण योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया.*
  - *2002 में भारत सरकार की ओर से साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्मभूषण दिया गया.*
  - *निर्मल वर्मा को मूर्तिदेवी पुरस्कार (1995)*
  - *साहित्य अकादमी पुरस्कार (1985) ('कौवे और काला पानी' कहानी पर)*
  - *उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है.*

• **बोध प्रश्न**

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1 *‘हमारी यात्रा’ यह...................... की रचना है.*

2 *‘पैरों में पंख बांध कर’ यह...................... विधा की रचना है.*

3 *अज्ञेय का प्रसिद्ध यात्रावृत्त...................... है.*

4 *निर्मल वर्मा जी जन्म...................... को हुआ था.*

5 *‘परिंदे’ यह......................की रचना है.*

13.5 ‘चीड़ो पर चाँदनी’ – यात्रावृत्त का परिचय और वर्णन

‘चीड़ो पर चाँदनी’ – यात्रावृत्त का परिचय

‘चीड़ो पर चाँदनी’ निर्मल वर्मा की पहली यात्रा- संस्मरण रचना है. इसका पहला संस्करण सन् 1964 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ कलकत्ता से प्रकाशित हुआ. इनमें निर्मल वर्मा ने खुद की आँख से दुनिया को और दुनिया की आँखों से खुद को देखने-परखने खोजने का प्रयास किया है. निर्मल वर्मा ने यात्राएँ जितनी बाहर की उतनी ही भीतर भी की हैं. ‘चीड़ो पर चाँदनी’ यात्रा साहित्य में भारत तथा यूरोप के सन्दर्भों को बहुत ही सामंजस्य पूर्ण ढंग से अध्ययन के उपरांत यूरोप में खास कर आइसलैंड के महत्व को चरितार्थ किया गया है. आइसलैंड में पर्यावरण के प्रति सतर्कता पुस्तक पढ़ने के प्रति प्रेम, अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा एवं अपने कर्तव्यों के प्रति सजगता, इस देश में असामाजिक तत्वों का उन्मूलन, आइसलैंड का स्वतंत्रता संघर्ष जैसे अनेक मुद्दों को विस्तार से रेखांकित करने की कोशिश की गयी है. ‘चीड़ों पर चाँदनी’ संग्रह को लेखक ने तीन उप शीर्षकों में विभाजित किया है. प्रथम ‘उत्तरी रोशनियों की ओर’, द्वितीय ‘चीड़ो पर चाँदनी’ तथा तृतीय ‘देहरी के बाहर’. द्वितीय उपशीर्षक – ‘चीड़ो पर चाँदनी’ में पाँच यात्रा संस्मरण है – (1) लिदीत्से: एक संस्मरण (2) बर्तरम्का एक शाम (3) पेरिस : एक स्टिल लाइफ (4) वियना (5) चीड़ो पर चाँदनी. इनमें से चार यूरोपीय परिवेश से जुड़े यात्रा वृत्त है और अन्तिम ‘चीड़ो पर चाँदनी’ भारत से.

निर्मल वर्मा दुनिया के शहरों में सैर करते हुए जब शहरों की दुनिया पर निगाह डालते हैं तो सहज ही कोई लेखक या उसकी कोई कृति या उसकी कुछ पंक्तियाँ उनकी आँखों में तैरने लगती है. वे आइसलैंड जा रहे हैं, किन्तु बराबर प्राग के बारे में सोच रहे हैं और उन्हें ताल्सतॉय का कथन याद आता है – वॉर एण्ड पीस की कुछ पंक्तियाँ – “जब हम किसी सुदूर यात्रा पर जाते हैं, आधी यात्रा पर पीछे छूटे हुए शहर की स्मृतियाँ मंडराती है, केवल आधा फासला पार करने के बाद ही हम उस स्थान के बारे में सोच पाते हैं जहाँ हम जा रहे हैं.” निर्मल वर्मा के लिए बर्लिन आने का सबसे बड़ा आकर्षण बर्तोल्त ब्रेख्त और उनके नाटक हैं. उनकी एक पुरानी दबी साध थी बर्लिन-एन्सेम्बल में ब्रेख्त का नाटक देखने की. बर्लिन छोड़कर जाते हुए निर्मल जी को क्रिस्टोफर ईथरहुड के उपन्यास गुडबाइ टू बर्लिन की याद आती है. यह युद्ध से पहले की रचना है जबकि युद्ध के बाद बर्लिन बहुत-कुछ बदल गया है. कोपनहेगेन के रेस्तरां, नाईट-क्लब, रूलेट निर्मल जी की स्मृति में दॉस्टॉयवस्की के हीरो को उभारते हैं. निर्मल वर्मा लिखते हैं कि कोपनहेगेन को चिपचिपाते आत्मसंतोष और सतहीपन की दलदल से बाहर निकालने की कोशिश की थी एक अन्य डेनिस ने, जिसे कोपनहेगन के निवासी आखिर तक सिरफिरा समझते रहे. नाम था उनका किर्केगाद. कल्पना नहीं की जा

सकती कि कोपनगेहन के अलावा किर्केगाद किसी और शहर में हो सकते थे, उसी तरह जैसे त्रॉग के बिना काफ्का की कल्पना कर कुछ अजीब सा लगता है. लेकिन कोपनहेगन के संग ऐण्डर्सन का नाम जोड़ने में निर्मल वर्मा को हमेशा दिक़्क़त महसूस होती रही है. जिन्होंने अपनी विश्वविख्यात परिकथाएँ कोपनहेगन में ही लिखी थी. कोपनहेगन की कला गैलरियों में घूमते हुए निर्मल वर्मा को कहीं पढ़ी या सुनी बात याद आई कि एक बार दिलकॉप ने जार्ज साँद और शोपां का चित्र बनाया था. एक दिन जब जार्ज सॉद दिलक्रॉप से मिलने गयी और उनके स्टुडियो में अचानक उनकी नज़र चित्र पर पड़ गयी. न जाने क्यों शोपां के संग अपने चित्र को देखकर उन्हें बुरी तरह झुँझलाहट हुई और गुस्से में उन्होंने चित्र को दो हिस्सों में फाड़ दिया. एक में उनका अपना चित्र था, दूसरे में शोपां; का कहते हैं इस चित्र का एक भाग ड्रेस्डन की आर्ट गैलेरी में है और दूसरा कोपनहेगन में. ऐडिनबोरो शहर के प्रिन्सेज स्ट्रीट पर चलते हुए पहाड़ी लोगों से सहज और ख़ुशमिज़ाज आम स्कॉटिश लोगों को सड़क के बीचोबीच ठठाकर हँसते देख निर्मल वर्मा को अचानक राबर्ट बन्स की याद हो आई. प्रिन्सेज स्ट्रीट के सामने ही एक छोटे-से बाग में बर्न्स का स्मारक है. एजिनबोरी की आर्ट गैलरी के बारे में सोचते हुए निर्मल वर्मा के आँखों के सामने तितियान के चित्र घूम जाते हैं. पहली बार आइफल-टावर के सामने फैली पेरिस की छतों को देखकर निर्मल वर्मा को अपने पेरिस की याद आती है जिसे उन्हें बाल्जक के उपन्यासों से और रजिस्ता की कविताओं से चुराकर ख़ास अपनी नीजी अल्बम में चिपका लिया था.

आइसलैण्ड में जाड़े के दिनों में भी ज्यादा बर्फ नहीं गिरने की सूचना निर्मल वर्मा को अंग्रेजी कवि ऑडेन का वह सुझाव याद आया की आइसलैण्ड का नाम ग्रीनलैण्ड और ग्रीनलैण्ड का नाम आइसलैण्ड कर देना चाहिए. पेरिस में शाम को शींजलीजे के सम्भ्रान्त रेस्तरां में बैठे निर्मल वर्मा का मन प्रथम युद्ध से पहले के पेरिस की स्मृतियों में भटकता रहा और अब विलुप्त हो चुके रोदुण्डा नामक उस रेस्तरां की याद आई, जहाँ इल्या इहरनबुर्ग पहले-पहल मोदिल्यानी, आपल्योनोर और पिकासो से मिले थे. पेरिस में ही निर्मल जी को अलक्सेरा ताल्सतॉय की वह बात याद हो जाती है, जो अपनी मृत्यु के चंद महीने पहले ताल्सतॉय ने इहरनबुर्ग से कही थी... मेरी आखरी इच्छा यही है कि मैं पेरिस चला जाऊँ. सेज के किनारे एक मकान किराए पर ले लूं... अन्तिम उपन्यास मैं वहीं लिखना चाहता हूँ. निर्मल वर्मा के अनुसार... क्या यह कभी संभव है कि हम ओखलो में घूमते रहें और अचानक गली के नुक्क्ड़ पर इब्सन के किसी पात्र से भेंट न हो जाए! युद्ध के संदर्भ भी इस यात्रा-संस्मरण में जगह-जगह आए हैं. सन् 1961 की गर्मियों में मध्य यूरोप में जर्मनी के बीच से गुजरते हुए निर्मल वर्मा को लगा कि युद्ध का जो समय सबके लिए, यहाँ के निवासियों के लिए, बीत गया है, वह मेरे लिए अभी तक जीवित है, प्रतीक्षारत है, और जब तक मैं उसे अन्य प्राणीयों की तरह भोग नहीं लूँगा, वह मुझसे छूटेगा नहीं. वे किसी जर्मन को देखते हैं तो उनके भीतर एक फिज़ूल बेमानी-सी बेचैनी होने लगती है. यह बेचैनी एक हद तक उस बेचैनी से मिलती है जो उन्हें बहुत पहले मान और काफका की कथाओं को पढ़ने से होती थी. इसी क्रम में निर्मल वर्मा को बर्तोल्त ब्रेख्त याद आते हैं, जो नात्सी सत्ता स्थापित हो जाने के बाद जर्मनी से बाहर चले गये. ब्रेख्त के नाटक टेटर एण्ड मिज़री ऑर्व थर्ड रायज़ में हिटलर जर्मनी का भयंकर वातावरण चित्रित होता है. लड़ाई को ख़त्म हुए मुदत बीती, किंतु उसके मिटे-बुझे घाव जहाँ-तहाँ उभर आते हैं. बर्लिन में चार दिन ठहरने के दौरान निर्मल वर्मा को महसूस हुआ कि शीत युद्ध की इतनी नंगी, बेलौस तस्वीर शायद यूरोप के किसी शहर में दिखायी नहीं देती. पूर्वी बर्लिन के चौराहों पर, स्टेशन की दीवारों पर अक्सर बड़ी-बड़ी सुर्खियों में चेतावनी के ये शब्द निर्मल वर्मा की आँखों को रोक लेते हैं. फ़ासिज्म, नेवर अगेन. शीत युद्ध

यूरोप की दैनिक चर्चा में किस तरह शामिल हो गया है, इसका अनुभव निर्मल वर्मा को लन्दन में हुआ. जब वे टॉमस कुक कम्पनी से प्राग का टिकट लेने गए. टिकट मांगने पर एक बहुत ही शालीन और भद्र अंगरेज बाबू ने निर्मल जी की ओर देखते हुए कहा...प्राग?.. बट डोण्ट यू नो, इट इज बिहाइण्ड कर्टेन? चेकोस्लोवाकिया लगभग सात वर्षों तक जर्मनी के अधीन रहा. प्राग में एक बुद्धिजीवी भारतीय सज्जन ने निर्मल वर्मा से काफी विस्मय प्रकट करते हुए कहा था कि... यद्यपि युद्ध को समाप्त हुए इतना लम्बा अरसा गुजर गया, किन्तु चेख लेखक अभी तक इसके पीछे पड़े हैं. इन भारतीय सज्जन की बात के प्रत्युत्तर में निर्मल वर्मा लिखते हैं कि... फ्रांसिज्म, युद्ध यातनागृह.... जब तक हमारे लिए यह शब्द महज शब्द ही रहेंगे, हम शायद तब कभी युद्धोत्तर यूरोप की मानसिक स्थिति को समझने में समर्थ नहीं हो सकते और उस सीमा तक इन देशों का युद्धोत्तर साहित्य भी हमारे लिए अजनबी बना रहेगा. युद्ध के बाद भी साहित्य या फिल्म में युद्ध की चर्चा के मुद्दे पर निर्मल वर्मा का मानना है कि वास्तव में किसी देश की सामाजिक व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन तत्काल ही उसकी संस्कृति और साहित्य की गति को नहीं बदल सकता. यूरोप युद्ध से इस कदर आक्रांत रहा कि यह जानकर प्रीतिकर आश्चर्य होता है कि आइसलैण्ड यूरोप में अकेला देश है, जिसकी अपनी कोई सेना नहीं है. निर्मल वर्मा आश्चर्यचकित है कि न टॉल्सतॉय ने न गांधीजी ने इस तथ्य की ओर कभी ध्यान दिया, हालांकि दोनों के जीवन काल में यह संघर्ष जारी था. इस अद्भुत स्वाधीनता संग्राम के बारे में निर्मल वर्मा ने लिखा है... उन्नीसवीं सदी में आइसलैण्ड के अनेक विद्वान और लेखक डेनमार्क जाते थे. अस्त्र-शस्त्रों के स्थान पर उनके हाथ में केवल कुछ काव्य-ग्रंथ और नीति विधान की पुस्तकें हुआ करती थी. निर्मल वर्मा आइसलैण्डी स्त्रियों को सही मानी में स्वाधीन स्त्री का दर्जा देते हैं. निर्मल वर्मा के अनुसार... पुरुष और स्त्री के बीच इतना सहज और ग्रंथीहीन संबंध शायद दूसरे देशों में अनैतिकता की पराकाष्ठा माने जाएँगे, किन्तु आइसलैण्ड में वे बहते पानी की तरह नैसर्गिक हैं... न कोई कृत्रिम अवरोध है और न मैलापन. यहाँ उल्लेखनीय तथ्य है कि जब एक आइसलैण्डी स्त्री माँ बनती है तो उसके मित्र और पड़ोसी उसे बधाई देने आते हैं... वह विवाहित है या नहीं... यह प्रश्न उन्हें कभी परेशान नहीं करता. आइसलैण्ड में अवैध बच्चों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक है, फिर भी निर्मल वर्मा आश्चर्यचकित है कि अवैध की कुण्ठा या अपराध भावना न ऐसे बच्चों में, न उनकी माताओं में दिखाई देती है. निर्मल वर्मा के शब्दों में... प्राचीन आईसलैण्डियों को यूनानियों की तरह देवी-देवताओं की कभी जरूरत महसूस नहीं हुई, अपने को वे नियति के सम्मुख अकेला पाते थे. आइसलैण्ड के पौराणिक सागा-ग्रंथों में देवी अथवा अतिमानवीय शक्तियों का कहीं उल्लेख नहीं मिलता. निर्मल जी के अनुसार... यह कहना शायद बहुत गलत न होगा कि सागा-ग्रंथों के अज्ञात लेखक शायद दुनिया के पहले अस्तित्ववादी थे. सार्त्र के कथन की आज के युग में कोई भी प्रतिगामी लेखक महान साहित्य की रचना नहीं कर सकता, का विरोध करते हुए लैक्सनेस कहते हैं कि अपने प्रतिगामी वारों के रहते भी इलियट और काम्यू ने महान् रचनाओं की सृष्टि की है. लैक्सनेस मानते हैं कि पहले और दूसरे विश्व युद्ध से पूर्व कई देशों में युद्ध के प्रति काफी उत्साह पाया जाता था. लेकिन आज राजनीतिज्ञ भी अणु-शस्त्रों की संहार शक्ति से डरते हैं. लैक्सनेस के विचार में आज भी प्रत्येक छोटे-बड़े देशों में राजनीतिज्ञों का ही बोलबाला है. आज के प्रचार युग में लेखकों की आवाज कोई विशेष महत्व या प्रभाव रखती है, इसमें लैक्सनेस को संदेह है. भारतीय नेताओं और भारतीय जनता के बीच लैक्सनेस को गहरा अन्तर दिखाई पड़ा. आधुनिक आइसलैण्डी मूर्तिकार आस्मुन्दुर स्वेन सॉन के लिए आधुनिकता वैसे ही सहज और अनिवार्य थी, जैसे हवा में सांस लेना. लोग उन्हें अत्याधुनिक समझते थे. लोग उनकी अमूर्त मूर्तियों को देखकर नाराज होते हैं किन्तु उनसे टेलीफोन और मूर्तियाँ दोनों ही मँगवाने का आग्रह करते हैं. इसी

क्रम में निर्मल वर्मा को पिकासो का एक वाक्य याद आता है... जो कलाकार आईने में देखे बिना अपनी तस्वीर नहीं बना सकता, वह भला आईने में देखकर ही अपनी स्वयं की तस्वीर बना सकेगा, इसकी क्या गारण्टी है? निर्मल वर्मा के अनुसार समकालीन शब्द आज काफी विकृत हो चुका है. टेरर एण्ड मिजरी ऑव थर्ड रायज देखते हुए निर्मल वर्मा पहली बार समकालीन शब्द से परिचित हो पाए. उनकी नजर में इस शब्द का कोई अर्थ है तो सिर्फ एक प्रयोग, जब आदमी के अस्तित्व की हर तरह एक नए स्तर पर अप्रत्याशित अर्थ ग्रहण कर लेती है. निर्मल वर्मा के अनुसार समकालीन होना, दूसरे शब्दों में अपने निजी घेरे के बाहर उन सब आवाजों का साझी होना, जो बीसवीं सदी के अँधेरे में टकराती हुई हमारे पास आती है.

- **'चीड़ो पर चाँदनी' – यात्रावृत्त का वर्णन**

निर्मल वर्मा ने 'चीड़ो पर चाँदनी' यात्रा संस्मरण में पहाड़ी प्रदेशों के प्रमुख वृक्ष चीड़ को पहाड़ का प्रतीक मानकर, भारतीय पहाड़ी प्रदेशों की प्राकृतिक सुषमा को अभिव्यक्त किया है जो अपनी रमणीयता, रहस्य और भय से व्यक्ति को आच्छादित, विस्मित और भयभीत करती है. पहाड़ों पर चाँदनी यह अद्भुत माया जाल वर्मा जी ने पहली बार देखा था और एक अलौकिक विस्मय से उनकी आँखें अनायास मुँद गई थी. उस रात उन्हें लगा कि पहाड़ों में भी साँप की आँख जैसा एक अविस्मृत, जादुई सम्मोहन होता है – एक भुतैला-सा-सौन्दर्य जो एक साथ हमें आतंकित और आकर्षित करता है जिसके मोह-पाश में बँधना उतना ही यातनामय है जितना उससे मुक्त होना. चीड़ो पर चाँदनी में वर्मा जी ने दर्शनीय स्थानों का विवरण देने के साथ-साथ स्थलों पर विभिन्न व्यक्तियों से हुए अपने साक्षात्कारों को भी गूंज कर यात्रा वृत्तांत इंटरव्यू शैली के गुंफन का स्तुत्य प्रयास किया है. निर्मल वर्मा जी ने प्रस्तुत यात्रावृत्त में शिमला, गुलमर्ग, खितनमर्ग, नैनीताल की वादियों नौकुछिया, भीमताल, नारकण्डा, रानीखेत आदि के प्रवास काल की स्मृतियों को संजोया है. पहाड़ों की रात्रि, बिखरी हुई चाँदनी, बादलों की गहमा-गहमी, झीलों की निर्मलता, हवाओं की गुनगुनाहट एवं सरसराहट, पहाड़ों की रहस्यात्मकता उन्हें आकर्षित करती रही है. निर्मल जी प्रकृति से तादात्म्य करते हुए अनेक बिम्ब प्रस्तुत करते हैं, प्रकृति का मानवीकरण करते हैं – झील के कितने चेहरे हैं – या चेहरा एक ही है, केवल भंगिमाएँ बदलती हैं. धूप ने जाल डाला है, चमकीली मुलायम मछलियों-सी लहरें जाल के तन्तुओं से खेलती हैं, फँसती हैं और फिसल जाती हैं.

निर्मल वर्मा प्रकृति की इन भंगिमाओं को आत्मसात करते हैं. निर्मल जी पहाड़ों की इस रात को मनुष्य के अन्दर छिपे अन्धकार एवं निराशा तथा आशा के छन्द के समान्तर खड़ा करते हैं और मनुष्य एवं प्रकृति मे तादात्म्य स्थापित करते हैं. अंततः शान्त भाव में उसकी परिणति होती है. कुल मिलाकर प्रस्तुत यात्रावृत्त में निर्मलजी पहाड़ों पर बिखरी चाँदनी को आधार बनाकर पहाड़ों के सौन्दर्य और कठिनाइयों को अंगीकार करते हैं. इस प्रकार 'चीड़ों पर चाँदनी' दुर्गम परिस्थितियों में सौन्दर्य की अनुपम अभिव्यक्ति है.

- **बोध प्रश्न**

सही जोड़े मिलाइए

1 *प्रतापनारायण मिश्र*	(a) *मेरी तिब्बत यात्रा*
2 *श्रीधर पाठक*	(b) *विलायत यात्रा*
3 *राहुल सांकृत्यायन*	(c) *देहरादून-शिमला यात्रा*
4 *मोहन राकेश*	(d) *हंसते निर्झरः दहकती भट्टी*
5 *विष्णु प्रभाकर*	(e) *आखिरी चट्टान तक*

13.6 सार बिंदु

इस इकाई को पढने के बाद सार रूप हम कह सकते है कि –

- *निर्मल वर्मा को अपनी भावपूर्ण और अवसाद से भरी आधुनिक हिंदी कहानी के सबसे प्रतिष्ठित नामों में गिना जाता रहा है.*
- *बाल्यावस्था पर्वतीयस्थली में व्यतीत होने के कारण इनका प्रकृति के प्रति सदैव अनुराग रहा, जो उनके यात्रा संस्मरणों में अभिव्यक्त हुआ है.*
- *निर्मल वर्मा ने सामान्य जीवन का वर्णन किया है. 'वे दिन' (उपन्यास) 'चीड़ो पर चाँदनी' (यात्रावृत्त), 'कव्वे और कालापानी' (कहानी संग्रह) 'तीन एकांत' (नाटक) आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ की हैं.*
- *चीड़ों पर चाँदनी नामक यात्रा वृत्तांत की बात करें तो यह अपने आप में कई अन्य विधाओं के तत्वों को भी समेटे हुए हैं. इसमें कहीं संस्मरण है, कहीं स्मृति तत्व तो कहीं निबंध जैसी बोझिलता भी देखने को मिलती है.*
- *बचपन का प्रकरण इस यात्रा वृत्तांत को संस्मरण का रूप देता है. यही कारण है कि इस यात्रा वृत्तांत को यात्रा संस्मरण भी कहा गया है.*
- *'चीडो पर चाँदनी' यात्रा वृत्तांत पाठकों पर हावी हो जाता है.*
- *लेखक अलग-अलग स्थानों की यात्रा के दौरान अपने जाने पहचाने अनुभवों को तुलनात्मक तथा तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं. जैसे कालका और शिमला के बीच एक वीरान और उपेक्षित हिल स्टेशन सोलन के बारे में बताया है.*
- *इसी तरह उन्होंने हर वह स्थान-शिमला, नारकंडा, गुलमर्ग, डलहौजी, भीमताल आदि के वास्तविक तथा काल्पनिक अनुभवों को प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, तुलनात्मक तथा उपमाओं के साथ प्रस्तुत किया है.*
- *कई जगह उपमा और प्रतीक वस्तुगत ना रहे इतने आत्मगत है कि उनसे कुछ भी अर्थ निकालना पाठक के लिए मुश्किल हो जाता है. निर्मल वर्मा ने इस पूरी रचना में स्मृति और यात्रा का वर्णन बहुत ही कलात्मक ढंग से किया है.*

13.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये**
  1. *यात्रावृत्तांत का स्वरूप एवं हिंदी साहित्य में उसके विकास की चर्चा कीजिए.*
  2. *'चिड़ो पर चाँदनी' यात्रा वृत्तांत का वर्णन सविस्तार कीजिए.*
- **टिप्पणी लिखिए**
  1 *'चीड़ो पर चाँदनी' की विषयवस्तु*
  2 *निर्मल वर्मा का कृतित्व परिचय*
  3 *छायावादोत्तर यात्रावृत्त*

13.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. *हिंदी यात्रा साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. संध्या शर्मा (*2015*)*
2. *हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी (विश्वविद्यालय प्रकाशन,* 2015*)*
3. *चीड़ो पर चाँदनी, निर्मल वर्मा, वाणी प्रकाशन, संस्करण-*2017

इकाई 14 रेखाचित्र – 'बिंदा' : महादेवी वर्मा

रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 महादेवी वर्मा का परिचय

14.4 रेखाचित्र : बिंदा – महादेवी वर्मा (मूल पाठ)

14.5 'बिंदा' रेखाचित्र का रेखाचित्र के रूप में विश्लेषण

14.6 सार-बिंदु

14.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

14.8 उपयोगी पाठ्य सामग्री

14.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. द्वितीय वर्ष के लिए हिंदी मुख्य / गौण विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र के खंड 4 की 14वी इकाई पढ़ने जा रहे हैं. आप इस इकाई पढ़ने के बाद –

- *इस इकाई में आप महादेवी वर्मा और उनके साहित्य के बारे में जान सकेंगे.*
- *आप रेखाचित्र के स्वरूप को समझ सकेंगे.*
- *आप गद्य साहित्य की एक विधा 'रेखाचित्र' का आस्वादमुलक परिचय प्राप्त करेंगे.*
- *आप महादेवी वर्मा रचित 'बिंदा' रेखाचित्र के बारे में जान सकेंगे.*
- *आप 'बिंदा' रेखाचित्र का विश्लेषण कर पाएँगे.*

14.2 प्रस्तावना

प्रिय ! छात्र मित्रों, साहित्य को दो भागों में विभाजित किया गया हैं – गद्य साहित्य और पद्य साहित्य. पद्य साहित्य के दो भेद प्रबंधकाव्य और मुक्तककाव्य हैं. गद्य साहित्य के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, निबन्ध, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्र-लेखन, डायरी, यात्रावृत्त आदि का समावेश किया जाता हैं. गद्य साहित्य भी वर्ण्य विषय के आधार पर काल्पनिक साहित्य और वास्तविक साहित्य के रूप में विभाजित किया जाता हैं. उपन्यास, कहानी आदि गद्य विधाओं की कथावस्तु में कल्पना की प्रधानता या काल्पनिकता होती है; जबकि आत्मकथा, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र, डायरी आदि की विषयवस्तु वास्तविक होती है. हम यहाँ पर महादेवी वर्मा रचित 'बिंदा' रेखाचित्र के बारे में जानेंगे.

14.3 *महादेवी वर्मा का परिचय*

महादेवी का जन्म 26, मार्च 1907 को फर्रूख़ाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था. उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था. अतः बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी – महादेवी मानते हुए, पुत्री का नाम महादेवी रखा. उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे. उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था. महादेवी वर्मा हिंदी के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पन्त एवं निराला को जीवनपर्यन्त राखी बाँधती रहीं. निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधी.

महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही. बीच में विवाह के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही. विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं. 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया. यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की. वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था. कॉलेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई. सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं – ''सुनो, ये कविता भी लिखती हैं''. 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह 'नीहार' तथा 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे.

सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे. श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे. महादेवी जी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं. श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से विरक्ति थी. कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था. सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बन्ध मधुर ही रहे. दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था. यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे. श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया. महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था. उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्ते पर सोईं और कभी शीशा नहीं देखा. सन् 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं.

छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं. आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें कवि निराला ने उन्हें ''हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती'' भी कहा है. महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी. वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की. न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे. उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि 'दीपशिखा' में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया.

उन्होंने खड़ी बोली हिंदी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी. इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिंदी का जामा पहनाया. संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है. उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरुआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं. उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन-यापन किया. प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थी. उन्हें हिंदी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है. भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है. गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं. वे पशु-पक्षी प्रेमी थी, गाय उनको अति प्रिय थी. 27 *अप्रैल* 1982 *को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया था.*

उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया. 11 *सितम्बर* 1987 *को इलाहाबाद में रात* 9 *बजकर* 30 *मिनट पर उनका देहांत हो गया.*

- ***महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाएँ / कृतियाँ***

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थीं. उनकी कृतियाँ निम्नानुसार हैं.

कविता संग्रह

1. *नीहार (*1930*),* 2. *रश्मि (*1932*),* 3. *नीरजा (*1934*),* 4. *सांध्यगीत* (1936), 5. *दीपशिखा* (1942), 6. *सप्तपर्णा (अनूदित-*1959*),* 7. *प्रथम आयाम* (1974), 8. *अग्निरेखा (*1990*)*

महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जैसे आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी (1965), यामा (1936), गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक कवि महादेवी आदि.

- ***महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य***

रेखाचित्र : *अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएं (1943)*

संस्मरण : *पथ के साथी (1956) और मेरा परिवार (1972) और संस्मरण (1983)*

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)

निबंध : *शृंखला की कड़ियाँ, (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969), क्षणदा (ललित निबंध) (1956)*

कहानियाँ : *गिल्लू*

संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय (1963)

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर लिखिए

1. *महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?*
2. *महादेवी वर्मा के माता-पिता का नाम क्या था ?*
3. *महादेवी वर्मा लिखित कहानी का नाम लिखिए.*
4. *महादेवी वर्मा के किसी दो काव्य संग्रह के नाम लिखिए.*
5. *महादेवी वर्मा को साहित्यि का कौन सा सर्वोच्च पुरस्कार मिला था ?*

14.4 *रेखाचित्र : बिंदा – महादेवी वर्मा (मूल पाठ)*

भीत-सी आंखोंवाली उस दुर्बल, छोटी और अपने-आप ही सिमटी-सी बालिका पर दृष्टि डाल कर मैंने सामने बैठे सज्जन को, उनका भरा हुआ प्रवेशपत्र लौटाते हुए कहा,'आपने आयु ठीक नहीं भरी है. ठीक कर दीजिए, नहीं तो पीछे कठिनाई पड़ेगी.'

'नहीं यह तो गत आषाढ़ में चौदह की हो चुकी', सुनकर मैंने कुछ विस्मित भाव से अपनी उस भावी विद्यार्थिनी को अच्छी तरह देखा, जो नौ वर्षीय बालिका की सरल चंचलता से शून्य थी और चौदह वर्षीय किशोरी के सलज्ज उत्साह से अपरिचित.

उसकी माता के संबंध में मेरी जिज्ञासा स्वगत न रहकर स्पष्ट प्रश्न ही बन गई होगी, क्योंकि दूसरी ओर से कुछ कुंठित उत्तर मिला, ''मेरी दूसरी पत्नी है, और आप तो जानती ही होंगी और उनके वाक्य को अधसुना ही छोड़कर मेरा मन स्मृतियों की चित्रशाला में दो युगों से अधिक समय की भूल के नीचे दबे बिंदा या विन्ध्येश्वरी के धुंधले चित्र पर उंगली रखकर कहने लगा,'ज्ञात है, अवश्य ज्ञात है.''

बिंदा मेरी उस समय की बाल्यसखी थी, जब मैंने जीवन और मृत्यु का अमिट अन्तर जान नहीं पाया था. अपने नाना और दादी के स्वर्ग-गमन की चर्चा सुनकर मैं बहुत गम्भीर मुख और आश्वस्त भाव से घर भर को सूचना दे चुकी थी कि जब मेरा सिर कपड़े रखने की आल्मारी को छूने लगेगा, तब मैं निश्चय ही एक बार उनको देखने जाऊंगी. न मेरे इस पुण्य संकल्प का विरोध करने की किसी को इच्छा हुई और न मैंने एक बार मरकर कभी न लौट सकने का नियम जाना. ऐसी दशा में, छोटे-छोटे असमर्थ बच्चों को छोड़कर मर जाने वाली माँ की कल्पना मेरी बुद्धि में कहां ठहरती. मेरा संसार का अनुभव भी बहुत संक्षिप्त-सा था. अज्ञानावस्था से मेरा साथ देने वाली सफेद कुत्ती सीढ़ियों के नीचे वाली अंधेरी कोठरी में आंख मूंदे पड़े रहने वाले बच्चों की इतनी सतर्क पहरेदार हो उठती थी कि उसका गुर्राना मेरी सारी ममता-भरी मैत्री पर पानी फेर देता था. भूरी पूसी भी अपने चूहे जैसे निःसहाय बच्चों को तीखे पैने दांतों में ऐसी कोमलता से दबाकर कभी लाती, कभी ले जाती थी कि उनके कहीं एक दांत भी न चुभ पाता था. ऊपर की छत के कोने पर कबूतरों का और बड़ी तस्वीर के पीछे गौरैया का जो भी घोंसला था, उसमें खुली हुई छोटी-छोटी चोचों और उनमें सावधानी से भरे जाते दोनों और कीड़े-मकोड़ों को भी मैं अनेक बार देख चुकी थी. बछिया को हटाते हुए ही रंभा-रंभा कर घरभर को यह दुःखद समाचार सुनाने वाली अपनी श्यामा गाय की व्याकुलता भी मुझसे छिपी न थी. एक बच्चे को कन्धे से चिपकाए और एक उंगली पकड़े हुए जो भिखारिन द्वार-द्वार फिरती थी, वह भी तो बच्चों के लिए ही कुछ माँगती रहती थी. अतः मैंने निश्चित रूप से समझ लिया था कि संसार का सारा कारबार बच्चों को खिलाने-पिलाने, सुलाने आदि के लिए ही हो रहा है और इस महत्वपूर्ण कर्तव्य में भूल न होने देने का काम माँ नामधारी जीवों को सौंपा गया है.

और बिंदा के भी तो माँ थी जिन्हें हम पंडिताइन चाची और बिंदा नई अम्मा कहती थी. वे अपनी गोरी, मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे, चारपाई पर बैठ कर फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले कांच के बटन सी चमकती हुई आंखों से युक्त मोहन को तेल मलती रहती थी. उनकी विशेष कारीगरी से संवारी पाटियों के बीच में लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर उनींदी सी आंखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियां और घुंघरूदार बिछुए मुझे बहुत भाते थे, क्योंकि यह सब अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे.

यह सब तो ठीक था; पर उनका व्यवहार विचित्र-सा जान पड़ता था. सर्दी के दिनों में जब हमें धूप निकलने पर जगाया जाता था, गर्म पानी से हाथ मुंह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से सजाया जाता था और मना-मनाकर गुनगुना दूध पिलाया जाता था, तब पड़ोस के घर में पंडिताइन चाची का स्वर उच्च-से उच्चतर होता रहता था. यदि उस गर्जन-तर्जन का कोई अर्थ समझ में न आता, तो मैं उसे श्याम के रंभाने के समान

स्नेह का प्रदर्शन भी समझ सकती थी; परन्तु उसकी शब्दावली परिचित होने के कारण ही कुछ उलझन पैदा करने वाली थी. 'उठती है या आऊं', 'बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं' आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती थी, उसे मेरा अबोध मन भी जान ही लेता था.

कभी-कभी जब मैं ऊ पर की छत पर जाकर उस घर की कथा समझने का प्रयास करती, तब मुझे मैली धोती लपेटे हुए बिंदा ही आंगन से चौके तक फिरकनी-सी नाचती दिखाई देती. उसका कभी झाड़ू देना, कभी आग जलाना, कभी आंगन के नल से कलसी में पानी लाना, कभी नई अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना, मुझे बाज़ीगर के तमाशा जैसे लगता था; क्योंकि मेरे लिए तो वे सब कार्य असम्भव-से थे. पर जब उस विस्मित कर देने वाले कौतुक की उपेक्षा कर पंडिताइन चाची का कठोर स्वर गूंजने लगता, जिसमें कभी-कभी पंडित जी की घुड़की का पुट भी रहता था, तब न जाने किस दु:ख की छाया मुझे घेरने लगती थी. जिसकी सुशीलता का उदाहरण देकर मेरे नटखटपन को रोका जाता था, वहीं बिंदा घर में चुपके-चुपके कौन-सा नटखटपन करती रहती है, इसे बहुत प्रयत्न करके भी मैं न समझ पाती थी. मैं एक भी काम नहीं करती थी और रात-दिन ऊ धम मचाती रहती; पर मुझे तो माँ ने न मर जाने की आज्ञा दी और न आंखें निकाल लेने का भय दिखाया. एक बार मैंने पूछा भी,'क्या पंडिताइन चाची तुमरी तरह नहीं है?' माँ ने मेरी बात का अर्थ कितना समझा यह तो पता नहीं, उनके संक्षिप्त 'हैं' से न बिंदा की समस्या का समाधान हो सका और न मेरी उलझन सुलझ पाई.

बिंदा मुझसे कुछ बड़ी ही रही होगी; परन्तु उसका नाटापन देखकर ऐसा लगता था, मानों किसी ने ऊ पर से दबाकर उसे कुछ छोटा कर दिया हो. दो पैसों में आने वाली खंजड़ी के ऊ पर चढ़ी हुई झिल्ली के समान पतले चर्म से मढ़े और भीतर की हरी-हरी नसों की झलक देने वाले उसके दुबले हाथ-पैर न जाने किस अज्ञात भय से अवसन्न रहते थे. कहीं से कुछ आहट होते ही उसका विचित्र रूप से चौंक पड़ना और पंडिताइन चाची का स्वर कान में पड़ते ही उसके सारे शरीर का थरथरा उठना, मेरे विस्मय को बढ़ा ही नहीं देता था, प्रत्युत् उसे भय में बदल देता था. और बिंदा की आंखें तो मुझे पिंजड़े में बन्द चिड़िया की याद दिलाती थीं.

एक बार जब दो-तीन करके तारे गिनते-गिनते उसने एक चमकीले तारे की ओर उंगली उठाकर कहा,'वह रही मेरी अम्मा' तब तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा. क्या सब-की एक अम्मा तारों में होती है ओर एक घर में? पूछने पर बिंदा ने अपने ज्ञान-कोष में से कुछ कण मुझे दिये और तब मैंने समझा कि जिस अम्मा को ईश्वर बुला लेता है, वह तारा बनकर ऊ पर से बच्चों को देखती रहती है और जो बहुत सजधज से घर में आती है, वह बिंदा की नई अम्मा जैसी होती है. मेरी बुद्धि सहज ही पराजय स्वीकार करना नहीं जानती, इसी से मैंने सोचकर कहा,'तुम नई अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहती, फिर वे न नई रहेंगी और न डांटेंगी.'

बिंदा को मेरा उपाय कुछ जंचा नहीं, क्योंकि वह तो अपनी पुरानी अम्मा को खुली पालकी में लेटकर जाते और नई को बन्द पालकी में बैठकर आते देख चुकी थी, अतः किसी को भी पदच्युत करना उसके लिए कठिन था.

पर उसकी कथा से मेरा मन तो सचमुच आकुल हो उठा, अतः उसी रात को मैंने माँ से बहुत अनुनयपूर्वक कहा, 'तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनावें.' माँ बेचारी मेरी विचित्र मुद्रा पर विस्मित होकर कुछ बोल भी न पाई थी कि मैंने अकुंठित भाव से अपना आशय प्रकट कर दिया, 'नहीं तो पंडिताइन चाची जैसी नई अम्मा पालकी में बैठकर आ जाएंगी और फिर मेरा दूध, बिस्कुट, जलेबी सब बन्द हो जाएगी- और मुझे बिंदा बनना पड़ेगा.' माँ का उत्तर तो मुझे स्मरण नहीं, पर इतना याद है कि उस रात उसकी धोती का छोर मुट्ठी में दबाकर ही मैं सो पाई थी.

बिंदा के अपराध तो मेरे लिए अज्ञात थे; पर पंडिताइन चाची के न्यायालय से मिलने वाले दण्ड के सब रूपों से मैं परिचित हो चुकी थी. गर्मी की दोपहर में मैंने बिंदा को आंगन की जलती धरती पर बार-बार पैर उठाते ओर रखते हुए घंटों खड़े देखा था, चौके के खम्भे से दिन-दिन भर बंधा पाया था और भूख से मुरझाए मुख के साथ पहरों नई अम्मा ओर खटोले में सोते मोहन पर पंखा झलते देखा था. उसे अपराध का ही नहीं, अपराध के अभाव का भी दण्ड सहना पड़ता था, इसी से पंडित जी की थाली में पंडिताइन चाची का ही काला मोटा और घुंघराला बाल निकलने पर भी दण्ड बिंदा को मिला. उसके छोटे-छोटे हाथों से धुल न सकने वाले, उलझे, तेलहीन बाल भी अपने स्वाभाविक भूरेपन ओर कोमलता के कारण मुझे बड़े अच्छे लगते थे. जब पंडिताइन चाची की कैंची ने उन्हें कूड़े के ढेर पर, बिखरा कर उनके स्थान को बिल्ली की काली धारियों जैसी रेखाओं से भर दिया तो मुझे रुलाई आने लगी; पर बिंदा ऐसे बैठी रही, मानों सिर और बाल दोनों नई अम्मा के ही हो.

और एक दिन याद आता है. चूल्हे पर चढ़ाया दूध उफना जा रहा था. बिंदा ने नन्हें-नन्हें हाथों से दूध की पतीली उतारी अवश्य; पर वह उसकी उंगलियों से छूट कर गिर पड़ी. खौलते दूध से जले पैरों के साथ दरवाज़े पर खड़ी बिंदा का रोना देख मैं तो हतबुद्धि सी हो रही. पंडिताइन चाची से कह कर वह दवा क्यों नहीं लगवा लेती, यह समझाना मेरे लिए कठिन था. उस पर जब बिंदा मेरा हाथ अपने जोर से धड़कते हुए हृदय से लगाकर कहीं छिपा देने की आवश्यकता बताने लगी, तब तो मेरे लिए सब कुछ रहस्मय हो उठा.

उसे मैं अपने घर में खींच लाई अवश्य; पर न ऊपर के खण्ड में माँ के पास ले जा सकी और न छिपाने का स्थान खोज सकी. इतने में दीवारें लांघ कर आने वाले, पंडिताइन चाची के उग्र स्वर ने भय से हमारी दिशाएँ रूंध दीं, इसी से हड़बड़ाहट में हम दोनों उस कोठरी में जा घुसीं, जिसमें गाय के लिए घास भरी जाती थी. मुझे तो घास की

पत्तियां भी चुभ रही थीं, कोठरी का अंधकार भी कष्ट दे रहा था; पर बिंदा अपने जले पैरों को घास में छिपाए और दोनों ठंडे हाथों से मेरा हाथ दबाए ऐसे बैठी थी, मानों घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछोना बन गया हो.

मैं तो शायद सो गई थी; क्योंकि जब घास निकालने के लिए आया हुआ गोपी इस अभूतपूर्व दृश्य की घोषणा करने के लिए कोलाहल मचाने लगा, तब मैंने आंखें मलते हुए पूछा, 'क्या सबेरा हो गया?'

माँ ने बिंदा के पैरों पर तिल का तेल और चूने का पानी लगाकर जब अपने विशेष सन्देशवाहक के साथ उसे घर भिजवा दिया, तब उसकी क्या दशा हुई, यह बताना कठिन है; पर इतना तो मैं जानती हूं कि पंडिताइन चाची के न्याय विधान में न क्षमा का स्थान था, न अपील का अधिकार.

फिर कुछ दिनों तक मैंने बिंदा को घर-आंगन में काम करते नहीं देखा. उसके घर जाने से माँ ने मुझे रोक दिया था; पर वे प्राय: कुछ अंगूर और सेब लेकर वहां हो आती थीं. बहुत खुशामद करने पर रूकिया ने बताया कि उस घर में महारानी आई हैं. 'क्या वे मुझसे नहीं मिल सकती' पूछने पर वह मुंह में कपड़ा ठूंस कर हंसी रोकने लगी. जब मेरे मन का कोई समाधान न हो सका, तब मैं एक दिन दोपहर को सभी की आंख बचाकर बिंदा के घर पहुंची. नीचे के सुनसान खण्ड में बिंदा अकेली एक खाट पर पड़ी थी. आंखें गड्ढे में धंस गई थीं, मुख दानों से भर कर न जाने कैसा हो गया था और मैली-सी चादर के नीचे छिपा शरीर बिछौने से भिन्न ही नहीं जान पड़ता था. डॉक्टर, दवा की शीशियां, सिर पर हाथ फेरती हुई माँ और बिछौने के चारों चक्कर काटते हुए बाबूजी के बिना भी बीमारी का अस्तित्व है, यह मैं नहीं जानती थी, इसी से उस अकेली बिंदा के पास खड़ी होकर मैं चकित-सी चारों ओर देखती रह गई. बिंदा ने ही कुछ संकेत और कुछ अस्पष्ट शब्दों में बताया कि नई अम्मा मोहन के साथ ऊपर खण्ड में रहती हैं, शायद चेचक के डर से. सबेरे-शाम बरौनी आकर उसका काम कर जाती है.

फिर तो बिंदा को दुखना सम्भव न हो सका; क्योंकि मेरे इस आज्ञा-उल्लंघन से माँ बहुत चिन्तित हो उठी थीं.

एक दिन सबेरे ही रूकिया ने उनसे न जाने क्या कहा कि वे रामायण बन्दर कर बार-बार आंखें पोंछती हुई बिंदा के घर चल दीं. जाते-जाते वे मुझे बाहर न निकलने का आदेश देना नहीं भूली थीं, इसी से इधर-उधर से झांककर देखना आवश्यक हो गया. रूकिया मेरे लिए त्रिकालदर्शी से कम न थी; परन्तु वह विशेष अनुनय-विनय के बिना कुछ बताती ही नहीं थी और उससे अनुनय-विनय करना मेरे आत्म-सम्मान के विरुद्ध पड़ता था. अत: खिड़की से झांककर मैं बिंदा के दरवाज़े पर जमा हुए आदमियों के अतिरिक्तऔर कुछ न देख सकी और इस प्रकार की भीड़ से विवाह और बारात का जो संबंध है, उसे मैं जानती थी. तब क्या उस घर में विवाह हो रहा है, और हो रहा है तो

किसका? आदि प्रश्न मेरी बुद्धि की परीक्षा लेने लगे. पंडित जी का विवाह तो तब होगा, जब दूसरी पंडिताइन चाची भी मर कर तारा बन जाएंगी और बैठ न सकने वाले मोहन का विवाह संभव नहीं, यही सोच-विचार कर मैं इस परिणाम तक पहुंची कि बिंदा का विवाह हो रहा है ओर उसने मुझे बुलाया तक नहीं. इस अचिन्त्य अपमान से आहत मेरा मन सब गुड़ियों को साक्षी बनाकर बिंदा को किसी भी शुभ कार्य में न बुलाने की प्रतिज्ञा करने लगा.

कई दिन तक बिंदा के घर झांक-झांककर जब मैंने माँ से उसके ससुराल से लौटने के संबंध में प्रश्न किया, तब पता चला कि वह तो अपनी आकाश-वासिनी अम्मा के पास चली गई. उस दिन से मैं प्रायः चमकीले तारे के आस-पास फैले छोटे तारों में बिंदा को ढूंढ़ती रहती; पर इतनी दूर से पहचानना क्या संभव था?
तब से कितना समय बीत चुका है, पर बिंदा और उसकी नई अम्मा की कहानी शेष नहीं हुई. कभी हो सकेगी या नहीं, इसे कौन बता सकता है ?

- ***बोध प्रश्न***

1. *बिंदा कौन थी ?*
2. *पंडिताइन चाची का वर्णन कीजिए.*
3. *पंडिताइन बिंदा के साथ कैसा व्यवहार करती थी ?*
4. *महादेवी वर्मा बिंदा को कहा ढूंढ़ती है?*
5. *'बिंदा' रेखाचित्र की कथावस्तु लिखिए.*

14.5 *'बिंदा' रेखाचित्र का रेखाचित्र के रूप में विश्लेषण*

हिंदी साहित्य में रेखाचित्र को एक नई विधा के रूप में जाना जाता है. रेखाचित्र का स्वरुप कुछ हद तक कहानी और निबन्ध के बीच का माना जाता है. सामान्यतः अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द के पर्याय रूप में रेखाचित्र शब्द निर्माण हुआ है. जिस प्रकार रेखाओं के माध्यम से कोई चित्रकार चित्र अंकित करता है, इसी प्रकार लेखक शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के सन्दर्भ में एक शाब्दिक चित्र अंकित करता है, उसे रेखाचित्र के रूप में जाना जाता है. वैसे रेखाचित्र का संबंध विभिन्न साहित्य विधाओं और अन्य कलाओं के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें चित्रकला के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा गया है तो, दूसरी ओर कहानी, निबन्ध आदि विधाओं के उसका सम्बन्ध जोड़ा गया है. हमारे जीवन में आये किसी व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध में जानकारी देना, उसके स्वभाव,उसके वैशिष्ट्य, उसके गुण-दोष आदि को प्रसंगानुरूप साकार करना यह रेखाचित्र का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है. रेखाचित्र कमसे कम शब्दों में लिखा गया मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण और सजीव साहित्य प्रकार है.

भारतीय और पाश्चात्य विद्वान रेखाचित्र के अलग-अलग तत्व बताते है, यहाँ हम अलग-अलग तत्वों में से प्रमुख तत्वों के आधार पर 'बिंदा' रेखाचित्र का विश्लेषण करेंगे.

1. *यथार्थ अनुभूति*

रेखाचित्र का प्रमुख तत्व है यथार्थ अनुभूति. रेखाचित्र में जो घटनाएँ या प्रसंग का अंकन होता है, वह यथार्थ होता है, वास्तविक होता है. अर्थात् रेखाचित्रकार अपने जीवन का सूक्ष्म निरिक्षण-परिक्षण करता है और उस सूक्ष्म निरिक्षण के आधार पर उसे जीवन में जो यथार्थ अनुभूति प्राप्त होती है, उसी यथार्थ अनुभूति का अंकन वह अपने रेखाचित्र में करता है. अर्थात् रेखाचित्र विषयवस्तु यथार्थ अनुभव पर आधारित होती है. अर्थात् रेखाचित्र में कल्पना का अधिक समावेश नहीं होता. रेखाचित्र की विषयवस्तु रेखाचित्रकार की स्मृतियों से आता है. रेखाचित्र में वास्तविक अनुभूति का वर्णन होने के कारण पाठक उससे ज्यादा तादात्म्य स्थापित कर सकता है.

'बिंदा' रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने अपनी बाल्य सखी बिंदा के साथ अपने बचपन के यथार्थ अनुभवों का बहुत रोचक, सजीव एवं यथार्थ वर्णन किया है. बिंदा की माँ बचपन में ही चल बसी; उसके पिता ने दूसरी शादी की. बिन्दा की सौतेली माँ यानि पंडिताइन चाची बिंदा के साथ बड़ी सख्ताई से पेश आती है. वह बिंदा को मोहन की देखभाल में लगा देती है. और कभी भी बिंदा से कोई काम में कोई चुक होती है तो पंडिताइन चाची उसे सख्त से सख्त सजा देती. बिंदा जब चेचेक का शिकार होती है, तब वह उसे अकेली छोड़कर अपने पति और बेटे समेत घर के ऊ पर के मझले पर रहने चली जाती है.

'बिंदा' रेखाचित्र में लेखिका ने बिंदा के चरित्र का यथार्थ वर्णन किया है, जी पाठकों की सहानुभूति के पात्र बनती है. बिंदा की सौतेली माँ का चित्रण भी उनके पात्र के अनुसार किया है. उनका बर्ताव पाठकों को रास न आए ऐसा है. इसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति के भीतर सहानुभूति, करुणा, दया जैसे भाव पैदा होते है. महादेवी वर्मा ने खुद की बालसहज सोच और अज्ञान का सटीक चित्रण इस रेखाचित्र में किया है.

इस प्रकार हम कह सकते है कि 'बिंदा' रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने यथार्थ अनुभूति का सफलतापूर्वक एवं रोचक वर्णन किया है.

2. *संवेदनशीलता*

प्रत्येक साहित्य लेखन के लिए लेखक के पास संवेदनशीलता का होना अनिवार्य माना जाता है क्योंकि बिना संवेदनशीलता के कोई भी साहित्यकार मार्मिक अनुभितियों को नहीं प्राप्त कर सकता और उनका उतना सजीव अंकन भी नहीं कर सकता. रेखाचित्र में रेखाचित्रकार अपने अस-पास की परिस्थिति एवं परिवेश से प्रभाव ग्रहण करता है, उस प्रभाव की जितनी प्रतिक्रिया उसके मनमें होती है, उसके अनुसार वह उसी को अपने

रेखाचित्र में अभिव्यक्त करता है. अतः यह परिवेश से प्रभाव ग्रहण करना जितना अधिक प्रभावी होगा, उसकी उतनी ही प्रभावी अभिव्यक्ति रेखाचित्र में संभव है.

रेखाचित्रकार अपनी आँखों देखी, प्रत्यक्ष अनुभूत अनुभवों की मार्मिक अभिव्यक्ति रेखाचित्र में करता है. जो संवेदना उसके मन में निर्माण हुई है बिलकुल वैसी ही संवेदना पाठकों के मन में जागृत करने में वह समर्थ हो सके.

'बिंदा' रेखाचित्र में लेखिका ने अपनी बाल सखी के जीवन की कहानी हमारे सामने रखी है. बिंदा के साथ पंडिताइन चाची का जो व्यवहार है वह, बिन्दा का लेखिका को आकाश के तारों में से एक चमकीले तारे की ओर उंगली उठाकर कहा, 'वह रही मेरी अम्मा.', पन्डिताइन द्वारा बिंदा के बार-बार डांटना आदि प्रसंग पाठक की संवेदना को झकझोर देते हैं. लेखिका ने 'बिंदा' रेखाचित्र में ऐसा मार्मिक प्रसंग चित्रित किया है, हर पाठक में दया, करुणा, संवेदना जागृत कर देता है.

लेखिका अपनी बाल सखी बिंदा के साथ जो सहानुभूति रखती है, जो संवेदनाएँ इनके बाल मन में बिदा के प्रति जागृत हुई थी; उसे बहुत सजीव ढंग से पाठकों तक पहुँचाने में सफल हुई है. इस प्रकार 'बिंदा' रेखाचित्र में हमें संवेदनशीलता का तत्व का सफल अंकन देखने को मिलता है.

3. *संतुलन और तटस्थता*

रेखाचित्रकार के लिए अपने लेखन कार्य में संतुलन और तटस्थता का होना अत्यंत अनिवार्य होता है. रेखाचित्रकर अपने रेखाचित्र में अपने स्वानुभूत प्रसंगों का चित्रण करता है अर्थात् उसकी अनुभितियाँ वास्तविक होती है, जो कुछ उसने देखा है, जो कुछ उसने अनुभूत किया है, उसकी को रेखाचित्र में अंकित करता है. एसी परिस्थिति में उसके मन में प्रसंग या व्यक्ति को बढाचढाकर प्रस्तुत करने की लालसा जागृत हो सकती है, किन्तु यह लालसा रेखाचित्र के लिए घातक होती है. इसलिए रेखाचित्रकार को अपने अनुभूत सत्य का वर्णन करते हुए अतिशयोक्तिपूर्ण या पूर्वाग्रहयुक्त चित्रण नहीं करना चाहिए. ऐसा करने से रेखाचित्र की विश्वसनीयता घट जाती है तथा उनका पाठकों पर उतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ता. इसीलिए जो जैसा है, या जो जिस रूप में है, उसी रूप में किन्तु रोचक और आकर्षक शैली में प्रस्तुत करना ही रेखाचित्रकार का मुख्य लक्ष्य होता है. रेखाचित्र में रेखाचित्रकार को अपनी प्रशंसा से बचना चाहिए.

'बिंदा' रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने सभी पात्रों के चित्रण में संतुलन और तटस्थता बर्ती हैं. वे बिंदा के चरित्र-चित्रण करते वक्त अपने आँखों देखे हुए, अनुभूत किये गए प्रसंग्रो को बहुत रोचक और अलंकारिक भाषा में वर्णन करते है, जिस से रेखाचित्र में सहजता और रोचकता आ गई है. पन्डिताइन चाची के सजने का वर्णन बहुत सटीक रोचक भाषा में किया है, पर जब उनके द्वारा बिंदा किये जानेवाले अत्याचारों का

वर्णन करते है तब, उनकी भाषा में एक प्रकार का प्रतिकार का भाव आ जाता है. वे अपने बचपन की घटनाओं के वर्णन करते समय भी बहुत सतर्कता दिखाते है. वे अपनी बाल सहज कमियों को, बाल मानस, और अज्ञानता का वर्णन भी बड़ी तटस्थता से किया है.

इस प्रकार महादेवी वर्मा ने प्रस्तुत रेखाचित्र में हर घटना का, हर पात्र का और हर संवेदना या भाव का बहुत संतुलन और तटस्थतापूर्वक वर्णन किया है.

4. *सूक्ष्म निरीक्षण और चित्रात्मकता*

रेखाचित्र में घटना, व्यक्ति, प्रसंग आदि के सन्दर्भ में सूक्ष्म निरीक्षण और उसका उतना ही सूक्ष्मता से विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है. रेखाचित्र में चरित्र का विशेष महत्त्व देखने को मिलता है. अधिकांश रेखाचितत्रों का विषय कोई न कोई व्यक्ति होता है. रेखाचित्रकर उस व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं का अंकन, उसके गुण-दोषों का अंकन अपने रेखाचित्र में करता है. एसी स्थिति में उस चरित्र के बाह्य रूप रंग का वर्णन, उसकी बाह्य चेष्टाओं का वर्णन करता है, साथ ही उसकी मानसिक हलचलों का, उसके आंतरिक व्यक्तित्व का चित्रण भी रेखाचित्रकार के लिए जरुरी होता है. रेखाचित्रकार व्यक्ति के गुण-दोषों का मार्मिक, आकर्षक और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए चित्रात्मकता का प्रयोग करता है. रेखाचित्रकार रेखाचित्र में जितनी चित्रात्मक वर्णनशैली का प्रयोग करेगा रेखाचित्र उतना सजीव बनेगा. तथा पाठकों पर अपेक्षित प्रभाव डालने में सफल सिद्ध होगा.

प्रस्तुत रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने हर घटना, प्रसंग और व्यक्ति का सूक्ष्म वर्णन एवं विश्लेषण किया है. वे जब पन्डिताइन चाची का वर्णन करती है; तब उनके हर एक अंग-उपांग का, हर भाव भंगिमा का बहुत ही सूक्ष्म एवं चित्रात्मक वर्णन करती है जो यहाँ पर दृष्टव्य है – "वे अपनी गोरी, मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे, चारपाई पर बैठ कर फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले कांच के बटन सी चमकती हुई आंखों से युक्त मोहन को तेल मलती रहती थी. उनकी विशेष कारीगरी से संवारी पाटियों के बीच में लाल स्याही की मोटी लकीर-सा सिंदूर उनींदी सी आंखों में काले डोरे के समान लगने वाला काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियां और घुंघरूदार बिछुए मुझे बहुत भाते थे, क्योंकि यह सब अलंकार उन्हें गुड़िया की समानता दे देते थे."

इस प्रकार हर एक पात्र के चित्रण में, हर घटना के वर्णन में, हर संवेदना के चित्रण में लेखिका ने अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति और चित्रात्मक भाषा का परिचय दिया है. जिससे प्रस्तुत रेखाचित्र बहुत उत्कृष्ट कोटी की रचना बन पाया है.
इसी कारण रेखाचित्र में सूक्ष्म निरीक्षण और चित्रात्मकता अत्यंत आवयश्क है.

5. *उद्देश्य*

जैसाकि हम जानते है कि मनुष्य का कोई कार्य निरुद्देश्य नहीं होता. प्रत्येक साहित्यकार किसी न किसी उद्देश्य से ही साहित्य विधाओं का लेखन करता है . रेखाचित्र भी एक उद्देश्य प्रधान विधा है. रेखाचित्र में उद्देश्य का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है. वैसे रेखाचित्र के अनेक उद्देश्य हो सकते है. रेखाचित्र का प्रमुख उद्देश्य होता है किसी उपेक्षित चरित्र को सजीवता प्रदान करना या उसे आकर्षक या प्रभावी रूप से साकार करना. जीवन और जगत में अनेक ऐसे लोग होते है जो अनेक अच्छे गुणों से युक्त होते है. लेकिन उन्हें उनता महत्त्व नहीं मिल पाता है. एसी परिस्थिति में रेखाचित्रकार का यह कर्त्तव्य होता है कि वह ऐसे चरित्रों को उनके गुण–दोषों सहित रेखाचित्र में साकार करे ताकि उनके जीवन के आदर्श से पाठक प्रभावित हो जाए.

दूसरी ओर हृदयपरिष्कार, भावना परिवर्तन, चरित्र का विकास, न्याय के प्रति जागरूकता, उदारता का विकास, दिन–दुखियों के प्रति करुणा आदि अनेक उद्देश्य रेखाचित्र में हो सकते है. किसी भी व्यक्ति या घटना के प्रति हमारे मन में कुछ पूर्वाग्रह होता है, उसे बदल कर उसके स्थान पर किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में एक अच्छी कल्पना करने का काम करता है. अर्थात् पाठकों के हृदय के परिष्कार का काम करता है. साथ ही किसी व्यक्ति वस्तु धटना के प्रति पाठकों की जो धारणाएं है उसे बदलने की कोशिस करता है. लोगों में उदारता, न्याय के प्रति जागरूकता एवं दिन–दुखियों के प्रति करुणा के भाव जागरूकता को रेखाचित्र में आवश्यक माना जाता है. रेखाचित्र में उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति जागृत करता है.

प्रस्तुत रेखाचित्र में बिंदा जो इस रेखाचित्र का मुख्य पात्र है एवं लेखिका की बाल सखी है, उसके करुण जीवन की कथा पाठकों के सामने प्रस्तुत की है. जो हमें बिंदा जैसी उपेक्षित एवं अत्याचारों का शिकार बच्चियों की कथा को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं. साथ–साथ 'बिंदा' रेखाचित्र पढ़कर हमारी संवेदनाएँ जागृत हो जाती है, बिंदा के प्रति हमें सहनुभूति पैदा होती है. बिंदा रेखाचित्र को पढ़कर पाठकों में करुणा का भाव जागृत होता है. पाठकों के भावों का परिष्कार होता है.

6. *भाषाशैली*

रेखाचित्र का अंतिम महत्वपूर्ण तत्व है – भाषाशैली. वैसे सभी साहित्य विधाओं में भाषाशैली का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान होता हैं. भाषाशैली किसी भी साहित्य का आईना है क्योंकि किसी भी साहित्य को सबसे पहले सामने लानेवाला घटक उसकी भाषा और शैली होता है. सभी गद्य विधाओं के समान रेखाचित्र में भी भाषाशैली का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है. रेखाचित्र में रेखाचित्रकार अत्यंत सहज, सरल, सजीव और शसक्त भाषा का प्रयोग करता है ताकि उसका रेखाचित्र और अधिक प्रभावी बन जाए. साथ ही भाषा प्रभावी और गरिमामय होना भी अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि भाषा के माध्यम

से रेखाचित्रकार अपने पात्र या चरित्र की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करता है. ये चारित्रिक विशेषताएँ पाठकों में उसी रूप में पहुंचनी आवश्यक होती है. दूसरी ओर रेखाचित्र लेखन की अनके शैलियाँ है, लेखक अपने विषय, अपनी रूचि तथा अपने संवेदना के अनुसार इनमें से सुयोग्य शैली का प्रयोग करता है. जैसे कथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, विचारात्मक शैली आदि अनेक शैलियों का प्रयोग रेखाचित्रों में किया जाता है. लेखक अपनी रूचि के अनुसार, अपने विषय के अनुसार इनमे से सुयोग्य शैली का प्रयोग करता हैव शैली का पाठकों के ह्रदय में संवेदना जगाने में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है यही कारण है कि भाषा और शैली रेखाचित्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है. यही कारण है कि भाषाशैली को रेखाचित्र का महत्वपूर्ण तत्व माना गया है.

'बिंदा' रेखाचित्र की भाषा बहुत सरल, सहज, रोचक एवं चित्रात्मक है. लेखिका ने यथा स्थान पर मुहावरों एवं अलंकारयुक्त भाषा का प्रयोग किया है. जिससे रेखाचित्र में चार-चाँद लग गए है. महादेवी वर्मा ने 'बिंदा' रेखाचित्र में बहुत रोचक एवं सजीव भाषा का प्रयोग किया है. लेखिका अपनी अपनी भाषा में बड़ी ही सहजता से - तारा बनना, दांत भी न चुभ पाना, कांच के बटन सी चमकती हुई आंखें, फिरकनी-सी नाचती आदि मुहावरों का प्रयोग किया हैं.

लेखिका ने प्रस्तुत रेखाचित्र के वर्णन में प्रवाहिततापूर्वक क्रमिक घटनाओं का आलेखन बहुत रोचक ढंग से किया है. जिससे प्रस्तुत रेखाचित्र में सजीवता, प्रवाहितता एवं सहजता आ गई है. लेखिका अपनी भाषा के माध्यम से अपने भावों और विचारों को पाठक तक सरलता से पहुचने में सफल हुई है. लेखिका ने बिंदा के कद एवं स्वरुप के बारे में, पन्डिताइन के सझ-धज तैयार होने का, अपनी माँ के बारे में आदि वर्णन बहुत सटीक एवं आलंकारिक भाषा में किया है. लेखिका अपने मन के भावों और विचारों को शब्द चित्र में परिवर्तित करने में सफल रही है.

लेखिका ने प्रस्तुत रेखाचित्र में वर्णानात्मक और भावात्मक शैली का प्रयोग किया हैं.

- ***बोध प्रश्न***

1. *रेखाचित्र के प्रमुख तत्व लिखिए.*
2. *'बिंदा' रेखाचित्र का उद्देश्य क्या है ?*
3. *भाषाशैली की दृष्टी से 'बिंदा' रेखाचित्र सफल है. - स्पष्ट कीजिए.*
4. *रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर बिंदा रेखाचित्र का विश्लेष्ण कीजिए.*
5. *बिंदा रेखाचित्र में लेखिका ने कौन-सी शैली का प्रयोग किया है ?*

14.6 सारबिंदु

- *महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री होने के साथ-साथ एक सफल गद्य लेखक भी है.*
- *उन्हों ने हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट रेखाचित्र और संस्मरण लिखे हैं.*

- महादेवी वर्मा का जन्म 26, मार्च 1907 को फर्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था.
- 'बिंदा' महादेवी वर्मा रचित रेखाचित्र है, जो 'अतीत के चल चित्र' किताब से लिया गया है.
- बिंदा महादेवी वर्मा की बचपन की सहेली थी, जिसकी माँ बचपन में चल बसी थी.
- बिंदा के पिता ने दूसरी शादी करके नई पत्नी की थी.
- बिंदा की सौतेली माँ को सब लोग पंडिताइन चाची कहकर पुकारते थे.
- पन्डितान चाची को एक साल का एक लड़का था, जिसका नाम मोहन था.
- पंडिताइन बिंदा को सारा दिन घर के सब काम करवाती रहती थी, बिंदा से काम में कोई गलती हो जाती तो, उसे सख्त से सख्त सजा मिलती थी.
- बिंदा को चेचक की बीमारी होती है, तो पंडिताइन उसे अकेली छोड़कर, घर के ऊ पर के कमरे में रहने चली जाती है.
- रेखाचित्र के अंत में बिंदा भी अपनी माँ की तरह आकाश का तारा बन जाती है.

14.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **निम्न लिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए**

1. महादेवी वर्मा के जीवन का सामान्य परिचय देकर, उनके साहित्यक योगदान की चर्चा कीजिए.
2. 'बिंदा' रेखाचित्र को एक सफल रेखाचित्र के रूप में परखिए.

- **टिप्पणी लिखिए**

1. 'बिंदा' रेखाचित्र का शीर्षक
2. 'बिंदा' रेखाचित्र की भाषाशैली
3. 'बिंदा' रेखाचित्र की बिंदा का चरित्र-चित्रण कीजिए.
4. पंडिताइन चाची
5. बिंदा रेखाचित्र का उद्देश्य
6. रुकिया (नौकरानी)

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. महादेवी वर्मा की बाल सखी का नाम ....था.
2. महादेवी वर्मा ने 'बिंदा' रेखाचित्र में बहुत .... एवं .... भाषा का प्रयोग किया हैं.
3. लेखिका ने 'बिंदा' रेखाचित्र में .... और .... शैली का प्रयोग किया हैं.
4. बिंदा का दूसरा नाम ....था.
5. महादेवी वर्मा की नौकरानी का नाम ....था.

- ***वाक्य सही है या गलत लिखिए***

1. *'बिंदा' कृति का साहित्य प्रकार कहानी है.*
2. *महादेवी वर्मा बिंदा की बड़ी बहन थी.*
3. *महादेवी वर्मा की बचपन की सहेली का नाम बिंदा था.*
4. *बिंदा के अनुसार बिंदा की माँ आकाश का तारा बन गई थी.*
5. *पंडिताइन बिंदा की सौतेली माँ थी.*

- ***सही जोड़ मिलाइए***

अ	***ब***
1. *बिंदा या विन्ध्येश्वरी*	(a) *रेखाचित्र की लेखिका*
2. *महादेवी वर्मा*	(b) *नौकरानी*
3. *पंडिताईन चाची*	(c) *बिंदा की सौतेली माँ*
4. *मोहन*	(d) *बिंदा का भाई*
5. *रुकिया*	(e) *महादेवी वर्मा की सहेली*

- ***सही विकल्प पहचानकर उत्तर लिखिए***

1. *महादेवी वर्मा का जन्म कब हुआ था?*

(अ) 1907 *(ब)* 1908 *(क)* 1911 *(ड)* 1925

2. *महादेवी वर्मा का जन्म किस शहर में हुआ था ?*

(अ) फर्रुखाबाद (ब) गाजियाबाद (क) अहमदाबाद (ड) बनारास

3. *'बिंदा' कृति का साहित्य प्रकार कौन सा है ?*

(अ) कहानी (ब) रेखाचित्र (क) उपन्यास (ड) जीवनी

4. *'बिंदा' अपनी नई माँ को क्या कहकर पुकारती थी ?*

(अ) पन्डिताइन (ब) नई अम्मा (क) चाची (ड) माँ

5. *बिंदा के भाई का नाम क्या था ?*

(अ) राम (ब) मोहन (क) श्याम (ड) भरत

14.8 *उपयोगी पाठ्य सामग्री*

1. *अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली*
2. *महादेवी का गद्य – सूर्यप्रकाश दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली*
3. *महादेवी वर्मा : कवि और गद्यकार – लक्ष्मणदत्त गौतम, कोर्णाक प्रकाशन, दिल्ली*
4. https://bharatdarshan.co.nz/lit-collection/literature/275/binda-story-mahadevi.html
5. https://www.femina.in/hindi/sahitya/kahani/mahadevi-vermas-story-binda-3980.html
6. https://www.sarthaks.com/609850/

इकाई 15 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम': मित्र-संवाद (भाग-1)

रूपरेखा

15.1 उद्देश्य

15.2 प्रस्तावना

15.3 पत्र : एक साहित्यिक विधा

15.4 पत्र विधा की प्रमुख विशेषताएँ

15.5 डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : वाचन

15.6 डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : सार

15.7 डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : विश्लेषण

15.8 सार-बिंदु

15.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

15.10 पयोगी पाठ्य-सामग्री

15.1 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थी मित्रो ! बी.ए. के द्वितीय वर्ष के चौथे प्रश्न-पत्र 'हिंदी की कथेत्तर गद्य विधाएँ' में अलग अलग गद्य विधाओं का अध्ययन किया. इस इकाई में हम हिंदी की नवीन विधा 'पत्र साहित्य' के अंतर्गत 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम – मित्र संवाद' का अध्ययन करेंगे. प्रस्तुत पत्र को हम पहले समझने की कोशिश करेंगे, तत्पश्चात् उसका विश्लेषण - मूल्यांकन करेंगे. इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- *डॉ. रामविलास शर्मा तथा केदारनाथ अग्रवाल के पत्रों को जान सकेंगे.*
- *पत्र साहित्य के विषय में जान सकेंगे.*
- *पत्र विधा की प्रमुख विशेषता को देख सकेंगे.*
- *'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' की विशिष्टता को समझ सकेंगे.*
- *'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' के पत्रों के अंतर्गत साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक आदि विषयों को समझ सकेंगे.*

- *'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' के संरचनात्मक विशिष्टता को समझने के क्रम में भाषा और शिल्प की विशेषताओं को समझ सकेंगे.*

15.2 *प्रस्तावना*

प्रिय विद्यार्थी मित्रो. 'हिंदी की कथेत्तर गद्य विधाएँ' नामक पाठ्यक्रम की इस इकाई में हम पत्र विधा के अंतर्गत 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' का अध्ययन करने जा रहे हैं.

लेखन कला के आविष्कार के साथ ही पत्र लेखन की भी शुरुआत मानी जाती है. साहित्य और साहित्य से इतर हम प्रत्येक काल-परिस्थिति में पत्र का सहारा लेते रहे हैं. स्कूल, कॉलेज या दफ्तर से किसी को छुट्टी लेनी हो अथवा किसी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषय पर भी सदियों से लोग पत्रों को ही माध्यम बनाते हैं. पत्र औपचारिक और अनौपचारिक दो रूपों में होता है.

'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' पत्र अनौपचारिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है. यह दो व्यक्तियों के बीच साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर लिखा गया पत्रों का आदान-प्रदान है. पत्रों में जिन विषयों को उठाया गया है वह आज की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण हैं.

प्रिय विद्यार्थी मित्रो! प्रस्तुत विषय से पहले हमें पत्र विधा के विषय में जान लेना भी आवश्यक है कि पत्र विधा है क्या? कितने प्रकार के पत्र होते हैं? पत्र की विशेषता क्या है? आदि तत्त्वों को समझ लेने के पाश्चात्य ही हम मुख्य विषय को जानने का प्रयास करेंगे.

15.3 *पत्र : एक साहित्यिक विधा*

पत्र आधुनिक गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है. इसमें दूर बैठे दो अलग-अलग व्यक्तियों के बीच लिखित भाषा के रूप में पत्रों के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है. साथ ही दो महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के बीच वाचिक भाषा का प्रयोग होता है. जब यही भाषा लिखित रूप में आ जाते हैं, तो वह पत्र का माध्यम बनते हैं. पत्र किसी के पास भेजा गया लिखित माध्यम है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों अथवा तात्कालीन विषयों के प्रति अपनी चिंता/राय प्रकट करता है. इस दृष्टि से पत्र में-

- *एक लेखक और पाठक होता है.*
- *पाठक लेखक और लेखक पाठक बन जाता है.*
- *पत्र साक्षर व्यक्तियों के बीच उनके विचारों का आदान-प्रदान का माध्यम है.*
- *पत्र में दो व्यक्तियों को एक भाषा का जानकार एवं साक्षर होना आवश्यक है.*

किसी भी व्यक्ति/साहित्यकार का सहज रूप उसके द्वारा लिखे गए पत्रों में देखा जा सकता है. किसी भी बात को, संदेश को एक व्यक्ति के पास से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने का माध्यम पत्र है, फिर वह चाहे कितनी भी दूर रहता हो. पत्र वह लिखित संदेश है जो किसी दूर बैठे व्यक्ति को किसी भी माध्यम से भेजा जाता है. पत्र लिखने वाले व्यक्ति की विशिष्टता से पत्र की औपचारिका/अनौपचारिकता बढ़ जाती है. कभी-कभी पत्र के महत्त्व के कारण पत्र लेखक ही नहीं पत्र पाने वाला भी धन्य हो जाता है. प्रतिभा संपन्न व्यक्तियों के पत्र साहित्य की अक्षय निधि बन जाते हैं. यही वजह है कि वर्तमान समय में साहित्य की अन्य विधाओं के साथ पत्र विधा भी साहित्य की विशिष्ट विधा बन गयी है.

पत्र किसी काल्पनिक अथवा अमूर्त व्यक्ति को नहीं लिखा जाता है. पत्र पाने वाला जब पत्र का जवाब देता है तो वह भी पत्र लेखक बन जाता है. उसमें भी सर्जनात्मक सामर्थ्य के गुण आ जाते हैं. संवाद में दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को संप्रेषित कर रहे होते हैं, जिसे हम तीन भागों में बाँट सकते हैं-

- *तथ्यों का संप्रेषण*
- *तथ्यों पर व्यक्त की जा रही मानसिक प्रतिक्रियाओं का संप्रेषण*
- *आत्माभिव्यक्ति*

पत्रों की कोटि दो प्रकार की होती हैं- 1. *औपचारिक* 2. *अनौपचारिक. औपचारिक पत्रों में एह एक-दूसरे को तथ्यों का संप्रेषण करते हैं. दूकानदार द्वारा अपने ग्राहकों को किसी वस्तु की सूचना देने से लेकर सरकार को जनता की समस्याओं से अवगत कराने तक के सभी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी आते हैं. इनका एक विशिष्ट विधान है. उसी के अनुसार सभी लोग पत्र व्यवहार करते हैं. किंतु जिन पत्रों में किसी तथ्य विशेष पर व्यक्ति अपनी निजी राय को व्यक्त करता है उसे अनौपचारिक पत्र कहते हैं. इस पत्र में व्यक्ति अपनी पीड़ा, दुःख-सुख, चिंता, राय, आलोचना आदि को माध्यम बनाकर लिखता है. अर्थात् अनौपचारिक पत्रों में निजता व्यक्ति की पहली कड़ी है. अनौपचारिक पत्रों को हम निम्न स्वरूपों में पहचान सकते हैं-*

- *अनौपचारिक पत्रों की कोई निश्चित नियम नहीं हैं.*
- *औपचारिक पत्र सोद्देश्यपूर्ण होता है. उसमें निश्चित् घटनाओं तथा तथ्यों का संप्रेषण होता है, जबकि अनौपचारिक पत्रों में इस तरह का विधान हो- जरुरी नहीं.*
- *औपचारिक पत्रों में व्यक्ति की निजी राय उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है, जितना कि अनौपचारिक पत्रों में अनौपचारिक पत्रों में वह व्यक्ति महत्त्वपूर्ण हो जाता है जिसने पत्रों को लिखा है. निजता ही अनौपचारिक पत्रों को विशिष्ट बनाते हैं. यही पत्र साहित्यिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं.*

सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में काम करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों के विषय में सभी को जानने की जिज्ञासा होती है. उनकी रचनाओं के माध्यम से

हम उनके विचारों से भलीभाँति परिचित रहते हैं; किंतु हमारी यह भी जिज्ञासा रहती है कि उस रचनाकार अथवा व्यक्ति की निजी और एकांत जीवन कैसा रहा है? किसी घटना-विशेष पर उसकी तात्कालिक प्रतिक्रिया कैसी रही है? यह सब हम उसके द्वारा लिखे गए पत्रों के माध्यम से ही जान पाते हैं. अर्थात् व्यक्ति की निजता और उसके व्यावहारिक तत्त्वों से परिचय हम उसके पत्रों के माध्यम से हो पाते हैं. पत्र साहित्य को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है-

1. *व्यक्तिगत पत्रों के स्वतंत्र संकलन*
2. *विविध विषयक ग्रंथों में परिशिष्ट आदि के अंतर्गत संकलित पत्र*
3. *पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र*

पत्र निजी प्रकाशन के उद्देश्य से भी लिखे जाते हैं, जबकि दूसरे पत्र वास्तव में साहित्यिक कृति के रूप में लिखे तथा प्रकाशित किए जाते हैं. इस परंपरा की शुरुआत बालमुकुन्द गुप्त द्वारा 'शिवशंभु' के छद्म नाम से लिखे गए 'चिट्ठे' और 'भारत मित्र' में प्राकशित पत्रों की लोकप्रियता से होती है और विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' द्वारा तत्कालीन 'चाँद' में प्रकाशित 'डॉ. दुबेजी की चिट्ठी' भी हिंदी पत्र साहित्य की आरंभिक किंतु महत्त्वपूर्ण निधि है. तत्कालीन वायसराय लार कर्जन के नाम लिखे गए 'शिवशंभु के चिट्ठों' ने तो उस समय के पाठकों में तहलका मचा दिया था. इन चिट्ठों ने देश के सर्वोच्च शासक, वायसराय की बड़ी तीव्र आलोचना की गयी थी.

इधर हाल के वर्षों में साहित्यकारों की जो ग्रंथावलियाँ या रचनावलियाँ प्रकाशित हो रही हैं. उनमें पुरे एक खण्ड में पत्रों का प्रकाशन किया जा रहा है. मुक्तिबोध ग्रंथावली 'खण्ड छह', हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली 'खण्ड ग्यारह', माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली 'खण्ड आठ' और निराला रचनावली 'खण्ड आठ' में उपर्युक्त साहित्यकारों के पत्र संगृहित हैं. इन पत्रों से न केवल इन रचनाकारों के जीवन-संबंधी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का उद्‌घाटन हुआ है, बल्कि इनके समय की साहित्यिक गतिविधियों पर भी प्रकाश पड़ा है.

*पिछले तीस वर्षों में कुछ प्रमुख साहित्यकारों के महत्त्वपूर्ण पत्र-संग्रह प्रकाशित हुए हैं. इनमें चिट्ठी पत्री, दो खंड, (*1962 *ई.), संपादक अमृतराय (प्रेमचंद के पत्रों का संग्रह), फाइल और प्रोफाइल (*1968 *ई.) (साहित्यकारों के 'उग्र' के नाम पत्र) और निराला के पत्र (*1971 *ई.), संपादक जानकी वल्लभ शास्त्री; पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम (*1971 *ई.), संपादक हरिवंश राय बच्चन, बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र (*1971 *ई.), संपादक वृंदावनदास, 'निराला की साहित्य साधना' खंड-३ (*1976 *ई.), संपादक रामविलास शर्मा, 'प्रसाद' के नाम पत्र (*1976 *ई.), संपादक रत्नशंकर प्रसाद, यशपाल के पत्र (*1977 *ई.), संपादक पद्मधर पाठक, पत्र हजारी प्रसाद द्विवेदी (*1983 *ई.) आदि पत्र-संग्रह महत्त्वपूर्ण हैं. कुछ पत्रिकाओं ने अपने पत्र विशेषांक प्रकाशित किए हैं- 'ज्ञानोदय' (*1963 *ई.), 'सम्मेलन पत्रिका' (*1982-83 *ई.), 'सारिका' (*1989 *ई.)*

और 'दस्तावेज' (2.5) के पत्र-विशेषांक उल्लेखनीय हैं. 'मित्र संवाद' डॉ. रामविलास शर्मा और उनके कवि मित्र केदारनाथ अग्रवाल के बीच होने वाले लंबे पत्र व्यवहार का संग्रह है. इसमें पाठक दोनों की मुद्राएँ और भाव दशाएँ एक साथ देख सकते हैं.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1. *पत्र में दूर बैठे दो अलग-अलग व्यक्तियों के बीच ...... भाषा के रूप में पत्रों के माध्यम से .... का आदान-प्रदान किया जाता है.*
2. *'मित्र संवाद' डॉ. रामविलास शर्मा और उनके कवि .... के बीच होने वाले लंबे पत्र व्यवहार का संग्रह है.*
3. *पत्र साहित्य को मुख्यतः .... भागों में विभाजित किया जाता है.*
4. *निराला के पत्र (1971 ई.), के संपादक .... है.*
5. *'शिवशंभु के चिट्ठों' ....के नाम से सम्बोधित थे.*

15.4 *पत्र विधा की प्रमुख विशेषताएँ*

प्रिय विद्यार्थी मित्रो! पूर्व में हमने 'पत्रः एक साहित्यिक विधा' के अंतर्गत पत्र विधा और उसके विकास की परंपरा का अध्ययन किया. अब हम आगे पत्र विधा की प्रमुख विशेषताओं के विषय में जानेंगे.

तो आइये! पत्र विधा के प्रमुख विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं -

- *पत्र विधा एक लिखित एवं साक्षर व्यक्तियों का माध्यम है. पत्र लिखने एवं पढ़ने वाला व्यक्ति समान भाषा का जानकार होना चाहिए. लिखित माध्यम होने की वजह से इसमें एक प्रकार की औपचारिकिता भी दिखाई पड़ती है.*
- *पत्र में दो व्यक्ति आपस में संवाद करते हैं; इसलिए उन दोनों में निजता के भावों का आदान-प्रदान होता है.*
- *पत्र में लेखक आत्माभिव्यक्ति करता है. वह एक से अधिक तथ्यों पर अपनी मानसिक प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है. लेखक के मन में जो भाव तरंगे उठीं, मन में जो विचार आया, उन्हें वह उसी रूप में व्यक्त करता जाता है.*
- *किसी भी पत्र में लेखक अन्य विधाओं की तरह भूमिका नहीं लिखता. वह अपनी बात सीधे, सरल और स्पष्ट शब्दों में लिखता है.*
- *सामाजिक और वैयक्तिक जीवन का प्रत्येक परिवर्तन पत्रों में अभिव्यक्ति पाता है.*
- *घटना पर आधारित पत्रों की प्रतिक्रिया पहला व्यक्ति करता है, जबकि पाने वाले उसकी प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रिया करता है.*
- *पत्रों में लिखी गयी चीजों को बदला तो नहीं जा सकता, लेकिन लिखने वाले व्यक्ति की मानसिकता कभी भी बदल सकती है. यही कारण है कि अगला पत्र कभी पिछले पत्र को निरस्त करके लिखा जाता है.*

- *पत्र तात्कालिक विषयों को आधार बनाकर लिखा जाता है.*
- *सहजता पत्र के आवश्यक गुण हैं; इसीलिए पत्र की भाषा-शैली सरल और सहज होनी चाहिए.*
- *पत्र लिखते समय लेखक भाषा और शिल्प की कलात्मकता के प्रति ज्यादा सचेत नहीं रहता.*

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *पत्र विधि कैसे व्यक्तिओं का माध्यम है?*
2. *पत्र में कितने व्यक्ति का हिना आवश्यक है?*
3. *पत्र कैसे विषयों को ध्यान में रखकर लिखे जाते है?*

15.5 *डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : वाचन*

https://rb.gy/ms7sdr

प्रिय विद्यार्थी! उपर्युक्त लिंक को गूगल सर्च बॉक्स में टाइप कीजिए. इंटरनेट के हिंदी समय डॉट कॉम (hindisamay.com) *में मूल रचना पी.डी.एफ.* (PDF) *फाइल के रूप में खुल जायेगी. 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' पत्र लेखन आपके द्वारा पढ़े जाने का इंतजार कर रहा है. तो पढ़िए और आनंद लीजिए.*

15 .6 *डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : सार*

आइये, विद्यार्थी मित्रो! इस अनुभाग में हम पत्र 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' के सार को देखते हैं.

पत्र दो व्यक्तियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान और संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम होता है. यदि पत्र लिखने वाले में आत्मीयता है तो पत्रों की औपचारिकता समाप्त हो जाती है. पत्र अनौपचारिक हो जाते हैं. नितांत वैयक्तिक. अब प्रश्न यह उठता है कि यदि दो आत्मीय पत्र लिख रहे हैं तो हमारा उनसे क्या सरोकार हो सकता है? हमारा उनसे गहरा सरोकार है. जब पत्र लिखने वाले दोनों मित्र साहित्यिक क्षेत्र के हो तो हमारा उनसे तादात्म्य हो सकता है. हम उनके निर्माण के दौरान आई चीजों से सीख ले सकते हैं. साहित्यकार का निर्माण किस तरह होता है? वह कहाँ से सीखना है? वह विषय को कहाँ से उठाता है? अपने परिवेश से किस प्रकार उसकी अतरंगता होती है? इन सभी चीजों पर हम तभी जान सकते हैं जब कोई अनौपचारिक माध्यम हो. इसके लिए पत्र विधा सबसे सशक्त और महत्त्वपूर्ण विधा मानी जाती है.

द्विवेदी युग में बहुत अधिक पत्रों का संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ, लेकिन इस युग का पत्रों के इतिहास में महत्त्व इस बात के लिए है कि इस काल में प्रथम पत्र-संग्रह प्रकाशित हुआ. इसके पूर्व भारतेन्दु युग में विभिन्न पत्रिकाओं में पत्रों का प्रकाशन

फुटकल ढंग से होता था. कहना न होगा कि पत्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विधा के रूप में शुरूआत इसी युग से हुआ. कालांतर में विभिन्न पत्रों का संग्रह लगातार प्रकाशित होता रहा है. सन् 2... तक पहुँचते-पहुँचते पत्रों की पहचान एक सशक्त विधा के रूप में बन गई. इस बात को कहने मे कोई संकोच नहीं कि हिन्दी में पत्रों को सशक्त विधा के रूप में स्थापित करने में डॉ. रामविलास शर्मा का बहुत बड़ा योगदान है.

पत्रों का लिखना एक बात है और पत्रों को सुरक्षित रखकर उसे पुस्तक का रूप देना दूसरी बात है. डॉ. रामविलास शर्मा और अशोक त्रिपाठी द्वारा संपादित 'मित्र संवाद' 1992 *ई. में प्रकाशित हुआ. 'मित्र संवाद' का प्रकाशन पत्रों के इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी. उनमें सिर्फ एकतरफा 'हाल-ए-बयां' न था. 'मित्र संवाद' में दो मित्रो की आपसी बातचीत का प्रतिफलन है.*

डॉ. रामविलास शर्मा की अलग शैली है तो केदारनाथ अग्रवाल की भी अपनी स्वतंत्र अस्मिता है. एक आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं तो दूसरे कवि के रूप में. सबसे बड़ी बात यह है कि इन दोनों की रूचियाँ भिन्न होने के बावजूद भी दोनों गहरे मित्र हैं.

'मित्र संवाद' दोनों मित्रो की 56 *वर्षों की दोस्ती का ऐतिहासिक साहित्य दस्तावेज है. पत्रों के माध्यम से दोनों एक-दूसरे के जीवन और रचना-कर्म पर नजर रखते हैं. एक-दूसरे को सलाह देते हैं. एक-दूसरे से सीखते हैं. दुनिया-जहान की घटनाओं पर दृष्टि रखते हैं. पारिवारिक खुशियों को मिलकर बाँटते हैं. दुख में एक-दूसरे के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं. समाज मे व्याप्त असमानताओं पर दुःखी होते हैं. अपने विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से रखते हैं.*

डॉ. रामविलास शर्मा के पत्र उनकी आलोचना और रचना को पुनर्व्याख्यायित करते हैं और केदारनाथ अग्रवाल के पत्र उनके संस्कारों को पुनर्रचित. इन दोनों साहित्यकारों की जोड़ी उन्नीसवी सदी में मार्क्स और एंगेल्स की 'वैचारिक मित्रता' का उदाहरण मिलता है. वैचारिक मित्रता के बादजूद, दोनों में वैयक्तिक्र स्तर पर कुछ वैचारिक भिन्नता भी थी. डॉ. रामविलास शर्मा का भी साहित्यिक ज्ञान अधिक व्यापक था. प्राचीन साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक सभी पर उनकी गहरी पकड़ थी. जबकि केदारनाथ अग्रवाल का अध्ययन डॉ. रामविलास शर्मा की तुलना में कम था, लेकिन केदार, डॉ. शर्मा से लगातार सीखते हैं. उन्हें मित्र से सीखने में कोई परहेज भी नहीं है. डॉ. शर्मा के विचारों में गहरी दार्शनिकता है और केदारनाथ अग्रवाल के स्वर में प्रगतिशीलता रची होती है. डॉ. शर्मा भी अपने ज्ञान का आतंक मित्र पर नहीं थोपते; इसीलिए इन पत्रों में कहीं-कहीं केदार की बहस के तर्क और उनकी आलोचना-शक्ति विस्मित कर देने वाली हैं. वहाँ पर पाठक उनके निष्कर्षों को विश्वसनीय पाते हैं और उनसे सहमत होते हैं.

डॉ. शर्मा तथा केदारनाथ अग्रवाल का मित्र संवाद सांस्कृतिक निर्माण को पुनर्व्याख्यायित करते हुए सभ्यता और संस्कृति के उत्कृष्ट स्वरूप को प्रस्तुत करता है. इसकी बहस यथार्थपरक है. इना दोनों कवियों ने यथार्थवादी दृष्टि कविता में ज्यादा दिखाई है. असल में मित्र संवाद की पूरी बहस यथार्थ की सच्चाई से एक-दूसरे को रु-ब-रु कराना है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1. *'मित्र संवाद' दोनों मित्रो की ..... वर्षों की दोस्ती का.......... दस्तावेज है.*
2. *मित्र संवाद सांस्कृतिक निर्माण को पुनर्व्याख्यायित करते हुए........और........ के उत्कृष्ट स्वरूप को प्रस्तुत करता है.*
3. *पत्र दो व्यक्तियों के बीच सूचनाओं के.........और.........का सबसे सशक्त माध्यम होता है.*
4. *डॉ. रामविलास शर्मा और अशोक त्रिपाठी द्वारा संपादित 'मित्र संवाद'.......... ई. में प्रकाशित हुआ.*
5. *प्रथम पत्र संग्रह .... युग में प्रकाशित हुआ.*

15.7 *डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम : विश्लेषण*

प्रिय विद्यार्थी मित्रो! इस अनुभाग के अंतर्गत् प्रस्तुत पत्र 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' के अंतर्वस्तु का विश्लेषण/मूल्यांकन करेंगे.

तो आइये, 'डॉ. रामविलास शर्मा का पत्र केदारनाथ अग्रवाल के नाम' पत्र के अंतर्वस्तु का विश्लेषण किया जाए-

विद्यार्थी मित्रो! जैसा की आप सभी को पता है कि 'मित्र संवाद' दो मित्रो (डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल) की आपसी बातचीत का दस्तावेज है. दोनों मित्रो में आमने-सामने बातचीत नहीं होती है, लेकिन बातचीत का माध्यम पत्र है. इन दोनों के बीच लगभग 56 *वर्षों तक बातचीत का सिलसिला चलता रहता है. 'मित्र सवाद' की भूमिका में दोनों मित्रो के पत्रों में पारिवारिक, राजनैतिक, आर्थिक, प्राकृतिक पहलुओं को भी उद्घाटित किया गया है. साहित्येत्तर घटनाओं और कला की चर्चा उनके पत्रों में होती है. कुल मिलाकर समाज के लगभग सभी पहलुओं पर दोनों रचनाकारों का विमर्श है. इन पत्रों में विषय की विविधता होने की वजह से इनका विश्लेषण भी विभिन्न रूपों में किया जाना लाजमी होगा.*

1. *साहित्यिक*

'मित्र संवाद' के दौरान विभिन्न कवियों (प्राचीन और आधुनिक) और साहित्यकारों की रचनाओं पर खुलकर पत्राचार हुआ है. कालिदास पर डॉ. रामविलास शर्मा केदारनाथ अग्रवाल को पत्र लिखते हुए कहते हैं कि- ''कालिदास में सुरतवाद बहुत

है, वरना वह भी आदमी था काम का. सोंधी मिट्टी उसे बहुत पसंद है.... अपने सिमित क्षेत्र में कला की जो पूर्णता उसमें है, वह किसी में नहीं. परिष्कृत इंद्रिय बोध में सब उसके सामने पानी भरते हैं.'' डॉ. शर्मा कालिदास के अलावा सूरदास, तुलसी, निराला पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किए हैं. 'निराला की साहित्य साधना' के संदर्भ में डॉ. शर्मा केदारनाथ जी को लिखते हैं कि– ''प्यारे, तुलसीदास के बाद अब तक ऐसी अमोघ प्रतिभा का साहित्यकार हिंदी में नहीं आया था. बाल्मीकि, तुलसीदास, निराला तीनों तरह के लेकिन तीनों गरल पीने वाले वीर थे, दुख पर रोने वाले नहीं, ओज गुण की सृष्टि करने वाले, सच्चे अर्थों में वीर रस के कवि.'' तुलसीदास ने समाज के समक्ष एक व्यवस्था रखी. आदर्श प्रतिमान खड़े किए. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और डॉ. रामविलास शर्मा ने भी आलोचना के नए प्रतिमान गढ़े. एक ने परंपरा की शुरुआत की और दूसरे ने परंपरा को दृढ़ता प्रदान की.

प्राचीन साहित्यकारों की अपेक्षा आधुनिक साहित्यकारों के प्रति इन दोनों लोगों की रूचि ज्यादा दिखाई पड़ती है. भारतेंदु के विषय में डॉ. शर्मा लिखते हैं कि– '' भारतेंदु एक विशाल आन्दोलन के केंद्र में थे.... वह दूसरों को एक सहकारी की भाँति उत्साहित करते थे.'' डॉ. शर्मा प्रेमचंद को तुलसी और कबीर की परंपरा का स्वाभाविक विकास मानते हैं.

डॉ. शर्मा केदार जी को एक पत्र में कविता समर्पित करते हुए लिखा है कि–

अवतार...
एक सतत् संघर्ष,
बंधु उड़ते झंझा से मास–मास दिन वर्ष
वेदना दुःख दारिद्य शोक में भी अक्लांत,
–नैश निर्धूम लापत जैसे मसान में–

निराला की मृत्यु पर केदार जी डॉ. शर्मा को जो पत्र लिखा है वह अत्यंत हृदयस्पर्शी और मार्मिक है. ''हिंदी का गरगज कविता का दिग्गज उठ गया. क्या कहूँ! मैं तो दुखी हूँ ही. तुम भी विचलित पड़े होओगे. धैर्य धरो दोस्त. तुमने तो उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'भाषा और समाज' समर्पित करके अपना ऋण चुकाया.''

इस प्रकार दोनों मित्रो ने साहित्य जगत् की लगभग सभी चर्चित व्यक्त्यिों और विधाओं पर अपने पत्रों में प्रकाश डाला है.

2. *पारिवारिक*

'मित्र संवाद' के पत्रों में भारतीय परिवार के परंपरा और आधुनिकजनक विषयों पर खुलकर बातचीत हुई है. इन पत्रों में परिवार का धरातल काफी विस्तृत है. इसमें मित्र, साहित्यकार और सभी में अपनापन है. दोनों घरेलु–पारिवारिक जीवन में समाविष्ट लगते हैं. एक प्रकार से मित्र संवाद के पत्रों में परिवार का संयुक्त धरातल लगता है. इस परिवार में भाई, पत्नी, बच्चे व अन्य समवयस्क रचनाकार हैं. लगभग सभी एक दूसरे के विषय

में जानने के इच्छुक हैं. एक की पीड़ा से दूसरा दुखी होता है और दूसरे की सफलता पर पहला खुश. रचनात्मकता के स्तर पर चित्रकूट जैसी झाँकी 'मित्र संवाद' में देखने को मिल जाती है.

एक पत्र में डॉ. शर्मा केदारनाथ जी को लिखते हैं कि- ''सोचते-सोचते कि फुर्सत मिले तो लबा-सा पत्र लिखूँ यह दिन आ गया. तुम्हारी दूसरी चिट्ठी भी आ गयी. तुम्हें चिट्ठी रोज लिखने की सोचता जरुर था. इधर धर्मपत्नी जी कुछ बीमार हो गईं थी- बच गईं- अब सब ठीक है.'' संबोधन में धर्मपत्नी जी. यह भाषा की मर्यादा और गंभीरता को स्पष्ट करती है.

3. *राजनैतिक*

'मित्र संवाद' के दोनों मित्र एक विशेष विचारधारा के अनुगामी हैं. मार्क्सवादी और प्रगतिवादी विचारधारा उनकी मानसिकता और उनकी संवेदना का सत्य है. उनकी इस संवेदना को 'मित्र संवाद' के पत्रों में देखा जा सकता है. इन पत्रों में कहीं विशुद्ध मार्क्सवाद की चर्चा हैं तो कहीं साहित्य और राजनीति की समझ का संबंध. राजनीति के फलक में कहीं स्थानीयता है तो कहीं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषयों के प्रति चिंता.

केदार जी भारतीय न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार पर डॉ. शर्मा को 'मित्र संवाद' के पत्रों में लिखा है कि- ''मुकदमे में जैसी दृष्टि से तहकीकात करनी चाहिए वैसी तहकीकात दरोगा नहीं करते. इससे सफलता नहीं मिलती और अधिकतर अभियुक्त छूट जाते हैं, जो दोषी भी होते हैं. गवादान भी वैसे होते हैं, और झूठ का अंबार लगा देते हैं. यहाँ भी कातिल आल्हा-उदल की परंपरा में अब भी काम करते हैं. अदालत में न्याय न पाकर लोग बाहर स्वयं न्याय कर लेते हैं. हत्याएँ होती रहती हैं. अदालत तो एक विशिष्ट प्रणाली और सिद्धांत से काम करती है. इससे वह विवश होकर छोड़ती है.'' गवाहों का मुकर जाना, झूठी गवाही देना, समाज के नैतिक पतन का सूचक है. व्यक्ति कदम-कदम पर झूठ का सहारा लेता जा रहा है.

छात्रों में बढ़ते अपराधीकरण पर डॉ. शर्मा पत्र में लिखते हैं- ''छात्रों में गुंडागर्दी उनके गुरुओं में जातिवाद विशेष रूप से ब्राह्मण, ठाकुरवाद यहाँ की आकर्षण की विशेषता है.'' यह चिंता आज भी बनी हुई हैं. केदारनाथ जी प्रगतिशील धारा के कवि हैं. उनकी एक कविता 'रोटी' पर है. डॉ. शर्मा को केदारनाथ जी लिखते हैं कि- '''रोटी' वाली रचना में Dramatic Motive *नहीं है. यह भी आफत है.'' रोटी साधारण जनता की सबसे बड़ी आवश्यकता है. रोटी* 1857 *के ग़दर की प्रतीक थी. 'रोटी' क्रांति का प्रतीक है. अर्थात् रोटी व्यक्तिकी बुनियादी जरुरत है.*

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि 'मित्र संवाद' में आलोचना की सर्जनात्मक लेखन का आनंद प्राप्त होता है. संवाद होने के कारण यह अद्भुत गद्य है. 'मित्र संवाद' में देशज शब्दों का प्रयोग भी यत्र-तत्र मिल जाता है. दोनों मित्रो में गहरा स्नेह है;

इसलिए कभी–कभी मजाक का भी वातावरण बनता है जो कि विनोदी प्रकृति का होता है. 'मित्र संवाद' का हास्य ऐसा है जो कि पाठक को गुदगुदाता है. ऐसा इसलिए कि दोनों मित्रो में कोई औपचारिकता नहीं है; बल्कि यहाँ तो एक–दूसरे की रचना पर खुकलर चर्चा की जाती है. साहित्य, राजनीति, पारिवार आदि विषयों पर ये दोनों मित्र खुलकर लिखते हैं. अतः यह कह सकते हैं कि 'मित्र संवाद' का गद्य विधान आत्मीयता, अनौपचारिकता से उपजा हुआ है, जिसमें दुनिया की कई चीजों पर सूक्ष्म और कई चीजों पर गहराई से विश्लेषण मिलता है.

- **बोध प्रश्न**

एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. साहित्यिक पत्र में किसकी चर्चा हुई हैं?
2. किसकी मृत्यु पर लिखा गया पत्र हृदयस्पर्शी और मार्मिक है?
3. 'रोटी' कविता किस कवि की है?
4. छात्रों में बढ़ते अपराधीकरण पर डॉ. शर्मा ने पत्र में क्या लिख है?
5. 'मित्र संवाद' का हास्य कैसा है?

15.8 सार–बिंदु

प्रिय विद्यार्थी मित्रो ! उम्मीद है कि आपने पूरी इकाई को पढ़कर अच्छी तरह से समझ लिया होगा. अब आप इकाई के प्रत्येक उप–शीर्षक से उसकी महत्त्वपूर्ण बातें एक जगह अवश्य लिखें जिससे इस इकाई को निष्कर्ष रूप में याद रखने में आपको आसानी होगी. हम भी यही काम करने जा रहे हैं. आप स्वयं द्वारा बनायी गयी सूचि से संबंधित सूचि से मिलान कीजिए और देखें कि हमसे कुछ बिंदु छूट तो नहीं गया है.

- पत्र विधा आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण विधाओं में से एक है.
- पत्र में व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक आदि बिंदुओं को आधार बनाकर लिखा जाता है.
- सदियों से अपने विचारों के आदान–प्रदान के लिए लोग पत्र माध्यम का सबसे ज्यादा उपयोग करते आ रहे हैं.
- पत्र में एक व्यक्ति पाठक तथा दूसरा लेखक होता है.
- पत्र विधा एक लिखित एवं साक्षर व्यक्तियों का माध्यम है.
- पत्र में लेखक बिना किसी भूमिका के सीधे लिखता है.
- पत्र विधा में लेखक अपनी बात सीधे, सरल और स्पष्ट शब्दों में लिखता है.
- साहित्यिक पत्र अनौपचारिक पत्रों की श्रेणी में आते हैं.
- घटना पर आधारित पत्रों की प्रतिक्रिया पहला व्यक्ति करता है, जबकि पाने वाले उसकी प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रिया करता है.
- पत्र में तात्कालिक विषयों/घटनाक्रमों को आधार बनाया जाता है.
- प्रस्तुत पत्र का नाम 'मित्र संवाद' है.

- *'मित्र संवाद' में डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के बीच हुए पत्रों का संग्रह है.*
- *'मित्र संवाद' में डॉ. रामविलास शर्मा का साहित्यिक और वैचारिक दृष्टि उभरकर आयी है तो वहीं केदारनाथ अग्रवाल का कवि व्यक्तित्व.*
- *'मित्र संवाद' में डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल मार्क्सवादी और प्रगतिवादी विचारों के पोषक हैं.*
- *'मित्र संवाद' में तात्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्य विषयों को आधार बनाकर पत्र लिखे गए हैं.*
- *'मित्र संवाद' के पत्रों में केदारनाथ अग्रवाल अपनी पत्नी को 'धर्मपत्नी जी' कहकर संबोधित करते हैं.*
- *'मित्र संवाद' के पत्रों में डॉ. रामविलास शर्मा कालिदास में 'सुरतवाद' का कवि कहकर कालिदास की प्रशंसा करते हैं.*
- *'मित्र संवाद' में डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के लगभग* 56 *वर्षों तक के हुए पत्राचार के पत्रों का संग्रह है.*
- *'रोटी' वाली रचना में* Dramatic Motive *नहीं है'- केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा है*
- *डॉ. रामविलास शर्मा प्रेमचंद को तुलसी और कबीर की परंपरा का स्वाभाविक विकास मानते हैं.*
- *''बाल्मीकि, तुलसीदास, निराला तीनों तरह के लेकिन तीनों गरल पीने वाले वीर थे, दुःख पर रोने वाले नहीं, ओज गुण की सृष्टि करने वाले, सच्चे अर्थों में वीर रस के कवि.''- केदारनाथ अग्रवाल ने 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक पढ़कर डॉ. रामविलास शर्मा को पत्र में लिखा था.*

15.8 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए***
  1. *पत्र विधा से आपका क्या मतलब है? स्पष्ट कीजिए.*
  2. *पत्र विधा की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए.*
  3. *'मित्र संवाद' के अंतर्वस्तु का मूल्यांकन कीजिए.*
  4. *'मित्र संवाद' में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक तत्त्वों का समावेश हुआ है. स्पष्ट कीजिए.*
- ***निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए***
  1. *साहित्यिक पत्र अनौपचारिक पत्र होते हैं- टिप्पणी कीजिए.*
  2. *'मित्र संवाद' में डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के बीच किस तरह के पत्रों का आदान प्रदान हुआ है?*

3. *साहित्यिक पत्र निजता और अनौपचारिकता के गुणों से परिपूर्ण होते हैं- कथन को स्पष्ट कीजिए.*
4. *'मित्र संवाद' में बाल्मीकि, तुलसी और निराला के संदर्भ में केदारनाथ अग्रवाल की टिप्पणी पर प्रकाश डालिए.*

15.10 उपयोगी पाठ्य-सामग्री

1. *रामविलास शर्मा, अशोक त्रिपाठी (संपा.), मित्र संवाद (भाग-*1*), साहित्य भण्डार, इलाहबाद,* 2.1.
2. https://rb.gy/ms7sdr
3. https://rb.gy/jr295q
4. https://rb.gy/1fpejn

इकाई 16 डायरी – 'बंजारा मन और बंदिशें' - मधु कांकरिया

रूपरेखा

16.1 उद्देश्य

16.2 प्रस्तावना

16.3 लेखिका परिचय

16.4 मूलपाठ का अंश

16.5 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी का विश्लेषण

16.6 डायरी – 'बंजारा मन और बंदिशें' का डायरी लेखन की विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन

16.7 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी की भाषाशैली

16.8 सार-बिंदु

16.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

16.10 उपयोगी पाठ्य सामग्री

16.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में मधु कांकरिया की डायरी 'बंजारा मन और बंदिशें' का अंश प्रस्तुत किया जा रहा है. इस इकाई पढ़ने के बाद आप –

- डायरी विधा की विशेषताएँ बता सकेंगे.
- डायरी और संस्मरण, डायरी और यात्रावृत्तांत तथा डायरी और आत्मकथा का अंतर बता सकेंगे.
- लेखिका मधु कांकरिया का जीवन परिचय और कृतित्व को जान पाएंगे.
- मधु कांकरिया की डायरी की विषय-वस्तु एवं भाषा-शैली की विशेषताएँ स्पष्ट कर सकेंगे.
- 'बंजारा मन और बंदिशें' का डायरी लेखन की विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन कर पाएंगे.

16.2 प्रस्तावना

डायरी लेखन एक कला है. वैसे डायरी, में प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं में कुछ प्रमुख या विशेष रूप से प्रभावित करनेवाली घटना को ही लिखा जाता है. आप डायरी में

अपनी दिनचर्या भी लिख सकते है. डायरी लेखन आत्माभिव्यक्ति का उत्तम साधन हैं. जो बात हम किसी से नहीं कर सकते, उसे हम डायरी में लिखकर अपने मन का बोझ हल्का कर सकते है. इस प्रकार डायरी व्यक्ति का निजी एवं गोपनीय दस्तावेज है, पर आधुनिक साहित्य में डायरी लेखन को एक विधा के रूप में स्विकृत किया गया है. विश्व में हुए महान व्यक्ति डायरी लेखन करते थे और उनके अनुभवों से उनके निधन के बाद भी कई लोगों को प्रेरणा मिलती है. डायरी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है इसमें लेखक आत्म साक्षात्कार करता है. वह अपने आपसे सम्प्रेषण की स्थिति में होता है.

मानव के समस्त भावों मानसिक उद्वेगों, अनुभूति, विचारों को अभिव्यक्त करने में साहित्य का सर्वोच्च स्थान है. समीक्षकों ने डायरी को साहित्य की कोटि में इसलिए रखा है क्योंकि वह किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व का उदघाटन करती है या मानव समाज के विभिन्न पक्षों का सूक्ष्म और जीवंत चित्र उपस्थित करती हैं. डायरी लेखक अपनी रुचि और आवश्यकतानुसार राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि विभिन्न पक्षों के साथ निजी अनुभूतियों का चित्रण कर सकता है.
इस इकाई में मधु कांकरिया की 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी के अंशों का विश्लेषण किया गया है तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया है.

16.3 लेखक परिचय

मधु कांकरिया हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका हैं. मधु जी के लेखन का मुख्य क्षेत्र गद्य है. मधु जी के उपन्यास और कहानियाँ बहुचर्चित हैं. कथेतर के क्षेत्र में मधु जी बहुत सुन्दर यात्रा-वृत्त लिखे हैं. इनकी रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता तथा समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे संस्कृति, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा तथा नारी अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं.

16.3.1 मधु कांकरिया का जीवन परिचय

मधु कांकरिया का जन्म कलकत्ता के एक निम्न मध्यवर्गीय जैन व्यवसायी परिवार में 23 मार्च, 1957 में हुआ. मधु कांकरिया के पिता का नाम ध्यानचंद वर्डिया तथा माँ का नाम अक्षयदेवी है. मधुजी के पिता का अपना मेटल का व्यवसाय था. उन्हें किताबें, अखबार, पत्रिकाएँ आदि पढ़ने का बहुत शौक था. माँ अक्षय देवी कुशल गृहिणी थी.

अक्सर छोटी-छोटी बातों पर मधु और माँ की बहस हो जाया करती थी. समाज के नियमों और रूढ़ियों की अवहेलना करना मधु जी का स्वभाव सा बन गया था.

मधु कांकरिया तीन बहन भाई हैं. मधु जी को जीवन में अपने भाईयों का पूरा सहयोग मिला. बड़े भाई ने मधुजी को आगे बढ़ने, आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा के लिए सशक्त बनने के लिए प्रोत्साहित किया .

मधु जी ने बी.ए. और एम.ए. (अर्थशास्त्र) कलकत्ता के लेडी बेटन कॉलेज से किया तथा कम्प्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा भी किया. कम्प्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा करने का उनका मकसद था कि वे स्वावलंबी बन जाए. मधु जी को विवाह करना पसंद नही था फिर भी उनका ब्याह एक पारंपरिक जैन मारवाड़ी परिवार में हुआ. मधु जी का वैवाहिक जीवन उनकी कल्पनाओं से परे था; अतः पुत्र के जन्मोपरांत मधु जी सदैव के लिए अपने मायके चली गयी.

मधु जी को किताबें पढ़ने की रुचि बचपन से ही थी. पिताजी साहित्य प्रेमी थे. उन्हें किताबे, अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने का बेहद शौक था. पढ़ने के साथ उन्हें पढ़ी चीजों को सुनाने का भी शौक था. इसलिए घर पर चर्चित लेखकों की किताबें उपलब्ध रहती थी. पिता की वजह से रचनाकारों- (प्रेमचंद, शरदचन्द्र, टैगोर, रेणु, मन्नू भंडारी आदि) और उनके साहित्य पढा और जाना. कॉलेज के दिनों में छोटी-छोटी कहानियाँ लिखना आरंभ किया.

मधु जी का पहला उपन्यास राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था ये अपने आप में एक उपलब्धि थी.

6.3.2. *मधु कांकरिया की रचनाएँ*

कहानी संग्रह

चिड़िया ऐसे मरती है

काली चील

फाइल

उसे बुद्ध ने काटा

अंतहीन मरुस्थल

और अंत में यीशु

बीतते हुए

भरी दोपहरी के अँधेरे

उपन्यास

खुले गगन के लाल सितारे

सूखते चिनार

सलाम आखिरी

हराम खोर

सेज पर संस्कृत

हम यहाँ थे

यात्रा वृतान्त

बादलों में बारूद

बुद्ध

बारूद और पहाड़

शहर शहर जादू

बंजारा मन और बंदिशे

साना साना हाथ जोड़ी

टेलीफिल्म

रहना नहीं देश वीराना है (प्रसार भारती द्वारा 2008 में)

सामाजिक विमर्श

अपनी धरती अपने लोग

टेली फिल्म लेखन

रहना नही देश विराना है

सम्मान

कथाक्रम सम्मान (आनंद सागर स्मृति सम्मान) (2008)

हेमचंद्र आचार्य साहित्य सम्मानित (विद्या मंच द्वारा) (2009)

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा मारवाड़ी समाज गौरव सम्मान (2009)

विजय वर्मा कथा सम्मान (2012)

शिवकुमार मिश्र स्मृति कथा सम्मान

रत्नीदेवी गोयनका वाग्देवी सम्मान

बिहारी पुरस्कार 2021

आप 'कर्तृत्व समग्र सम्मान' भारतीय भाषा परिषद् (2020), 'प्रेमचन्द स्मृति कथा सम्मान' (2018), 'शरत चन्द्र साहित्य सम्मान' (2020), 'रत्नीदेवी गोयनका वाग्देवी सम्मान' (2018), 'कथा क्रम सम्मान' (2008), 'विजय वर्मा कथा सम्मान' (2012), 'शिवकुमार मिश्र स्मृति कथा सम्मान' (2015), 'हेमचन्द्राचार्य साहित्य सम्मान' (2009), 'मीरा स्मृति सम्मान' (2019), 'समाज गौरव सम्मान' (2009) आदि पुरस्कारों से सम्मानित हैं.

- ***बोध प्रश्न***

एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए

1. *मधु कांकरिया का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?*

2. *मधु कांकरिया के माता-पिता का नाम लिखिए.*
3. *मधु कांकरिया किस विषय के साथ एम.ए. हुई थी ?*
4. *मधु कांकरिया की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए.*
5. *मधु कांकरिया को प्राप्त किसी एक पुरस्कार का नाम लिखिए.*

16.4 *डायरी – 'बंजारा मन और बंदिशें' - मधु कांकरिया (मूल पाठ का अंश)*

https://shorturl.at/fO568 *पूरा पढने के लिए इस लिंक पर जाए.*

दिनांक - 21.09.2019 : *कहावत सुनी थी कि अंधे को क्या चाहिए? दो आंखे पर लंदन निवासी सीडनी ब्रांडफोर्ड को आँखे क्या मिली जिंदगी कि धुरी ही गड़बड़ा गई. दस वर्ष की उम्र में ही उनकी आंखे चली गई थी.* 52 *वर्ष की उम्र में वैज्ञानिक तकनीक से कोर्निओ ट्रांसप्लांट करके उन्हें आँखे वापस मिली. लेकिन आँखे उनके लिए आफत साबित हुई. बंद आँखों के स्पर्श से जिस दुनिया के वे आदी थे उसे खुली आँखो से वे समझ ही नहीं पाए. ताल मेल इतना गड़बड़ाया कि उन्हें डिप्रेशन हो गया और आँख मिलने के महज दो साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई. रगों और गति की दुनिया से वे सर्वथा अपरिचित थे. लोगों को पहचानने में उन्हें दिक्कत होने लगी. खुली आँख और बंद आँखों के अब तक के अर्जित अनुभवों में तालमेल बिठाना मुश्किल हो गया. आँख मिलने पर जब पहली बार सर्जन ने उससे कहा 'क्या आप मेरा चेहरा देख सकते हैं तो उसने जाना कि चेहरा ऐसा होता है. उसे सब कुछ अब नए तरीके से सीखना पड़ रहा था. पहली बार चाँद को देखकर भी वह परेशान हो गया, उसने सोचा था कि चांद केक जैसा दिखता होगा. दर्पण वह नहीं जानता था दर्पण को देख यह मंत्र मुग्ध हो गया था. उसे इन्सानों से ज्यादा कबूतरों और चिडियों में मजा आता था. चाजों का हिलना वह नहीं जानता था. ट्रैफिक उसके लिए जानलेवा साबित हुई. ट्रैफिक देख यह बहुत डर गया था. खुली आँखों वह क्रॉस नहीं कर पाता था. जबकि बंद आँखों वह आराम से रास्ता पार कर लेता था. वह आवाजों को दुनिया में रहता था इस कारण इसे गहराई का अंदाज नहीं था. खिड़की से नीचे झाँकता तो उसकी इच्छा होती जाने की. चिड़ियाघर ले जाने के पहले कहा गया कि बताओ हाथी कैसा होता है? उसने आँख बंद कर जो चित्र खींचा वह वास्तविकता से कोसो दूर था. उसने टाइगर को देखा तो हक्का बक्का रह गया. वह नहीं जानता था कि उसके बदन पर भूरी धाराएँ भी होती है. हर जगह यह अज्ञानी और बौना साबित हो रहा था. इकलौती बार वह हँसा जब उसने जिराफ देखा.*

वह मशीन चालक था लेकिन आँख आ आने पर भी यह आँख मूँद कर ही काम करना पसंद करता था. उसे सारे चेहरे एक जैसे लगते थे. महीनों लगे उसे अपने दोस्तों को पहचानने में. वह लोगों के मनोभावों तक को नहीं पहचान पाता था कि वे गुस्से में है या खुश हैं. बड़बड़ा रहे हैं या शांत हैं. हर जगह वह नाकाम हो रहा था. उसकी नॉर्मल जिंदगी एकदम बिखर गई थी. अंधा था तो उसका आत्मविश्वास, उसका स्वाभिमान उच्च स्तर पर था कि

अंधे होने के बावजूद वह कामयाब था, अपने पैरो पर खड़ा था. अब उससे कदम कदम पर न सिर्फ लोगों कि जरूरत पड़ती, न सिर्फ यह आम आदमी हो गया वरन उसकी उपलब्धियों भी सामान्य हो गई, लोगों से मिलने वाला प्रेम सहयोग भी अब वैसा नहीं रहा. आँख मिलने के बाद वह भयंकर रूप से बीमार पड़ा और दो साल बाद ही उसकी मृत्यु हो गई.

जिंदगी के सच कितने उलझे हुए होते हैं. सिडनी ब्राडफोर्ड को आँख नहीं दर्द के मोती मिले. उन्हें पढ़ते पढ़ते जाने क्यों मुझे आदिवासी पंचम मुंडा की याद आने लगी. उसने भी एक दिन बहुत घबड़ाहट के साथ कहा था 'हम जंगल संस्कृति के लोग हैं, हमें नदी सभ्यता में रहना नहीं आता हैं. हमें अपने जल, जंगल, जमीन, जानवरों, अपने लोक विश्वासों, अपने गीतों, नदियाँ, रीति रिवाजों और पहाड़ों के साथ रहने दीजिए. उनके लिए भी आज का विकास विकास नहीं दर्द है. मनुष्य विरोधी यह विकास सिर्फ मुट्ठी भर लोगों को ही सुकून दे रहा है. विकास का पैटर्न क्या ऐसा नहीं होना चाहिए जिसमें सब समाँ जाएँ, जो अस्तित्व और अस्मिता दोनों को साथ निभाए?

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1. *...............दस वर्ष की उम्र में ही उनकी आंखे चली गई थी.*
2. *वैज्ञानिक तकनीक से .... करके उन्हें आँखे वापस मिली.*
3. *सीडनी ब्रांडफोर्ड इकलौती बार वह हँसा जब उसने .... देखा.*
4. *आँख मिलने के बाद वह भयंकर रूप से बीमार पड़ा और ....साल में उसकी मृत्यु हो गई.*
5. *सिडनी ब्राडफोर्ड को आँख नहीं .... मिले*

16.6 ***डायरी – 'बंजारा मन और बंदिशें' का डायरी लेखन की विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकन***

'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी में मधु कांकरिया ने अपने जीवन के अनुभवों, अपने वाचन के अनुभवों, उनके द्वारा देखी गयी फिल्मों के आदि के बारे में लेखन किया है. हमारे अभ्यास में सात दिन की डायरी का समावेश किया गया हैं. यहाँ हम डायरी की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत डायरी का मूल्यांकन करेंगे.

डायरी लेखन पहली प्रमुख विशेषता यह है कि डायरी लेखन की शुरुआत में तारीख, महिना और साल का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए. प्रस्तुत डायरी में लेखिका मधु कांकरिया ने सभी दिन की डायरी में तारीख का स्पष्ट उल्लेख किया है. अतः डायरी लेखन की पहली और महत्वपूर्ण शर्त का पालन प्रस्तुत डायरी में हुआ है.

डायरी लेखन की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि डायरी लेखन में वर्णित घटना किस स्थान पर घटित हुई है, उसका स्पष्ट उल्लेख होना अनिवार्य है. 'बंजारा मन और बंदिशे' डायरी में मधु कांकरिया ने जिन घटनाओं का वर्णन किया हैं, उनके स्थान का स्पष्ट उल्लेख किया है.

डायरी आत्मसाक्षात्कार की विधा है. इसमें व्यक्ति अपने आप से संवाद करता है. मधु कांकरिया की डायरी में सात दिनों में यानी सप्ताह की घटनाओं का उल्लेख हैं. लेखिका ने पहले दिन(10.4.2007) की डायरी में अपने पड़ोस की खिली नामक एक चार वर्षीय लड़की की करुण कहानी का वर्णन किया है. परन्तु प्रथम दिन की डायरी में एक उपदेशात्मक कहानी ज्यादा लगती है; डायरी कम. दूसरे दिन (5.12.07) की डायरी में अपने घर के लोगों के व्यवहार और घर के वातावरण की बात करते है. घर में घटित एक घटना की बात करते है – घर के हॉल में दिखे केसरिया पदचिह्न के बारे में लिखा है. दूसरे दिन की घटना में भी आत्मसाक्षात्कार के तत्त्व का आभाव है. तीसरे दिन की डायरी में भी आत्माभिव्यक्ति का आभाव है. पांचवे और सातवें दिन की डायरी में भी आत्माभिव्यक्ति के तत्त्व का आभाव है. केवल छठ्ठे दिन की घटना में आत्माभिव्यक्ति का तत्त्व दिखाई देता है जिसे देखिए – ''ये दोनों सवाल मुझे भी मेरी आत्मा के रूबरू खड़ा कर देते हैं. क्या मेरे कारण दुनिया थोड़ी और सुन्दर हुई है? यदि नहीं तो इसके लिए मैं क्या कर रही हूँ? क्या कर सकती हूँ? बहरहाल जब जब अपने समय के अँधेरे में मन डूबने लगता है, क्षुद्रताओं से मन घिरने लगता है, मेरा आसमान बदरंग होने लगता है. ये दो सवाल रौशनी के ढेर की तरह उछल कर मेरे सामने आ खड़े होते हैं और मैं फिर सत्य, सौंदर्य और प्रेम के स्वप्न देखने लगती हूँ.''

प्रस्तुत डायरी में एक और विशेषता दृष्टिगोचर होती है यह वह है कि इस डायरी के सभी दिनांकों में विषय वैविध्य है. विषय की दृष्टि से वैविध्य देखने को मिलता है. लेखिका के चिंतन के व्यापक विषयों का हमें पता चलता है. प्रस्तुत डायरी में पारिवारिक समस्याएँ, बालकों सम्बंधित समस्याएँ, पर्यावरण सम्बन्धी विषय, साहित्य, कला, विज्ञान आदि विषयों का वर्णन मिलता है, जिससे डायरी में विभिन्नता के दर्शन होते है.

वैसे तो कई लोग अपने दैनिक हिसाब के लिए, अपने खुद के अव्यक्त भावों को व्यक्त करने के लिए खुद अपने लिए डायरी लिखते है पर मधु कांकरिया एक लेखिका है और इस डायरी को पढ़कर हम इसे शुद्ध रूप से साहित्यिक डायरी कह सकते है.

'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी वाचकों के लिए लिखी गई एक शुद्ध साहित्यिक डायरी है, जो पाठकों को बोध देनेवाली, जिज्ञासावर्धक एवं सफल डायरी है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए

1. *हमारे अभ्यास में .... दिन की डायरी का समावेश किया गया हैं.*
2. *डायरी लेखन प्रमुख विशेषता यह है कि डायरी लेखन की शुरुआत में ...., ...और....... का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए.*
3. *डायरी.......... साहित की विधा है.*
4. *डायरी विधा में व्यक्ति............. से संवाद करता है.*
5. *'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी वाचकों के लिए लिखी गई एक .... डायरी है.*

16.7 *'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी की भाषाशैली*

वैसे तो डायरी लेखन में रोज का हिसाब-किताब दर्ज किया जा सकता है. लेखक के जीवन में दैनिक रूप से घटित होनेवाली घटनाओं का ब्यौरा रहता है, लेकिन ऐसी डायरी को साहित्यिक विधा नहीं माना जा सकता. वही डायरी साहित्यिक रचना का दर्जा प्राप्त कर सकती है जिसमें डायरी लेखक के पास रचनात्मक अभिव्यक्ति हो. साहित्यिक डायरी में केवल घटनाओं और भावों का वर्णन मात्र नहीं होता. डायरी लेखन करना भी अन्य गद्य विधाओं की भांति एक कला है. जिसमें लेखक के पास सूक्ष्मनिरीक्षण शक्ति, गहन चिंतन, मौलिकता, लेखन कौशल, सशक्त भाषाशैली का ज्ञान आदि का ज्ञान होना अपेक्षित है.

आम डायरी लेखन प्रकाशन के लिए नहीं होता. लेकिन साहित्यिक डायरी में लेखक भाषा का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है. 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी के हमारे अभ्यास क्रम के अंशो को पढ़कर हम जान सकते है कि मधु कांकरिया ने शब्दों का प्रयोग अत्यंत सजगता से किया है. प्रस्तुत डायरी में हम भावात्मक तरलता का आभास अच्छी तरह से अनुभव करते है. यहाँ पर हम मधु कांकरिया के कैसी तरल और प्रवाहित भाषा का प्रयोग किया है इसकी चर्चा लेखिका की भाषा के कुछ उदाहरणों द्वारा चर्चा करेंगे.

दिनांक 10.04.2007 *को लिखी डायरी की शुरुआत करते हुए लिखते है – ''मन, जो इन दिनों फालतू बिल्ली बन गया है, बहलाऊँ बहल जाता है, भगाऊँ भाग जाता है.......न इनसान न इनसानी आवाज. खाली कमरों में प्रेतात्मा की तरह डोलती मेरी काया और धक् धक् करता मन जो एकाएक फिर मेरी गिरफ्त से बाहर जा चुका था. उत्पाती मन को ठिकाने लगाने के लिए बाहर निकलना जरुरी हो गया था.'' यही बात को सरल शब्दों में इस तरह भी लिख सकते है कि – ''आज-कल मन बहुत चंचल हो गया है. मैं घर में रहकर ऊ ब गया हूँ इस लिए बाहर निकलना जरुरी हो गया है.'' यहाँ पर लेखिका ने अपनी भाषा में उपमा*

अलंकार का प्रयोग किया है. मन को फालतू बिल्ली की उपमा दी गई है. और अपने शरीर की तुलना वे कमरे में घूमते प्रेतात्मा के साथ करते है.

इसी प्रकार 5.12.07 *की डायरी की शुरुआत में लेखक लिखते है कि – ''गर्म गर्म हवा सी जिंदगी और बेरंग मौसम का घर. अपने अपने तहखानों में कैद सब, शायद भिडंत के डर से कोई बाहर नहीं निकलता. निकलता भी है तो बच बच कर. कई बार लगता है जैसे यहाँ लोग नहीं कुछ चुप्पियाँ रहती है जो प्रेतात्माओं कि तरह विचरण करती रहती है, कभी इधर कभी उधर. दोनों तहखानों के बीच कमजोर पुल की तरह है माँ जो चाहती है कि वातावात्रण थोड़ा हल्का हो.'' यहाँ पर लेखिका जिंदगी की तुलना गर्म हवा के साथ करते है और घर की तुलना बेरंग मौसम के साथ करते है. लोगों की तुलना चुप्पियों के साथ करते है. माँ की तुलना कमजोर पुल के साथ करते है जो उनकी उम्र और नाजुक शरीर का परिचायक है. इस प्रकार सुन्दर उपमानों की झड़ी लगा दी है.*

इस प्रकार 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी में लेखिका ने सरल, मुहावरेदार, अलंकार युक्त, रोचक और सजीव भाषा का प्रयोग किया है. लेखिका की भाषा में वह शक्ति है कि जो बात वह कहना चाहती है उसे भाषा में माध्यम से सशक्त रूप में पाठकों तक पहुंचा पाई है.

प्रस्तुत डायरी में लेखिका ने डायरी शैली के साथ-साथ वर्णात्मक शैली और भावात्मक शैली का प्रयोग भी लेखिका ने सुन्दरता से किया है.

- ***बोध प्रश्न***

प्रश्नों के उत्तर* 100 *शब्दों में दीजिए

1. *'बंजारा मन और बंदिशें' की खिली का परिचय दीजिए.*
2. *भारतीय भाषा परिषद् के जल पान में हुई 'सिकुरे' की कहानी बताइए.*
3. *लेखिका का लड़का लेखिका के लेखन को निखारने का क्या उपाय बताता है ?*
4. *सिडनी ब्राडफोर्ड की कहानी लिखिए.*
5. *पंचम मुंडा कौन थे ?*

16.8 *सार बिंदु*

मधु कांकरिया द्वारा लिखित डायरी 'बंजारा मन और बंदिशे' के विश्लेषण के बाद सार रूप हम कह सकते हैं कि –

- *डायरी व्यक्ति का निजी एवं गोपनीय दस्तावेज है, पर आधुनिक साहित्य में डायरी लेखन को एक विधा के रूप में स्विकृत किया गया है.*
- *डायरी लेखन में दिनांक, समय स्थान आदि का उल्लेख जरूरी होता है.*

- *प्रस्तुत डायरी के सभी दिनांकों में विषय वैविध्य है तो विषय की दृष्टी से वैविध्य देखने को मिलता है.*
- *इससे लेखिका के चिंतन के व्यापक विषयों का हमें पता चलता है.*
- *मधु कांकरिया लिखित 'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी में सात दिनों की बात कही गयी हैं.*
- *लेखिका ने अपनी भाषा में अलंकारों, कहावतों, मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया है.*
- *लेखिका ने डायरी शैली के साथ-साथ वर्णात्मक शैली और भावात्मक शैली का प्रयोग भी सुन्दरता से किया है.*

16.9 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए***

1. *मधु कांकरिया का जीवन और साहित्यिक परिचय दीजिए.*
2. *'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए.*
3. *'बंजारा मन और बंदिशें' डायरी का विश्लेषण कीजिए.*

- ***टिप्पणी***

1. *डायरी की विशेषताएँ*
2. *'बंजारा मन और बंदिशें' का सार*
3. *'बंजारा मन और बंदिशें' की भाषाशैली*
4. *मधु कांकरिया का साहित्यिक परिचय*
5. *सीडनी ब्रांडफोर्ड की कहानी लिखिए.*
6. *खिली की कहानी लिखिए.*

16.10 *उपयोगी पाठ्य सामग्री*

1. *बंजारा मन और बंदिशें – मधु कांकरिया*
2. *मधु कांकरिया –गद्य कोश*
3. https://www.hindisamay.com/content/3836/1
4. https://hi.wikipedia.org/wiki/*मधु दुकांकरिया*
5. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/madhu-kankaria-a-sensitive-writer-related-to-common-mans-concern/articleshow/90027922.cms
6. https://shorturl.at/fO568

इकाई 17 रिपोर्ताज – 'एकलव्य के नोट्स' : फणीश्वरनाथ रेणु

रूपरेखा

17.1 उद्देश्य

17.2 प्रस्तावना

17.3 रिपोर्ताज लेखन में फणीश्वरनाथ रेणु की भूमिका

17.4 रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' का पठन

17.5 `एकलव्य के नोट्स' का विश्लेषण

17.5.1 प्रतिपाद्य

17.5.2 भाषा शैली

17.6 सार-बिंद

17.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

17.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

17.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो ! आप बी.ए. के लिए हिंदी विषय के पाठ्यक्रम में चतुर्थ प्रश्नपत्र की इकाई – 17 पढ़ने जा रहे हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- *यह जान सकेंगे कि रिपोर्ताज किसे कहते हैं.*
- *रिपोर्ताज लेखन में फणीश्वरनाथ रेणु की भूमिका को जान सकेंगे.*
- *रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' का पठन कर सकेंगे.*
- *रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' का विश्लेषण कर सकेंगे.*

17.2 प्रस्तावना

'रिपोर्ताज' एक विदेशी शब्द है जिसे फ्रेंच भाषा से हिंदी में ले लिया गया है. किसी घटना को अपनी मानसिक छवि में ढालते हुए उसे प्रस्तुत कर देना या मूर्त रूप देना ही दरअसल रिपोर्ताज की प्रमुख विशेषता है. इस प्रकार किसी रिपोर्ट का कलात्मक और साहित्यिक रूप ही रिपोर्ताज है. घटना को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देना तो सिर्फ रपट है. लेकिन उसी घटना को जब कोई पत्रकार या साहित्यकार अपनी भावना में रँगकर बिम्बधर्मी भाषा के माध्यम से जीवंत बनाकर प्रस्तुत करता है तब उसे रिपोर्ताज कहते हैं. इस तरह रिपोर्ताज में कला और संवेदना की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. रिपोर्ताज लिखने के लिए लेखक का अनुभव सिद्ध होना ज़रूरी है. कहने का तात्पर्य यह है कि लेखक के

लिए घटना का प्रत्यक्षदर्शी होना आवश्यक है. घर में बैठकर कल्पना के सहारे किसी घटना को प्रस्तुत कर देना रिपोर्ताज नहीं कहा जा सकता. क्योंकि इसमें लेखक की प्रत्यक्ष अनुभूति ही कलात्मकता का आश्रय लेकर व्यक्ति मन पर अपनी छाप छोड़ सकती है.

अचानक घटित होने वाली घटनाओं के साथ अर्थात् यूरोप के युद्ध क्षेत्र में इस विधा का जन्म हुआ. सन् 1936 के आस-पास इसका प्रादुर्भाव माना जाता है. इलिया एहरेनबर्ग के साथ-साथ अमेरिका के पैसोस, फ्रांस के आन्द्रे मैलरीज और इंग्लैंड के क्रिस्टोफर रिपोर्ताज लेखन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं. रूस की समाजवादी क्रांति पर जॉन रीड ने 'टेन डेज दैट शुक द वर्ल्ड' नाम से एक महत्वपूर्ण रिपोर्ताज लिखा है.

- ***साहित्य : विविध विधाएँ***

हिंदी में रिपोर्ताज लेखन की शुरुआत 1940 के आस-पास हुई. तब से लेकर आज तक इसका तेज़ी से विकास हुआ है. रांगेय राघव, प्रकाश चन्द्र गुप्त, अमृत राय, प्रभाकर माचवे, फणीश्वर नाथ रेणु, ठाकुर प्रसाद सिंह आदि ने महत्वपूर्ण एवं सशक्त रिपोर्ताज लिखे हैं. वे लड़ेंगे हज़ार साल (शिव सागर मिश्र), युद्ध यात्रा (धर्मवीर भारती), जुलूस रुका है (विवेकी राय), ऋणजल धनजल, नेपाली क्रांति कथा, श्रुत अश्रुत पूर्व (रेणु) आदि विशेष रूप से चर्चित रिपोर्ताज हैं. शिव सागर मिश्र के रिपोर्ताज 1965 में भारत-पाकिस्तान की लड़ाई पर आधारित हैं. धर्मवीर भारती ने सितम्बर 1971 में मुक्तिवाहिनी के साथ बांग्लादेश की गुप्त यात्रा की थी. भारतीय सेना के साथ वे भारत-पाक युद्ध के मोर्चे पर भी गए थे. रेणु का नेपाली क्रांति से गहरा संबंध रहा है. विवेकी राय ने आज़ादी के बाद बदलते हुए गाँव को नज़दीक से देखने की कोशिश की हैं.

रिपोर्ताज मुख्यत : *रोमांचक, आतंककारी या भीषण घटना, युद्ध, अकाल, बाढ़, सूखा आदि पर आधारित होते हैं इसलिए वे निरंतर नहीं लिखे जाते. इससे मिलती-जुलती एक दूसरी विधा है फीचर. फीचर कभी भी किसी वस्तु या समय में लिखा जा सकता है अर्थात् किसी भी व्यक्ति स्थिति या घटना को आधार बनाया जा सकता है. रिपोर्ताज और फीचर दोनों का जन्म पत्रकारिता की कोख से हुआ है. रिपोर्ताज आज अपने कलात्मक रूप में हमारे सामने है. अब उसे शैली के रूप में उपन्यासों, संस्मरणों और आत्मकथाओं में प्रयुक्त किया जाने लगा है. फीचर की दुनिया अभी उतनी विकसित नहीं हुई है और मुख्यतः पत्र-पत्रिकाओं तक ही सीमित है, जबकि रिपोर्ताज की स्वतंत्र पहचान एक गद्य विधा के रूप में बन चुकी है. रिपोर्ताज से मेल खाती एक विधा है रेखाचित्र, जहाँ लेखक अपने मन पर पड़े प्रभावों को पाठकों पर कम से कम लादता है. रेखाचित्र और रिपोर्ताज में अंतर को स्पष्ट करते हुए भगीरथ मिश्र ने लिखा है कि 'रिपोर्ताज किसी स्थान या घटना का यथार्थ, सजीव, मर्मस्पर्शी और संवेदना को उभारने वाला वर्णन होता है. इसमें घटना या दृश्य प्रधान रहता है चरित्र या व्यक्ति नहीं. परंतु शब्द चित्र में प्रधान चरित्र और*

व्यक्ति रहता है, घटना आदि पृष्ठभूमि के लिए ग्रहण की जाती है. यथार्थता की विश्वसनीयता, वैयक्तिक सम्पर्क की सजीवता और ऊष्मा तथा शैली की मर्मस्पर्शिता शब्द चित्र को लोक हृदय के संस्कार करने का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम सिद्ध करती हैं. इसका कारण यह होता है कि हम अपने अनुभव से टकराए हुए व्यक्तियों को इसके बहाने अपने समक्ष प्रस्तुत पाते हैं.'

रेखाचित्र लेखक की अपेक्षा रिपोर्ताज लेखक को अधिक तटस्थ तथा मानसिक रूप से अधिक जागरूक रहकर काम करना पड़ता है. रेखाचित्र में कल्पना तथा कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए गुंजाइश अधिक होती है, अतः उसमें रागात्मकता का गुण स्वाभाविक रूप से आ जाता है. रेखाचित्र से ही मिलती-जुलती विधा है 'संस्मरण'. इसमें व्यक्ति जीवन के वे पहलू संदर्भ और चारित्रिक विशेषताएँ अंकित की जाती हैं जो स्मरणकर्ता को याद रह जाती हैं. स्मरण वही रह जाता है जो आमतौर से विशिष्ट, विचित्र या प्रिय होता है. संस्मरण में विषय के साथ लेखक स्वयं भी अंकित होते चलता है. इसलिए इसमें लेखक तटस्थ नहीं रह पाता. बनारसीदास चतुर्वेदी के अनुसार 'संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित्र इन तीनों का एक दूसरे से इतना घनिष्ठ संबंध है कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है इसका निर्णय करना कठिन है.' जिंदगी की बिखरी हुई जानी-अनजानी स्थितियों को सजीव करने की क्षमता रेखाचित्रों में अधिक है. संस्मरणों का संबंध मुख्यतः अतीत की स्मृतियों से है तो रेखाचित्र प्रायः वर्तमान को मूर्तरूप देते दिखाई पड़ते हैं. यथार्थ जीवन की धड़कन को रेखाचित्र में सही ढंग से पकड़ा जा सकता है. रिपोर्ताज का संबंध भी रेखाचित्र की भाँति वर्तमान से ही होता है. इसलिए यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति की यहाँ भी पूरी गुंजाइश होती है.

'एकलव्य के नोट्स' सोद्देश्य रचना है और रेणु के रिपोर्ताजों में इसका अग्रणी स्थान है. वैसे तो यह 'परती परिकथा' के लिए लिखा गया नोट्स है जिसमें गाँव की समाजशास्त्रीय स्थिति का सूक्ष्म ब्यौरा पेश किया गया है. आज़ादी के बाद गाँवों में किस तरह के बदलाव आ रहे हैं? वे कितने सार्थक हैं? संबंधों के स्तर पर गाँव किस स्थिति में पहुँच गए हैं? और उसकी आत्मा किस तरह तिल-तिलकर मर रही है ? ऐसे अनेक बिंदुओं और प्रश्नों को लेखक ने इस रिपोर्ताज में रेखांकित करने का प्रयास किया है. गाँव के विद्यालय की खस्ता हालत को समूचे ग्रामीण समाज की ढ़हती चरमराती स्थिति के रूप में समझा जा सकता है. जातिवाद, दलबंदी, भ्रष्ट राजनीति, पंचायती राज की ध्वस्त होती अवधारणा, सामाजिक-आर्थिक विषमता, संवर्ण-दलित संबंधों के नए आयाम, दलित उभार, उनमें आत्म-सम्मान की भावना का पैदा होना और जातिगत संघर्ष इस रिपोर्ताज में बहुत ही आत्मीय एवं निरपेक्ष ढंग से अभिव्यक्त हुए मानवीय संबंधों में इतने व्यापक पैमाने पर हो रहे बदलावों को इस छोटे से रिपोर्ताज में प्रभावशाली ढंग से कह दिया गया है. सम्पूर्ण राजनीतिक-आर्थिक परिवर्तनों के संदर्भ में मानवीय संबंधों की सच्चाई दिखाना ही इस रिपोर्ताज का मुख्य उद्देश्य है. संबंधों में इतना बदलाव, कि

बेटा अपने बाप पर विश्वास करने के लिए तैयार न हो, आश्चर्य में डालने वाला है. लेकिन यह सच है. इसमें दलित समुदाय की आंतरिक पीड़ा को सहानुभूतिपूर्वक व्यक्त किया गया है.

17.3 *रिपोर्ताज लेखन में रेणु की भूमिका*

द्वितीय विश्व युद्ध के मलबे से रिपोर्ताज की उत्पत्ति मानते हुए भारत यायावर ने रेणु को हिंदी का पहला और सबसे बड़ा रिपोर्ताज लेखक माना है. लेकिन यह सच नहीं है. रेणु के पहले भी हिंदी में रिपोर्ताज लिखने वाले मौजूद थे. यह बात अलग है कि रेणु ने इस विधा को और ज्यादा समृद्ध किया. उन्होंने पहला रिपोर्ताज 'डायन कोसी' सन् 1947 *में लिखा जो रामवृक्ष बेनीपुरी के सम्पादन में निकलने वाले साप्ताहिक 'जनता' में प्रकाशित हुआ और बाद में कई भाषाओं में अनूदित भी हुआ. उसके बाद उन्होंने जै गंगा, पुरानी कहानी: नया पाठ एकटु आस्ते आस्ते जैसे रिपोर्ताज लिखे. इस प्रकार उनके रिपोर्ताज लेखन की शुरुआत* 1947 *में हुई और* 1965 *से* 1975 *के बीच का समय उनके रिपोर्ताज लेखन का उत्कर्ष काल कहा जा सकता है.* 1965 *में अज्ञेय के सम्पादन में शुरू होने वाले 'दिनमान' रेणु को बिहार का प्रतिनिधि बनाया गया. रेणु ने इस माध्यम का भरपूर उपयोग किया और समाज की उथल-पुथल या कि बदलावों को अपने रिपोर्ताजों में बहुत खूबी के साथ उभारा. हड़ताल, चुनाव, ग्रामदान, तस्करी, जिस्मफरोशी, अकाल और भूख पर रेणु ने जबर्दस्त रिपोर्ताज लिखे हैं. रेणु के रिपोर्ताज की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसमें बिहार की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना पूरी तरह उपस्थित हो गई है. राजनीतिक नेताओं की पतनशीलता को रेणु ने बहुत गहराई से उभारा है. रेणु का रिपोर्ताज लेखन उनकी पत्रकारिता का एक प्रमुख हिस्सा था और तब यह कहना बेहद ज़रूरी हो जाता है कि पत्रकारिता रेणु के लिए मानवीय प्रवृत्तियों और उसकी संवेदना को संचित और उजागर करने का एक माध्यम थी. वे पत्रकारिता को जनपक्षधरता से जोड़कर देखते थे. इसलिए उनके रिपोर्ताजों में पाठक को बेचैन करने की ताकत है. रेणु ने अपने सारे रिपोर्ताज पत्र-पत्रिकाओं के लिए ही लिखे. उनके जितने रिपोर्ताज शायद ही अन्य किसी लेखक ने लिखे हों. 'ऋणजल धनजल', 'नेपाली क्रांति कथा', 'एकांकी के दृश्य' और 'श्रुत-अश्रुत पूर्व' में उनके अधिकांश रेखाचित्र संगृहीत हैं.*

राजनीति और पत्रकारिता से रेणु का संबंध शुरू से ही रहा है. उन्होंने न केवल 'नई दिशा नया कदम' का सम्पादन किया, बल्कि दो वर्षों तक 'दिनमान' के बिहार प्रतिनिधि भी रहे. पत्रकारिता ने उनको रिपोर्ताज लिखने का मौका दिया और एक अलग तेवर भी. रेणु अपने रिपोर्ताजों में पठनीयता, रुचि और नवीनता के साथ कौतूहल का भी विशेष ध्यान रखते थे. शायद इसीलिए उनके रिपोर्ताज सहज ही लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं.

रेणु उन बातों को रिपोर्ताज में प्राय: जगह नहीं देते थे जिसके बारे में लोग पहले से ही बहुत ज्यादा जानते होते थे. उन्होंने रिपोर्ताज को इतिहास, समाज और राजनीति का दस्तावेज बना दिया. मन बंजर धरती को देखकर दुखी हो जाता है. किसानों के जीवन-संघर्ष को रेणु इन शब्दों में रेखांकित करते हैं :

''खेतों में काम करने वालों के हाथ रुके नहीं. एक आदमी हमारे पास आया, हाथ की मिट्टी झाड़ता हुआ. हमें देखकर मुस्कराया. फिर पूछा, 'क्या देखने आए हो? यह सूखा? ऐसा कभी नहीं हुआ, लेकिन, हम लोग लड़ रहे हैं. थोड़ा-सा पानी पड़ा और बाकी कूप-कुआँ से, जहाँ तक हो सके आदमी रहते तो हिम्मत नहीं हारेगा.''

भारतीय किसान में विकट जिजीविषा और सहनशीलता पाई जाती है. विकट परिस्थितियों भी वह धीरज के साथ रह लेता है. ऐसे किसान से रेणु पूरी सहानुभूति रखते हैं. वे एक पत्रकार के रूप में साम्प्रदायिक शक्तियों को बेनकाब करने से नहीं हिचकते. 'यह सही है कि राज्य सरकार बाढ़ से लेकर भूख तक की समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ रही लेकिन शांतिपूर्ण आंदोलन को आक्रामक रूप देने में किसी भयानक सुनियोजित षड्यंत्र की ही पुष्टि होती है. जाँच से भी ऐसे ही तथ्य सामने आए हैं कि इसके पीछे पाक परस्तों और वामपंथियों का ही हाथ रहा है.' इस बात की तनिक चिंता किए बगैर कि लोग उन्हें प्रतिक्रियावादी कह सकते हैं, उन्होंने लिखा है कि – 'अन्य प्रदेशों की तरह बिहार में भी किसी जमाने के कट्टर लीगी खद्दरधारी कांग्रेसियों के रूप में विद्यमान हैं. वे राष्ट्र का हित सोचकर राष्ट्रवादी मुसलमानों को भी बहकाने और बरगलाने की कोशिश चोरी छिपे करते हैं.' तत्कालीन इतिहास के महत्वपूर्ण क्षणों को रेणु ने बहुत सफलतापूर्वक बाँधने की कोशिश की है. वे निश्चय ही अपने समय और समाज की नब्ज को पहचानते थे इसीलिए वे कभी-कभी इतिहास के रचयिता भी लगते हैं.

रेणु अपने रिपोर्ताजों में किसी सीमा को नहीं स्वीकारते. जंगल, पहाड़, नदी, घाटी, मैदान, निर्धनता, बेकारी, भूख, बीमारी, शोषण, दासता, बाढ़, अकाल, दलित हत्याएँ, भूमि, संघर्ष, महँगाई और जड़ता जैसे अनेक तत्व इनके रिपोर्ताजों के फलक को विस्तार देते हैं. रेणु के रिपोर्ताज मात्र परिदृश्य नहीं हैं, अपनी संरचना में औपचारिक नहीं हैं और इनकी सुंदरता में रचनात्मक स्तर पर कोई कौशल नहीं है बल्कि इनके यहाँ लोक तत्व की प्रधानता है अर्थात् रेणु लोक जीवन में सौंदर्य की खोज करते हैं और वहीं से वे रस ग्रहण करते हैं. वे मनुष्य को उसकी वास्तविक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों के बीच रखकर देखते हैं. यहीं से वे विषय का चुनाव करते हैं. कहना न होगा कि रेणु ने अपने रिपोर्ताजों में इतने जीवन-प्रसंगों, संदर्भों, साहित्य और लोक तत्वों को समेटा है कि उनकी ये रचनाएँ अपने आप जीवंत, सार्थक और पठनीय हो जाती है. उनमें वर्णित प्रसंग कहीं भी फालतू या निरर्थक नहीं लगते बल्कि उनमें एक नयी अर्थवत्ता और कलात्मकता झलकती है. इस तरह उनके यहाँ सब कुछ अर्थवान और प्रासंगिक लगता है.

रेणु अपने रिपोर्ताजों में इतने विषयों को शामिल करते हैं कि उसमें नये-नये आयाम जुड़ जाते हैं. बोधगया में मंदिर और बोधि का दर्शन करते हुए उन्हें अपनी गौरवमयी प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा की याद बरबस आ जाती है- 'मंदिर के प्रांगण मे घूमते हुए मुझे रह-रह कर रिपुंजय, बिंबिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, महापद्म नंद, चन्द्रगुप्त, अशोक, शून्य-पुराण और कम्युनिस्ट मेनिफेस्टों की याद आई. राहुल जी, भदंत और नागार्जुन की याद आई.'

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *हिंदी में रिपोर्ताज लेखन की शुरुआत* **…………** *के आस-पास हुई.*
2. **……….** *को हिंदी का पहला और सबसे बड़ा रिपोर्ताज लेखक माना है.*
3. *'एकलव्य के नोट्स'* **……………** *रचना है.*
4. **…………….** *किसी स्थान या घटना का यथार्थ, सजीव, मर्मस्पर्शी और संवेदना को उभारने वाला वर्णन होता है.*

17.4 *रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' का पठन*

https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789

उपर्युक्त लिंक को गूगल सर्च में टाइप कीजिए.इस लिंक में आपको रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' पीडीएफ फाइल के रूप में मिल जायेगी. तो पढ़िए और आनंद लीजिए!

17.5 *'एकलव्य के नोट्स' का विश्लेषण*

एकलव्य के नोट्स 'श्रुत अश्रुतपूर्ण' संग्रह का एक महत्वपूर्ण रिपोर्ताज है. वास्तव में, यह 'परती परिकथा' के लिए लिखा गया नोट्स है. ध्यान देने की बात है कि 'परती परिकथा' के केंद्र में परानपुर गाँव का ही चित्रण है. आज़ादी के बाद बदलते हुए गाँव की राजनीतिक-सामाजिक स्थिति को ब्यौरेवार ढंग से इसमें प्रस्तुत किया गया है.

17.5.1 *प्रतिपाद्य*

परानपुर बिहार के पूर्णिया जिले का एक बड़ा-सा गाँव है जिसमें विभिन्न जातियों के तेरह टोले हैं. आठ ग्रेजुएट, पचास मैट्रिक्युलेट, एक सौ मिडिल पास लोगों के अलावा डेढ़ दर्जन कवि, दो दर्जन कथाकार, दो साहित्यकार और एक नाटककार. इस गाँव की आत्मा की धड़कन हैं. दलितों एवं स्त्रियों में शिक्षा के प्रति बढ़ते रुझान को इंगित करते हुए रेणु ने लिखा है- 'पिछले साल एक हरिजन ने बी.ए. पास किया है, सबसे पहले. लड़कियाँ भी पढ़ी-लिखी हैं. जिले की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका में एक कुमारी कवयित्री की रचनाएँ हमेशा छपती हैं.' परंतु साथ ही स्त्री के प्रति पुरुष की

सनातन वृत्ति की ओर इशारा करने से भी रेणु-चूकते नहीं - 'यह और बात है कि लोग तरह-तरह की बातें करते हैं उनकी रचनाओं के संबंध में.

शिक्षण संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार और जातिवाद का नमूना है परानपुर का स्कूल, जहाँ की अवस्था बेहद चिंतनीय हो गई है. 'गत तीन वर्षों से कोई हेडमास्टर दो महीने से ज्यादा नहीं टिक पाते. जाति और पंचायत, गाँव की दलबंदी के ऊपर चढ़े करेले की भुजिया स्कूल कमेटी की कड़ाही में भूँजी जाती है. पुस्तकालय की स्थापना सन् 1930 में हुई थी. 1944 से सरकारी सहायता भी मिलती है लेकिन पुस्तकालय पिछले पाँच वर्षों से बंद है और उसे छित्तन बाबू ने हड़प लिया है. 'सरकारी रेडियो बिकू बाबू की सुहागरात में बजने के लिए गया, उसी रात से खराब होकर उनके यहाँ पड़ा है. बैटरी का पैसा सरकार से बराबर वसूला गया है.'

आज़ादी के बाद पंचायती राज के माध्यम से गाँव का विकास करने की जो थोड़ी-बहुत कोशिश शुरू हुई थी वह भी जातिवादी राजनीति में फँसकर रह गई. इस सिलसिले में पहली बात तो यह हुई कि पंचायतों पर आमतौर पर पूर्व ज़मींदारों अथवा धनी किसानों का कब्जा कायम हुआ और दूसरे विकास कार्यों के लिए मिलने वाली सहायता राशि सरकारी अधिकारियों और पंचायत प्रधानों के पेट में ही भस्म हो गई. भूस्वामियों ने अपनी ज़मीनें बचाने के लिए हर संभव कोशिश की और फर्जी बटाईदार खड़ा करके भूमिकानून का सरेआम मज़ाक उड़ाया. एक ही ज़मीन के कई हकदार निकल आए और हाकिमों के सामने रोने घिघियाने लगे 'हुजूर माय-बाप. जीतू हजरा के बाप ने अंगूठे का निशान लगाकार पच्चीस साल पहले 'सुपुर्दी' लिखकर दी है, इस ज़मीन पर हमारा या हमारे वारिसान का कोई हक नहीं रहेगा.'

रेणु ने आज़ादी के बाद पैदा होने वाले नवधनाढ्य वर्ग के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए लिखा है- 'किंतु लुतो बाबू की बात निराली है. शासक पार्टी के कार्यकर्ता हैं. सर्वे के समय उनकी कीमत और बढ़ रही है. बड़े लोगों की सेवा कभी निष्फल नहीं जाती. पाँच साल तक थाना कमेटी के नेताजी का बिस्तर यों ही नहीं ढोया है लुत्तो बाबू ने.' और अब हालत यह है कि 'ज़मीन लेनी है तो जय बोलो लुत्तो बाबू की.' लुत्तो बाबू इसी वर्ग के हैं. इसमें वे लोग हैं जिन्होंने आज़ादी के बाद ज़मींदारों के बराबर अपनी हैसियत कायम की अर्थात् धनी किसान, और वे भी, जो नेताओं की चापलूसी करते-करते अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सफल हो गए.

रेणु ने अपनी रचनाओं में जातिवाद और भ्रष्टाचार और इनसे पैदा होने वाली विकृतियों को अधिक स्थान दिया है. तत्कालीन स्थितियों में यह स्वाभाविक था और लेखक की अपनी ईमानदार कोशिश थी. दलित चेतना के उभार को भी रेणु ने अपनी रचनाओं में विशेष महत्व दिया है. कहना न होगा कि 'एकलव्य के नोट्स' दलितों में आई चेतना और अधिकारों के प्रति सतर्क दृष्टि का परिचायक है. उनमें यह समझ

विकसित हुई है कि सवर्ण उनके साथ भेदभाव करते हैं इसलिए वे अब बराबरी के लिए संघर्ष करने की स्थिति मे तैयार दिखते हैं.

'दलित वर्ग को हर तरह से मर्दित करके रखा गया था अब तक. नाटक मंडली के लिए प्रत्येक वर्ष खलिहान पर चंदा काट लेते हैं- मालिक लोग लेकिन, कभी द्वारपाल, सैनिक अथवा दूत का पार्ट छोड़कर अच्छा पार्ट माने 'हीरो' का पार्ट नहीं दिया सवर्ण टोली के लोगों ने.'

अब यह अलग बात है कि अपने इस कार्य के लिए सवर्णों ने तमाम तर्क गढ़ रखे हैं. उनका एक जबर्दस्त तर्क यह है कि - 'नाटक में जितना पार्ट लिखा है, उससे ज्यादा लोगों को कैसे दिया.' लेकिन यहाँ तो मूल समस्या भूमिका के बँटवारे को लेकर है. हीरो का पार्ट सवर्ण टोली के हिस्से ही हमेशा क्यों रहे? कभी वह दलितों के हिस्से में क्यों नहीं जाता? दलितों को शिकायत इसी असामान्य वितरण या पक्षपात या कि ऊँच-नीच के भेदभाव को लेकर है. लिहाजा सवर्णों द्वारा अस्वीकृत प्रेम कुमार 'दीवाना' के नाटक 'प्यार का बाजार' को मंचित करने के लिए दलित अपने बल-भरोसे तैयार हो जाते हैं.

दलित नाटक समाज वाले जब सवर्ण टोली से 'पर्दा-पोशाक' लेकर चले गए तो मालूम हुआ कि अब वे 'पर्दा-पोशाक' लौटकर नहीं देंगे. पच्चीस साल से चंदा लिया जा रहा है, मगर कभी 'हीरो' का पार्ट नहीं मिला. छित्तन बाबू ने पुस्ताकलय को हथिया लिया बिकू बाबू सरकारी रेडियो बजाते हैं अपनी कोठरी में. पर्दा - पोशाक पर दलित समाज का कब्जा होना जायज है.'

दलित वर्ग में इस बात का जो मलाल है वह बहुत हद तक हमारे सामाजिक-आर्थिक संबंधों के कारण ही है. श्रेष्ठता की भावना के कारण सवर्णों ने हीरो, मंत्री, सेनापति जैसी भूमिकाएँ अपने पास रख लीं और सदा से सेवक की भूमिका में रहते आए दलितों को दूत, चपरासी, कसाई, मदारी का रोल थमा दिया. यह ध्यान देने की बात है कि परानपुर गाँव में एक दलित भी उच्च शिक्षा प्राप्त है. तब यह कहने के लिए कोई जगह नहीं बच जाती कि दलित अनपढ़ हैं, इसलिए उन्हें 'हीरो' की भूमिका नहीं दी जा सकती.

गाँव के जीवन में कुछ नई चीजें आने से पारंपरिक संबंधों पर भी असर पड़ा. इन्हीं में से एक है सर्वे. सर्वे ने कुछ नए शब्द दिए बौंडोरी, किश्तवार, मुरब्बा, खानापुरी, तनाजा, सटीक और दफातीन आदि. गाँव का बच्चा-बच्चा पक्की गवाही देना सीख गया है. छह महीने में ही गाँव एकदम बदल गया है. बाप-बेटे में, भाई-भाई में, अपने हक को लेकर ऐसी लड़ाई कभी नहीं हुई. यह समाज की आंतरिक व्यवस्था में उथल-पुथल का नतीजा है. भाई अपने सहोदर को भरी कचहरी में कह देता है कि वह मेरा कोई नहीं है. बाप पर भी लोग विश्वास करने को तैयार नहीं हैं. पिता चूँकि छोटे भाई को ज्यादा प्यार

करते हैं इसलिए हो सकता है सारी उर्वर भूमि उसके नाम कर दें. रेणु ऐसे अवसरों पर राजनीतिक दलों और नेताओं की चुटकी लेने से नहीं चुकते.

'कचहरी लगी रहती हैं देश सेवकों की. कांग्रेसी, समाजवादी, कम्युनिस्ट सभी पार्टी वालों ने अपने बाहरी 'वरकर' मँगाए हैं. गाँव के 'वरकरों' की बात अपने अपने परिवार के ही अन्य सदस्य नहीं मानते.' लोगों से अपनी बात जबर्दस्ती मनवाने के लिए आए अपराधीनुमा तत्वों को बाहरी 'वरकर' नाम दिया गया है. रेणु निश्चित रूप से गहाँ राजनीति के अपराधीकरण की ओर संकेत करना चाहते हैं. इतिहास में यह भारतीय राजनीतिक के पतन का समय माना जाता है. समूचे मूल्य और आदर्श ध्वस्त होते चले गए और प्रजातंत्र ने ऐसा रूप ग्रहण कर लिया जिसमें सिर्फ़ तंत्र बच गया और प्रजा सिरे से गायब है.

'एकलव्य के नोट्स' के अंत में दलितों और सवर्णों के बीच होने वाली कशमकश या द्वंद्व को रेखांकित किया गया है. सवर्ण दलितों को पछाड़ने के लिए एक समझौता भरी चाल चलते हैं जिसे न तो नाटककार समझ पाता है और न ही दलित. सवर्ण टोली ने अपनी गलती मानकर मिलजुलकर काम करने की इच्छा जाहिर की. इसे गाँव की प्रतिष्ठा के प्रश्न से भी जोड़ा गया और अंत में संशोधित दृश्य में एक साथ बीस सवर्ण कलाकारों को उतारने की योजना को अंतिम रूप दे दिया गया. बीसों सवर्ण कलाकारों को नाटक के दूसरे दृश्य में उतरना था.

'सबसे पहले एक व्यक्ति हाथ में तलवार लेकर स्टेज पर आया. दीवाना जी पर्दे की आड़ में जोर-जोर से प्राम्पटिंग कर रहे थे. किंतु उस हीरों ने अपने डायलाग में पुकारा- 'साथियो, तैयार हो?'
अंदर से सम्मिलित आवाज आई 'हम तैयार हैं.'

हुक्म हुआ 'एक-एक कर प्रवेश करो.' बीसों कलाकार किस्म किस्म की पोशाकों और हथियारों से लैस होकर आए. आठ-दस नायकों के सिर पर बक्से भी लदे थे.

प्रथम हीरो ने हुक्म दिया इस व्यक्ति को कैद कर लो.' दीवाना जी को सबों ने घेर लिया. हारमोनियम मास्टर साहब ने लड़ाई वाली धुन छेड़ दी. हीरो आखिरी डायलॉग बोला - 'निकल पड़ो.' बीसों हीरो सारे साजो-सामान तथा पोशाक के साथ दर्शकों के बीच उत्तर पड़े.

X X X

दो नायकों ने नाटककार जी को कंधे पर बेबस करके लटका दिया था. प्रथम हीरो ने दलित टोले के पंचायती पेट्रोमैक्स को आगे बढ़कर गुल कर दिया.

रिपोर्ताज के उपर्युक्त अंशों में सवर्णों और दलितों के आपसी द्वंद्व को आसानी से महसूस किया जा सकता है. दरअसल, आज़ादी के बाद दलितों में आत्म-सम्मान की जो भावना जगी और साथ ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी, उससे सवर्णों में

एक तरह की बेचैनी का भाव पैदा हुआ. उन्हें लगा कि दलित उनके परम्परागत वर्चस्व और श्रेष्ठता को चुनौती देने लगे हैं. ऐसी स्थिति में सवर्णों ने तमाम तरह की चालाकियों से काम लेना शुरू किया और कहीं-कहीं उन्होंने दलितों को पछाड़ा भी. वैसे बदली हुई परिस्थितियों में सवर्ण दलितों को सीधी टक्कर देने के बजाय पीछे से वार करने में अपने कौशल का प्रयोग करते रहे हैं. रेणु ने इस रिपोर्ताज में जिस नाटक के आयोजन का ज़िक्र किया है उसमें सामाजिक विषमता और द्वंद्व का स्पष्ट संकेत मिलता है. पर ध्यान देने की बात यह है कि इस रिपोर्ताज में लेखक महज तटस्थ द्रष्टा की भूमिका में नहीं खड़ा है बल्कि अपने सरोकार के साथ मौजूदगी दर्ज कराता है. पंचायती पेट्रोमैक्स गुल हो जाए यह हँसने की बात नहीं' के माध्यम से रेणु की पक्षधरता सामने आ जाती है. यह एक लेखक की ईमानदारी और बुनियादी ज़रूरत का प्रमाण माना जा सकता है. 'एकलव्य के नोट्स' में दलितों की पीड़ा और जिजीविषा साकार हो उठी है. ऐसा रेणु की अतिशय संवेदनशीलता और मानवीय चेतना के कारण संभव हो पाया है. समाज के संबंधों और तनावों को इतनी गहराई से उजागर करने वाला यह रिपोर्ताज अपना विशेष महत्व रखता है. ' इन रपटों को पढ़ते हुए रेणु से एक और साक्षात्कार होता है ताज़ा सरोकारों और चिंताओं वाले रेणु से धड़कते और प्रतिक्रिया करते रेणु से.' (सुरेन्द्र चौधरी फणीश्वरनाथ रेणु)

'एकलव्य के नोट्स' में एक भावधारा अंतर्निहित है वह है मुक्ति की आकांक्षा. नाटक को अपने बलबूते पर मंचित करने का संकल्प दलितों की मुक्ति की संकल्पना से जुड़ा हुआ है. सामाजिक दौड़ में पिछड़ गए साधारण लोगों की कथा इस रिपोर्ताज में कही गई है. रेणु के मनोजगत में क्रांति की जो अवधारणा पल रही थी. उसमें गाँव और शहर के भेद को मिटाने के साथ-साथ समाज के दमित-शोषित वर्ग की इच्छा-आकांक्षाओं और सपनो को साकार करने की बात भी निहित थी. यही कारण है कि 'एकलव्य के नोट्स' में दलितों द्वारा नाटक के आयोजन को सवर्णों द्वारा छिन्न-भिन्न किए जाने पर रेणु अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने से नहीं चूकते. कहना न होगा कि यह रिपोर्ताज दलित चेतना के उभार के साथ-साथ उनकी आंतरिक पीड़ा को मार्मिक ढंग से उभारता है. दलितों की इस पीड़ा मे रेणु की संवेदना भी शामिल है.

17.5.2 *भाषा – शैली*

फणीश्वर नाथ रेणु भाषा के कुशल कारीगर हैं. अपने कथ्य के अनुरूप वे भाषा को जैसा चाहते हैं, रूप देने में माहिर हैं. 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' जैसे उपन्यासों में रेणु ने अपनी भाषिक क्षमता का भरपूर परिचय दिया है. इनमें मिथिला की अमराइयों में कोयल की मीठी तान प्रायः सुनाई पड़ जाती है. रेणु की भाषा में वह समूचा प्रांतर (स्थान विशेष) बोलता दिखाई पड़ता है जिसे उन्होंने अपने कथ्य का माध्यम बनाया है. आंचलिकता रेणु की विशेषता है. कहना न होगा कि उनकी यह पहचान उपन्यास, कहानी, रिपोर्ताज और यात्रा वृतांत सभी में परिलक्षित होती है. अन्य प्रादेशिक

भाषाओं में लेखकों ने अपने-अपने अंचल के जीवन को उभारने की कोशिश की है लेकिन रेणु जैसी जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति बहुत कम देखने को मिलती है. रेणु की निरीक्षण शक्ति इतनी तीव्र, आंतरिक और गहरी है कि समूचा जीवन क्षेत्र उनके द्वारा आत्मसात किया हुआ प्रतीत होता है. यही कारण है उनकी रचनाओं में मिट्टी की धड़कन बहुत साफ-साफ सुनाई देती है. रेणु ने अपनी रचनाओं, खास तौर से उपन्यासों में गाँव के समस्त रूप, रंग, वेश, परिवेश, समस्या, चाल-चलन, दिनचर्या और लोक संस्कृति का बहुत सधा और आत्मीय प्रयोग किया है. दूसरे शब्दों में उन्होंने उस क्षेत्र विशेष की कथ्य भाषा, गीत, कथा-कहानी और मुहावरों का सीधा प्रयोग किया है जिससे वह समूचा अंचल जीवंत हो उठता है.

रेणु की रचनाओं में प्रकृति जिस वैभव के साथ चित्रित हुई है उससे यह कहने में कोई हिचक नहीं होती कि वे मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति के बहुत निकट के प्रेमी रहे हैं.

रेणु ने स्थानीय जनभाषा का जमकर इस्तेमाल किया है. इस तरह के प्रयोग से स्थानीय मानसिकता ज़्यादा स्पष्ट होकर उभरती है. स्थानीय भाषा के सहज और प्रभावशाली प्रयोग ने रेणु की प्रखर प्रतिभा का भरपूर परिचय दिया है.

यह अलग बात है कि रेणु ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में जनभाषा का जितना इस्तेमाल किया है उतना अन्य विधाओं में नहीं. फिर भी गद्य की अन्य विधाओं में उन्होंने इनकी सीमाओं एवं प्रकृति का ख्याल करते हुए जनभाषा के माध्यम से प्राण फूंकने की कोशिश की है. जिन शब्द- विन्यासों, लोकोक्ति, मुहावरे, दोहे, गीत आदि को रेणु ने अपने अंचल के जनजीवन से उठाया है, वह उन जैसे गहरी अनुभूति सम्पन्न लेखक के लिए ही संभव है. रेणु जीवन से प्यार करते हैं. वे जीवन से जुड़े तमाम पक्षों को गहरी सहानुभूति के साथ उभारते हैं. इस तरह जन जीवन के साथ रेणु का संबंध बहुत आत्मीय हो गया है. रेणु की भाषा एक तरफ जीवन जीने की उनकी अपनी विशिष्टता से बनी है तो दूसरी ओर इलाके की भौगोलिक महिमा से. अनेक तरह की कथ्य भाषा मिथिला की परंपरा से घुल- मिलकर एक नई भाषा का रूप ग्रहण करती है. रेणु स्वयं नेपाली, मैथिली, बांग्ला, हिंदी, संथाली और पूर्णिया की कथ्य भाषा पर अधिकार रखते थे. अतः उनके लिए पात्रों की मानसिकता के अनुरूप भाषा चुनने में कोई कठिनाई नहीं थी. 'यह आकस्मिक नहीं था कि रेणु जी की इस समग्र मानवीय दृष्टि को अनेक जनवादी और प्रगतिशील आलोचक संदेह की दृष्टि से देखते थे. कैसा है यह अजीब लेखक जो गरीबी की यातना के भीतर भी इतना रस, संगीत, इतना आनंद छक सकता है, सूखी परती जमीन के उदास मरुस्थल में सुरों, रंगों और गंधों की रासलीला देख सकता है. सौंदर्य को बटोर सकता है, आँसुओं को परखता है, किंतु उसके भीतर से झाँकती धूल-धूसरित मुस्कान को देखना नहीं भूलता, एक सौंदर्यवादी की तरह नहीं, जो

सुंदरता को अन्य जीवित तत्वों से अलग करके उनका रसास्वादन करता है.' (निर्मल वर्मा)

रेणु के लेखन में एक आनन्द समाया हुआ होता है. वे रूप, रस, गंध, स्पर्श और लय को बाँधते हैं – जीवन की लय में. रेणु भाषा के पारखी थे. उनका समूचा साहित्य इसका प्रमाण है. वे ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं कि सारे प्रसंग जीवंत हो उठते हैं. उनमें एक तन्मयता है कबीर, मीरा, जयदेव, विद्यापति की तरह. राग–बिराग का पूरा आत्मिक संसार है.

'एकलव्य के नोट्स' में 'प्रांपटिंग', 'ड्रॉप', 'डायलाग', 'सीन', 'ह्यूमन डिग्निटी' जैसे अंग्रेज़ी के शब्द भी प्रयोग में लाए गए हैं. इन शब्दों का प्रयोग रिपोर्ताज के अंतिम अंश में हुआ है जहाँ लेखक ने दीवाना जी के नाटक 'प्यार का बाजार' को मंचित करने की तैयारी का जिक्र किया है.

गाँव वालों का एक–दूसरे पर व्यंग्य करने का चित्र खींचते हुए रेणु ने अक्षरों के बीच काफी जगह दी है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि इन शब्दों को खींचकर बोला गया है. 'भूमिहार पुत्रों ने ब्राह्मण समाज के एकांकी करने वाले नौजवानों पर उसी समय से व्यंग्य करना शुरू किया है. ब्राह्मण टोली के एकांकी के एक पात्र की नकल उतारकर लगीना सिंह आज भी बताते हैं – पारसी कंपनी वालों की तरह 'दो–ए–ए–ए–वी–वी–द–नू–ई–ज–ली–ऊ –नी–का–क्या–आ–आ–दे–स्–है–ए.' फिर आवाज पतली बनाकर तुरंत ही 'उत्तर' जड़ देते हैं– 'स–ब–स्स्से–स– है (लम्बी आह लेकर).'

रेणु भाषा को जनता की सुविधा के अनुरूप ढाल देते हैं. गाँव की सामान्य अशिक्षित जनता अगर 'बाउंड्री' का उच्चारण 'बौंडोरी' के रूप में करती है तो रेणु को इस पर कोई आपत्ति नहीं है. चरित्र का चरितर अथवा चलित्तर भी हो जाये तो उन्हें कोई परेशानी नहीं हैं. वे जानते हैं कि गाँव का अनपढ़ आदमी 'श्रवण' को सरवन ही कहेगा. लेकिन प्रकृति के बारे में बताते हुए रेणु कहीं–कहीं तत्सम शब्दावली का मनोरम प्रयोग करने से भी बाज नहीं आते. उदाहरण के लिए 'अक्षरशः सत्य है उनका कथन.'

'एक विशाल आँधी की प्रतीक्षा में क्षयिष्णु समाज, समाज के गाँव गाँव के लोग खड़े हैं.' 'उसके मन–सरोवर में तैरता हुआ हंस आज भी मोती चुगता है.'

रेणु की विशेषता यह है कि वे प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं. अनपढ़ों के बीच बोलचाल की भाषा और शिक्षितों के बीच तत्सम प्रधान भाषा का प्रायः इस्तेमाल उनके यहाँ देखा जा सकता है. हास्य–व्यंग्य रेणु के लेखन का अभिन्न अंग है. इसके माध्यम वे लोकरुचि को अभिव्यक्त करते हैं. विभिन्न भाषाओं के शब्दों को उन्होंने थोड़े–बहुत परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रचलित कर दिया है. इससे हिंदी समृद्ध ही हुई है. लेकिन उन्होंने जिन शब्दों का प्रयोग किया है उन्हें आंचलिकता के रंग में डुबो दिया है. नामों के व्यवहार में भी वे इसी तरह कथ्य भाषा या आंचलिकता के स्वरूप को बनाए रखते हैं, हालाँकि रिपोर्ताजों में इस तरह के प्रयोग कम मिलते हैं. पर इतना ज़रूर है कि रेणु ने ऐसे

शब्दों का प्रयोग इलाके की विशिष्टता और जनजीवन की नैसर्गिक प्रवृत्ति को रेखांकित करने के लिए ही किया है.

'एकलव्य के नोट्स' में लोकजीवन की एक छवि देखने योग्य है – 'सेमल के फूल को देखकर हवा भी बावरी हो गई है. चक्की पीसती हुई लड़कियाँ गाती हैं- सेमली के बगिया अगिया लागी रही.

कहना न होगा कि रेणु ने अपने रिपोर्ताजों में जितनी गंभीरता और तल्लीनता का परिचय दिया है वह अन्यत्र दुर्लभ है. वे जन, अंचल के साथ-साथ भाषा को भी प्यार करते रहे, उनसे आत्मीयता स्थापित करते हैं. वे लोक रस को कहीं भी भंग नहीं होने देते. लोक से सम्पृक्तिया जुड़ाव ही उनकी भाषा का प्राण है.

- ***बोध प्रश्न***

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. *एकलव्य के नोट्स* **.......................** *संग्रह का एक महत्वपूर्ण रिपोर्ताज है.*
2. *'परती परिकथा' के केंद्र में* **...........** *गाँव का ही चित्रण है.*
3. **...........***रेणु की विशेषता है.*
4. *रेणु ने स्थानीय* **..................***भाषा का इस्तेमाल किया है.*
5. *गाँव का अनपढ़ आदमी 'श्रवण' को* **...............***कहेगा.*

17.6 *सार-बिंदु*

'एकलव्य के नोट्स' रेणु का एक महत्वपूर्ण सारगर्भित रिपोर्ताज है. इसमें उन्होंने सदियों से शोषित-पीड़ित दलित समुदाय की राजनीतिक- सामाजिक चेतना को व्यक्त करने का प्रयास किया है. यही नहीं, इस रिपोर्ताज में रेणु ने यह भी दिखाने की कोशिश की है कि दलित में आ रही स्वाभिमान की भावना एवं अस्तित्व और पहचान के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने के कारण सवर्ण समाज में एक तरह की बेचैनी का भाव दिखाई देने लगा है. जिस पर सवर्णों का परंपरा से प्राप्त अधिकार बना हुआ था, आज़ादी के बाद, उन पर दलितों की बढ़ती दावेदारी सवर्णों की बेचैनी का प्रमुख कारण है. शिक्षा, राजनीति एवं प्रशासन में ऊँची जातियों का जो वर्चस्व बना हुआ है, उसे दलितों ने कड़ी चुनौती देनी शुरू कर दी है. दूसरे शब्दों में, दलित समुदाय के लोगों ने इन वर्जित क्षेत्रों में जैसे-जैसे घुसपैठ करना शुरू किया वैसे-वैसे सवर्ण जातियों के साथ उनका टकराव भी बढ़ा है. इस प्रकार सवर्णों के एकाधिकार और प्रभुत्व को दलितों की तरफ से जो चुनौती मिल रही है उससे इन दोनों समाजों के बीच राजनैतिक स्तर पर दूरियाँ भी बढ़ी हैं. कहने का तात्पर्य यह है कि जहाँ एक तरफ दलितों में अपनी अस्मिता और अधिकार को लेकर जागरूकता आई है वहीं दूसरी तरफ सवर्ण अपने एकाधिकार और प्रभुत्व को लेकर चिंतित और बेचैन हैं. वर्चस्व की इस लड़ाई के सूत्र 'एकलव्य के

नोट्स' में निहित हैं. रेणु दलितों, उपेक्षितों और स्त्रियों के प्रति बेहद संवेदनशील लेखक हैं.

इस रिपोर्ताज का दूसरा कथा सूत्र समाज के धनी, संपन्न वर्गों, अधिकारियों तथा राजनेताओं द्वारा समाज का शोषण. इस शोषण में सबकी मिलीभगत है. विद्यालय, पुस्तकालय की स्थापना से लेकर भूदान जैसे समाज कल्याण की योजनाओं के कार्यान्वयन में सर्वत्र भ्रष्टाचार का प्रकोप है. रेणु जी इसे चित्रात्मक ढंग से पात्रों और संवादों के माध्यम से उजागर करते हैं.

रिपोर्ताज का तीसरा कथा सूत्र है सेमल वन और एकलव्य जी का मुर्गी पालन. रेणु जी की पर्यावरण संबंधी चिंता, लेखकीय वृत्ति की निरर्थकता, साम्यवाद का विस्तार आदि इस प्रकरण में नाटकीय रूप से उभरे हैं.

इस रिपोर्ताज के अंतिम हिस्से में रेणु का मानवीय रूप तेज़ी से उभरता है और कुछ देर ठहर कर पाठक को हर समस्या पर सोचने के लिए विवश करता है. इसमें कोई संदेह नहीं कि रेणु का यह रिपोर्ताज उनकी श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है और प्रभाव एवं उद्देश्य की दृष्टि से पूरी तरह सफल प्रतीत होता है.

17.7 *परीक्षोपयोगी प्रश्नावली*

- ***निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिये***

1. *फणीश्वरनाथ रेणुजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए.*
2. *रिपोर्ताज लेखन में फणीश्वरनाथ रेणु की भूमिका को स्पष्ट कीजिए.*
3. *फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज 'एकलव्य के नोट्स' का विश्लेषण कीजिए.*

- ***टिप्पणी लिखिए***

1. *'एकलव्य के नोट्स' का प्रतिपाद्य*
2. *'एकलव्य के नोट्स' की भाषा शैली*
3. *रिपोर्ताज और फनीश्वरनाथ 'रेणु'*

17.8 *उपयोगी पाठ्यसामग्री*

1. *'साकेत' – संपादक उपेन्द्रनाथ अश्क* ,1955, *में संकलित*
2. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789
3. https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/70704
4. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/14406/1/Unit-15.pdf

BAOU Education for all

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

'ज्योतिर्मय' परिसर, सरखेज-गाँधीनगर हाईवे, छारोड़ी, अहमदाबाद-382481

E-mail : hindi@baou.edu.in । website : baou.edu.in

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

बी. ए. हिंदी (मुख्य / गौण)

प्रश्नपत्र चतुर्थ : हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ

कृपया यह फीडबैक फॉर्म भरकर उपर्युक्त पते पर 'हिंदी विभाग, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़' के नाम अवश्य भेज दें. आपकी अमूल्य राय आपको दी जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी. यदि आप चाहें तो अपनी पहचान गुप्त रख सकते हैं, यानी नीचे 'नाम' और 'एनरोलमेंट नंबर' देना आवश्यक नहीं है. अन्य सभी कॉलम अवश्य भरें.

नाम : ________________________ **एनरोलमेंट नंबर :** ______________

लिंग : स्त्री ☐ **पुरुष** ☐ **ट्रांसजेंडर** ☐ **आयु वर्ग : 18-30** ☐ **31-40** ☐ **41-50** ☐ **50 से ऊपर** ☐

नागरिकता : प्रदेश ______________________ **देश** ____________________________

प्रवेश वर्ष : ______________ **आजीविका के लिए कार्यरत : हाँ** ☐ **नहीं** ☐

कृपया अपनी राय नीचे दिए गए बिंदुओं के सामने सही खाने में सही (√) का निशान लगाकर दें.

{अ – अच्छा; सा – सामान्य; ख – ख़राब}

	इकाई 1			इकाई 2			इकाई 3			इकाई 4		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

	इकाई 5			इकाई 6			इकाई 7			इकाई 8		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

	इकाई 9			इकाई 10			इकाई 11			इकाई 12			इकाई 13		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है															
भाषा सरल है															
विषय अच्छी तरह समझाती है															
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.															
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन															

दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.															
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.															
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं															
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.															

	इकाई 14			**इकाई 15**			**इकाई 16**			**इकाई 17**		
	अ	**सा**	**ख**	**अ**	**सा**	**ख**	**अ**	**सा**	**ख**	**अ**	**सा**	**ख**
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है												
भाषा सरल है												
विषय अच्छी तरह समझाती है												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपायोगी प्रश्न पर्याप्त हैं												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) ____

____

____

____

____

____

____

____

BAOU
Education for All

स्वाध्यायः परमं तपः

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્‌ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેંકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેંકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ

●

DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY
(Established by Government of Gujarat)
'Jyotirmay' Parisar,
Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481
Website : www.baou.edu.in | Email : office.scs@baou.edu.in

978-93-5598-509-5